बोलीवार

सिमोन बोलीवार

बोलीवार

एक महाद्वीप : एक निर्माता

खोसे लुईस सालसेदो-बासतार्दो

अनुवाद तथा संपादन
प्रवीण कुमार कपिला

भारतीय सांस्कृतिक सम्बंध परिषद

आवरण
कान्ति राय

प्रकाशक

भारतीय सांस्कृतिक सम्बंध परिषद
आज़ाद भवन, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नयी दिल्ली-110002

मुद्रक

भारत मुद्रणालय
नवीन शाहदरा
दिल्ली-110032

अनुक्रम

BIOGRAFIA DE SIMON BOLIVAR EN HINDI

Hace tres años, Dr. (Prof.) S. Dey del centro de Estudios Hispanicos, Jawaharlal Nehru University, me llamó para la traducción y presentación en Hindi de la obra maestra y la biografia más autentica y más reconocida por los historiadores del mundo, escrita por el prestigioso autor venezolano Dr. Salcedo-Bastardo.

Este libro en Hindi no solo será la biografia del gran hombre, sino tambien una introducción para los lectores de la India, que desgraciadamente no conocen bien el continente de Latinoamerica, por razones comprensibles.

Esta es la octava edición del libro, que fue autorizado por el ministerio de Educación de Venezuela, como material de consulta para ser usado en los ciclos básicos y diversificado de Educación media. La obra ha sido traducida tambien en inglés y Frances.

No existe ningun diccionario de Español-Hindi todavia. Pero traducir desde español a Hindi es un verdadero placer y una buena experiencia, y más todavia cuando es ni más ni menos la vida de uno de los héroes más importantes de las americas. Suponemos que con la publicación del presente libro, Bolivar su vida, y la vida de un continente más desconocido por los lectores de la India, tendrá algun significado.

No es facil escribir sobre Bolivar, el libertador. El ha sido una inspiración para una gran parte de la america latina, su nombre está conmemorado en el de un país, Bolivia, de una moneda, y de varias provincias y ciudades. Era un hombre perfecto con una vida publica tan ejemplar y brillante. Para él, 'Libertad' no solo fue una mera palabra, sino una definición viva de la manera en que una sociedad, una nación debería organizarse. Su biografia tambien puede servir como manual de una buena politica, diplomacia y administración. Bolivar era un lider humanitario con unos ideales increibles en un continente donde hoy dia, hay maxima violación de los derechos humanos, que el luchador Bolivar habia soñado tanto. El no solo luchaba en las guerras de armas, sino tambien luchó contra la corrupción y el nepotismo. Un perfecto administrador y general nunca predicó ni el odio ni la muerte. Es muy importante saber que la idea de la violencia, fue aceptada por él, cuando era estrictamente necesaria.

PRAVEEN KUMAR KAPILA

Redactor y Traductor de la biografia Barcelona, España

संपादकीय

लातीनी अमेरिका भूमि के एक विस्तृत भू-भाग में व्याप्त एक महाद्वीप के साहस, गौरव, आक्रमण, संघर्ष, स्वतन्त्रता और विषम संस्कृतियों की रक्तमय गाथा है। समय के कालचक्र से 'इंडियन' समुदाय उभरा, जो पूर्व एशिया के आदिवासियों के अत्यन्त निकट थे। इंडियन वर्ग अपार संख्या में समकालीन लातीनी अमेरिका में उपस्थित है। यह अविस्मरणीय है कि इन के पूर्वजों ने पश्चिमी गोलार्द्ध मे तीन महान सभ्यताओं को जन्म दिया था-- (आजतेक, माया और इन्का)।

1492 में कोलम्बस की खोज के परिणाम स्वरूप लातीनी अमेरिका का संपर्क यूरोप से हुआ, विशेषकर स्पेन से। लेकिन यह लातीनी अमेरिका के लिए दुर्भाग्यपूर्ण सिद्ध हुआ। ठीक 300 वर्षों हेतु (1520-1820) लातीनी अमेरिका पर स्पेन का प्रभुत्व रहा। इन 300 वर्षों में महाद्वीप का निरंकुशता से शोषण किया गया। विडम्बनावश एक महान सभ्यता के वंशजों, असंख्य इंडियनों को मार दिया गया। प्रतिष्ठित संस्कृति का स्थान निर्धनता और दासता ने ले लिया।

1800 के आरम्भ से क्रान्ति की चिंगारियां दृष्टिगोचर होने लगीं। इन्हीं क्षणों में साहस, कर्मठता और आशा के स्रोत बन कर बोलीवार एक नए युग के निर्माता के रूप में मंच पर उपस्थित हुए। उन्होंने स्वतंत्रता-संघर्ष में प्राण डाल दिए। शक्तिशाली शत्रु की तुलना में उनको प्राप्त सुविधाएं नगण्य थीं लेकिन उनके भीतर स्वतंत्रता की ज्वाला धधक रही थी, जिसने अन्ततः शत्रु को अपनी लपेट में ले लिया। बोलीवार 200 से भी अधिक युद्धों में सम्मिलित हुए और प्रायः हर बार विजय ने उनका आलिंगन किया। उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य था अपनी मातृभूमि को मुक्त कराना और वह इसमें सफल रहे। पराधीनता की बेड़ियां टूट गईं।

बोलीवार एक युगपुरुष थे। जनमानस ने उन्हें बेहद प्रेम दिया। उन्हें 'मुक्तिदाता' कहकर सम्मानित किया। लेकिन बोलीवार एक महान राष्ट्रवादी से बढ़कर एक भविष्यवक्ता थे। उन्होंने नव राष्ट्र हेतु नयी सरकार के गठन से लेकर दासता-उन्मूलन तक प्रत्येक सुधार का प्रतिपादन किया। उनका समस्त जीवन लातीनी अमेरिकी एकता और विश्व-शांति तथा बंधुत्व को समर्पित था। उनका विश्वास था कि अमेरिका अपना क्रान्तिकारी उत्साह अफ्रीका तथा

एशिया तक पहुंचाकर शेष विश्व पर यूरोप का नियन्त्रण समाप्त कर सकता है। उनका लक्ष्य एक ऐसा संगठन प्राप्त करना था जो अभिनव था, जिसका लक्ष्य एक संयुक्त विश्व था।

प्रस्तुत रचना को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम भाग में लातीनी अमेरिका पर स्पेनिश आक्रमण और नियंत्रण तथा इसके विरुद्ध संघर्ष के इतिहास की सूक्ष्मता का विश्लेषण किया गया है। द्वितीय भाग में बोलीवार के जीवन, उनकी उपलब्धियों, संघर्ष में उनकी भूमिका और उनकी विचारधारा का विवरण है। तृतीय भाग में बोलीवार के बाद की लातीनी अमेरिकी परिस्थितियों की विवेचना की गई है तथा बोलीवार के विचारों और आदर्शों के महत्व पर डा. बासतार्दो ने प्रभावशाली और सर्वथा नवीन ढंग से वास्तविकता का मूल्यांकन करते हुए समकालीन विश्व समस्याओं का हल बोलीवार विचारधारा में ढूंढ़ने का प्रयास किया है। यह रचना न सिर्फ लातीनी अमेरिकी इतिहास और समाज के विद्यार्थियों के लिए है, अपितु प्रत्येक सजग नागरिक के लिए जो विश्व-शांति और बंधुत्व में विश्वास रखते हैं।

इसका महत्व

यह वर्ष बोलीवार का द्वितीय जन्म-शताब्दी वर्ष है। मुझे आशा है कि 'बोलीवार' का हिन्दी संस्करण हिन्दी पाठकों को बोलीवार और लातीनी अमेरिका के विषम आधार को समझने में लाभप्रद सिद्ध होगा। भारत और लातीनी अमेरिका, दोनों का संघर्षात्मक अतीत, जीवन-ढंग, सामाजिक परम्पराएं और वस्तुतः मूल आधार एक-दूसरे के बहुत निकट हैं। मुझे आशा हैं कि ये और निकट आएंगे और यह रचना इस महान कार्य हेतु एक सेतु सिद्ध होगी।

प्रवीण कुमार कपिला

दो शब्द

सिमोन बोलीवार का लातीनी अमेरिका में वही स्थान है जो गांधी
भारत में था। वह एक युगपुरुष थे। उन्होंने न सिर्फ एक राष्ट्र के लि
किया अपितु वह संपूर्ण महाद्वीप के लिए जिए। स्पेनिश उपनिवेशवाद
करने में वह प्रधान योद्धा थे। इस उपनिवेशवाद का विरोध करने वा
लोग भिन्न-भिन्न लातीनी अमेरिकी राष्ट्रों में थे और उन सब ने ब
का नेतृत्व स्वीकार किया। इस वर्ष 24 जुलाई को हम बोलीवार की
जन्म-शताब्दी मना रहे हैं।

भूमि-सुधार, शिक्षा, सामाजिक विषमताओं और कुरीतियों की
वर्ण और वर्ग-भेद की समाप्ति—इन सब में बोलीवार ने महत्वपूर्ण
दिया। बोलीवार की भावनाएं तृतीय विश्व में आज भी प्रभावशाली
सकती हैं। हालांकि लातीनी अमेरिका हमारे राष्ट्र से बहुत दूर है,
दूरियां सिर्फ भौगोलिक हैं, मानवीय रूप से हम समान है। हमारे रीति
भावनाएं एक-दूसरे के बहुत निकट हैं। लातीनी अमेरिका में भारत के
जानने को उत्सुक लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। स्पेनिश भाषा
से संबंधित अनेक पुस्तकें देखने को मिलती हैं जिनमें एक तरफ वेदों
तथा दूसरी तरफ जवाहरलाल नेहरू, महात्मा गांधी और रवीन्द्रना
आदि का वर्णन है। भारतीय सांस्कृतिक सम्बंध परिषद का उद्देश्य भ
लातीनी अमेरिका के बीच पारस्परिक संबंधों को नई दिशा देना है।

1981 में बोलीवार के देहांत के 150 वर्ष पूरे होने के अवसर पर
सांस्कृतिक संबंध परिषद ने एक गोष्ठी का आयोजन किया जिसमें इ
के लेखक डा० सालसेदो-बासतार्दो भी सम्मिलित थे। इसी अवसर प
की एक प्रमुख सड़क का नामकरण भी बोलीवार पर किया गया।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय सु

स्पेनिश-हिन्दी शब्दावली

Adelantado : आदेलानतादो : स्पेनिश अधिकारी, जो औपनिवेशिक लातीनी अमेरिका में स्पेनिश राजा के नाम पर प्रशासन करता था। इस पद को कार्यकारी, वैधानिक और न्यायिक अधिकार प्राप्त थे, जो किसी भी सैनिक गवर्नर को प्राप्त होते हैं।

Audiencia : औदिएनसिया : नगर परिषद।

Cabildo : काबिल्दो : नगर प्रशासन का संगठन।

Cacique : कासिके : इंडियन मुखिया।

Caudillo : कौदिल्लयो : 'नेता'। 19वीं शताब्दी में सैनिक नेताओं व तानाशाह के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाता था, विशेष रूप से स्वतंत्रता-संग्राम के दिनों में। बाद में इस शब्द का प्रयोग राजनीतिक मुखिया के पद, विशेष रूप से तानाशाहों के लिए प्रयोग किया गया। स्पेन के इस शताब्दी के सबसे बड़े तानाशाह, फ्रांको को भी इसी नाम से अभिहित किया जाता था।

Colombia : कोलम्बिया : बोलीवार के दिनों में आजकल के कोलम्बिया, वेनेजुएला, एक्वादोर और पनामा नाम के देशों के समूह को कोलम्बिया कहा जाता था। नाम ग्रान कोलम्बिया या ग्रेट (महा) कोलम्बिया का प्रयोग आजकल के कोलम्बिया को भिन्न करने के लिए किया गया है।

Consulado : कोंसूलादो : व्यापारी समूह और उनका न्यायालय।

Criollo : करीयोल्लो : स्पेनिश मूल के वे व्यक्ति जिनका जन्म लातीनी अमेरिका में हुआ।

Encomienda : एनकोनिएन्दा : इंडियन आदिवासियों द्वारा कर के रूप में राशि चुकाई गई।

Hacienda : हासिऐन्दा : विशालकाय खेतिहर भूमि के टुकड़े।

Llanos : ल्यानोस : घास के मैदानी क्षेत्र। वेनेजुएला में इन मैदानी क्षेत्र के वासियों को (ल्यानेरोस) कहा जाता है।

Mantuanos : मानतुआनोस : यूरोपियन मूल के धनी परिवारों के लिए वेनेजुएला में प्रयोग किया गया शब्द।

Mestizo : मेस्तीखो : सफेद या स्पेनिश मूल और इंडियन रक्त का मिश्रण।

Pardo : पारदो : मिश्रित वर्ण के लोगों के लिए प्रयुक्त शब्द।

Zambo : साम्बो : इंडियन मूल और नीग्रो मूल का मिश्रण। □

पुस्तक में लिखित प्रमुख व्यक्तियों और स्थानों के नामों की शब्दावली

Angostura : अंगोस्तुरा : वेनेजुएला का एक शहर जहां 1819 में बोलीवार ने स्वतंत्रता आंदोलन के लिए एक संगठित प्रयास किया था, और इसका नाम है : सियुदाद बोलीवार (Ciudad Bolivar)·

Antioquia : आन्तीओकिया : उत्तर-पश्चिमी कोलम्बिया का एक राज्य।

Apure : अपूरे : दक्षिण-पश्चिम वेनेजुएला का एक राज्य।

Aragua : आराग्वा : काराकास से जुड़ा वेनेजुएला राज्य।

Arequipa : आरेकिपा : प्रशांत तट पर पेरू का एक नगर।

Aroa : आरोआ : एक शहर, अब वेनेजुएलन राज्य इराकुई का एक भाग।

Asunción : आसुनसियोन : पाराग्वे देश की राजधानी।

Ayacucho : आयाकुचो : दक्षिण-केंद्र पेरू का एक शहर-राज्य जहां 1824 में हुए युद्ध के बाद लातीनी अमरीका, स्पेनिश अधिकार से मुक्त हुआ।

Barinas : बारीनास : मैदानी प्रान्त में वेनेजुएला का एक राज्य।

Bello, Andrés (1781-1865) : आंदरेस बैल्लो : शिक्षाशास्त्री, विधि-विशेषज्ञ, व्याकरणशास्त्री और साहित्यकार।

Bogotá : बोगोता : कोलम्बिया की राजधानी ; औपनिवेशिक काल में इसे सांता-के-दे बोगोता के नाम से जाना जाता था।

Bolivia : बोलीविया : देश का नाम। पुराना नाम : 'आल्तो पेरू' बोलीवार के प्रति सम्मान का एक प्रतीक।

Bomboná : बोम्बोना : 1822 की एक लड़ाई का स्थान।

Boves, José Tomas (1782-1814) : खोसे तोमास बोवेस : स्पेन में जन्मे, वेनेजुएला में शाही गुरिल्लाओं का नेता।

Boyacá : बोयाका : तुन्खा (कोलम्बिया) के दक्षिण-पश्चिम में स्थित एक शहर, जहां 1819 में एक निर्णायक युद्ध हुआ।

Briceño Méndez, Pedro : पेदरो मेन्देख़ ब्रिसेनो : वेनेजुएला के स्वतंत्रता आंदोलन के एक नेता का नाम।

Bucaramanga : बुकारामांगा : कोलम्बिया का एक शहर, जहां बोलीवार कुछ समय रहे।

Callao : काल्लाओ : पेरू की बन्दरगाह।

Carabobo : काराबोबो : वेनेजुएला का एक राज्य।

Caracas : काराकास : वेनेजुएला की राजधानी ; औपनिवेशिक काल में 'सांतियागो दे लेयोन दे काराकास' के नाम से जानी जाती थी।

Cartagena : कारताख़ेना : कोलम्बिया का एक प्रसिद्ध बन्दरगाह-शहर।

Chichén Itzá : चिचेन इत्सा : मैक्सिको में उत्तर-पश्चिम चुकातान राज्य में पुरातत्व-महत्व का एक स्थान, जो एक महत्वपूर्ण माया-वंश व जाति का केन्द्र था।

Cochabomba : कोचाबाम्बा : बोलीविया का एक शहर।

Copān : कोपान : पश्चिमी होंडूरास में माया-जाति का एक शहर।

Coro : कोरो : वेनेजुएला के पश्चिमी तट पर स्थित एक नग'।

Cuzco : कुसको : पेरू का एक शहर, इन्का साम्राज्य की राजधानी।

Flores, Juan José (1801-1864) : फ्लोरेस ख़ुआन ख़ोसे : बोलीवार की सेना का एक अधिकारी ; तत्पश्चात् एक्वादोर के राष्ट्रपति।

Gran Colombia : महा कोलम्बिया : 1819 में स्थापित कोलम्बिया, वेनेजुएला, एक्वादोर और पनामा देशों का राजनीतिक संगठन, जो 1830 में विभाजित हो गया।

Gual, Manuel : मानुएल गौल : वेनेजुएला के स्वाधीनता संग्राम के एक नेता।

Gual, Pedro : पेदरो गौल : स्वतंत्रता के पश्चात के एक वेनेजुएलन राजनीतिज्ञ।

Guárico : ग्वारिको : मध्य-वेनेजुएला का एक राज्य।

Guayana (or Guaiana) : ग्वाइयाना : वेनेजुएला का एक राज्य (वर्तमान में इसे बोलीवार राज्य के नाम से जाना जाता है।

Guayaquil : ग्वायाकिल : एक्वादोर देश का एक महत्वपूर्ण शहर व बन्दरगाह।

Guyas : गुआयास : एक्वादोर की एक नदी।

Güigüe : गुईगुऐ : वेनेजुएला के काराबोबो राज्य का एक नगर।

Guyana : गियाना : भूतपूर्व नाम : ब्रिटिश गियाना ; वर्तमान में उत्तरी-पूर्वी दक्षिण अमेरिका में 'वैस्ट इंडीज़' के नाम से प्रसिद्ध एक स्वतंत्र गण-राज्य।

La Paz : ला पाज़ : शाब्दिक अनुवाद, शांति : बोलीविया देश की राजधानी।

La Victoria : ला विक्तोरिया : वेनेजुएला का एक नगर।

León : लेओन : निकाराग्वा का एक राज्य ; औपनिवेशिक काल में निकाराग्वा की राजधानी।

Magdalena : मागदालेना : कोलम्बिया की एक नदी ।

Maracaibo : माराकाइबो : वेनेजुएला का एक नगर व राज्य ।

Margarita : मारगारिता : काराकास से करीब 200 कि०मी० दूर एक महत्वपूर्ण द्वीप ।

Mariño Santiago (1788-1854) : सानतिआगो मारिनो : वेनेजुएलन स्वतंत्रता संग्राम के नेता ।

Miranda, Francisco de (1750-1816) : फ्रंसिस्को दे मिरांदा : वेनेजुएलन स्वतंत्रता के एक महत्वपूर्ण सेनानी और प्रथम वेने० गणराज्य के नेता। 1812 में वह स्पेनिश सेनाओं से भिड़े और विजय प्राप्त की, तत्पश्चात स्पेनी सेना ने उन्हें गिरफ्तार कर स्पेन भेज दिया, वहां 1816 में उनकी मृत्यु हुई ।

New Granada : नव ग्रानादा : 1717 में स्थापित । इसका भूतपूर्व नाम कुन्दिनामारका (वर्तमान नाम "कोलम्बिया गणराज्य") ।

New Spain : नव स्पेन : स्पेनिश औपनिवेशिक काल में वर्तमान समय का मैक्सिको, केन्द्रीय अमेरिका, संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिण प्रांत, अमेरिकी द्वीप व फिलीपिन द्वीप समूह का नाम ।

Ocaña : ओकान्या : कोलम्बिया में सान्तान्देर राज्य का एक नगर ।

O'Higgins, Bernardo (1778-1824) : ओ' हिगिन्स बरनारदो : चिले की स्वाधीनता के नेता और चिले के उच्चतम् तानाशाह (1817-1823) ।

Orinoco : ओरीनोको : ब्राजील और वेनेजुएला की सीमा पर स्थित एक नदी ।

Oriente : ओरिएन्ते : उत्तरी-पूर्वी वेनेजुएला के विभिन्न प्रान्तों का एक सामान्य नाम ।

Páez, José Antonio : पैस, खोसे अन्तोनियो : वेनेजुएला स्वाधीनता संग्राम के एक मुख्य नेता । 1829 में उन्होंने वेनेएजुला को "महा कोलम्बिया" से अलग करने के लिए एक आंदोलन छेड़ा । तीन सत्रों के लिए वह वेनेजुएला के राष्ट्रपति रहे और 1861 से 1863 के तीन वर्षों में तानाशाह । इसके बाद उन्हें वेनेजुएला से निष्कासित कर दिया गया और अंतिम 10 वर्ष न्यूयार्क में बीते ।

Palacio Fajardo, Manuel : पालासियो फाखारदो, मानुएल : वेनेजुएलन स्वतंत्रता काल के एक देश-प्रेमी और लेखक ।

Palacios, Esteban : ऐस्तेबान पालासियोस : बोलीवार के चाचा और उनके पालक-पोषक, जो कुछ समय माद्रिद में रहे ।

Peru, Viceroyalty of : पेरू की वायसरायल्टी : जिसकी स्थापना 1542 में हुई, जिसमें लगभग सारा वर्तमान दक्षिण-अमेरिका सम्मिलित था (वेनेजुएलन तटीय क्षेत्र छोड़कर)। 1739 में वर्तमान कोलम्बिया, एक्वादोर और पनामा और 1776 में अर्जेंटीना, उरुग्वे, पारागुवे, व पूर्वी बोलीविया इससे विभाजित हुए।

Juan Bautista Picornell : ख़ुआन बौतिस्ता पिकोरनेल : स्पेनिश विद्वान, जिन्होंने मानुएल गौल और ख़ोसे मारिया एस्पान्या के साथ मिलकर वेनेजुएला को स्पेनी चंगुल से छुड़ाने के लिए आज़ादी का आंदोलन छेड़ा।

Puerto Cabello : पुयेरतो काबेल्लो : वेनेजुएला का एक शहर व बन्दरगाह।

Quito : कित्तो : वर्तमान एक्वादोर की राजधानी। औपनिवेशिक काल में एक्वादोर को कित्तो राज्य के नाम से जाना जाता था।

Recife : रेसिफे : पेरनाम्बू को, जामील का एक नगर।

Revenga, José Rafel : ख़ोसे राफेल रेवेंजा : वेनेजुएलन देशप्रेमी व राजनीतिज्ञ, (स्वतंत्रता काल)

Rivadavia, Bernardino (1780-1845) : रीवादाविया : अर्जेंटीना गणराज्य की आधारशिला के साक्षी व 1826-27 में अर्जेंटीना के राष्ट्रपति।

Rodriguez, Simón (1771-1851) : सिमोन रोदरीगेज़ : बोलीवार के निजी अध्यापक।

Rodriguez, Francia, José Gaspar (1776-1840) : ख़ोसे गासपार रोदरीगेज़ फ्रांसिया : पाराग्वे के उच्चतम् तानाशाह।

Roscio, Juan Germán (1769-1821) : ख़ुआन ख़ेरमामान रोसियो : स्वतंत्रता काल के वेनेजुएलन देश-प्रेमी व राजनीतिज्ञ।

San Martín, José de (1778-1850) : ख़ोसे दे सान मारतिन : अर्जेनटीना व दक्षिणी अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी सेनानी। पेरू की स्वतंत्रता के उपरान्त उन्होंने पेरू की सत्ता व सेना की बागडोर संभाली। 1822 में ग्वायाकिल में बोलीवार के साथ एक भेंट के पश्चात उन्होंने पेरू के संरक्षक पद से इस्तीफा दे दिया और 1824 में उन्होंने दक्षिण अमेरिका छोड़ा। नई दिल्ली की चाणक्यपुरी (कूटनीतिज्ञ-उपनगर) में सान मारतिन के नाम पर एक मुख्य सड़क।

Santander, Francisco de Paula (1792-1840) : फ्रांसिस्को दे पाऊला सान्तान्देर : स्वतंत्रता काल के कोलम्बिया के सेनाध्यक्ष व राजनीतिक अध्यक्ष। 1821-1827 में "महा कोलम्बिया" के उप-राष्ट्रपति। 1827 में जब बोलीवार ने उन्हें पदच्युत किया तो सान्तान्देर

बोलीवार के कट्टर दुश्मन बन गए। 1828 में बोलीवार पर घातक हमले के प्रयास के बाद उन्हें निष्कासित किया गया। 1832-36 में पुन: कोलम्बिया के राष्ट्रपति।

Sucre, Antonio José de (1795-1830) : सुकरे, अन्तोनियो खोसे दे : वेनेजुएलन सेनाध्यक्ष—कई युद्धों में विजय प्राप्त। 1826-1828 में बोलीविया के संविधानात्मक राष्ट्रपति। 1830 मे हत्या।

Tacubaya : ताकूबाया : मैक्सिको का एक शहर।

Teotihuacán : तेओतीहुआकान : मक्सिको नगर से 20 कि.मी. दूर उत्तर में पुरातत्व महत्व का एक स्थान।

Tiahuanaco : तीयाहुआनाको : बोलीविया में तितिकाका झील (दुनिया की सबसे ऊँचाई पर स्थित झील) के दक्षिणी तट पर पुरातत्व महत्व का एक स्थान।

Tikal : तीकाल : ग्वातेमाला (केन्द्रीय-अमेरिका) में मायान-पुरातत्व महत्व का स्थान।

Tucumán : तुकुमान : वर्तमान अर्जेंटीना का एक राज्य।

Tuy : तुई : वेनेजुएला के मिरांदा राज्य का एक उपजाऊ राज्य।

Urdaneta, Rafael (1789-1845) : राफैल उरदेन्ता : वेनेजुएलन देश-भक्त। बोलीवार के नजदीकी सैनिक सहकारियों में मुख्य।

Urubamba : उरूबाम्बा : पेरू के राज्य का एक नगर।

Uxmal : उक्समाल : मैक्सिको में पुरातत्व महत्व का एक स्थान। □

हिन्दी संस्करण में प्रयुक्त विभिन्न चित्रों की सूची

1. बोलीवार का लातीनी अमेरिका

एक मध्यवर्ती समाज

बोलीवार का राजनीतिक कार्यक्षेत्र दक्षिण अमेरिका के उत्तर व पश्चिम में, मध्य अमेरिका की दक्षिणी सीमा से लेकर चिले व अर्जेंटीना के सीमा-प्रान्तों तक; और प्रशान्त महासागर से होते हुए एन्डीज़ (आन्देस) पर्वत-मालाओं को पार कर ब्राज़ील की अमेज़न-प्रान्त की सीमाओं और अटलांटिक व कैरिबियन सागर के तटीय छोरों तक लगभग 5,000,000 वर्ग किलोमीटर के विशाल दायरे में फलीभूत हुआ।

इस विशाल क्षेत्रफल में प्रकृति की जिन विविधताओं से परिचय संभव है कदाचित् वह विश्व के किसी अन्य महाद्वीप में मिलना दुर्लभ है। पर्वत, घाटियां, मैदान, ओरीनोको, मागदालेना, गुआइयास और तुम्बेस जैसी नदियां, घने जंगल जिनमें प्रविष्ट होना असंभव है, और कठोर मरुस्थल, धरातल, मौसम में स्पष्ट भिन्नता का परिचय होता है। अमेरिका महाद्वीप में हर प्रकार की वन-सम्पदा व पशु-धन सुलभ है।

अमेरिका की कोलम्बस द्वारा खोज के समय महाद्वीप की विशिष्टता उसके जन-समुदाय व संस्कृति की विविधता थी। अमेरिकी समाज को तीन मुख्य भागों में विभाजित किया जा सकता था : (1) अति-विकसित सभ्यता और सर्वाधिक जनसंख्या, (2) पहले की तुलना में अल्प-विकसित व अल्प-सभ्य समाज और (3) विशाल भू-क्षेत्रों में फैले किन्तु बिखरे जन-समुदाय।

पहली अति-विकसित सभ्यता और सर्वाधिक जनसंख्या से युक्त इस विशाल भू-क्षेत्र के, जो मैक्सिको से लेकर उत्तरी चिले तक जाता था, दो प्रमुख प्रभाग हैं : प्रथम उत्तर में, मैक्सिको से लेकर निकारागुआ तक; और दूसरा दक्षिण में, जिसमें एकुआदोर, पेरु, बोलीविया और अर्जेंटीना का उत्तरी भाग था। पहले प्रभाग में आजतेक जाति ने अति-विकसित सभ्यता को जन्म दिया जो स्पेनी नाविकों के क्रूर विध्वंस के बावजूद दुनिया को पिछले लगभग पांच सौ सालों से चकित कर रही है। ईसा के एक हज़ार वर्ष पूर्व माया जाति का इस भू-क्षेत्र पर प्रभुत्व था और एक विकसित व सभ्य जाति ने एक अति-सशक्त सभ्यता का उत्थान किया। उन्होंने लेखन-कला का आधुनिकीकरण

किया और अंक-गणित व अंतरिक्ष विज्ञान में अभूतपूर्व ज्ञान का परिचय दिया। उनकी अति-विकसित सभ्यता व संस्कृति के स्पष्ट चिन्ह कोपान, पोलेन्के, चिचेन-इत्जा, तुलुम, उक्समाल और मायापान नगरों में मिल सकते है। माया जाति के बाद विभिन्न समूहों व समुदायों जैसे तोलतेकास, जापोतेकास और चिचीमेकास आदि ने प्रभुत्व प्राप्त किया। अंत में आजतेकास जाति के लोगों ने 1325 में मैक्सिको (आधुनिक राजधानी, जो वर्तमान में दुनिया का सर्वाधिक जनसंख्या वाला महानगर है) के वास्तविक केन्द्र, तेनोचतितलान की आधार-शिला रखी।

इसी प्रकार दक्षिणी-प्रभाग मे इन्का जाति के लोगों ने विभिन्न सभ्यताओं का उतार-चढ़ाव देखा। और वहां भी कई नगरों के अवशेष, जैसे पेरु का प्रसिद्ध शहर कुचको, आधुनिक दुनिया को आज भी चकित कर रहे है। इस क्षेत्र में दो महत्वपूर्ण केन्द्र दुनिया की सबसे ऊंची झील तितिकाका के आसपास थे—तियाहुआनाको और चाविन।

लातीनी अमेरिका की भिन्न-भिन्न सभ्यताओं की विभिन्न जातियों का ह्रास स्पेनिश फौजों ने किया और प्रथम नाविक कोलम्बस के अनुसार स्पेनिश जहाज "इंडिया" या भारत में पहुंचे थे। स्पेनिश नाविक व फौजी वहां के नागरिकों को आज भी "इंदिया" या "इंडियन" कहकर पुकारते है। कोलम्बस द्वारा की गई ऐतिहासिक गलती कभी ठीक नही की गई।

इन्का सभ्यता के केचुआ भाषा बोलने वाले इंडियनों ने तितिकाका झील के आसपास एक महत्वपूर्ण साम्राज्य की स्थापना की जिसका नेतृत्व इन्काओं द्वारा किया गया था। दक्षिण अमेरिका की सबसे अधिक महत्वपूर्ण व सभ्य संस्कृति- इन्का सभ्यता—का नामकरण, नेतृत्व करने वाले इन्हीं इन्काओं के नाम से हुआ, जो तकनीकी दृष्टि से मायास और आजतेकास से कम विकसित थे परन्तु सामाजिक दृष्टि से अधिक आधुनिक थे। ये भी स्पेनिश फौजों की क्रूरता के शिकार बने और तबाह हो गए।

मैक्सिको व पेरु में केंद्रित इन दो अत्यधिक विकसित सभ्यताओं के बीच एक सेतु की तरह एक और इंडियन सभ्यता थी जिसे चिबचा के नाम से जाना जाता है। यह दूसरी श्रेणी की सभ्यता थी। बहुत संकरी बसी इस सभ्यता की जनसंख्या विकसित स्तर की कृषि पर निर्भर थी। किमबाया इंडियन समुदाय के सुनार व कारीगर वर्ग का कला-कौशल उनके उत्कृष्ट स्तर का परिचायक है। इस समुदाय ने इन्का व माया जाति की तरह विशालकाय इमारतों का कोई विशेष चिन्ह नहीं छोड़ा।

इस द्वितीय श्रेणी के समुदायों में कैरिबियन सागर के 'ताइनोस' और चिले के 'आराउकानिआन्स' चिबचा जाति से कम विकसित थे। अमेरिका के

शेष भागों में निर्धनता, पिछड़ापन और कभी न समाप्त होने वाले युद्ध थे। ये लोग खानाबदोश थे और भाषा, तौर-तरीकों व रीति-रिवाज़ों में भिन्न थे।

कोलम्बस के आगमन से पूर्व के महाद्वीप के सामाजिक, राजनीतिक वातावरण में आजतेकास समुदाय में सैनिक राजकीय संरचना के चिन्ह थे और समाज भद्र, वैभवशाली लोगों व सामान्य लोगों में विभाजित था। एक केन्द्रीय, अनियंत्रित सत्ता इन्का के जन-समुदाय पर शासन करती थी। 'चिबचास' 'ताइनोस', 'आराउकानिआन्स', 'तिमोतो-कुईकास', 'तूपीस', 'गुआरानीस' व 'कारीबस' और तीसरी श्रेणी के कई समुदायों व आजतेकास और इन्कास में एक धारणा प्रचलित थी कि 'व्यक्ति' महत्वहीन है—विकसित जटिल समुदायों में राज्य की शक्ति और वैभव के सम्मुख या आदिम जाति के समुदायों में कासिके (मुखिया) के तानाशाह अधिकारों के सामने 'व्यक्ति' कुछ भी नहीं था। वह राजा या मुखिया की सम्पत्ति था और विजयी को लूट के माल के साथ सौंप दिया जाता था। कोलम्बिया-पूर्व के दक्षिण अमेरिका में दासता, नर-भक्षण व मानव-बलि प्रचलित थे।

बोलीवार के कार्यक्षेत्र में अमेरिका की तीनों श्रेणियों का प्रतिनिधित्व था जिसमें वर्तमान पनामा गणतंत्र, कोलम्बिया, वेनेजुएला, एकुआदोर, पेरु और बोलीविया सम्मिलित थे। इस दृष्टि से इस का गोलार्द्ध में एक केन्द्रीय या मध्यवर्ती स्थान था। उपनिवेशकाल के वेनेजुएला में, जिसमें बोलीवार का जन्म हुआ, जातियां मिश्रित थीं, यद्यपि इंडियन तत्व बहुत कम था। वहां व्याकुल कर देने वाली देशी इंडियन जनसंख्या नहीं थी, जैसा कि मैक्सिको और पेरु में था, पर न ही वह संपूर्णतः अनुपस्थित थे, जैसा कि उन क्षेत्रों में देखने को मिलता है जहां इंडियन पूर्णतः नष्ट कर दिए गए थे और मात्र अश्वेत व श्वेत जातियां मिश्रण के लिए शेष रह गई थीं। सतर्क छानबीन से प्रकट होता है कि विजय की शुरुआत में 1,000,000 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में 350,000 से ज्यादा निवासी नहीं थे। अनेक कारणों से इस इंडियन जनसंख्या व स्पेनवासियों के मध्य एक दीर्घ और रक्तमय संघर्ष हुआ।

वहां एकता थी ही नहीं जिससे स्पेनवासियों की राजधानी या शक्ति-केन्द्र पर कब्ज़ा करने और इस तरह सारे क्षेत्र व इसके निवासियों पर नियंत्रण पाने में मदद मिलती। इंडियन अनेक गुटों में विभाजित थे; बोलियों के अतिरिक्त कम से कम पंद्रह भाषा-परिवार इस क्षेत्र में पाए गए हैं जिनमें आधुनिक मानव विज्ञान ने पूर्व-कोलम्बिया काल के दस सांस्कृतिक क्षेत्रों का पता लगाया है। इंडियन समुदायों पर नियंत्रण पाने का अर्थ था— अलग-अलग समुदायों पर एक-एक कर अधिकार किया जाए या उनका अस्तित्व ही मिटा दिया जाए। इसलिए वेनेजुएला में विजय शीघ्र व रक्तविहीन न हो सकी।

यह एक युद्ध कम और नरसंहार ज्यादा था। इंडियन समुदाय में अधिकांश संख्या 'करीबस' की थी जो साहसी योद्धा थे। लेकिन आन्देन क्षेत्र में तिमोतो-कुईकास को छोड़कर अधिकांश इंडियन समुदाय का सांस्कृतिक स्तर गोलार्द्ध में बहुत नीचा था। यद्यपि इसके बड़े भाग को स्पेनियों ने नष्ट कर दिया था फिर भी इंडियन समुदाय संघर्ष से पूरी तरह गायब नहीं हुआ और इसने जातीय मिश्रण के लिए एक आधार का काम दिया, जिसने वेनेजुएला के लोगों को जन्म दिया। इंडियन समुदाय की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक व जैविक विशेषताओं को हम गुणात्मक व मात्रात्मक कैसे भी परिभाषित करें, ये उन जातियों को सौंप दी गईं जो श्वेत व श्याम वर्ण जातियों के साथ संसर्ग से उत्पन्न हुईं।

बोलीवार की जन्म-भूमि पर उपस्थित इंडियन संस्कृतियों की विविधता को महत्ता देना उपयुक्त होगा। 'वेनेजुएलन इंडियन' जैसी कोई बात नहीं थी। कुछ इंडियन थे जिनके शारीरिक और आनुवंशिक चरित्रों व संस्कृति और भौगोलिक वितरण में प्रभावशाली अंतर था। त्वचा के रंग में, आकार में, शारीरिक ढांचे में, आंखों और होंठों में विभिन्नताएं थीं। यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इस विविधता का कारण खोज से पहले का जातीय मिश्रण था।

स्पेनवासी जो वेनेजुएला में पहुँचे, अपने साथ एशिया माइनर और यूरोप, साथ ही अफ्रीकी जातियों के चिन्ह लाए, जिन्हें अरब विजयी अपने साथ आइबेरियन पेनीनसुला तक लाए। स्पेनवासियों में लगभग 16 विभिन्न जातियों का मिश्रण था। इसके अलावा सिर्फ कासतिले के लोग ही नहीं आए थे बल्कि अरागोन, अन्दालूसिया, एक्सतरेमादूरा और लेयोन और बाद में बासके कन्ट्री और कातालोनिया के लोग भी आए। स्पेनवासियों के दलों में महिलाएं शामिल नहीं थीं। अंतर्जातीय संसर्ग आम बात थी। वेनेजुएला में स्पेनिश 'कोनकिस्तादोरेस' की संख्या बहुत कम थी; अनुमान लगाया जाता है कि कोलम्बस के बाद के पहले 100 वर्षों में 5,000 से अधिक लोग नहीं आए। इस गुट को, जो इंडियनों की संख्या की तुलना में बहुत छोटा था, राजनीति, भाषा और धर्म में, सांस्कृतिक एकता व तकनीकी क्षेत्र, विशेषकर हथियारों में प्रधानता के लाभ प्राप्त थे। इंडियनों और स्पेनवासियों के मेल के उत्पादन ने अपना स्वर स्पेन व पश्चिमी सभ्यताओं से लिया। 'इसके प्रतीक', जैसा कि एक लेखक इंगित करते हैं, 'अफ्रीकी मूर्तियां या इंडियन प्रतीक चिन्ह नहीं थे। इसके प्रतीक स्पेनिश प्रतीकों के व्यापक अनुवाद थे। ऐतिहासिक शब्दों में, हम स्पेनिश विश्व के उद्गम का प्रतिनिधित्व करते हैं।'[1]

अफ्रीकियों को लेटिन अमेरिका में आने के लिए बल-प्रयोग से विवश किया गया। वेनेजुएला में लाए गए नीग्रों की संख्या भी अपेक्षाकृत कम थी : पहले 100 वर्षों में लगभग 10,000 दासों की एक बड़ी संख्या को लाने के

लिए आर्थिक या कोई अन्य कारण नहीं थे। 'जाति' के विवादास्पद प्रश्न के संदर्भ में विशेषज्ञों की धारणा है कि अश्वेत जातियां वे है जो अधिकतम विभिन्नताएं प्रदर्शित करती हैं और यह विविधता अमेरिका के बल प्रयोग से किए जा रहे आप्रवास से सिद्ध होती हैं। पुन: यह कहना उपयुक्त होगा कि न सिर्फ शारीरिक और आनुवंशिक अंतर थे बल्कि इनसे भी ज्यादा सांस्कृतिक विभिन्नताएं थीं।

यह मिश्रित पृष्ठभूमि वेनेजुएला में जितनी स्पष्टता के साथ देखी जा सकती है संभवत: पूरे अमेरिका में और कहीं नहीं, और जब हम बोलीवार के कार्यों का अध्ययन कर रहे है तो हमें यह बात याद रखनी चाहिए। कोन-तिक्की जैसे अभियानों ने यह प्रदर्शित किया है कि ऐसे इंडियन थे जिनमें एशियाई तत्व विद्यमान थे और संभवत: जिन पर पोलेनेसियन प्रभाव भी था जो पैसेफिक पार के संपर्कों से आया। स्पेनवासी अपने साथ यूरोपियन लोगों, साइबेरियनों, लिगुरियानों, सेल्त के लोगों, रोमनों, बासकों, ग्रीकों, जर्मेनिक लोगों, विसीगोथों, स्वावियानों और वन्दालों के चिन्ह लाए। एशिया माइनर भी आया जिसमें फोनेसियनों, यहूदियों, अरबों और अफ्रीका के चिन्ह थे। अफ्रीका से कारतेज, मिश्र, लीबिया, टयुनीशिया, अलजीरिया, मोरक्को और कांगो के लोगों के चिन्ह थे। बान्तु, सुडानीस और योरुबास के लोग भी अफ्रीका से आए—अपनी संस्कृति से कटे हुए और अपमानजनक दासता के शिकार।

ये सब जातियां और संस्कृतियां वेनेजुएला की भूमि पर एक हो गईं जो एक बार आंतरिक आप्रवास की गहमा-गहमी का केन्द्र भी रह चुकी थीं, क्योंकि इस क्षेत्र ने अनेकों समुदायों को अपनी तटसीमाओं से गुज़रते देखा था। खोज के बाद जातियों का मिश्रण आरम्भ हुआ जिसने एक अत्यंत विविध व पूर्णत: मिश्रित जाति को जन्म दिया। जातियों के प्रति मिश्रण के इस समर्थनात्मक मुद्रा का प्रमाण हमबोल्दत की अत्यंत महत्वपूर्ण घोषणा से मिलता है। 1800 के करीब, यानी उस प्रक्रिया के आरंभ के 300 वर्षों के बाद, जिसने 350,000 निवासी इंडियनों, 5,000 स्पेनवासियों और 10,000 अफ्रीकियों में से एक नए मानव की रचना करनी थी, उस वक्त वेनेजुएला में 800,000 निवासी थे। हमबोल्दत का कहना है कि इनके आधे, जो 400,000 से कम नहीं थे, मिश्रित जातियों के थे वे न स्पेनवासी, न इंडियन और न अफ्रीकी थे। एक समान प्रक्रिया लेटिन अमेरिका के दूसरे भागों में घट रही थी। वहां भी जातियों के मिश्रण का नियम था लेकिन अधिकांशत: मिश्रण में इंडियन तत्व का आधिक्य था, और या इंडियनों का अस्तित्व ही मिट जाने पर व आर्थिक कारणों से विशाल नीग्रो जनसंख्या का बहुमत हो गया। वेनेजुएला में एक संतुलित मिश्रण था जिस कारण बोलीवार के देश ने जनसंख्या के प्रश्न और

सांस्कृतिक चरित्रों के संदर्भ में एक मध्यवर्ती राज्य का प्रतिनिधित्व किया।

प्रारंभिक वर्ष

जैसा कि कह चुका हूं, वेनेजुएला की स्थिति प्रारंभिक कबीलों जैसी थी जो मैक्सिको और पेरु के विशाल समाजों की परिस्थितियों से भिन्न थी जिन्होंने साम्राज्यवादी विचार का संक्षिप्त निरूपण किया था। शायद किसी भी समुदाय में 40,000 या 50,000 से ज्यादा इंडियन नहीं थे, और यह स्मरणीय है कि सिर्फ भाषा की दृष्टि से ही कम से कम 15 भाषा-परिवारों को पहचाना जा सकता है। सामाजिक और राजनीतिक विघटन, पूर्व-कोलम्बियन अमेरिका व पुर्तगाली हिस्से का भाग बन चुका था। समुदाय या कबीले की परिस्थितियां आदिमकालीन थीं। कबीले का शासक मुखिया था जिसे असीमित अधिकार प्राप्त थे। लेकिन यह प्रबंध स्पेनिश 'कानकिस्तादोर' के लक्ष्यों के प्रतिकूल था जो न तो उन सामाजिक स्थापनाओं से शिक्षा लेने को तैयार था जिन्हें वह पीछे छोड़ आया था और न ही अपने से भिन्न व निम्न स्तर का जीवन अपनाने के लिए तैयार था। इसके विपरीत वह अपने विचारों को थोपने और संपूर्णत: प्रभावित करने के विचार के साथ आया था। शुरु से ही वह स्पेनिश विजयी प्रायद्वीपीय प्रबंध को लातीनी अमेरिका में लाने को दृढ़ था। निर्णय उसके हाथ में था और उसका व्यवहार नकल और आदत की महत्वपूर्ण शक्तियों के हाथों बाध्य था। संक्षेप में, उसके लिए वह सब स्थापित करना आसान था जो वह पहले ही जानता था और जिससे वह स्पेन से ही परिचित था।

प्रशासन तब स्पेनिश था जिसमें पेनीनसुला के पुराने स्थापित विश्व और अमेरिका में जन्म ले रहे विश्व के बीच के तुलनात्मक अंतरों तथा दोनों महाद्वीपों की भिन्न परिस्थितियों के कारण परिवर्तन आए। माद्रिद या सेविले जैसे शहरों या फिर नए शहरों, जैसे कुमाना, कोरो या सान्तीआगो दे लेओन् दे काराकास के लिए पूर्णत: एक जैसा प्रशासन संभव नहीं था। पहले वर्षों में, लगभग 16वीं शताब्दी में, एक आदिवासीय सामाजिक ढांचा परिस्थितियों द्वारा वशीभूत हो, उभरा। स्पेन का लक्ष्य संपूर्ण नियंत्रण था ताकि अमेरिकी समुदाय पर वह अपनी प्रशासनिक प्रक्रियाएं थोप सके।

निवासी इंडियनों के समस्या-जनक प्रतिरोधों को काबू कर सारे क्षेत्र पर नियंत्रण पाना प्रथम और मुख्य लक्ष्य था जिसकी पूर्ति सफल आन्दोलनों के गठन से हुई। स्पेनिश सम्राट धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में असीम शक्ति दिखाने के बावजूद अमेरिकी अभियान का धन-प्रबंध अकेले सार्वजनिक कोष से करने की स्थिति में न था। निजी-धन सहयोग की आवश्यकता

थी और सम्राट को उनसे 'कापीतुलासियोनेस' के रूप में समझौता करना पड़ा—अमेरिकी भूमि के स्वामित्व के लिए बने कानून का आधार जिसने विजय और उपनिवेश बनाने के इन खतरनाक अभियानों में भाग लेने वालों के लिए कर्त्तव्यों तथा पुरस्कारों की स्थापना की। हर आंदोलन में जीवन के प्रत्येक पक्ष से आए लोगों का मुखिया 'अदेलान्तादो' था। 'कापीतुलासियोनेस' की शर्तों द्वारा सम्राट ने उसे राजनीतिक, प्रशासनिक, सैनिक और न्यायिक शक्तियां सौंप दीं। उसे अपनी सेनाओं को भूमि और इंडियन भेंट देने का अधिकार था। वह नियम बना सकता था, कर थोप सकता था और अपना सिक्का भी ढलवा सकता था। एक व्यक्ति के हाथ में शक्ति का केंद्रीकरण और कानून में कम-ज़ोरी का कारण जनसंख्या की अत्यंत कमी और आन्दोलन की प्रकृति थी जिसे शक्तिशाली निर्णायक नेतृत्व की आवश्यकता थी। इन सबने अदेलान्तादो को एक लघु-स्तरीय निरंकुश प्रशासन का केन्द्र बना दिया। इस तरह खोज और आवास का खतरनाक अभियान पूरा किया गया।

शताब्दियों से धर्म में रत्त स्पेनवासियों जैसी आदर्श जाति के लिए धार्मिक विजय अगला उद्देश्य था। इसका अर्थ था—सांस्कृतिक नियंत्रण, विशेषकर धर्म, भाषा और परंपराओं में—और इसने पवित्र धर्मोपदेश के निष्फल कार्यक्रम को जन्म दिया जिसे डोमिनिकन साधुओं ने वेनेज़ुएला के लिए चुना। ईसा और अपोसटलेस की तरह उनका लक्ष्य हथियार और शक्ति का प्रयोग किए बिना धर्म-परिवर्तन करना था। इस कदम की असफलता के बावजूद अमेरिका के इस हिस्से को रोमन-ईसाइयों में परिवर्तित करने का भार डोमि-निकनों और फ्रांसिस्कानों के कंधों पर आ पड़ा। अन्य धर्मोपदेशक भी बाद में आ मिले। इस तरह सत्रहवीं शताब्दी के अंत और अठारहवीं शताब्दी के मध्य में धर्मोपदेशकों के एक समूह ने उस क्षेत्र को लक्ष्य बनाया जिसे बाद में वेने-ज़ुएला होना था।

'एनकोमिएन्दा' और 'रेपार्तो दे तिएर्रास' की स्थापना का कारण सामाजिक तथा आर्थिक ज़रूरतें थीं। 'एनकोमिएन्दा' के अनेक लक्ष्य थे : यह 'कोनक्विस्तादोर' के लिए एक पुरस्कार था, और इसने इंडियन को एक प्रशा-सन में सम्मिलित कर उस पर अनुशासन थोपा जिसमें उसने अपनी स्वतंत्रता खो दी और जिसमें वस्तुतः एक तरह की दासता शामिल थी। 'एनकोमिएन्दा' ने इंडियनों की हत्याओं को कम किया, जनता को एकत्रित एवं नियंत्रित कर ईसाई-धर्म के प्रसार को आसान कर दिया। इसने हिस्पानिक-संस्कृति में इंडियन वर्ग का सम्मिलन तीव्र कर दिया। 'एनकोमिएन्दा' के साथ 'रेपार्तो दे तिएर्रास' था जो चोर-बाजारी की आड़ था। यह विचारों और सिद्धांतों की उस श्रृंखला का अंतिम नतीजा था जो उस समय अत्यंत प्रतिष्ठित थी ; यह

सिद्धांत कि सारी भूमि का नियंत्रण ईसा के उत्तराधिकारी पोप के हाथों में था, इसलिए उसे महाद्वीपों के प्रबंध करने का अधिकार है; पेपेल बुल्स 'इन्तेर काएतेरा' से लिए गए स्पेनिश सम्राट के अधिकारों और 'कापितुलासियोनेस' के नियमों द्वारा अदेलान्तादो का भूमि भेंट देने के अधिकारों का प्रबंध करना पोप के हाथों में है। भला हो 'एनकोमिएन्दा' और भूमि-भेंटों का जिससे स्पेन-वासियों ने कृषि और पशु-पालन शुरू कर दिया। इंडियनों की संकीर्ण, निजी कृषि-प्रणाली की जगह उत्पादन में महत्वपूर्ण प्रगति हुई। लेकिन इंडियन अपनी भूमि और स्वामित्व खो बैठे और एक विदेशी ताकत के गुलाम बन गए, और अफ्रीकी—उनसे कभी मनुष्यों जैसा व्यवहार नहीं किया जाता था। वे एक वस्तु, एक अतिरिक्त पशु थे जो किसी अन्य वस्तु की तरह खरीदे और बेचे जाते थे। इस तरह 16वीं शताब्दी में लातीनी अमेरिकी समाज के निर्माण के समय इसके आधार असमानता तथा अन्याय बने।

उपनिवेशों का विकास

लेकिन अगर यह मध्यवर्ती अमेरिका की स्थिति थी तो अन्य क्षेत्रों में और अधिक अंतर थे, यद्यपि ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं। इंडियनों की एक क्षेत्र में पूरी अनुपस्थिति के कारण वहां सिर्फ दो जातियों—स्पेनिश और अफ्रीकी—का मिश्रण हुआ और स्पेनवासियों ने ऐसे क्षेत्र पर नियंत्रण करना आसान पाया। उन्होंने खुलेआम दासता की रचना की और यह अफ्रीकियों पर था कि वे अपना भला किस में पाते हैं। यह जरूर कहा जाना चाहिए कि स्पेनवासियों को कुछ छूटें देनी पड़ीं जो आवश्यक होती हैं जब लोग एक असमान राज्य में इकट्ठे रहते हैं। लेकिन नीग्रों को अधिक बलिदान करना पड़ा। अफ्रीकी प्रवासी ने वेने-जुएला और सामान्यत: पूरे लेटिन अमेरिका में जो पहली चीज़ खोई वह उसकी भाषा थी।

जहां तक अमेरिका के अधिक विकसित, संगठित और संकीर्ण जन-संख्या वाले भाग का प्रश्न था, विजय का अर्थ मूलत: स्वामी, भाषा और अंध-विश्वासों का परिवर्तन था। आजतेक और इन्का समुदाय स्पेनवासियों की पर-म्पराओं और विश्वासों से घृणा करने लगे। फिर भी स्पेन ने इंडियनों में व्याप्त अन्याय, दबाव और असमानता का पूरा लाभ उठाया और उन्हें प्रयुक्त करना जारी रखा। अंतर केवल यही था कि स्पेनिश शासक का स्थान स्थानीय शासक ने ले लिया और इधर-उधर कुछ परिवर्तन कर दिए। इसका एक अच्छा उदा-हरण पेरु में है जहां स्पेन ने इंडियन 'काकीकेस' या मुखियों का समर्थन कर उनके माध्यम से स्थानीय समुदाय का नियंत्रण और शोषण जारी रखा। बेशक स्पेनवासियों के लिए यह सर्वोत्तम तरीका था; चुने हुए स्थानीय लोगों

को भ्रष्ट कर उन्हें बहुमत के नियंत्रण और प्रशासन के लिए प्रयोग किया जाए। बोलीवार को 1825 में इस तरह का शर्मनाक गठबंधन समाप्त करना था।

उपनिवेश काल के समय के शांत और निस्तब्ध होने के दावों के बावजूद सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दियां शांत नहीं थीं। जलदस्युओं के लगातार हमलों और समाज में व्याप्त असमानताओं के कारण निरंतर आंतरिक संघर्ष चल रहे थे। यह अंतिम समस्या वेनेज़ुएला वासियों के लिए अत्यंत महत्व-पूर्ण सिद्ध हुई क्योंकि एक बाहरी खतरे का सामना करते हुए वे स्वयं को पह-चानने लगे। समान खतरे ने उन्हें इकट्ठा कर दिया और आंतरिक संघर्ष समाप्त हो गया। पहली बार तब उन्होंने अपने को एक राष्ट्र माना जब उन्होंने एक शत्रु का सामना किया जिसकी भाषा, परंपराएं और विश्वास उनके लिए विदेशी थे।

इसके अतिरिक्त सारे लातीनी अमेरिका में 1600 से 1800 के बीच के 200 वर्षों ने उपनिवेशवाद को छिन्न-भिन्न होते देखा। छोटी-बड़ी भूमि-सीमाएं खींची गईं, जनसंख्या के केन्द्रों में वृद्धि हुई और आर्थिक फैलाव के कारण दासों का आयात किया गया। संस्कृति कई दिशाओं में फली-फूली; मैक्सिको, लीमा और कोरदोबा में शिल्प, कित्तो में चित्रकला तथा काराकास में संगीत। बाहरी प्रभावों से अप्रभावित उपनिवेशी निरंकुशता संपूर्णता पर पहुंच गई। मैक्सिको के वायसराय लातीनी अमेरिकियों को विश्वास के साथ याद दिला सकते थे कि सरकार पर राय देना उनका काम नहीं है, कि यह काम स्पेनिश सिंहासन पर बैठे महान सम्राट का है, और उनका काम चुप रहना और आदेश मानना है। चर्च की शक्ति बढ़ गई। ईसाइयों की तरह अनेक धर्मों ने शिक्षा में अपने काम से महत्वपूर्ण स्थितियां अर्जित कर लीं।

स्पेन के प्रयत्नों के बावजूद लातीनी अमेरिकी वातावरण ने पेनीनसुला की सभी विशेषताओं के आयात की आज्ञा नहीं दी और कालांतर में नतीजा जैसा सोचा गया था वैसा नहीं निकला। सह-अस्तित्व अनेक बलिदानों की मांग करता है और इस प्रक्रिया के सभी तत्व दूसरों के साथ संपर्क से परिवर्तित हो रहे थे। मंच एक और अभिनेता अनेक थे लेकिन उनके कर्तव्य और उनका भविष्य समान थे।

विकसित उपनिवेशवाद

उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ का वेनेज़ुएला उस भूमि से अत्यंत भिन्न था जिसे कोलम्बस, ख़ुआन दे ला कोसा और अलोन्सो दे ओख़ेदा ने देखा था। कोलम्बस ने जिस भूमि को 'शोभा-क्षेत्र' कहा था उसमें सिवाय इंडियन समुदाय और उनकी अनिश्चित संस्कृति के और कुछ नहीं था। वर्तमान में लोगों की एक जाति थी जिसके पीछे तीन सौ वर्षों का इतिहास था। पहले तीन सौ

वर्षों में तीस नगरों का गठन हुआ जिसमें से 69 के साथ राज्य जुड़े थे। इन 69 राज्यों में कोई छोटा-बड़ा नहीं था और वे अनेक केंद्रों पर निर्भर थे। कुमाना एक अच्छा उदाहरण है : नीति-संबंधी निर्णय माद्रिद में लिए जाते थे तथा सान्तो दोमिन्गो और सान्ता फ़े में दैनिक सरकारी, न्यायिक निर्णय लिए जाते थे। आर्थिक रूप से यह मैक्सिको पर, धार्मिक प्रश्नों के लिए यह सान खुआन दे पुयेर-तो रिको पर निर्भर था तथा विश्वविद्यालय के मसले काराकास के अधीन थे।

वर्तमान के वेनेजुएला (काराकास राज्य वेनेजुएला के नाम से जाना जाता था) का एकीकरण शाही 'गुईपुसकोआना' (बासके) कम्पनी ने आरंभ किया। इसने सम्राट से स्वतंत्रता की एक तरह से झलक प्राप्त की जब सर्वोच्च शासक ने वेनेजुएलन राज्यों को सान्ता फ़े से अलग कर उन्हें काराकास के अधीन करने की आज्ञा दे दी। यह 1739 की बात है और अंतिम निर्णय 1742 में लिया गया। सम्राट ने कहा कि बासके कम्पनी के प्रतिनिधित्व ने निर्णय पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। मूलत: कम्पनी को मात्र काराकास राज्य सौंपा गया था यद्यपि इसे कुमाना, तिरीनिदाद और मारगारीता—जिन्हें बाद में साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया—तथा गुयाना— जहां इसने स्थानीय व्यापार के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया—के साथ भी व्यापार करने का अधिकार था। अंतत: 1739 में माराकैबो उनकी परिधि में आ गया जिसने अंत में पूरे वेनेजुएला को अपनी लपेट में ले लिया।

1776-86 के दशक में अनेक संस्थाओं के निर्णय से वेनेजुएला और संग-ठित हो गया; 'इन्तेनदेन्सी', जिसने आर्थिक मसलों का केन्द्रीकरण कर दिया; कैप्टेनसी-जनरल, जो कुमाना, गुयाना, मारगारीता, तिरीनिदाद और माराकैबो के 'गोबेरनासियोनेस' तथा कैप्टेन्सी-जनरलों से सैनिक और प्रशासनिक मसलों में ऊपर थी (1777); 'कोन्सुलादो', न्यायालय जिसका एक और लक्ष्य आर्थिक विकास था; तथा ओदेन्सिया या सर्वोच्च न्यायालय जो सरकार के और प्रशासनिक कर्तव्यों को भी निभाती थी (1786)। 1804 में 'फ्रांसिस्को दे ईबारा' काराकास के प्रथम महानगर आर्कबिशप बने। इसका अर्थ था कि वेनेजुएला का संयुक्त क्षेत्र पुयेरतो रिको, सान्तो दोमिन्गो और सान्ता फ़े के नियं-त्रण से मुक्त हो गया क्योंकि काराकास की स्थिति ऊंची हो गई ओर मेरिदा, माराकैबो तथा गुयाना के बिशप उसके अधीन थे। आर्कबिशप की रचना से काराकास को राष्ट्र की वास्तविक राजधानी का दर्जा प्राप्त हुआ। 1921 में विश्वविद्यालय की स्थापना ने उसे पहले ही सांस्कृतिक क्षेत्र में आगे कर दिया था। बोलीवार का जन्म इसी दशक में हुआ। जब उन्होंने तर्क-संगत आयु में प्रवेश किया तो काराकास, गुयाना, कुमाना, तिरीनिदाद, मारगारीता, मारा-कैबो या मेरिदा का निवासी होना महत्वपूर्ण नहीं था। एक वेनेजुएलन होना

ज्यादा महत्वपूर्ण था।

इन महत्वपूर्ण दो सौ वर्षों में लातीनी अमेरिका के शेष भागों में हो रही घटनाएं एकदम समान नहीं थीं। वेनेजुएला हमेशा पीछे था। विशाल स्तर के कारण लेटिन अमेरिका के अधिक संकीर्ण जनसंख्या वाले क्षेत्रों में सोलहवीं शताब्दी के दौरान वही घटना देखी जा सकती है जो बाद में वेनेजुएला में उभरी --उपनिवेशवाद का विकास और विस्तार। शुरू में स्पेनिश सम्राट अमेरिका की खोज से चकाचौंध हो गया लेकिन शीघ्र इसने व्यवसाय में अपनी उपस्थिति अनुभव की और अपने इन विचारों को त्याग दिया। चार्ल्स ने नए स्पेन और पेरु की वायसरायल्टी के पद की घोषणा की। अठारहवीं शताब्दी में न्यु ग्रेनादा और रिवर-प्लेते के लिए भी वायसरायल्टी का निर्माण किया गया। गुयाटेमाला, चिले, क्यूबा और फ्लोरिडा की वायस-कैप्टेनसी तथा कितो के राष्ट्रपति के पदों की घोषणा भी की गई। 'ओदिनसियास' की एक शृंखला सामने आई, सर्वप्रथम 1511 में सान्तो दोमिन्गो में, फिर 1527 में मैक्सिको, 1535 में पनामा या तियरा फिरमे, 1542 में लीमा, 1543 में गुयाटेमाला, 1548 में गुआदालाखरा, 1549 में सान्ता फ़े, 1551 में चाटकास, 1563 में कितो, 1609 में चिले, 1661 में ब्युनस आयर्स और 1786 में काराकास तथा कुसको।

बोरबोन समुदाय ने लातीनी अमेरिका में अनेक इनतेनदेन्सियों का गठन किया। प्राचीन कालीन प्रशासन से भिन्न यह वित्तीय प्रशासन की दिशा में एक अच्छा कदम था। पूरे महाद्वीप में 11 'कौनसूलदोस' थे। इसके अतिरिक्त नगर पालिकाओं या काबिल्दोस की संख्या में बृद्धि हुई थी जो स्थानीय स्तर की बहुमत निर्णयों की एकमात्र सभा थी, और जिसकी निरंकुश प्रशासन ने आज्ञा दी थी। 'काबिल्दोस' महत्वपूर्ण हो गए लेकिन उन्होंने कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाई। उन्होंने समुदाय की इच्छाओं का प्रतिनिधित्व जरूर किया। 1676 में काराकास 'काबिल्दोस' ने यह अधिकार प्राप्त किया कि गवर्नर की अनुपस्थिति में उनके अपने अलकालदेस या मजिस्ट्रेट का प्रशासन होगा। ये संगठन अपने विरोधियों से ईर्ष्या करते थे और अपनी प्रकृति-स्वरूप यह सिर्फ 'करीलिओस' के हितों का प्रतिनिधित्व करती थी, यानि वे लोग जो स्पेनिश वंशज थे लेकिन जिनका जन्म अमेरिका में हुआ था।

लेटिन अमेरिका का प्रशासन उस कानूनी संगठन के हाथ में था जो मूलत: कास्तिले था, रोमन कानूनों से प्रेरित कानूनों का संग्रह। 1680 में सत्रहवीं शताब्दी के अंत तक नए विश्व के लिए कानूनों के एक संग्रह का गठन किया। 'लेयस दे इन्दियास' में नौ खंड, 218 शीर्षक और 6,377 धाराएं थीं। कानूनों का यह संग्रह प्रत्येक दृष्टि से प्रशंसनीय था। सामाजिक और राजनीतिक

पद्धति से उदित और प्रतिबिंबित होने और सम्राट के हित पूरे करने के साथ-साथ इसमें आदर्शवादिता का भी पुट था जो स्पेनिश चरित्र का विशेष अंग है। 'लेयस दे इंदियस' में कई रूपों में उन्नति पर बल दिया गया। लेकिन वास्तविकता तथा लातीनी अमेरिका की परिस्थिति और हितों के संघर्ष ने उस ऊंची आशा को मिट्टी में मिला दिया, साथ ही इंडियनों के हित में जो मानवीय कदम उठाने थे पर कभी उठे नहीं फिर भी इसके अन्वेषक आज भी प्रतिष्ठा के पात्र हैं।

कानून की इस असाधारण रचना में एक सामाजिक घटना का मूल पाया जा सकता है जिसे लातीनी अमेरिका में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होना था—कानून और वास्तविकता के बीच का अन्तर। ऐंग्लो-सैक्सन समाज की तुलना में लातीन अमेरिका में कानून सैद्धांतिक था, एक वास्तविक और सफल प्रशासन की बजाय उत्तमता का नमूना था। अमेरिका से संबंधित संविधान आदर्शवादिता और असफलता से परिपूर्ण था, और उन प्रारंभिक दिनों से लातीनी अमेरिका में कानून दैनिक वास्तविकताओं से कोसों दूर विलास का विषय रहा है। उपनिवेश काल के तीन सौ वर्षों के दौरान स्पेन का नियंत्रण और इसका कठोर तथा अमानवीय रुख अपरिवर्तित रहा। राजा बदले लेकिन तंत्र, जो कानूनों और वैधानिक प्रक्रियाओं पर आधारित था, अपने अधिकारों पर आधारित ढांचे को बिना किसी क्षति के एक से दूसरे तक पहुंचता रहा। फिर भी स्पेन के दो राजवंशों के चरित्र और तरीके के बीच अंतर देखे जा सकते हैं। हाप्सबर्गस का शासन कठोर कैथोलिकवादी और कलाओं को छोड़, नवीनता के प्रति उदासीन था। कला भी प्रशासन की राजनीतिक और धार्मिक विचारधाराओं से प्रभावित थी। यह राजवंश जिसने राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहन दिया और स्पेन की राष्ट्रवादिता का प्रतिनिधित्व किया, पुरानी धारणाओं का एक कुशल माध्यम था। इसकी निरंकुशता स्वार्थी केन्द्रवादी संकल्पनाओं पर आधारित थी जिसमें मध्ययुगीन विचारों के पर्याप्त अंश थे।

बोरबोनों ने एक परिवर्तन का प्रतिनिधित्व किया। फ्रांस में उन्होंने सुधार और नवनिर्माण की नीति का समर्थन किया। वे संयमित कैथोलिक थे और उन्होंने कलाओं, दार्शनिक खोज और वैज्ञानिक शोध तथा विकास को प्रोत्साहन दिया, यद्यपि वे निरंकुश राजा रहे। पेनीनसुला में उनकी नीति वैधानिक समानता और अधिक केंद्रवाद की थी। अपने प्रथम चरण में फिलिप ने अरागोन, कातालूनिया, वालेन्सिया और मालोरका के प्राचीन अधिकारों को छीन लिया। इस तरह शुरू से ही उन्होंने अपनी निजी शक्ति को थोपा। 'इनतेनदेन्सी' को सरकार में सम्मिलित कर लिया गया और यह नए प्रशासन का आधार बन गई। अमेरिका ने भी सामाजिक मसलों पर बोरबोन नीतियों का

प्रभाव अनुभव किया। राजवंश ने अपने उदारवादी रुख पर गौरव व्यक्त किया और पेनीनसुलर तथा लेटिन अमेरिकी कुलीन-तंत्रों को अपने अधीन लाने की अपनी इच्छा को छुपाया नहीं। वेनेज़ुएला में इसकी नीतियां सीधी लोगों के लिए थीं। जबकि मौलिक, आंतरिक असमानताएं दूर नहीं हुई फिर भी इस बात का खंडन नहीं किया जा सकता कि 1800 तक लातीनी अमेरिका में नई संभावनाओं की झलक देखी जा सकती थी। जनसंख्या वृद्धि और तीन मुख्य जातियों के मिश्रण (कानूनों के विपरीत होने के बावजूद) ने असमानताओं को और स्पष्ट कर दिया और दिखा दिया कि इनको जारी रखना कितना बेतुका था।

दासता अब जितनी महत्वपूर्ण कभी न थी। सोलहवीं शताब्दी की अल्प शुरुआत से, अपार लाभों के कारण, कुछ अनुमानों के अनुसार दासता में 20,000% वृद्धि हुई। व्यवसाय अब इंग्लैंड, हालैंड, पुर्तगाल और फ्रांस के मध्य था। आंकड़ों के अनुसार उपनिवेश काल के दौरान अफ्रीका से 12,000,000 और 30,000,000 के बीच की संख्या में लोग लाए गए। लगभग 120,000 नीग्रो वेनेज़ुएला के लिए थे। वेस्ट इंडीज़ में, ब्राज़ील में, मैक्सिको की खाड़ी के उत्तरी तट पर और मुख्य भूमि के कैरिबियन तट पर विशाल बस्तियां थीं।

उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ तक उप-महाद्वीप में दासता बढ़ गई। पूर्व-हिस्पानिक अमेरिका में कुछ इंडियन समुदायों में बंदियों का व्यापार आम बात थी, जो विजयी की सम्पत्ति थे। व्यापार इतना लाभप्रद था कि कई इंडियन मुखिया अपने बंदी शत्रु स्पेनवासियों को बेचने लगे। अधिक विकसित समुदायों में भी दासता अज्ञात न थी। स्पेनिश सम्राट की इस घोषणा के बावजूद कि इंडियन 'मुक्त दास' थे, 1503 में ईसाबेल द्वारा जारी इस घोषणा के कारण दासता को शाही-समर्थन मिल गया कि कैरिबों और अराउकानियानों को बंदी बना लिया जाए क्योंकि वे नरभक्षी तथा विद्रोही थे।

दासों की उपस्थिति के अतिरिक्त, जो समाज में व्याप्त असमानताओं को दिखाने के लिए पर्याप्त है, इस तथ्य का भी खंडन नहीं किया जा सकता कि सभी स्वतंत्र व्यक्ति समान नहीं थे। वेनेज़ुएला में आठ विभिन्न सामाजिक स्तर थे। पेनीनसुलर स्पेनवासी सामाजिक पिरामिड में सबसे ऊपर थे, फिर गौरवमयी करीअलोस और मानतुआनोस, जैसे कि स्थानीय कुलीन वंशज जाने जाते थे, फिर कैनेरी द्वीपवासी। घटते क्रम में 'पारदोस' या मिश्रित लोगों की अपार संख्या थी जो 1800 में वेनेज़ुएला की जनसंख्या के आधे से कम न थे। मैस्तिसो मिश्रित श्वेत और इंडियन रक्त के थे। मुलातोऐस मिश्रित श्वेत तथा नीग्रो और साम्बोस मिश्रित इंडियन तथा नीग्रो, और समस्त संभव मिश्रणों के लिए विभिन्न शब्द थे।[2] अत: पिरामिड के आधार पर मुक्त इंडियन थे, उनके नीचे इंडियन दास, फिर मुक्त नीग्रो और अंतत: नीग्रो दास।

सामाजिक स्तर के आधार मात्र रक्त या जाति नहीं थे। वैधानिक दृष्टिकोण, शिक्षा, सम्पत्ति और सांस्कृतिक विशेषताएं उसके तत्व थे। और तो और, यह भी देखा जाता था कि एक व्यक्ति के पास चोगा, हीरे-जवाहरात, मोती, रेशम या कालीन थे या नहीं। वह कुशन और छतरी इस्तेमाल करता था या नहीं। धर्म में भी नीग्रो और श्वेतों में अंतर थे, और पर्याप्त समय के लिए सिर्फ श्वेत ही पुजारी बन सकते थे। काराकास में विभिन्न जातियों के लिए अलग-अलग चर्च थे; कैनेरी द्वीप के लोगों के लिए कानदेलारिया, मिश्रित जाति के लोगों के लिए सान माऊरिसियो और करीअलोस के लिए सान फ्रांसिस्को। यही व्यवसाय के बारे में कहा जा सकता है। शिक्षा ने पूर्व-स्थापित संकल्पनाओं को मजबूत कर दिया और सामाजिक विभिन्नताओं को और विषम कर दिया। एक व्यक्ति के लिए सुलभ शिक्षा उसे एक ही व्यवसाय के लिए तैयार करती थी, जो अंततः सामाजिक स्तर का एक भाग था। यही बात विशेष व्यवसायों के संबंध में सच थी। यह आश्चर्यजनक नहीं कि सर्वाधिक विकसित प्रशिक्षण प्रभावशाली लोगों के लिए सुरक्षित था, अर्थात पेनीनसुलर स्पेनवासियों और करीओलोस या मानतुआनोस लोगों के लिए। विश्वविद्यालय की फ़ीस बहुत ज़्यादा थी। मिश्रित जाति के लोगों के लिए कोई विद्यालय नहीं थे। किसी ने नीग्रो को शिक्षित करने की परवाह नहीं की। वास्तव में कातामारका में एक नीग्रो को सार्वजनिक रूप से कोड़े मारे गए जब यह पता चला कि उसने स्वयं ही पढ़ना सीख लिया। जहां तक इंडियनों की बात है 'एनकोमिएन्दा' के अंतर्गत उन्हें मात्र इतनी शिक्षा दी जाती थी कि वे कैथोलिक धर्म समझ सकें।

व्यवसाय से संबंधित अन्य अंतर भी थे। उदाहरणतः एक व्यक्ति सिपाही था या विश्वविद्यालय की डिग्री या पवित्र आदेश रखता था, व्यवसाय का स्तर या शाखा जिसमें वह काम करता था, उसकी नौकरी के वर्ष और अनुभव। ये सब उपनिवेश निवासियों के बीच विषमताओं को जन्म देते थे। विश्वविद्यालय की डिग्री को प्राप्त करने के लिए एक व्यक्ति को यह सिद्ध करना होता था कि वह वैध संतान है। 'त्यागी हुई संतान, चाहे श्वेत हो, सम्राट की अनुमति के बिना स्नातक नहीं बन सकती थी।

पर्याप्त समय तक किसी भी तरह का हाथ का काम करने वाले 'हिदालगोस' वर्ग में सम्मिलित नहीं किए जाते थे। 1562 में फिलिप द्वितीय ने लघु, अल्प और मशीनी कार्य को सामाजिक प्रतिष्ठितों के अनुपयुक्त परिभाषित किया था। समुदाय के लिए शल्य-चिकित्सा जैसे आवश्यक कार्य करने से कई पारदोस ने अपनी आर्थिक स्थिति अच्छी कर ली जो समाज में ऊपर उठने के लिए एक महत्वपूर्ण तथ्य है। सबसे कठिन, जटिल और गन्दा कार्य नीग्रो के लिए छोड़ दिया गया था और उन पर असहनीय प्रतिबंध थे। उदाहरणतः रात

में वे कहीं नहीं जा सकते थे और न ही एक शहर से दूसरे शहर तक जा सकते थे। काराकास में उन्हें घरेलू प्रयोग के लिए पानी लाने के इलावा घाट पर जाने की अनुमति नहीं थी। 1545 के बाद वह घुड़सवारी नहीं कर सकते थे। 1620 के आसपास उन्हें सचेत किया गया कि वे हथियार नहीं रख सकते थे। किसी दास के साथ व्यवसाय करने की अनुमति नहीं थी और उनके प्रति अपराध की एक पूर्वकल्पना थी कि जो धन उनके पास है उसे या तो उन्होंने चुराया है या गलत तरह से प्राप्त किया है।

पारदोस का बहुजन घृणा और शोषण का शिकार था। उनके पद बहुत छोटे थे। वे विश्वविद्यालय नहीं जा सकते थे। डिग्री या डिप्लोमा प्राप्त करने की बहुत कम उम्मीद थी। उन्हें चर्च में प्रवेश करने की आज्ञा नहीं थी, न ही वे पवित्र आदेश प्राप्त कर सकते थे। उन्हें वकीलों के कालेज में नही लिया जाता था, न ही आदेन्सिया में, कुली की तरह भी नहीं। एक विशेष सैनिक टुकड़ी उनके लिए थी लेकिन वहां भी वे कैप्टेन से ऊपर का पद प्राप्त नहीं कर सकते थे। उनके श्वेतों के साथ विवाह पर बंदिश थी। उनके दफनाए जाते समय कैथेडरल अध्याय प्रस्तुत नहीं हो सकता था। वे चर्च की किसी बेंच पर नहीं बैठ सकते थे, न ही बैठने के लिए कोई चटाई अंदर ले जा सकते थे। 1805 में भी आयून्तामिएन्तो या नगर परिषद् उन्हें किसी भी तरह की शिक्षा देने से इन्कार कर रही थी। 1796 में इसने उन्हें शिक्षा न देने की घोषणा की 'जो उन्होंने अब तक प्राप्त नहीं की थी, न ही भविष्य में प्राप्त करनी थी।'

अर्थव्यवस्था और विचारधारा

उपनिवेश काल का चित्र बनाते समय जांच का ज़िक्र एक ऐसे संगठन के रूप में होना चाहिए जो स्वतंत्रता के विरुद्ध निरंकुश सम्राट की सेवा में अत्यंत प्रभावशाली था। मध्ययुगीन जांच के विपरीत जो मुख्यत: धर्म और पुजारियों के हाथों में थी, स्पेन में जांच राजनीतिक तथा आर्थिक थी, यद्यपि धर्म रक्षक के भेष में छिपी थी। पवित्र कार्यालय में राजा की प्रभावशाली भूमिका थी। 1478 में पोप सेक्सतस चतुर्थ ने सम्राट को 'जांच' के लिए न्यायधीशों की नियुक्ति का अधिकार सौंप दिया। चार साल बाद पोप ने अपनी शक्ति वापिस ले ली लेकिन उसने उम्मीदवार प्रस्तुत करने का अधिकार सम्राट के लिए छोड़ दिया। हर तरह सिद्धांत के संरक्षक सदा राजनीतिक शक्तियों के साधन थे। जांच का प्रथम लक्ष्य जुडाइज़्म का विनाश था लेकिन फिर इसने अपना ध्यान इस्लाम और अंततः प्रोटेस्टेनिज्म की ओर परिवर्तित कर लिया। अमेरिका में इसकी उपयोगिता बहस का विषय है; लेकिन इसने धार्मिक अधिकारियों को भी भयभीत कर दिया और स्वभावत: यह स्पेनिश

सम्राट के प्रयोजनों के हित में एक विचारशील भय सिद्ध हुई। जिस तरह इसका उपाख्यान बनाया गया निःसंदेह उसमें इसके पैशाचिक और डराने वाले प्रभाव बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किए गए थे, लेकिन इसकी अनुपस्थिति ने लोगों के मस्तिष्कों को एक अतिरिक्त भय से मुक्त कर दिया जबकि उपनिवेश में संदेह, घुटन और भय का वातावरण था।

आर्थिक दृष्टि से लातीनी अमेरिका का विकास अन्याय पर आधारित था। लेओन मारसिकानो की शिक्षानुसार[8] पोप को भूमि के भाग करने का समुचित अधिकार था। कैथोलिक राजाओं ने नए विश्व को पोप के हाथों से एक भेंट की तरह प्राप्त किया और इसे 'कापितुलासियोनेस' में विभाजित कर दिया। विजय पर आधारित, अमेरिका पर स्पेनिश नियंत्रण का अर्थ इंडियनों की भूमि चुराना था। नीग्रो दासों और उनकी अपनी मेहनत से विशाल सम्पत्तियों की स्थापना की गई। 'हासिएन्दास' या भू-सम्पत्ति विजय और दासता का परिणाम थी। लातीनी अमेरिका के सभी देशों में इन अपार उपनिवेशी 'लातीफुन्दियोस' के अवशेष हैं। चर्च भी एक बड़ा भूमि-स्वामी था। क्या एक व्यक्ति के पास भूमि थी, इसका आकार, कृषि-उत्पादन अधिक था या नहीं; दासों की संख्या जिनका वह स्वामी था, या पशुओं की संख्या— संक्षेप में, उसकी सम्पत्ति—ये सब उसके सामाजिक स्तर को प्रभावित करते थे। एक ओर थे शक्तिशाली 'मानतुआनोस', 'ग्रान्देस काकाओस' जो कोको-उत्पादन के लाभों से सम्मान खरीद सकते थे, उच्च-स्तरीय अधिकारी, और निजी साधनों वाले लोग जो अपनी जमा की हुई पूंजी से लाभ प्राप्त कर रहे थे; और दूसरी ओर थे वे जो अपनी निर्धनता के कारण समाज में छोटे वर्ग में आते, लघु भूमि-स्वामी और व्यवसायी, और सामाजिक स्तर पर और भी नीचे वे लोग जिनके पास कुछ भी न था, अपनी स्वतंत्रता भी नहीं। वेनेजुएला में अनेक कुलीन लोग व्यवसाय में भाग लेने के विरुद्ध न थे। लेटिन अमेरिका में खान-व्यवसाय, कृषि या पशु-पालन में, 'एनकोमिएन्दा' के अधीन इंडियनों या अफ्रीकी दासों के साथ काम करना एक सज्जन पुरुष के लिए शर्म की बात न थी।

जहां तक संस्कृति और ज्ञान-विस्तार की बात है, यह जरूर कहा जाना चाहिए कि बोरबोन निरंकुशवाद, जिसने पेनीनसुला में ज्ञान-वर्द्धन के काल का नेतृत्व किया था, जब उपनिवेशों में आया तो इसने सदा राजा की सर्वोच्चता और इस तथ्य पर बल दिया कि मात्र सीमित स्वतंत्रता संभव है। सम्राट ने किसी सचेत निर्णय द्वारा नहीं बल्कि समाज के प्रत्येक पहलू को नियंत्रित करने की अपनी नीति के परिणामस्वरूप शिक्षा को प्रोत्साहन नहीं दिया। जहां तक धार्मिक और निजी शिक्षा का सम्बंध था, इन पर सम्राट के सब महत्वपूर्ण

उपायों को ध्यान में रखते हुए नियंत्रण रखा जाता था।

वेनेज़ुएला, जिसमें बोलीवार को जन्म लेना था, सांस्कृतिक दृष्टि से उपनिवेश का सर्वाधिक पिछड़ा क्षेत्र था। इसके विश्वविद्यालय की स्थापना 1725 में की गई जबकि सान्तो देमिन्गो में 1538 और मैक्सिको में 1536 में विश्वविद्यालयों की स्थापना हो चुकी थी। यही बात मुद्रण के लिए भी सत्य है: मैक्सिको में 1536 में प्रेस आ गई; ग्वातेमाला में इससे भी पहले प्रेस पहुंच चुकी थी; 1581 तक यह पेरु पहुंच गई और पारागुए तथा क्यूबा में यह क्रमश: 1705 और 1707 तक उपस्थित थी; 1747 तक यह ब्राज़ील आ चुकी थी और 1750 तक हैती में; इससे पहले 1738 में यह न्यु ग्रेनादा और बाद में कित्तो (1775) तथा रिवर प्लेते (1776) में प्रवेश कर चुकी थी। वेनेज़ुएला में 1808 तक प्रेस नहीं आई थी।

वेनेज़ुएलावासियों की बौद्धिक जिज्ञासा को असीम समस्याओं का सामना करना पड़ा। निरंकुश शासन के कारण लातीनी अमेरिका एक बंद विश्व था और इसके साथ कठोरता तथा संदेह का व्यवहार किया जाता था। विदेशियों के साथ व्यवसाय करने पर 'लेयेस दे इन्दियास' के अनुसार मृत्यु की सज़ा थी। पुस्तकों के प्रकाशन और बिक्री पर असंख्य प्रतिबंध थे और पुस्तक की भाषा चाहे कोई भी थी, पुस्तकों के प्रवेश, वितरण और इस्तेमाल के अधिकार पवित्र एनक्वोस्तीओन के अपरिवर्तनीय अधिकारियों के हाथ में थे। राजा ने अपने अनजान और धर्म-संबंधी अधिकारियों को नए विश्व में धर्म-विरुद्ध पुस्तकों तथा प्रोटेस्टेंट घुसपैठियों द्वारा छोड़ी गई पुस्तकों को जब्त करने का आदेश दिया। इतनी कड़ी जाँच रखी जाती थी कि अपवित्र और बेढंगी पुस्तकें जिनमें झूठी घटनाओं का ज़िक्र होता, ज़ब्त कर ली जाती थीं। यह लेटिन अमेरिकी संविधान में है जिसे 29 सितम्बर 1534 की चार्ल्स पंचम की घोषणा ने मज़बूत कर दिया। इसके अलावा, सम्राट नए विश्व से संबंधित पुस्तकों के साथ अत्यंत सावधान था। लेटिन अमेरिका में ऐसे प्रकाशनों के प्रवेश के लिए 'इन्दीस' परिषद् की अनुमति आवश्यक थी; कोई प्रकाशक या पुस्तक-विक्रेता उन्हें तब तक प्रकाशित या बेच नहीं सकता था जब तक परिषद उनका निरीक्षण न कर लेती। फिर भी, वैधानिक ढंग से अक्सर अत्यंत शीघ्र, लेटिन अमेरिका में पुस्तकें आईं। लेकिन काराकास और अन्य स्थानों पर महत्वपूर्ण पुस्तकालयों की स्थापना स्मगलिंग द्वारा ही संभव हुई। गुईपुसकोआना कम्पनी अपेक्षाकृत सुरक्षित थी और अपने समुद्री जहाज़ों में प्रसिद्ध प्रकाशन लाती रही।

यह लातीनी अमेरिका था जो पहले तीन सौ वर्षों में विकसित हुआ: सम्राट पर निर्भर राजनीतिक और प्रशासनिक अधिकारियों की एक शृंखला—वायसरायल्टी, 'इन्तेन्देन्सि', 'कैप्टन-जनरल', 'कोनसुलादोस' और 'ओदेन्सियास';

गौरवमय शहर, फैक्ट्रियां, दास, विश्वविद्यालय, सड़कें, निजी विद्यालय, पशु-पालन, किले, खानें, चीनी मिलें और शोधक कारखाने। संक्षेप में, एक शानदार भौतिक तथा सांस्कृतिक ढांचा। यदि हम याद करें कि कोलम्बस के आगमन-पूर्व अमेरिका या अमेरिकावासियों जैसी कोई चीज नहीं थी, और यह कि तीन सौ वर्षों बाद वहां एक नया विश्व था और इसमें अनेक विभिन्न राष्ट्र थे, तब हम इस महाद्वीप और विशेषकर उस भाग की उपलब्धियों का अन्दाज लगा सकते हैं जिसने बोलीवार को जन्म दिया।

अस्मिता की भावना

उपनिवेश काल की सफलताएं कुछ हद तक काफी हैं। जिस तरह 1800 के लातीनी अमेरिका और वेनेजुएला, 1500 के लातीनी अमेरिका व वेनेजुएला से भिन्न थे, उसी तरह सभी विभिन्न जातियां एक लातीनी अमेरिका बनाने के लिए जुड़ गईं जो न तो इंडियन, न स्पेनिश और न नीग्रो थीं बल्कि एक संपूर्ण विश्व की जातियों का मिश्रण था। नाम 'अमेरिका' ही नया था, और इसी तरह थे वेनेजुएला, न्यू ग्रेनादा, न्यू स्पेन, हिस्पानीओला, पुयेरेतो रिको, सान्तो देमिन्गो, सान्ता फ़े, फ्लोरिदा, रिवर प्लेते, असुनसियोन और कई अन्य। लगभग 1800 के दौरान एक विशेष आशा, एक विशेष अनुभूति मंच पर प्रकट हुई जो विकास और आत्मविश्वास से परिपूर्ण थी।

300 वर्ष भिन्न प्रकार से एक लम्बा समय था, लेकिन कई तरह से छोटा भी। किसी भी सभ्यता द्वारा पृथ्वी पर कहीं भी इतने थोड़े समय में इतना काम नहीं किया गया था। स्पेन में रोमन कला 600 वर्ष तक चली। इसी तरह इंग्लैंड में नोरमान्स लगभग 400 वर्ष तक रहे। लेकिन फिर भी उस समय इन दोनों देशों के इतिहास में महज दो घटनाएं मानी जाती है, हालांकि ये लातीनी अमेरिका के कालोनी काल के समय से ज्यादा देर तक टिके। लातीनी अमेरिका के लिए यह 300 वर्ष का समय उसका पूरा इतिहास है, और इसी समय के दौरान ही एक आशा का जन्म हुआ और एक संस्कृति का गठन हुआ। स्पेन ने अपना एकवादी तंत्र अमेरिका भेज दिया। यह प्रणाली दूसरी शक्तियों के उपनिवेशों से विभिन्न नहीं थी। लेकिन स्पेनिश पूर्णवाद सबसे मज़बूत था, जो अभी भी मौजूद था। यह विभिन्न था, फ्रांस से भी अलग, जहां 'एनसिएन रिगिमे' के चरम उत्कर्ष पर लुईस XIV ने कहा था 'मैं राज्य हूं'। वह सही था क्योंकि सारा राजनीतिक तंत्र उसकी हथेली में था; लेकिन स्पेनिश तानाशाह इससे भी ज्यादा कर सकते थे। उन्होंने दावा किया कि तानाशाह का इन राज्यों पर निजी अधिकार है।

स्पेनिश एकवादिता न सिर्फ राजनीतिक क्षेत्र तक सीमित थी बल्कि

आर्थिक और धार्मिक मामलों में भी मौजूद थी। वाणिज्यक तंत्र ने उत्पादन और खपत के तंत्र का पूरा अधिकार राजा को सौंप दिया था। खानों को विशेष महत्व दिया गया क्योंकि शाह का मूल लक्ष्य सोना और मूल्यवान हीरे इकट्ठे करना था और धनिकों को विरोधियों के हाथों मे पड़ने से बचाना था। इस हस्तक्षेप-नीति के लिए कठोर व सख्त कानून प्रयोग में लाए गए। राजा को वे शक्तियां व धर्म संबंधी अधिकार प्राप्त हो गए जिनका प्रयोग मात्र एक ईसा का अवतार ही कर सकता था। राजा अपने राज्य के चर्चों के प्रभावशाली प्रमुख थे : वह न सिर्फ धर्म-प्रशासन के सरक्षक थे बल्कि पोप के आदेशों को उसके अनुयायियों तक भी वही पहुंचाते थे (पात्रे रेगियो के आधार पर)। धर्म को संगठित करने के अलावा, पवित्र कार्यालय लोगों से जब्त की गई सम्पत्ति भी राजाओं तक लाया।

उसके राज्यवासियों के सम्मान का विषय ही राजा के एकवादी तंत्र में सम्मिलित नहीं था। रानी ईसाबेल ने कहा कि राज्यों के मालिक उनके राजा हैं। असीमित शक्तियों के ढांचे में इस बात पर जोर दिया गया कि प्रत्येक व्यक्ति का सम्पत्ति पर अधिकार राजा की इच्छा पर निर्भर है। एकवादी शासन में कोई भी निजी अधिकार या गारंटी नहीं थी, बल्कि राज्य में कोई 'निजी' व्यक्ति था ही नहीं।

और यही एकवादिता अमेरिकी उपनिवेशों मे ले जाई गई। न सोचने और न ही बोलने और विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता थी। इन दो सूत्रों द्वारा उन पर राजा का नियंत्रण था: 'सरकारी सेंसरशिप और धार्मिक सेंसरशिप'। गमना-गमन या नागरिकता की कोई स्वतंत्रता नहीं थी क्योंकि एक राज्य से दूसरे राज्य जाने तक भी राजा से आज्ञा लेने की जरूरत थी। काम करने की स्वतंत्रता भी नही थी क्योंकि व्यवसायिक प्रशिक्षण पर प्रतिबंध थे। धार्मिक स्वतंत्रता भी नहीं थी क्योंकि इसे स्पेनिश एकता के खिलाफ माना जाता था। स्पेन से यहूदियों को निकालने की घोषणा 1492 मे की गई। दस साल बाद उन मुस्लिमों को जिन्होने अभी भी धर्म-परिवर्तित नहीं किया था, पुराने कासतिले के मुदेखारेस के साथ निष्कासित कर दिया गया और 1608 में 'मोरिस्कोस' को भी। प्रोटेस्टेंटों को भी बर्दाश्त नहीं किया जाता था हालांकि मुख्यत: वे ही थे और यहूदी विचारों वाले कुछ और लोग थे जिन्होंने लातीनी अमेरिका में 'इनकूइस्तिओन्' का ध्यान आकर्षित किया। वैध व्यवसाय या नौका-वहन की स्वतंत्रता भी नहीं थी, बेशक चार्ल्स तृतीय ने व्यवसाय की स्वतंत्रता की घोषणा की और 1797 में चार्ल्स चतुर्थ ने लातीनी अमेरिकी बंदरगाहों पर स्पेनिश जहाज़ों के अलावा दूसरे जहाज़ों को भी आने की इजाज़त दी। सारांश मे, एकवादी तंत्र पूर्णत: तानाशाह था जिसके अधीन शाह ने अपने अधिकारियों के माध्यम से

बहुत ज्यादा कर लगाने में देर नहीं लगाई ताकि उसकी सेना व प्रशासन का खर्च वहन किया जा सके।

यह स्मरण रहे कि एकवादिता हालांकि निःसन्देह कानून एवं नियमों पर आधारित थी, किन्तु यह राजनीतिक अधिकारों से पूर्णतः रहित थी। जो शासन कर रहे थे, उन्हें ऐसा करने के लिए चुना नहीं गया था; वे इस तरह के लोग थे जिन्हें तानाशाह सही समझते थे। जो परिषदें लातीनी अमेरिका में मौजूद थीं, वे महज़ काबिलदोस थीं जो कुछ स्वतंत्रत थीं, लेकिन वे महज़ म्युनिसिपल स्तर तक सीमित थीं या कानसूलदोस जो व्यवसाय और उत्पादन से सम्बद्ध थी। यह ही वह तंत्र था जिसपर करीयोलोस का असीमित अधिकार था। लातीनी अमेरिकी अपने ही देश में सरकार के उच्चतर क्षेत्रों से वंचित थे। मेनुएल पालासियो कखारदो ने मौलिक और विस्तृत शोध के बाद कहा कि 'कालोनी काल के प्रथम वर्षों से 1810 तक 166 वायसराय, 588 कैप्टन जनरल, गवर्नर और राष्ट्रपतियों में से महज़ 18 करीयोलोस थे।'[4] लातीनी अमेरिकी अपने ही देश में दूसरी श्रेणी के नागरिक थे। जितने भी लाभ थे वे हमेशा 'पेनीनसुलारेस' को जाते थे। सिमोन बोलीवार ने इस विषय पर कहा था : 'दक्षिण अमेरिका में निवासियों की स्थिति वर्षों से निष्क्रीय रही है···हम दासों से भी नीचे थे···अमेरिका को इसकी स्वतंत्रता से वंचित कर दिया गया·· हमें इस पर अपमान सहना पड़ा, जिसने न सिर्फ हमारे अधिकार हमसे छीने बल्कि हमें सार्वजनिक क्षेत्रों में भी स्थाई 'बालकपन' की अवस्था में छोड़ दिया···इस समाज में दक्षिणी अमेरिकी महज़ सर्फ हैं, महज़ श्रम के लिए या फिर एक मंडी के लिए जबकि इसमें भी असहनीय बंदिशे हैं · जहां तक सरकार और प्रशासन के विज्ञान का संबंध है हमें वास्तविकता से अलग कर दिया गया। हम न कभी वायसराय रहे और न ही गवर्नर, सिवाय कुछ खास स्थितियों में; बहुत कम आर्कबिशप और बिशप; राजनयिक पद कभी नहीं; सिपाही, सिर्फ छोटे स्तर के। हम कभी न्यायाधीश, वित्त अधिकारी, यहां तक कि व्यवसायी भी नहीं रहे हैं।'[5]

प्रतिरोधों का इतिहास

उपरोक्त राज्य-तंत्र के विरोध में लातीनी अमेरिका ने शायद 'खोज' के समय से प्रतिरोध के चिन्ह दिखाए। जातियों का मिश्रण और प्रतिरोधों की आशाओं की प्रगति साथ-साथ चली और दासता व क्रांति एक साथ मौजूद थीं। विभिन्न समयों में लातीनी अमेरिकियों के आत्म-सम्मान ने उन्हें प्रतिरोध के लिए विवश कर दिया, चाहे इसके लिए जान की बाजी लगानी पड़ी। लातीनी अमेरिकियों ने स्वतंत्रता पर अपने विचार फैशनेबल अंग्रेजी,

फ्रांसीसी या यांकी लेखों से प्राप्त नहीं किए। न ही यह वास्तीलिए और कैपेतीयन राजाओं की हत्या का फ्रांसीसी उदाहरण था जिसने लातीनी अमेरिकियों को लड़ने के लिए प्रेरित किया। स्वतंत्रता को समझने के लिए उन्हें किसी विदेशी विचारक या प्रेरित जैकोबिन की जरूरत नहीं थी।

लातीनी अमेरिकी लोगों ने स्वतंत्रता से प्रेम करना सीखा और वे इसे प्राप्त करने के लिए हर कीमत पर पूरी तरह तैयार थे। और तब बोलीवार स्वतंत्रता और आजादी के प्रति उसी राष्ट्र के संदर्भ में ही, मजबूत दलीलें देते, जो अपने ही उपनिवेशों को यह सब देने से इन्कार कर रहा था। इस तरह उन्होंने आजादी और स्वतंत्रता के बारे में कहा कि 'स्पेनिश कानून और इसके इतिहास के उदाहरण हमें हथियार इस्तेमाल करने के लिए प्रेरित करते है।'[6] इसी देश के एक और प्रसिद्ध प्रतिनिधि 'मिरांदा' ने कहा, 'मैं स्वतंत्रता का उस समय से प्रेमी हूं जब अभी फ्रांस ने इसके बारे में सोचना भी शुरू नहीं किया था।'[7]

1501 के आसपास हिस्पानियोला टापू पर अश्वेत दासों का एक विद्रोह हुआ और 1519 और 1533 के बीच सान्तो देमिन्गो में 'इंडियन एनरीकूइलो' ने विद्रोह किया। अंततः इंडियन निवासी कैरिबियन से बिल्कुल समाप्त कर दिए गए। 1534 के आसपास चिले में अराउकानियान युद्धों में इंडियनों ने कड़ा प्रतिरोध किया। वहां पर हुआ कत्लेआम उतना ही बड़ा था जितना पश्चिमी इंडियन टापुओं और कैरिबियन तट के आसपास हुआ था। पेरू में 1536 में मांको द्वितीय ने लगभग 100,000 इंडियनों के एक विद्रोह का नेतृत्व किया, लेकिन फिर भी वह स्पेनवासियों की तकनीकी क्षमता पर काबू नहीं पा सके।

वेनेजुएला में पुराने दस्तावेजों के अनुसार 1532 में दासों ने एक विद्रोह 'विल्ला दे सान्ता आना दे कोरो' में किया। इसके बाद याराकुई राज्य में बुरइया खानों में नीग्रो मिगुएल ने विद्रोह कर दिया। इन्का क्षेत्र में भी गड़बड़ थी। किन्तो में विद्रोह के लिए काफी प्रयत्न किए गए जो फिर चिले में फैल गया। उस क्षेत्र में भावनाएं इतनी तीव्र थीं कि 1577 में जब डाकू 'दराके' पेरु में कालाओ के पास आया तो उस क्षेत्र के नीग्रों ने उस तक पहुंच उसे सहायता देने की पेशकश की। उत्तरी मैक्सिको के तोपिया क्षेत्र में 1589 में विद्रोह उठ खड़ा हुआ।

सत्रहवीं शताब्दी में प्रशासन के खिलाफ और ज्यादा विरोध चिन्ह दिखाई दे रहे थे, हालांकि यह अभी कुछ जगह भ्रूण स्थिति में ही थी। पिखाओ इंडियन 1601 में कोलम्बिया में हुइला और तोलीमा क्षेत्र में उठ खड़े हुए। पनामा में 1608 और मैक्सिको में 1612 में यही घटना दोहराई

गई। पेरु के इंडियनों द्वारा स्पेनिश स्वामियों के विरुद्ध जारी युद्ध 1625 में अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया। लीमा और उत्तरी पेरु में 1629 और 1630 के मध्य परेशानियों का लंबा सिलसिला शुरू हुआ। अर्जेंटीना 1645 और 1655 में तुकूमान विद्रोह का केंद्र था। लीमा में आंतरिक विद्रोह का भय 1655, 1675 और 1676 में तलवार की तरह लटकता रहा।

सत्रहवीं शताब्दी में वेनेजुएला में कई विद्रोह हुए। एक संक्षिप्त विवरण इन घटनाओं को प्रकट करेगा। 1603 में मारगारीता में मछली उद्योग में लगे अश्वेतों ने उनके साथ किए जाने वाले अमानवीय व्यवहार के प्रति विद्रोह कर दिया जो बाद में कुमाना के तट तक फैल गया। 1628 में निरगुआ में एक विद्रोह को दबा दिया गया। लेकिन स्पेनिश सम्राट अपनी इच्छा 'रंगीन' (मिश्रित) बहुमत की सेनाओं पर, थोप नहीं सके, जिन्हें अंत में विशेष मान्यता मिली और उन्हें स्वयं को 'मुलातो और साम्बो गणतंत्र' के रूप में इकट्ठे होने का अधिकार मिला। 1650 में तुई घाटी और कारालौवे, ग्रेरे, पारीआग्वान, पाराकोतोस और ला ग्वाइरा में कितने ही दास भाग निकले। अधिकारियों ने कुछ नेताओं को मार देने का आदेश दिया और उन लोगों के खिलाफ सख्त कदम उठाने के लिए कहा जो विद्रोहियों की मदद कर रहे थे। ग्वारिको में मुख्य चिपारारा के नेतृत्व में कैरिब्स और ओतोमाक्स दलों ने स्पेनियार्डों पर अंतिम प्रहार किया। 1671 और 1677 में कारोरा और मोनाए में चारों तरफ गड़बड़ फैली हुई थी।

इन सब आंदोलनों में क्या समानता थी ? पहली बात, समाज के निम्न वर्ग, विशेषकर सर्वाधिक दबे लोग यानी इंडियन की भूमिका, जो विदेशी बेंत को हटाने पर आमादा थे, जिसे वह अपने तानाशाहों से भी ज्यादा घृणा करते थे। और नीग्रो, मिश्रित जातियों के लोग, मुलातोस, मेस्तीखोस और साम्बोस भी आंदोलनों में शामिल थे। बहुमुखी युद्ध का मुख्य लक्ष्य हमेशा उन लोगों के लिए सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक अधिकार प्राप्त करना था जिन्होंने अपने को छोटा मानने से इन्कार कर दिया था और जो आंतरिक शक्ति का स्रोत, विद्रोह की भावना से भरे थे।

अठारहवीं शताब्दी में इन आंदोलनों ने बहुत कुछ सीखा। आर्थिक और सामाजिक लक्ष्यों के अलावा अब संघर्ष में एक राजनीतिक पहलू भी था। 1721 में उन्होंने पारागुए में एक करीयोलो विद्रोह किया जो अपने लक्ष्यों में सफल रहा। इसका निर्देशन न्यायाधीश एन्तोकूएरा ने वायसराय की सत्ता के खिलाफ किया। एक सरकार का गठन हुआ जो दस वर्ष चली और जिसका समर्थन 'कोमूनेरोस' ने किया। लेकिन 1735 में आंदोलन को कुचल दिया गया। पांच साल पहले बोलीविया में कोचाबाम्बा में चांदी का काम करने

वाले अलेखो कालातायूद ने करों की प्रक्रिया के खिलाफ विद्रोह कर दिया। यह सरकार के प्रति विद्रोह का वक्त था। नारा उभरा : 'एक नया राजा और नए कानून।' ये करीयोलो आंदोलन थे। बाद में, कारलोस पेरेयारा के अनुसार प्रत्येक राष्ट्र ने राष्ट्रीय आकांक्षाओं को मक्रीय कर अपने इंडियन अतीत को चार चांद लगा दिए।'[8] प्रत्येक राष्ट्र में क्षेत्रवाद की भावना उठ खड़ी हुई : 'अस्तेसिज़्म, इन्कासिज़्म, अराउकानिआनिज़्म, कैरीबिज़्म, नातिविज़्म, (ब्राजील में) और सिबोनेइज़्म।

शाही गुइपुसकोआना कम्पनी ने वेनेजुएला के धनिकों और लगभग सभी को हानि पहुंचाई। इसके खिलाफ विभिन्न सामाजिक दलों ने मिलकर विरोध किया। वेलेन्सिया के एक 'साम्बो', आन्द्रेस लोपेस देल रोसारियो, जिन्हें आंदेसोते के नाम से जाना जाता है, ने बासके कम्पनी के खिलाफ 1732 में युद्ध कर दिया। यह सब याराकूए घाटियों और पूयेरतो काबेल्लो टिकाकास के तट पर हुआ जो तस्करी का क्षेत्र था और जहां डच प्रभाव ज़्यादा था। 1741 में सान फेलिपे विद्रोह शुरु हुआ। शुरु मे विद्रोह का कारण कुछ न्यायिक विवाद था, लेकिन अंतत. विद्रोह का वास्तविक लक्ष्य उपनिवेशी आदेश का विरोध करना था जिसके अधीन करीयोलोस गुईपुसकोआना कम्पनी के नियमों का अनुसरण करने के लिए बाध्य थे।

राज्य सरकार और उसके स्थानीय प्रतिनिधियों के खिलाफ एक महत्वपूर्ण विद्रोह का केन्द्र एल तोकुयो था। इसी दौरान एक विशेष शब्द का प्रयोग किया गया, एक खास संदर्भ लाया गया। यह शब्द एल तोकुयो के कुछ भद्र पुरुषों द्वारा तैयार की गई रपट मे है जिसमें उन्होंने जनता के सामने तीन कारण दिए कि उन्हें क्या कुछ करना चाहिए। 'हमारे कैथोलिक धर्म की रक्षा, हमारे राजा की रक्षा जो हमारा प्राकृतिक शासक है, और हमारे पातरिया की रक्षा।'[9] 6 साल बाद येरे हासियेन्दास में नीग्रो मिगायुएल लुयेंगो का विद्रोह समाप्त हो गया। दासों को स्वतंत्र करने की एक सरकारी घोषणा की चर्चा की गई जो दास-स्वामियों द्वारा छुपा ली गई थी। 1749 में विद्रोह जारी रहा, और इंडियन कुम्बेस और तुए के हासिएन्दास तथा नीग्रो मेनुएल एखानोसा ने षड्यंत्र रचे। नीग्रो को फांसी दे दी गई।

50 साल के दौरान इस संघर्ष में सबसे महत्वपूर्ण घटना खुआन फ्रांसिसको दे लियोन द्वारा 1749 और 1751 का विद्रोह थी जब शुरु की देश-भक्ति वाली भावना फिर से उभर कर आई। शब्द 'पातरिया' का प्रयोग कैनरी टापू के एक नेता के काराकास में जन्मे बेटे निकोलास दे लियोन ने किया। 'अपने पातरिया की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है क्योंकि अगर हम इसकी रक्षा नहीं करेंगे तो हम दूसरों के दास बन जाएंगे।'[10] बार-बार तुए की

भूमि विद्रोह का जन्म स्थल बनी । 1771 से 1774 तक नीग्रो गुइलरमो ने, जो मारकोस रिवा के दास थे, कालोनी प्रशासन की नाक में दम करके रखा ।

जब कि आन्द्रेसोते वेनेजुएला में लड़ रहे थे, खुआन वेलेस दे कोरदोवा ओरुरो में संघर्ष कर रहे थे। कास्तरोविएरिना और कातावाम्बा भी विद्रोह में उठ खड़े हुए। 1742 से 1746 तक पेरू निवासी गुरिल्ला नेता खुआन सान्तोस अताउआलपा ने विद्रोह की मशाल बुझने नहीं दी। 1750 में वायसराय ने लीमा में एक विद्रोह को कुचल दिया। इस समय तक अमेरिका सजग और तैयार हो गया था। 1775 में क्यूबा भी पंक्ति में आ गया। चिले में आराउकानियन युद्ध फिर शुरू हुआ। जेसूइत सहयोगियों ने मैक्सिको में 1767 और 1768 के मध्य गड़बड़ शुरू कर दी। इन्ही वर्षों में कित्तो, चिले, न्यु ग्रेनादा व पेरु में भी अक्सर विद्रोह होते थे—सीमा-करों के विरुद्ध और अधिकारियों व 'आग्वारदिएन्ते' मे राज्य की एकवादिता के खिलाफ। प्युबला, ग्वानाख्आतो, सान लुईस दे ला पैख, सान लुईस पोतोसी और पातसुआरो ने भी मैक्सिको में सख्त झटके महसूस किए। बाद में यही घटना कुम्बीविलकाम के पेरुवियन शहरों—ललाता, उरूवाम्बा, लाम्बाएके, कोनकुसेस, हुआरास, युंगे, हुआनकावेलिका, पास्को, अरेकिया और कुसको मे भी घटी।

खोसे गेबेरील कोन्दोरकानकी के नेतृत्व वाले विद्रोह का विशेष जिक्र किया जाना चाहिए, जो स्वयं को 200 साल पहले इन्का मुखिया के सम्मान में तुपाक् अमारु कहते थे और जिन्हें वायसराय तोलेदो ने मार दिया था। उन्होंने मितास को समाप्त करने के लिए, जो इडियनों को विवश कर काम करवाने वाला कानून था और कपड़े के मिलों को बंद करने व इडियनों को दासों की तरह बांटने से सम्बंधित कानूनों को खत्म करने के लिए था, 60,000 व्यक्ति तैयार किए। इसकी शक्ति के बहुत व्याप्त होने के बावजूद, जो कभी पेरु के बड़े भाग तक थी, इसकी कमजोरियों व नेता की अनुपस्थिति ने इसे सीमित और छोटा कर दिया। नेता को 1781 में गोली मार दी गई। उनके एक ममेरे भाई तुपाक् इन्का ने संघर्ष कुछ और वर्षों के लिए बढ़ा दिया। कारलोस मीना कातारी ने ला पेख और सोराता पर कब्जा कर लिया। एक और कातारी ने कायोन्ता पर हमला कर दिया। तुपाक् अमारू के कई अनुयायी थे जिन्होंने कानून अपने हाथ में लिया, जैसे : ओरूरो में खासीन्तो रोदरीगेज़, दिएगो किरस्तोबाल, कोन्दोरकानकी के भाई, मारीनो, दिएगो किरस्तोबाल के पुत्र, लुईस लासो दे ला वेगा, खुलीयान अपासा (तुपाक् कतारी), अलेखेन्दरो कलिसाया, पेदरो विलकापासा और कई अन्य।

विचारों और घटना-चक्रों की समानता के कारण पेरु की घटनाओं को

पूरे लातीनी अमेरिका में दोहराया गया। न्यू ग्रेनादा में, सोकरो में 'कोमूनेरोस' आंदोलन में विद्रोह उठ खड़ा हुआ। इस क्षेत्र में जनता ने ख़ोसे अन्तोनियो गालान और खुआन फ्रांसिस्को बेरबेओ के नेतृत्व में करों के खिलाफ संयुक्त जेहाद छेड़ दिया और कापितुलासिओनेस दे सिपाकूइरा प्राप्त किया जबकि वास्तव मे इनको कभी प्रयुक्त नहीं किया गया। गालान लड़ते लड़ते अपने तीन साथियों के साथ शहीद हो गए।

विद्रोह का बुखार तेज़ी से फैल रहा था। 1781 के जुलाई और अगस्त मे वेनेजुएला के ताकीरा, मेरिदा, माराकैबो और तुरुखिलो के क्षेत्रों मे प्रसिद्ध विद्रोह शुरू हुआ जिसके पूरे क्षेत्र में फैल जाने की आशा थी। इस विशाल आंदोलन के मुख्य पद सेनाध्यक्ष के लिए लोगों ने ला गरीता के खुआन ख़ोसे गारसिया दे हेविया को चुना। उनका नारा था : 'राजा जीवित रहे हज़ारों साल, सरकार को नीचे गिराओ', और उनका लक्ष्य था अधिकारियों द्वारा लगाए गए शेष करों को समाप्त करना। तुरूखिलों में जोश ठंडा पड़ गया जब काबिलदो ने मेरिदा कोम्यूनेरोस को अपना समर्थन वापिस ले लिया। इस जगह आंदोलन बारीनास और सुलिया की तरफ बढ़ रहा था।

काराकास मुआन्तोस ने भी ऐसे उपायों को नापसंद कर दिया जो उनके आर्थिक हितों के खिलाफ जाते थे। जुलाई 1718 में दोन खुआन वीसेन्ते दे बोलीवार ई पोन्ते ने मिरांदा को ख़ोसे दे आबालोस की स्थानीय तानाशाही के बारे में लिखा। अगले साल बोलीवार के जन्म के ठीक 18 वर्ष पूर्व यही व्यक्ति, दोन खुआन वीसन्ते, मार्तिन दे तोवर और माराकिस मिखारेस के साथ मिरांदा के पास गए और फिर से उन्हें स्वतंत्रता का चश्मा पहनाया। उन तीनों ने अपने युवा देशवासियों के अनुयायी बन कौदिल्लो की तरह अपने 'रक्त की अंतिम बूँद तक बहाने की पेशकश की।'[11]

लातीनी अमेरिका की इन सब घटनाओं से यही पता चलता है कि स्वतंत्रता और समानता के लिए यह संघर्ष जो लातीनी अमेरिका निवासियों को दिलो-जान से प्यारा था एक लंबे समय तक चला। ये सब घटनाएं आकाक्षाओं और बलिदानों को प्रदर्शित करती हैं; कालोनीवाद और अन्याय के खिलाफ लड़ने की इच्छा न उनमे एक प्रेरणा की तरह काम किया और यह दिखाया कि उपनिवेशवाद अपनी दासता, अन्याय और अत्याचारों के बावजूद अमेरिकी भावना को कुचल नहीं सका।

स्वतंत्रता आंदोलन की शुरूआत

18वीं शताब्दी के अंतिम दशक में महान नेता सामने आए जिनमें शामिल थे : फ्रांसिस्को दे मिरांदा, ख़ोसे खुआकिम दा सिलवा ज़ेवियर, खुआन

पाबलो विस्कारदो दे गुज़मान, फ्रांसिस्को इयुगिनयो दे सान्ता क्रूज़ ई एस्पेखो और अन्तोनियो नारिनो।

मिरांदा (1750-1816) ने लातीनी अमेरिकी राष्ट्रीयता को संवारने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अंतर्राष्ट्रीय महत्व के वह पहले करीयोलो थे क्योंकि कोई भी उनसे पहले महान शक्तियों के बीच इतनी ताकत वाला नहीं हुआ था। लातीनी अमेरिकी स्वतंत्रता के प्रति उनके प्रेम का उद्गम एक मूल्यवान क्षण में हुआ, जैसा वह स्वयं बताते हैं। जब वह संयुक्त राज्य में स्वतंत्रता युद्धों में लड़ रहे थे तब उन्होंने कहा : 'मेरे दिमाग मे जो पहला विचार आया वह था मेरी जन्मभूमि की स्वतंत्रता की इच्छा, क्योंकि उस वक्त मुझमें दक्षिण अमेरिका को मेरा पातरिया कहने की हिम्मत नहीं थी।'[12]

मिरांदा पूरे लातीनी अमेरिकी महाद्वीप के लिए क्रांतिकारी आंदोलन के केंद्र थे। उनके चारों तरफ समान विचारों से बंधे अलग-अलग जगहों के लोग थे। इसी तरह 1828 में ओ' हिग्गस ने कहा था : 'मैं मिरांदा को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने मुझमें अपने देश की क्रांति शुरु करने के पथ के लिए प्रेरणा दी।'[13] उनके आसपास ये लोग भी थे : पेरुवियन खोसे, देल पोसो ई सुकरे, अन्तोनियो नारिनो और पैदरो फेरमान दे वारगास (न्यु ग्रेनादा), पाब्लो दे ओलाविदे, मैनुएल खोसे सालास और क्यूबन, पैदरो खोसे कारो। इनमें से कई लोग मिरांदा द्वारा लंदन में आरंभ 'ग्रान रीयूनियन अमेरिकाना' के सदस्य थे। बैल्लो और बोलीवार भी सदस्यों में शामिल थे। मैक्सिकन फरे सेरवान्दो तेरेसा दे मिएट, कारलोस मोस्तूफार (कित्तो), बर्नार्दो मोन्तेगुदो और मारियानो मोरेनो (रिवर प्लेते) इसके सदस्य थे, और इसकी शाखाएं मैक्सिको, काराकस, ग्वातेमाला, रिओ दे जेनिरियो और ब्युनस आयर्स में थीं। इन लोगों ने महसूस किया कि वे एक ही देश के नागरिक थे।

जब मिरांदा वेनेजुएला को स्वतंत्र कराने आए तो उन्होंने पूरे लातीनी अमेरिका का सोचा। उनकी सेनाएं अमेरिका के स्वतंत्र लोगों की सेवा में 'कोलम्बियन सेनाओं' के नाम से जानी जाती थीं। उन्होंने शपथ ली और दिलाई कि वह अमेरिका के स्वतंत्र लोगों के प्रति श्रद्धा और भक्ति रखेंगे और दुश्मनों व अहितों से उनकी रक्षा करेंगे।[14] 'अमेरिका' का अर्थ था 'स्पेनिश अमेरिका।' उस समय टैक्सास और कैलिफोर्निया स्पेनिश थे, कनाडा एक सफेद-हरा रेगिस्तान था, संयुक्त राज्य कालोनियों में बंटा हुआ था जो संघवाद का प्रयोग कर रही थीं। मिरांदा ने और नेताओं की तरह अमेरिका को परिभाषित करना जरूरी नहीं समझा। उस समय सिर्फ था : हिस्पानिक (स्पेनिश) अमेरिका। उनके कई विचारों को समकालीन नेताओं ने स्पष्ट किया जिनमें पिकोरनेल, गौल और एस्पाना उल्लेखनीय हैं। बोलीवार ने भी कईयों को

फ्रांसिस्को दे मिरांदा

अपनाया और प्रभाव में लाए; उदाहरणतः ग्रान (महा) कोलम्बिया का गठन।

ब्राज़ील की विस्तृत सीमाओं में एक महान नेता थे खोसे खोआकिम दा खावियेर (1784-1792) जो तिरादेन्तेस के नाम से जाने जाते थे। क्रांति की शुरुआत, जैसा कि शेष लातीनी अमेरिका मे हुआ, पुर्तगाल के राजा के अत्यधिक करों को लेकर हुई। यह असंतोष की भावना बढ़ती रही जब तक कि संपूर्ण कार्यक्रम की रूपरेखा खींची गई जिसमे ब्राज़ील में एक स्वतंत्र गणतंत्र का गठन किया गया था। इसका ध्वज श्वेत था जिसमें एक पंक्ति थी : लिबेरताम क्वाए सेरा तामेन। करों की बकाया राशि समाप्त कर दी जानी थी। दासता को समाप्त कर दिया जाएगा (प्रयोग रूप में), मुक्त व्यापार होगा, लोगों के लिए विद्यालयों की रचना की जाएगी और फैक्टरियों में भी वह सामान बनाया जाएगा जो इस वक्त पेनीनसुला से आयात किया जाता है, और राज्य पांच से ज्यादा बच्चों वाले परिवारों की सहायता करेगा। नारा होना था : 'आज़ादी हमेशा जीवित रहे।' यह षड्यंत्र असफल रहा, नेता गिरफ्तार कर लिया गया, साथ ही कामरेडों को भी पकड़ा गया, मुकदमा चलाया गया, और उसे फांसी की सज़ा सुनाई गई। 21 अप्रैल 1772 को उन्हें फांसी दे दी गई। वह आज भी ब्राज़ीलवासियों के दिलों में प्रेरणा का स्रोत बनकर जीवित हैं।

फ्रांसिस्को इयुगिनियो दे सान्ता क्रुस ई एस्पेखो (1747-1795) एक्वादोर में स्वतंत्रता की तरफ प्रथम कदम का प्रतिनिधित्व करते हैं। वह मिश्रित जाति की संतान थे और एक शानदार व्यक्तित्व : चिकित्सक, न्यायप्रिय, विचारक, पत्रकार और प्रख्यात लेखक। उन्होंने भी दक्षिणी अमेरिका को एक इकाई की तरह देखा और उनके क्रांतिकारी कार्यक्रम पूरे दक्षिणी अमेरिका के लिए थे। उन्होंने दक्षिणी अमेरिका के लिए आत्मनिर्णय और स्वतंत्रता की पैरवी की। ऐसा उन्होंने स्पेनवासियों को क्षति पहुंचाए बिना किया जिन्हें वह महज़ उन स्थितियों व पदों से हटाना चाहते थे जो वे राजनीतिक क्षेत्र में पहले संभाले हुए थे। उन्होंने चर्च के राष्ट्रीयकरण का प्रस्ताव रखा और इसकी सम्पत्ति का उपयोग जन-कल्याण के लिए करने का सुझाव दिया। यह मेस्तिखो, एक्वादोर के तीन सौ वर्षों के कालोनीवाद में सबसे महत्वपूर्ण नेता थे। उनके अनुयाइओं और भक्तों ने, जिन्होंने हर तरह की परेशानियां व दुख सहे, 10 अगस्त 1809 को वह महान कदम उठाया। उस दिन कित्तो के निवासियों ने लोगों की सर्वोच्च इच्छा का पालन करने और सरकार को बदलने व स्पेनिश अधिकारियों को समाप्त करने का फैसला किया, जिसके बाद एक सर्वोच्च सत्ता का गठन किया जाना था जो पेनीनसुला से पूर्णतः स्वतंत्र कार्य करेगी। एस्पेखो और अन्य देशभक्तों के बलिदान ने इस देश के इतिहास में इस अविस्मरणीय संघर्ष को अमर कर दिया।

पेरु में एक महत्वपूर्ण नेता ख़ुआन पाबलो विस्कारदो दे गुज़मान (1748-49) थे जिनका जन्म आरेकिया क्षेत्र में हुआ। युवा रूप में वह एक जेसुइत थे लेकिन बाद में उन्हें इससे अलग कर दिया गया। वह उपनिवेशी शासन के मुख्य आलोचक थे, और अमेरिका में स्पेनिश विरोधी विद्रोहों से प्रभावित थे और साथ ही अर्जेंटीना में ब्रिटिश घुसपैठ ने भी उन पर प्रभाव डाला। उन्होंने सबसे पहले पेरु की स्वतंत्रता का विचार प्रस्तुत किया, बाद में अपने प्रसिद्ध 'अमेरिकी स्पेनियार्डों के नाम पत्र' में उन्होंने अपने कार्यक्रमों को पूरे स्पेनिश अमेरिकी महाद्वीप की स्वतंत्रता तक बढ़ा दिया। उन्होंने पेनीनसुला के खिलाफ करीयोलो असंतोष जाहिर किया। उनका पत्र खूब प्रसिद्ध हुआ जिसे शुरू में फ्रच में प्रकाशित किया गया था ताकि अमेरिकी विचारधारा यूरोप में और ज़्यादा फैल सके। इसमें उपनिवेशी परिस्थितियों की इतने कड़े शब्दों में निंदा है कि इस का जवाब देना बेहद मुश्किल होगा। दासता, शोषण की उनकी आलोचना का लक्ष्य सुशुप्त भावनाओं को आंदोलित करना था।

दोन आन्तोनियो नारिनो (1765-1823) ने सान्ता फ़े के वायसराय के रूप में वह काम शुरू किया जिसे बोलीवार ने पूरा करना था। नारिनो मारिदाँ के मित्र थे और मारिदाँ व एस्पेखो की तरह उनका व्यक्तित्व महान सस्कृति का था। अगस्त 1749 में उन्होंने 'मानव अधिकारों' की एक फ्रांसीसी प्रति प्राप्त की जिसे उन्होंने अनुदित किया और अपनी प्रेस में प्रकाशित किया। उनका घर बोगोता करीयोलो इन्तेलीखेन्तसिया का मिलने का स्थान था जो राजनीतिक परिवर्तनों के भविष्य पर चर्चा कर रहे थे। उपनिवेशी अधिकारियों ने नारिनो को अपनी पूर्ण क्रूरता दिखाई। उनकी सम्पत्ति ज़ब्त कर ली गई और उन्हें अफ्रीका में दस वर्ष हेतु निष्कासन की सज़ा दी गई। सभी नेताओं में से वही अकेले थे जो स्वतंत्रता आंदोलन की सफलता को देखने के लिए जीवित रहे। अन्तोनियो दे पेदरो 1782 में रिवर प्लेते और पेरु की स्वतंत्रता के लिए कार्य कर रहे थे। मैक्सिकन फ्रांसिस्को दे मेन्दिओला भी चिले पुजारी ख़ुआन खोसे गोदोए ई, देल पोसो की भांति अपने देश के लिए सजगता से काम कर रहे थे।

19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में जब बोलीवार अभी 20 वर्ष के भी नहीं थे, वेनेजुएला को पहले ही न्याय और आज़ादी के संघर्ष का अनेक ताज़ी घटनाओं द्वारा विस्तृत अनुभव हो चुका था। खोसे लेओनारदो किरीनोस कोरो के एक महत्वपूर्ण विद्रोह के नेता थे। एक कर-अधिकारी का असहनीय व्यवहार रक्तमयी घटनाओं का कारण बन गया। फ्रांसीसी क्रांति की प्रतिध्वनि और हैती में जैकोबिन का संघर्ष कोरो में किरीनोस नीग्रों के कानों तक पहुंचा और उन्होंने न सिर्फ दासों और घृणित करों की समाप्ति की पैरवी की

बल्कि स्वतंत्रता, प्रेम, समानता और गणतांत्रिक सिद्धांतों को भी फ्रांस से अपनाया। जबकि किरीनोस न्यायाधीशों के फैसले की प्रतीक्षा कर रहे थे, डाक-जहाज़ 'ला गोलोनदरिना' ला ग्वाइरा पहुंचा जिसमें राज्य के खिलाफ अपराधों के लिए अपेक्षित भगौड़ा मौजूद था : पिकोरनेल, जिन्हें वेनेज़ुएला के क्रांतिकारी आंदोलन का सूत्रधार होना था—एक आंदोलन जिसका लक्ष्य स्वतंत्रता था। 1794 में ऐसी घटनाएं इस बंदरगाह पर घट रही थीं। पिकोरनेल शीघ्रता से मेनुएल गौल और खोसे मारिया एस्पाना से मिले। वह सही जगह और सही वक्त पर आए थे जो क्रांति के गठन के लिए सर्वोत्तम था। षड्यंत्रकारियों के इस दल के मूल विचार पिकोरनेल द्वारा लिखित 'ओरदेनान्सास कोनसतीतूसियोनेस' में थे। इसमें इस आंदोलन के आधारिक विचार ढूंढे जा सकते हैं। इसमें परिस्थितियों का स्पष्ट वर्णन है और स्वतंत्रता के लिए आवाज़ है। वेनेज़ुएला कानूनों, न्याय और आज़ादी के सिद्धांतों पर आधारित एक संघीय गणतंत्र बनना था। तब संपूर्ण समानता होगी जिसमें जातीय समानता भी शामिल है। 'राज्य के सभी निवासियों के बीच सहज़ समानता की घोषणा की जाती है और श्वेत, इंडियन, नीग्रो और मिश्रित जातियों के लोग आपस में शांति से रहें, एक दूसरे को भाई समझते हुए भगवान की नज़र में समान ; व्यक्तियों के बीच वास्तविक अंतर योग्यता और गुणों पर आधारित है और यही हमारे गणतंत्र में मौजूद होंगे ; साथ ही, 'दासता निश्चय ही समाप्त की जाती है क्योंकि यह मानवता के विरुद्ध है।'[15]

हालांकि यह एक वेनेज़ुएलन कार्यक्रम था जिसका केंद्र ला ग्वाइरा था और काराकास, कारुपानो, वेलेन्सिया, पुयेरतो कैबेल्लो, बारलोवेन्तो आदि के कार्यक्रम का वास्तविक लक्ष्य पूरा लातीनी अमेरिका था। इस तरह एकता के केंद्रीय सिद्धांत पर ज़ोर दिया गया। 1782 में मिरांदा द्वारा सुझाए गए विचार को यहां तर्कसंगत निष्कर्ष दिया गया। पहले भी लातीनी अमेरिकी एकता और भाईचारे की भावना की बात की गई थी। सभी दस्तावेज़ों, नारों, गानों और पर्चियों पर सम्बोधन सदैव 'अमेरिकन लोगों' को होता था। इसके बाद से लातीनी अमेरिकी एकता का संदर्भ वेनेज़ुएलन विचारधारा के समीप था। यह मिरांदा, बोलीवार और बैल्लो के बीच समान सूत्र था और वेनेज़ुएला बाद में महाद्वीपीय एकता और सद्भाव के लिए आंदोलनमें सब से आगे था।

जुलाई 1797 में इस षड्यंत्र की असफलता वेनेज़ुएला की स्पेनिश सीमा में शांति नहीं ला सकी। पिकोरनेल, गौल और एस्पाना के बाद माराकैबो में पिरेला सामने आए और ओरिएंते में भी कुछ असफल प्रयत्न किए गए। 1806 में दोन फ्रांसिस्को दे मिरांदा खुद वेनेज़ुएला के तटों पर अपने देश की आज़ादी के लिए लड़ रहे थे। एक विकसित कार्यक्रम की दिशा में यह एक और कदम

था जिसमें विदेशी मदद भी शामिल थी और यह एक ठोस आधार पर बना था, जिसका फल 1810 और 1811 में मिलना था।

वेनेजुएला में कोरो के प्रथम दास-विद्रोह (1532) से लेकर मिरांदा (1806) द्वारा इसी शहर पर कब्ज़ा करने तक 250 से ज्यादा वर्ष बीत चुके थे, जो आत्म-बलिदान और आदर्शों में विश्वास व श्रद्धा और राष्ट्रवादिता की उपस्थिति को साबित करते थे। अंततः नेताओं की लंबी पंक्ति, जो या इकठ्ठे सामने आए या एक-एक करके आए, एक ऐतिहासिक मार्ग की तरह देखी जा सकती है जिसमें मशाल एक हाथ से दूसरे हाथ जाती रही—किरीनोस से पिकोरनेल को, गौल को, एस्पाना को, पिरेला को और फिर मिरांदा को। सारे लातीनी अमेरिकी महाद्वीप में विद्रोहों और संघर्ष व बलिदानों की लंबी शृंखला रही है। न्याय, स्वतंत्रता, आज़ादी, समानता और एक नए युग के लिए रक्त खुलेआम बहता रहा।

इसी वक्त जब उपनिवेशवाद संकट की घड़ियों में था और क्रांतिकारी आंदोलन विकसित हो चुका था, और जब फ्रांसिस्को दे मिरांदा आज़ादी के संघर्ष में पहले ही एक अग्रणी नेता थे, तभी बोलीवार सामने आए। उनके सामने तीन सौ वर्षों की क्रांति के संघर्ष का इतिहास था। आशाओं और आकांक्षाओं का भार काराकास के इस नायक के कंधों पर आ पड़ा, जो बाद में 'मुक्तिदाता' के सम्बोधन से जाना गया। □

संदर्भ

1. एम. ब्रिसेनो इरागोराई, "इन्तरोदूकसियोन ई देफेनसा दे न्यूएस्तरा हिस्तोरिया," (काराकास 1952), पृष्ठ 78

2. तेरसेरोनेस, कुआरतेरोनेस, कुइनतेरोनेस, मोरिसकोस, कोयीतेस, चामिसोस, आहि ते एस्तास्, सालतो आतरास, गिबारोस्, साम-बाईगोस, तेन्ते एन ऐल ऐरे, नो ते एनतिएन्दो, कोलोस्, कुआदरा-लबोस, तरेसालबोस, कास्तीखोस इत्यादि।

3. कारदिनाल् आर्कबिशप (ओस्तिया), बाईबल, प्रसंग 1118

4. बोसकुएखो दे ला रेवोलुसियोन् एन ला अमेरिका एस्पानोखा (काराकास 1953), पृष्ठ 16

5. ओबरास कोम्पलीतास् (दो अध्याय 1 हवाना, 1947), 1, 164-166

6. ओबरास कोम्पलीतास, 6, II, 1130

7. से. पारारा—पेरेख, हिस्तोरिया दे ला परीमेरा रिपबलिका दे वेनेजुएला (दो अध्याय, काराकास, 1959), 1, 121

8. ब्रवे हिस्तोरिया दे अमेरिका (चिलो, 1938), पृष्ठ 367

9. से. फेलिसे कारदोत्, 'रिबेलिओनेस, मोतिन्से, ई मोविमिएन्तोस दे मेसास् एन एल सिगलो XVIII वेनेख़ुलानो : 1750-1781,' एल मोविमिएन्तो एमान्सिपादोर दे हिस्पानो अमेरिका, (काराकास, 1961) 11, 204

10. दाकुमेन्तोस् रेलातिवोस् आ ला इन्सुरेसियोन् दे ख़ुआन फ्रांसिस्को दे लेओन् (इन्तोतयूतो पानाअमेरिकानो दे खेओखाराकिया ई हिस्तोरिया, (काराकास, 1949) पृष्ठ, 88

11. एफ दे मिरांदा, आरकिवो (15 अध्याय, काराकास, 1929-38), XV, 68

12. खे. मानकिनी, बोलीवार ई ला एमानसिपोसियोन् दे लास कोलोनिआस एस्पानोलेस (पेरिस—मैक्सिको, 1914), पृष्ठ 160

13. पि. उगालदे, 'प्रेसेन्सिया ई मिखस्तेरियो दे मिरांदा एन ला रेवोलुसियोन चिलेना,' कल्तुरा युनिवरिसतारिया, युनिवरसिदाद सेन्तराल दे वेनेजुएला, काराकास, XVII-XVIII (1950), 47

14. खे बिगास, हिस्तोरिया देल इनतेन्तो दे दोन फ्रांसिस्को दे मिरांदा पारा एफ़ूक्तार उना रेवोलुसियोन एन सुर् अमेरिका (काराकास, 1950), पृष्ठ 37-38

15. सी. एफ. लोपेख, खुआन बोतिस्ता पिकोरनेल इ ला। कान्सपिरासियोन दे गौल ई एस्पाना (काराकास-मेड्रिड, 1955), पृष्ठ 354 □

2. बोलीवार : एक दृढ़ व्यक्तित्व

मूल व प्रारंभिक शिक्षा

बोलीवार परिवार के पहले सदस्य, जिनका नाम भी संयोगवश सिमोन ही था, 1589 में वेनेजुएला आए और अगले 200 वर्षों में यह मूल स्पेनिश वंश अमेरिकी वातावरण के सम्पर्क से परिवर्तित हो गया। ऐसा प्रतीत होता है कि बोलीवार में "इडियन" रक्त था ही नहीं।[1] लेकिन बोलीवार की मां श्रीमती मारिया जौसिफ़ा मारिन दे नारवाएज़ का जन्म उनके पिता श्री फांसिस्को मारिन दे नारवाएज़ के किसी अज्ञात महिला के साथ अवैध सम्बंध रखने से कराकास में 1668 में हुआ था, और बोलीवार की अश्वेत चमड़ी ने इस संदेह को जन्म दिया है कि शायद उनमें कुछ नीग्रो रक्त का सम्मिश्रण भी था।

सिमोन बोलीवार का जन्म कराकास मे 24 जुलाई 1783 को हुआ था। वह अपने माता-पिता श्री खुआन वीसेंत बोलीवार और श्रीमती मारिया दे ला कांसेपसियान पेलेसियास ई ब्लांको के चौथे सुपुत्र थे। कराकास उस समय एक छोटा सा शहर था जिसमें लगभग 20,000 निवासी थे। कुछ समय पहले ही इसे वेनेजुएला की राजधानी का दर्जा प्राप्त हुआ था। जब बोलीवार सिर्फ ढाई वर्ष के थे, उनके पिता का देहांत हो गया और उनकी शिक्षा का काम राजधानी के प्रख्यात विद्वानों के हाथ सौप दिया गया। उनकी मां ने उनके लिए अच्छी शिक्षा का प्रबन्ध करने मे खूब व्यय किया, जो उन दिनों सभी धनिकों के लिए साधारण बात थी। आरंभिक अध्यापकों में विख्यात शिक्षाविद् सम्मिलित थे, जैसे खोसे अतोनियो नेगेरेत, कार्रस्को, गुलिरमो पेलेगरान्, फरनान्दो वीदेस आदि। बोलीवार को साहित्य और भूगोल पढ़ाने का श्रेय विशिष्ट कवि और वैयाकरण आँदरेस बैल्लौ को प्राप्त है। प्रसिद्ध गणितज्ञ कपुचिन फिरेर फ्रांसिस्को दे एंदूखेर ने तो बोलीवार के घर निजी विद्यालय की ही स्थापना कर डाली। लेकिन उनके ऊपर सबसे अधिक प्रभाव जिस अध्यापक ने डाला, वह थे सिमोन रोदरीगेज़। उन्होंने ही बच्चे में बौद्धिक व राजनीतिक जिज्ञासा उत्पन्न की और उसे निजी स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया, जिसे बाद में एक पूरे महाद्वीप को स्वतंत्र करना था। ऐतिहासिक शक्तियों को समझाने और नए व रचनात्मक

आंदरेस बैल्लो

सिमोन रोदरीगेज़

विचारों को अपनाने हेतु रोदरीगेज़ ने बोलीवार को परम्परागत लबादे को उतार फेंकने में मदद की। रोदरीगेज़ ने उन्हें उनके मित्रों से विमुख ही रखा, जो बोलीवार को सिर्फ उनके परिवार की प्रतिष्ठा को जीवित रखने या परिवार का मान बढ़ाने की सलाह ही दे सकते थे, जबकि यह सब बोलीवार आसानी से कर सकते थे; धन व प्रभाव उन्हें बिना किसी जोखिम के उपलब्ध थे।

बोलीवार जब किशोरावस्था में थे तब उन पर सर्वाधिक रचनात्मक प्रभाव रोदरीगेज़ ने डाला क्योंकि बोलीवार न सिर्फ उनके घर में रहे बल्कि उनके स्कूल भी गए। साथ ही जब बोलीवार युवा थे, दोनों ने इकट्ठे यूरोप भ्रमण किया जहां युवक ने अपनी शिक्षा के द्वितीय महत्वपूर्ण चरण को पूरा किया। काराकास में उनकी शिक्षा अनियमित रही जिसका कारण उनको दी गई खुली छूट और उनकी अपनी बेचैनी थी। अवरोध व बाधाएं इसी का परिणाम थे। माद्रिद में उन्होंने सान फरनान्दो एकादमी में गणित पढ़ा व कुछ समय के लिए वह दक्षिणी फ्रांस में सोरेसे स्थित शाही सैनिक स्कूल में भी रहे। एक विशेषज्ञ के अनुसार बोलीवार की शिक्षा का सबसे सार्थक समय माद्रिद में बिताए गए तीन वर्ष थे। ऐसा लगता है कि अध्ययन के प्रति लगाव जो उनके साथ जीवन भर रहा, माद्रिद में ही जागृत हुआ था। काराकास की अनियमित शिक्षा माद्रिद में वातावरण परिवर्तन और ऐस्तेबान पालासियोस के प्रभाव के कारण नियमित हो गई, जो उन्होंने पूरे संकल्प के साथ की और जिसके वह योग्य थे।"[2]

माद्रिद में बोलीवार ने योग्य अध्यापकों की देख-रेख में फ्रेंच और अंग्रेज़ी का भी अध्ययन किया जिसमें उनके संरक्षक मारकिस खैरोनीमो दे उसतारीस ई तोवार थे जो राजनीतिक व नैतिक दर्शन-ज्ञान से ओतप्रोत एक साफ दिल वृद्ध सज्जन थे। इसी विश्वस्त सूत्र का कहना है : "माद्रिद में बोलीवार ने वही शिक्षा प्राप्त की जो उस समय के युवा रईसों के लिए थी, जिनका भविष्य सेना में था। अपनी शिक्षा के प्रति ध्यान केन्द्रित करने के साथ-साथ वह थियेटर, कैफे, पार्टियों व कभी-कभी न्यायालय भी जाते थे।" यह कहना आवश्यक है कि जो लोग बोलीवार की शिक्षा के लिए उत्तरदायी थे उन्होंने महज़ किताबी ज्ञान पर ही ज़ोर नहीं दिया। बचपन से ही उन्हें घुड़सवारी व नृत्य की शिक्षा दी गई और बाद में बोलीवार ने इस विविध शिक्षा के लाभों का ज़िक्र किया। अन्तर्ज्ञान द्वारा उनके अध्यापकों ने शिक्षा की प्रक्रिया का विस्तारात्मक दृष्टि से पालन किया, यानी एक ऐसी प्रक्रिया जिसकी प्रवृत्ति एक ऐसे व्यक्तित्व के विकास की है जो औपचारिक शिक्षा के उपरांत भी सीखना और बढ़ना जारी रख सकता है।

भ्रमण ने भी बोलीवार पर महत्वपूर्ण रचनात्मक प्रभाव डाला क्योंकि

इससे उन्होंने अन्य संस्कृतियों के प्रति सद्भावना व सहिष्णुता सीखी। एक निरीक्षक ने लिखा : "बोलीवार उत्साह से भर उठते हैं जब भी वह अपनी यूरोप की यात्राओं का जिक्र करते है। स्पष्ट है कि बोलीवार ने जो भी देखा उन्हें उससे लाभ हुआ है। जीवंत उत्साह व कल्पना के अतिरिक्त उनके निर्णय तुरंत व सही होते थे। समय, स्थान व परिस्थितियों के मुताबिक वह मूल्यांकन करने मे सक्षम हैं : उन्हें आभास है कि एक बात अपने में चाहे अच्छी हो, बहुत अच्छी हो, फिर भी एक विशेष क्षण में उपयुक्त नहीं है या एक जगह उपयुक्त है, दूसरी जगह नहीं।"[3]

कुल मिलाकर बोलीवार तीन बार यूरोप गए, हर बार विभिन्न कारणों से, यद्यपि हर बार मूल उद्देश्य एक ही था : अनुभव हासिल करना। पहली यात्रा आरम्भ हुई जब बोलीवार 15 वर्ष के थे और इसका अभिप्राय उनकी शिक्षा था। वह फरवरी 1799 मे वेनेजुएला से चले और मैक्सिको व क्यूबा होते हुए स्पेन पहुचे, जहां से वह फ्रांस गए। इस यात्रा का अन्त माद्रिद मे 26 मई 1802 को उनके विवाह के साथ हुआ जिसके बाद वह उसी वर्ष अगस्त में काराकास लौट गए।

उनकी द्वितीय यात्रा का कारण उनकी पत्नी के आकस्मिक देहांत पर सांत्वना प्राप्त करना था। अक्तूबर 1803 के अंत में वह वेनेजुएला से चले और पुनः यूरोप मे तीन वर्ष व आठ मास के लिए रहे; इस दौरान काफी धन नष्ट कर डाला। रोम में मोन्ते सेक्रो (पवित्र चोटी) के दर्शन के साथ उनकी इस यात्रा का अन्त हुआ जहां उन्होंने शपथ ली कि वह अपने देश को स्वतंत्र करेंगे। इसी यात्रा मे वह सिमोन रोदरीगेज़ के बहुत निकट आए और उनके जीवन के प्रारब्ध की शुरुआत हुई। स्पेन, फ्रांस, इटली, आस्ट्रिया, बेल्जियम, हालैंड और जर्मनी के भ्रमण के पश्चात हमबर्ग से संयुक्त राज्य अमेरिका के चार्लसटन को रवाना हुए। जनवरी 1807 में वहां पहुंचे और जून मे काराकास लौटने से पहले वह संयुक्त राज्य में कुछ मास रहे। संयोगवश उन्होंने इस यात्रा के बारे मे कहा : "संयुक्त राज्य मे अपने आवास के दौरान मैंने जीवन मे पहली बार तर्कसंगत स्वाधीनता को देखा।"[4]

इन अनुभवों से उन्हें कुछ सम्पर्क-ज्ञान हुआ। यूरोप के परम्परावादी समुदायों के साथ बोलीवार के सम्पर्क ने उन्हें यूरोप और लातीनी अमेरिका के समुदायों के बीच के अंतर पर मनन करने के लिए प्रेरित किया। एक तरफ अपनी पहचान खोए एक हजार वर्षों से भी अधिक पुराना एक महाद्वीप, दूसरी तरफ संस्कृतियों का एक समस्याजनक मिश्रण जिसका इतिहास मुश्किल से 300 वर्षों का था। दूर से बोलीवार ने लातीनी अमेरिका को ज्यादा स्पष्टता से देखा। उन्होंने एक तुलनात्मक अनुपात, मानवता के प्रति विशाल

दृष्टिकोण और स्वयं के अनेक विकारों को पहचाना, यद्यपि उनका विश्वास कायम रहा कि उनके मूल विचार सही हैं।

यूरोप की अपनी तीसरी यात्रा उन्होंने 1810 में एक कूटनीतिज्ञ की हैसियत से की जब वह प्रथम वेनेजुएला शिष्ट-मंडल का नेतृत्व करते हुए ग्रेट ब्रिटेन का भ्रमण करने गए। इस तरह उन्हें ब्रिटिश रहन-सहन को समझने का अवसर मिला और तत्पश्चात् अंग्रेज़ लोगों के प्रति उनका मन अपार सम्मान से भर गया। उन्होने अंग्रेज़ों के उन सब गुणों को अनुभव किया जो उनके देशवासियों में नहीं थे। स्थिरता, दूसरों के लिए सम्मान की भावना, प्रतिष्ठा, सद्भावना और एक प्रजातांत्रिक व्यवस्था जो बिना हिंसा के संभव हो सकी थी। उन्होंने परम्परा के प्रति उनके प्रम को समाज की एक महत्वपूर्ण स्थिरात्मक शक्ति की तरह देखा।

युवावस्था से ही, विशेषकर माद्रिद में बिताए गए समय के बाद, वह खूब पढ़ते रहे। उनके अपने घर में उन्हें एक अच्छा पुस्तकालय हासिल था क्योंकि उनके पिता काफी साहित्य छोड़ गये थे जो उनके बेटों में विभाजित था। पेरेख विला द्वारा किए शोध से अंदाज़ा होता है कि बोलीवार के पास किस तरह की पुस्तकें थीं। अनगिनत रचनाओं के अतिरिक्त पुस्तकालय में ऐबे पलूके की प्रसिद्ध रचना "प्रकृति का नृत्य" के 15 खंड, पादरे फिखु की रचनाओं के 18 खंड, सैनिक धाराओं के 15 खंड, प्राचीन इतिहास पर 13 खंड और कालदेरोन के नाटकों के 7 खंड, साथ ही अनेक हाल ही में प्रकाशित रचनाएं उपलब्ध थीं।

बोलीवार द्वारा पढ़ी गई रचनाओं की पूरी सूची तैयार करना संभव नही हो सका है, फिर भी उनके लेखों से पता चलता है कि उन्हें प्राचीन ग्रीक व रोमन साहित्य का ज्ञान था : होमर, पोलबियस, प्लूटेरक, सीज़र, विरजील। वह हाल ही के स्पेनिश, फ्रेंच, इटालियन व इंगलिश साहित्य से भी परिचित थे। उनके खतों मे फ्रेंच विश्वकोशों के उद्धरण हैं, उदाहरणतः फ्रेंच क्रान्ति की विचारधारा से संबंधित रचनाओं का उन्होंने विस्तारपूर्वक अध्ययन किया था, जैसा कि उनके विचारों के अध्ययन से स्पष्ट है। उन्होंने अत्यन्त विपरीत क्षणों में भी पढ़ना और अध्ययन जारी रखा। यद्यपि अप्रैल 1810 के बाद से, विशेषकर 1813 के बाद उनका सारा समय व शक्ति सैनिक व राजनीतिक कार्यों में ही बीतते थे, फिर भी वह उन समाचार पत्रों व साहित्य को पढ़ने के लिए उत्सुक रहते जिनमें दूसरे देशों में हाल में हुई प्रगति पर प्रकाश डाला गया होता या आधुनिक विचारों व धारणाओं को समझाया गया होता। सैनिक अभियानों के दौरान जहां भी कैम्प लगाते या विश्राम के लिए रुकते, बोलीवार अपने अधिकारियों को ज़रूरी आदेश देते और फिर पढ़ने

लग जाते जबकि अन्य लोग विश्राम करते, जुआ खेलते या शराब पीते। उनके घर में अभी भी सीज़र की कोमेनतारियोस (टिप्पणियां) की एक काफी इस्तेमाल की गई प्रति देखी जा सकती है। स्वतंत्रता सेना में एक अधिकारी, इतिहासकार खोसे दे आस्तिरिया, के अनुसार "इसे हमेशा मुक्तिदाता सिमोन बोलीवार के बिस्तर पर देखा जा सकता है, जहां वह इसे हमेशा रखते थे और इसे कैम्पों में पढ़ते थे।"[5]

आकृति व चरित्र

बोलीवार की आकृति का वर्णन इस तरह किया गया है : (उनका) ऊंचा माथा जो ज्यादा चौड़ा नहीं, और छोटी उम्र से ही रेखाओं से भरा हुआ, जो एक गहरे विचारक का संकेतक है। उनकी भौहें तीखी और गहरी थी, आंखे काली, सजीव और भेदती हुई व उनकी नाक लम्बी और सुघड़ थी, यद्यपि इस पर एक छोटा दाना था जिसने उन्हें 1820 तक परेशान किया, किंतु इसके बाद यह गायब हो गया पर एक दाग छोड़ गया। जब मैं पहली बार उनसे 1818 में मिला था तो उनके गाल धंसे हुए थे। उनका मुंह भद्दा था जिस पर काफी मोटे होंठ थे, नाक और मुंह के बीच की दूरी विलक्षण थी। उनके दांत सफेद, पंक्तिबद्ध व मजबूत थे क्योंकि उन्होंने इनका अत्यन्त ध्यान रखा। उनके कान बड़े थे तथा बाल काले, महीन और घुंघराले थे : 1818 से 1821 तक उनके बाल लम्बे थे लेकिन उसके बाद सफेद होने पर उन्होंने छोटे बाल रखे। उनकी मूछों का रंग हल्का था : 1825 में पहली बार पोतासी में उन्होंने मूछें साफ कर दीं। वह पांच फुट छह इंच लम्बे थे, छाती संकीर्ण व पतली थी, विशेषकर टांगें पतली थीं। उनकी त्वचा श्यामवर्ण और काफी खुरदरी थी, उनके हाथ और पैर इतने छोटे तथा सुघड़ थे कि किसी भी स्त्री को इनसे ईर्ष्या हो सकती थी।'[6]

उनके आध्यात्मिक पक्ष पर एक और बुद्धिमान तथा निष्पक्ष विदेशी, कनाडा के जनरल जोन राबर्टसन लिखते हैं : "उनके देशवासियों में बोलीवार की समानता कोई नहीं कर सकता, उनसे ऊंचे की तो बात ही छोड़िए। बहुत कम लोग सम्मान और नाजुक प्रवृत्तियों वाले होते हैं। उनकी उदारता और निःस्वार्थ भावना का कोई अंत नहीं है; उनकी दयालुता सब अवसरों पर प्रकट होती है, जब उनकी सहानुभूति जाग उठती है। जब उनके पास पैतृक सम्पत्ति थी तो उन्हें सर्वाधिक संतोष गरीबों और अभागों की मदद करने में मिलता था; उनके दुःखों को शांत और नाजुक तरीके से दूर करने में वह कभी असफल नही हुए। उनका ध्यान कभी नहीं बंटता, और इस दृष्टि से वह असाधारण हैं। वह एकांत और थकान किसी और से ज्यादा अच्छी तरह सह सकते हैं। बहुत कम लोग खतरे वाली और विपरीत परिस्थितियों में उन जैसी

निस्तब्धता दिखा सकते हैं और उनका धैर्य तो असीमित है। मैं ऐसी घटनाओं को स्वयं जानता हूँ जिनमें उनकी अन्तिम दो विशेषताएं खूब प्रकट हुई हैं।"[7]

बोलीवार ने कुछ मनोरंजक आत्म-निरीक्षण किए जो निष्पक्ष निरीक्षकों की राय से मिलते हैं और जो उनके उच्च-कोटि के आत्म-बोध का परिचायक हैं। वह अपनी प्रकृति तथा अभिरुचि के बारे में स्पष्ट थे और कहते थे कि उन्हें निष्क्रिय जीवन से नफरत है; वह प्रशासनिक कार्यों से बिल्कुल कटे नहीं थे। उन्होंने खतरों और विपरीत परिस्थितियों को प्रेरक पाया। इसके अतिरिक्त उन्हें सोचने के लिए शांति व एकांत की जरूरत नहीं पड़ती थी क्योंकि वह भीड़ में भी अकेले और शांति से अपने विचारों में डूब सकते थे।[8] 1825 में उन्होंने टिप्पणी की : 'मैं धीर और सावधान नहीं हूं, बल्कि आवेगी, बेपरवाह तथा अधीर हूँ··· अनेक विचारों को थोड़े से शब्दों में व्यक्त करना मुझे अच्छा लगता है।"[9] कई बार यह अंतिम विशेषता विचार-हीनता को जन्म दे सकती थी। बोलीवार ने स्वीकारा कि वह खतों को बिना पढ़े उन पर हस्ताक्षर कर देते थे और एक साथ अनेक खतों का आलेख देने की उनकी आदत थी : "मैंने खत पढ़े बिना ही इस पर हस्ताक्षर कर दिए, जैसा मैं अक्सर करता हूँ जब मैं जल्दी में होता हूं।" उनका एक खत इस तरह था : 'देमारकेत ने मुझे बताया है कि आपकी पत्नी ने एक सुन्दर बच्चे को जन्म दिया है, उसी समय आपने एक बड़े लड़के को खो दिया। मेरा विश्वास है आप शीघ्र इस नुकसान को पूरा कर लेंगे, इसलिए मैं आपको और दोलोरिता को इन दोनों घटनाओं पर बधाई देता हूं।' एक और अवसर पर उन्होंने शोक-संदेश कुछ इस तरह व्यक्त किया : "सज्जन पुरुष की मृत्यु तो पहले से ही निश्चित थी क्योंकि इस पृथ्वी पर जीवन अनन्त नहीं है।" लेकिन यह सच है कि उन की मुख्य विशेषता उनकी संश्लेषण की शक्ति है यद्यपि इससे हुआ यह कि उनकी रचनाओं के अनेक अर्थ निकाले जाते रहे हैं और हर तरह के राजनीतिज्ञों ने उनके विचारों को नारों की तरह इस्तेमाल किया। शायद अगर बोलीवार को इस घटना का पता लगता तो उन्हें आश्चर्य नहीं होता, क्योंकि उन्होंने स्वयं कहा था : "मेरा नाम कोलम्बिया में अच्छे और बुरे के लिए इस्तेमाल किया जाता है और कई लोग अपनी बेवकूफियों के लिए इसका इस्तेमाल करते हैं।" इस कारण उनकी रचनाओं की संपूर्णता पर ध्यान दिया जाना चाहिए न कि किसी एक भाग पर।

बोलीवार के अन्य गुणों में एक था उनका तटस्थ होना। एक अवसर पर उन्होंने घोषणा की : "हमारे शत्रुओं के प्रति सर्वाधिक कठोरता की आवश्यकता है चाहे वे स्पेनवासी हों या देशभक्त, क्योंकि गणतंत्र के लिए अच्छे शाहभक्त और बुरे देशभक्त दोनों का विनाश लाभप्रद है। यह ध्येय उनके परिवार के सदस्यों पर भी लागू था : ब्रीसेनो मेंदेज़ को एक संदेश में उन्होंने

कहा : "दोन पेरेको को बता देना कि मुझे खुशी है कि उसने मेरी बहन के साथ झगड़ा किया है, जो उसका कर्तव्य था, और मैं उससे घृणा करने लगता अगर उसने कुछ और किया होता।" वह मानवीय प्रकृति पर खूब ध्यान देते और अपने मित्रों की मानसिक प्रवृत्तियों का अध्ययन कर उनसे वैसा ही व्यवहार करते। उदाहरणतः उनके सबसे दिलचस्प खत सुकरे के लिए होते जबकि सान्तान्देर को उनके खत सुरुचिपूर्ण तथा राजनयिक भाषा में होते। बोलीवार की एक और विशेषता उनकी नैतिक अखंडता थी। उनका विश्वास था कि गणतंत्र गुणवान लोगों पर ही टिक सकता है और नैतिक नेताओं के बिना समाज गलत दिशा में चला जाएगा, क्योंकि अक्सर लोग ही सरकार चलाते हैं, सिद्धांत नहीं। बोलीवार जो एक बार सोच लेते, तमाम अवरोधों के बावजूद उस पर अडिग रहते।[10] इसके अलावा वह व्यवहारिक और प्रगतिशील थे। हमेशा अपने लक्ष्यों की पूर्ति के लिए अग्रसर, विशेषकर न्याय के प्रति, जिसे उन्होंने प्रकृति के प्रथम कानून और नागरिक अधिकारों की सुरक्षा की संज्ञा दी।"[11] महत्वपूर्ण पदों के लिए व्यक्ति चुनने मे उन्होंने न्यायिक सिद्धांतों का पालन किया। उन्होंने कहा : "मैं सिर्फ क्षमता और ईमानदारी ढूंढता हूं, गूदड़ी मे छिपे लाल ढूंढने का प्रयास करता हूं जो न्यायालयों में चमकें···उम्मीदवारों में सिर्फ नैतिक मूल्य चाहता हूं। मैंने न्यायाधीश के पद के उत्सुक उम्मीदवारों को अनदेखा कर वास्तविक गुणवान व्यक्तियों को ढूंढा। मेरा एक सिद्धांत रहा है जिस पर उपदेश तो बहुत दिए जाते हैं लेकिन पालन बहुत कम होता है : ऐसे व्यक्ति चुने जाएं जिन्हें उत्तरदायित्व से डर लगता है, जो सार्वजनिक जीवन से भागते है। उनका यही मन्तव्य था कि काम सम्मााननीय लोगों को ही सौंपे जाएं चाहे वे हमारे शत्रु ही क्यों न हों···और राज्य को मान्यता इसके विशिष्ट नागरिकों की ईमानदारी और गुणों के आधार पर ही दी जाए।

जन-नेता के रूप में सार्वजनिक सम्पत्ति के प्रयोग जैसे मामलों में बोलीवार का व्यवहार निर्दोष था। 1814 में काराकास की जनता को उन्होंने अपनी ईमानदारी का सबूत दिया : "राष्ट्रीय राजस्व सरकार की सम्पत्ति नहीं है। आपके सब प्रतिनिधियों का यह कर्तव्य है कि वे बताएं कि वे लोग इन कोषों का कैसे प्रयोग करते हैं।" एक संविधान के प्रस्तावों में, जो उन्होंने अंगोस्तुरा कांग्रेस में प्रस्तुत किए, उन्होंने सार्वजनिक धन के प्रयोग पर निगाह रखने को नागरिकों के कर्तव्यों में सम्मिलित किया, यह सुनिश्चित करते हुए कि इसका प्रयोग सार्वजनिक हित में किया जा रहा है, और लोगों के प्रतिनिधियों के साथ किसी प्रभी धोखाधड़ी का विरोध किया चाहे उसके पीछे कर-दाता, कर-अधिकारी या स्वयं सरकार का ही हाथ हो।"[12] यह घोषणा स्पष्ट करती है कि बोलीवार की इच्छा एक साधारण प्रतिनिधित्वक सरकार की बजाय एक

अन्तोनियो ख़ोसे दे सुकरे

वास्तविक प्रजातंत्र के निर्माण की थी। इतना ही काफी नहीं था कि कानूनों का पालन हो बल्कि प्रत्येक नागरिक को इनके पालन हेतु एक संरक्षक बनना था। ईमानदार प्रशासन पारसमणि है जिससे लोग अपने नेता को जांचते हैं। बोलीवार इस परीक्षा में खरे उतरे हैं क्योंकि उन्हें सम्पति का कोई मोह न था। जब उन्होंने राजनीति में प्रवेश किया तब वह धनी थे (1804 में उनकी सम्पत्ति 4,000,000 पेसोस आंकी गई) लेकिन उन्होंने इस पैतृक सम्पत्ति को स्वतंत्रता आन्दोलनों में खर्च कर दिया। कोलम्बिया के राष्ट्रीय संग्रहालय में अनेक पत्रों की मौलिक प्रतियां हैं जिनमें बोलीवार ने गणतंत्र के उपराष्ट्रपति को लिखा था कि उनका वेतन कम कर दिया जाए।[13] वेनेजुएला, कोलम्बिया और पेरु के खज़ानों को पन्द्रह वर्षों तक संभालने के बाद वह मृत्यु के समय निर्धन थे। उन्होंने वसीयत में लिखा: "काराबोबो राज्य में अरोआ वाली भूमि, खानों तथा कुछ जवाहरात के अतिरिक्त मेरे पास कोई अन्य सम्पत्ति नहीं है।"[14] इन खानों को अनेक पूर्वजों ने विजय के समय 40,000 पेसोस में खरीदा था।[14ए] उल्लेखनीय है कि महान अंग्रेज़ शिक्षाविद् जोसेफ लेनकेस्टर को वेनेजुएला लाने के लिए इन खानों को गिरवी रख दिया गया था।

कई अन्य तथ्य भ्रष्टाचार के प्रति उनकी घृणा प्रमाणित करते है। 11 सितम्बर 1813 को उन्होंने कर संबंधी ईमानदारी के नए सिद्धांतों को प्रस्तुत किया और साथ ही स्वतंत्रता सेनानियों के लिए आय के एकमात्र स्रोत की पैरवी की। उन्होंने घोषणा की: "कोई भी व्यक्ति अगर तम्बाकू के गैर-कानूनी रूप से बेचने से, चुराने से, या किसी और तरह से कर-कानूनों का उल्लंघन करेगा, उसे फांसी पर लटका दिया जाएगा तथा उसकी सम्पत्ति नुकसान पूरा करने के लिए जब्त कर ली जाएगी।"[15] 12 फरवरी 1824 को लीमा में उन्होंने सटीक शब्दों में कहा: "कोई भी सार्वजनिक अधिकारी यदि राजकोषों की 10 पेसोस से ज्यादा की राशि का दुरुपयोग करता पाया गया तो वह मृत्यु-दंड का भागी होगा।"[16] पिछली बार की तरह इस अवसर पर भी कहा गया कि वे न्यायाधीश जो इन नियमों के अनुसार नहीं चलेंगे उन्हें भी यही सज़ा दी जायेगी। वेनेजुएला में ये नियम उन सार्वजनिक अधिकारियों पर समान रूप से लागू थे जो मृत्यु-दंड की सज़ा कम करवाने में अपराधियों के साथ सांठगांठ करते थे। 8 मार्च 1827 को काराकास में जारी एक घोषणानुसार कोई भी व्यक्ति जो राज्य की सम्पत्ति पर अवैध अधिकार करेगा उसे मृत्यु-दंड दिया जाएगा चाहे राशि कितनी कम क्यों न हो, और उसकी सम्पत्ति ज़ब्त कर ली जाएगी, यदि वह सन्तानविहीन है या सम्पत्ति का कुछ हिस्सा ज़ब्त कर लिया जाएगा, अगर उसकी संतान है; साथ ही मूल राशि को अवैध अधिकार से छुड़वाने के लिए प्रयोग किए गए सरकारी

खर्चों को अपराधी से वसूला जाएगा। कोई भी खज़ाने का कर्मचारी अगर धन-राशि चुराएगा, राशि चाहे कितनी हो, सिर्फ तीन गवाहों के बयानों की पुष्टि होने पर मृत्यु-दंड का भागी होगा।

एक और भेद खोलने वाली घटना जनरल सान्तान्देर के साथ जुड़ी है जिन्होंने प्रस्ताव किया कि वह और बोलीवार पनामा नहर के निर्माण के लिए गठित एक कम्पनी के अध्यक्ष बन जाएं। स्पष्टत: यह प्रस्ताव महज चाटुकारिता था।"[17] बोलीवार ने विरोध करते हुए उत्तर दिया : "मैंने आपका पत्र पढ़ा जिसमें आपने सुझाव दिया है कि मुझे इस कंपनी का संरक्षक होना चाहिए, जिसका लक्ष्य पनामा नहर का निर्माण है। इस विषय पर सोचने के बाद मेरा विचार है कि न सिर्फ इस व्यवसाय में भाग लेना अनुचित है बल्कि मैं आप को भी यही कहना ठीक समझता हूं कि आप भी ऐसा न करें। मुझे विश्वास है कि कोई भी इस व्यवसाय में हमारे भाग लेने को उचित नहीं ठहराएगा क्योंकि हम सरकार के नेता पदों पर हैं : हमारे शत्रु, विशेषकर आपके·· इस का गलत अर्थ निकालेंगे, यद्यपि इसी में हमारे देश की भलाई और प्रगति निहित है। आप को क्या करना चाहिए, इस बारे में मेरी आपके लिए यही राय है। अपने बारे में मेरा दृढ़ निश्चय है कि मैं इस या किसी अन्य व्यवसायिक संगठन में भाग नहीं लूंगा।"[18]

पुन: जब पेरूवियन कांग्रेस ने बोलीवार में अपनी श्रद्धा दिखाते हुए उन्हें 1,000,000 पेसोस पुरस्कार स्वरूप देने का निर्णय किया तो बोलीवार ने दो बार उसे ठकरा दिया। उन्होंने कहा कि कोई मानवीय शक्ति मुझे एक ऐसी भेंट स्वीकार करने के लिए बाध्य नहीं कर सकती जिसकी मेरा मन आज्ञा नहीं देता·· कांग्रेस ने मुझे पेरू के राष्ट्र-पिता और उद्धारक की उपाधि दी है : इसने मुझे आजीवन राष्ट्रपति का पद सौंप कर मेरा सम्मान किया है। इसने मेडल पर मेरी छवि गोद डाली है, मुझे मुक्तिदाता की संज्ञा दी है और मुझे पेरू का शासन सौंपा है : अब यह मुझे एक विशाल धन-राशि भेंट करना चाहती है। मैंने सब कुछ बड़ी खुशी से स्वीकारा है सिवाय अंतिम भेंट के, क्योंकि मेरे राष्ट्र के कानून और मेरा हृदय इसकी आज्ञा नहीं देते।"[19] इसी तरह 9 जनवरी 1824 को उन्होंने पातीविलका से कोलम्बिया कांग्रेस के अध्यक्ष को लिखा : "मैं तीस हज़ार पेसोस की अपनी वार्षिक पेंशन का त्याग करता हूं, जो कांग्रेस ने अपनी दरियादिली दिखाते हुए मुझे भेंट की है। मुझे जीवित रहने के लिए इसकी ज़रूरत नहीं है, जबकि सार्वजनिक कोष समाप्त हो रहे हैं।" जब वह पेरू और कोलम्बिया, दोनों का कार्यभार संभाल रहे थे तो वह कोई वेतन स्वीकार नहीं करते थे। उन्हें ज्ञात था कि वह इस संदर्भ में अद्‌भुत हैं, जैसा कि उन्होंने सान्तान्देर को लिखा : "संयोगवश इस क्षण मैं एक विचित्र परिस्थिति में हूं। मेरे पास अपने लिए एक दमड़ी नहीं, यद्यपि मैं कोलम्बिया का राष्ट्रपति

और पेरू का तानाशाह हूं। पेरू में मैंने उनसे वेतन स्वीकार नहीं किया और कोलम्बिया में मैं वेतन मांग नहीं सकता, क्योंकि मुझे ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं है। इसलिए तब तक उधार पर ही गुज़ारा करूंगा जब तक ग्वायाकिल नहीं लौट जाता।"

बोलीवार अक्सर कहा करते कि जीवन में उनका उद्देश्य अपने देश को आज़ाद कराना और अपने लिए गौरव प्राप्त करना था। इन दोनों उद्देश्यों का सर्वप्रथम उल्लेख उन्होंने 12 वर्ष की उम्र में किया और अन्तिम बार 1830 में जब उन्होंने अपने पद से त्याग पत्र दे दिया। उनके अन्तिम शब्द अत्याचारों के खिलाफ उनके संघर्षों का सारांश है। क्या इन दोनों उद्देश्यों में कभी संघर्ष हुआ? बोलीवार ने उत्तर दिया: "मेरी सबसे बड़ी कमज़ोरी स्वतंत्रता के लिए मेरा प्रेम है: इसके सामने मैं गौरव प्राप्त करने की इच्छा भी भूल जाता हूं। मैं सब कुछ सह सकता हूं, अपनी सारी इच्छाओं का दमन कर सकता हूं लेकिन एक अत्याचारी नहीं बन सकता। मेरी इच्छा एवं आकांक्षा यही है कि एक स्वतंत्रता प्रेमी की तरह जाना जाऊं।" इसी धुन ने उनके भाग्य को प्रभावित किया जिसने उनके शब्दानुसार न सिर्फ उन्हें कठोर होने के लिए वरन पूर्णत: अडिग बनने के लिए बाध्य किया: "स्वतंत्रता-प्रेम", उन्होंने सान्तान्देर को लिखा, "ने मुझे एक पद स्वीकारने के लिए बाध्य किया जो मेरी भावनाओं के विपरीत था।" 1829 में उन्होंने लेनद्रो पालासियोस को बताया: "मैं स्वतंत्रता और गौरव के लिए लड़ा, इसलिए एक अत्याचारी और अकुलीन की संज्ञा दुगुना दुख है।" पेरू की स्वतंत्रता के प्रति भी उनका रुख महत्वपूर्ण था, जैसा कि 1823 में की गई इन घोषणाओं से स्पष्ट है: "हां, कोलम्बिया पेरू में अपना कर्तव्य निभाएगा। यह अपने सैनिकों को पोतोसी ले जाएगा और इसके बाद ये बहादुर इंसान अपने घरों को लौटेंगे: उनका एकमात्र पुरस्कार कि उन्होंने नए विश्व के अन्तिम अत्याचारियों के विनाश में सहायता दी। कोलम्बिया पेरूवियन भूमि के एक इंच का भी दावा नहीं करेगा क्योंकि इसकी प्रतिष्ठा, प्रसन्नता और इसकी सुरक्षा अपनी स्वतंत्रता और अपने पड़ोसियों की स्वाधीनता कायम रखने में ही निहित है।"

बोलीवार के लिए स्वतंत्रता और गौरव खोखले विचार नहीं थे; इसके विपरीत वे कठोर और समन्वित विचारधारा के भाग थे। उन्होंने स्वतंत्रता को परिभाषित करते हुए कहा: "प्रत्येक व्यक्ति का सब कुछ करने का अधिकार, जो गैर-कानूनी न हो।"[20] साथ ही उन्होंने यह भी घोषणा की कि "यही एक ऐसा लक्ष्य है जो इंसान के जीवन के बलिदान के उपयुक्त है।"[21]

गौरव वह उत्प्रेरक था जिसने व्यक्तियों को अहम् भुलाकर खतरे का सामना करने के लिए और सब की भलाई के लिए लड़ने को प्रेरित किया।

बोलीवार की धारणा धन, ताकत और प्रशंसा से जुड़े गौरव के परम्परागत विचारों से भिन्न थी। जीवन के अंत में, मारकेस देल तोरो को उन्होंने एक अविस्मरणीय पत्र में लिखा : "अगर मैं दुखी हूं तो आप ही ऐसा सोचते है, क्योंकि मुझे तो इतनी खुशियां मिली हैं कि अपने आपको अभागा मानना मेरे लिए बहुत कठिन है। अगर मैं सब कुछ खो भी दूं तब भी मुझे गर्व है कि मैंने अपना कर्तव्य निभाने का भरसक प्रयत्न किया, और यही गौरव मेरी प्रसन्नता और पुरस्कार है।"[22] "गौरव", उन्होंने एक अन्य अवसर पर लिखा, "महान और लाभप्रद होने में है।" महानता को उन्होंने इस तरह परिभाषित किया : "महान व्यक्ति के मुख्य गुण हैं : खतरे का सामना करने की हिम्मत, युद्ध जीतने की चतुरता, अपने देश के लिए प्रेम और अत्याचार के प्रति घृणा।" उन्होंने साहस पर बहुत बल दिया : "साहस और कौशल संख्या की कमी को भरते हैं। अगर नैतिक गुणों का संतुलन नहीं है तो इसके बुरे परिणाम होंगे और शारीरिक बल भी दब जाएगा। सर्वाधिक घनी जनसंख्या वाले देश के नेता शीघ्र ही पृथ्वी के नेता होंगे। संयोगवश, अक्सर यह हुआ है कि मुट्ठी भर लोग विशाल साम्राज्यों पर काबू पा लेते हैं।"

उनका विचार था कि बुद्धिमत्ता के साथ एक दृढ़ नैतिक दृष्टि भी होनी चाहिए; एक के बिना दूसरा गुण सार्वजनिक सेवा में निरर्थक है। प्रबुद्ध और सम्माननीय व्यक्तियों को सार्वजनिक मत का मार्ग-दर्शन करना चाहिए। नैतिकता के बिना प्रतिभा व्यर्थ है। इसी तरह देश-प्रेम और अत्याचारों के प्रति घृणा, दोनों साथ-साथ होने चाहिएं। उन्होंने तानाशाही के खिलाफ संघर्ष का समर्थन किया। अन्याय और जुल्म के खिलाफ संघर्ष करना हमेशा न्यायिक है, महान है और पवित्र है। उन्हें दृढ़ संकल्प वाले व्यक्तियों की अन्ततः विजय होने में विश्वास था। विश्व के समस्त लोगों ने जिन्होंने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया है, अन्ततः अपने अत्याचारियों को नष्ट कर दिया।

उपयोगिता के संदर्भ में बोलीवार ने कई उदाहरण दिए, क्योंकि उनके लिए कोई कार्य छोटा या बुरा नहीं था अगर इसका लक्ष्य महान था। छोटी-छोटी बातों से स्वयं का परिचित रखना उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा से गौण नहीं समझा। उनकी रचनाओं में भोजन-प्रबन्धों, घोड़ों के टखनों के लिए कीलें, कागज,सुइयों तथा सैनिकों की वर्दियों हेतु कपड़े का अनेक जगह ज़िक्र था। कोई विवरण उनके ध्यान से चूकता नहीं था। (सैनिक) टुकड़ियों को एक दिन में 10 या 12 मील चलना है, सारे दिन की परेड को दो हिस्सों में विभाजित किया जाना है : सुबह दो तीन घंटे परेड, पुन: दोपहर मे भी। उन्हें पेड़ों में या घाटियों में विश्राम करना है जहां पानी उपलब्ध है, तथा उन्हें दोपहर के भोजन के पश्चात् आराम करना है जिससे वे थक कर चूर न हो जाएं।

अन्ततः हमें यह विचारना चाहिए कि बोलीवार ने जब कोई वायदा किया तो उसे निभाया। 4 अगस्त 1826 को उन्हें बोलीविया की तरफ से एक मेडल प्रदान किया गया और इसे प्राप्त करने पर उन्होंने वायदा किया : "बोलीविया के प्रति अपनी निष्ठा-स्वरूप मैं इसे सारा जीवन अपने पास रखूंगा तथा मरणोपरांत विधान सभा के द्वारा राष्ट्र को यह भेंट लौटा दूंगा।" 10 दिसम्बर 1830 को जब उन्होंने अपनी अन्तिम इच्छा और वसीयत लिखवाई तो उन्होंने यह वायदा याद रखा : "मेरी यह इच्छा है कि बोलीविया कांग्रेस ने मुझे जो मेडल भेंट दिया था वह उन्हें लौटा दिया जाए, जैसा मैंने वायदा किया था; यह गणतंत्र के प्रति मेरी भावनाओं का सबूत है जो मैं अन्तिम क्षणों में भी अनुभव कर रहा हूं।" 1815 में उन्होंने घोषणा की थी कि उनके अन्तिम श्वास उनके देश के लिए ही होंगे। अपने जीवन के अन्त में उन्होंने कहा : "मेरी अन्तिम इच्छाएं मेरे देश की समृद्धि के लिए हैं।" □

संदर्भ

1. एक प्रख्यात चिले के इतिहासकार ने लुईस दे बोलीवार (1627-1702) की पत्नी का ज़िक्र करते हुए लिखा था : "मारिया मारतिनेख दे विलेगास, एलेना फेखारदो की वंशज थी। इस दूर के रिश्ते से आई इंडियन रक्त की कुछ बूंदें बोलीवार में मौजूद थीं। वे मनोवैज्ञानिक रूप से इतनी महत्वपूर्ण थीं कि उनके बगैर उनका वास्तविक जीवन कभी प्रारम्भ ही न होता।"—एफ० ऐ० इनकिना। बोलीवार ई इनदेपेनदेन्सिया दे ला अमेरिका एस्पानोला (चिले, 1958), पृष्ठ 302
2. एम० पेरेस विला, ला फोरमेसियोन इन्तलेक्तुआल देल लिबेरतादोर (काराकास, 1971), पृष्ठ 48-54
3. एल० पीरू दे लेकरीइक्स, दायरियो दे बुकारामानगा (काराकास, 1935), पृष्ठ 230
4. डब्ल्यु, आर० मानिंग, लेटिन अमेरिकी राष्ट्रों की स्वतंत्रता (ओ० यू० पी०, 1925), II, 1322
5. पेरेस विला, ला फारमेसियोन देल लिबेरतादोर, पृष्ठ 81
6. दी० एफ० ओ' लेरी, नारासियोन (काराकास, 1952), 1,491

7. सी० पी० सुनायेर, एल खेनेरेल खुग्रान रोबरतसोन उन प्रोकेर दे ला इनदेपेनदेन्सिया (काराकास, 1971), पृष्ठ 257
8. पेड़ दे लेकरोइक्स, दायरियो दे बुकारामान्गा, पृष्ठ 154
9. ओबरास कम्पलीतास : 1, 1099; II, 725, 680; 1, 758; II, 837, 1, 417, 853; II, 1142
10. मई 1823 में उन्होंने जनरल सान्तान्देर को लिखा : "आप को इस स्थिति में सहनशीलता और आशा के स्त्रोत का प्रतिनिधित्व करना चाहिए।" कारतास देल लिबेरतादोर (काराकास, 1959), XII, 280
11 ओबरास कम्पलीतास : II, 12 6, 44, 1203-1205, 293, 1048
12. डी०एफ० ओ'लेरी, मैमोरियास (काराकास, 1879-87) XVI, 141
13. कारतास देल लिबेरतादोर, XII, 254-270
14. ओबरास कम्पलीतास, II, 988
14 ए ओबरास कम्पलीतास, 1, 1020
15 ओ' लेरी, मैमोरियास, XIII, 358
16. डैकरेतोस देल लिबेरतादोर (काराकास, 1961) 1, 283; II, 146
17. लेकुना (सम्पादक) कारतास दे सान्तान्देर (काराकास), 1942, II, 96
18. ओबरास कम्पलीतास, I, 1276। कारतास दे सान्तान्देर II, 202
19. ओबरास कम्पलीतास, : 1, 1052, 866; II, 124; 1, 1417; II, 719, 1189
20. ओ' लेरी, मैमोरियास, XVI, 138
21. ओबरास कम्पलीतास, II, 1078
22. ओबरास कम्पलीतास, 1, 1000, 986, 287, 356; II, 479; 1, 492; II, 1036, 558; 1, 1406; II, 988, 1282 □

3. सक्रिय सेवा

निर्णय

जब बोलीवार बारह वर्ष के थे तो उन्होंने एक दस्तावेज पर हस्ताक्षर किए जो स्वतंत्रता के प्रति उनके प्रेम का सबसे पुराना प्रतीक है। पिता का देहांत, चाचा पर उनकी देखभाल की भार और उनका चाचा के घर को छोड़कर अपनी बहन के साथ रहना, काराकास के उच्च वर्ग की बातों के विषय बन गए। उन्हें शाही अदालत में बुलाया गया। मुंशी उनके साहसी शब्दों को दर्ज करने का साहस नहीं कर सका। उस अवसर पर बोलीवार ने कहा था कि "अदालत चाहे उनकी सम्पत्ति अधिकृत कर ले पर उनके मन पर अधिकार नहीं पा सकती, क्योंकि यदि दासों को अपने स्वामी चुनने का अधिकार है तो उन्हें भी यह निर्णय लेने का अधिकार है कि वह किस घर में रहना चाहते हैं।"[1]

1797 के आरम्भ में जब बोलीवार अभी चौदह वर्ष के भी नही थे, उन्होंने अराग्वा वेलीस की सैनिक टुकड़ी में प्रवेश किया जिसमें उनके पिता कर्नल के पद पर रह चुके थे। अनेक प्रमाण हैं कि उनके संरक्षक उनका भविष्य सेना में देखने के लिए कृतसंकल्प थे। जुलाई 1798 में उन्हें स्पष्ट कारणों से द्वितीय लेफ्टीनैंट बना दिया गया। उनके रेकॉर्ड में लिखा था: "साहस; निर्विवाद, योग्यता: शानदार, कुशलता: अच्छी। व्यवहार: अच्छा।"[2] अब तक वह उच्च वर्ग के अन्य युवकों का पथ अनुसरण कर रहे थे। पर 1799 की स्पेन यात्रा के अनुभव और यूरोप के अन्य भागों की यात्रा के अनुभव भविष्य में उनके लिए निर्णायक सिद्ध होने वाले थे। यात्रा पर जाने की इच्छा वह पारिवारिक परिस्थितियों के कारण स्थगित कर चुके थे: वह अपने प्रिय चाचा एसतेबान पालसियोस से मिलने जा रहे थे। स्पेन की राजधानी में बोलीवार का दिल एक युवा सुन्दरी ने मोह लिया। भावी वधू के माता-पिता की इस प्रार्थना पर विवाह स्थगित कर दिया गया कि वधू अभी बहुत छोटी थी। अन्तत: 1802 में सम्राट कारलोस चतुर्थ की आज्ञा से विवाह सम्पन्न हुआ। वह वेनेजुएला लौट गए पर आठ मास के भीतर उनकी पत्नी का देहांत हो गया। उन्होंने अनुभव किया कि यह दुर्भाग्य उनके भविष्य के लिए निर्णायक सिद्ध हुआ, जैसा कि उन्होंने पेरू दे लेकरोइक्स को मई 1828 में कहा: "यदि मैं विधुर न हुआ होता तो शायद मेरा जीवन भिन्न होता। मैं जनरल बोलीवार नहीं

होता, न अपने देश का मुक्तिदाता, यद्यपि यह सही है कि सान मातेओ का महापौर बनना मेरे स्वभाव में नही था•••यदि मेरी पत्नी का देहांत न होता तो मेरी यूरोप की द्वितीय यात्रा कभी संभव न होती•••मेरी पत्नी की मृत्यु ने मुझे राजनीति की तरफ मोड़ दिया। इस तरह आप सोच सकते हैं कि इस घटना ने मेरे भविष्य पर अत्यन्त प्रभाव डाला।"[3]

1804 में वह पुन: यूरोप आ गए : एक महत्वपूर्ण वर्ष जिसमें दो महत्वपूर्ण घटनाएं घटीं। प्रथम घटित हुई जब वह पेरिस में फैनी दू विलार के घर में थे जहां वह हुम्बोलद्त से मिले, जो हाल ही में नए विश्व की लम्बी यात्रा से लौटे थे। लातीनी अमेरिका के भविष्य पर विचार-विमर्श करते हुए उन्होंने स्वतंत्रता की चर्चा की और हुम्बोलद्त ने घोषणा की : "मेरे विचार में आपका देश स्वतंत्रता के लिए तैयार है परन्तु इसे संभव करने की क्षमता रखने वाला कोई व्यक्ति दिखाई नहीं देता।"[4]

द्वितीय घटना थी नेपोलियन का राज्याभिषेक, जिसका वर्णन बोलीवार ने स्वयं किया है : उस समय मैंने सार्वजनिक घटनाओं और राजनीति में रुचि लेना आरम्भ कर दिया था और मैं नई घटनाओं से स्वयं को परिचित रखने का प्रयास कर रहा था। 1804 के अन्तिम मास में मैंने पेरिस में नेपोलियन का राजतिलक होते देखा। मैं इस घटना से अत्यंत प्रभावित हुआ, इसकी प्रस्तुति से नहीं बल्कि उस प्रेम से जो जनसमूह ने अपने नेता को दिया। नेपोलियन की शान व वीरता से प्रेरित विश्व-बंधुत्व व उमड़ते जन-मानस का लाखों फ्रांसवासियों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया, और यह सब मुझे एक व्यक्ति की आकांक्षाओं का चरम पड़ाव दिखाई पड़ा। नेपोलियन के सिर पर रखे ताज ने मुझे आकर्षित नहीं किया बल्कि मैं तो उस प्रेम और सम्मान से मंत्र-मुग्ध हो गया जो सारे विश्व ने नेपोलियन को दिया था। मैं यह मानता हूं कि इस घटना ने मुझे उस व्यक्ति की प्रतिष्ठा के सम्बन्ध में सोचने के लिए विवश कर दिया जो मेरे देश को दासता से मुक्त करेगा।"[5] कई महीनों बाद, 15 अगस्त 1805 को रोम के बाह्य क्षेत्र में सिमोन रोदरीगेज तथा फरनान्दो तोरो के साथ घूमते हुए बोलीवार ने मोंते सेकरो (पवित्र टीले) के सम्मुख प्रतिज्ञा की : "मैं अपने माता-पिता, अपनी और अपने देश के सम्मान की शपथ लेता हूं कि मैं अपने शरीर को तब तक आराम नहीं दूंगा जब तक मैं उन बेड़ियों को नहीं तोड़ डालता जिन्होंने मेरे देश को स्पेन की इच्छा-शक्ति के अधीन कर रखा है।"[6] हमें यह याद रखना चाहिए कि जब भी बोलीवार अपने देश का जिक्र करते उनका अभिप्राय मात्र वेनेजुएला नहीं अपितु पूरा लातीनी अमेरिका होता था। कुछ विषमताओं के अतिरिक्त सारे लातीनी अमेरिका की स्थिति लगभग समान थी। जीवन पूर्णत: उपनिवेशी शासन के अधीन

था। समस्त वर्गों में अन्याय, असमानता, दासता तथा अल्प-विकास व्याप्त था।

बोलीवार के जीवन को उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि ने भी प्रभावित किया। बोलीवार के जन्म लेने से कुछ समय पूर्व उनके पिता ने "कार्यकारी-अधिकारी" की निरंकुशता के विरुद्ध षड्‌यंत्र रचा, जो "मानतुआनोस" के व्यापार को क्षति पहुंचा रहा था। अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने के आरोप में ख़ोसे लेनार्दो किरीनोस को दिसम्बर 1796 में मृत्यु-दंड दिया गया। बोलीवार के बाल-मस्तिष्क पर यह घटना अंकित हो गई जबकि एक वर्ष पूर्व ही उन्होंने निवास चुनने के अपने अधिकार की मांग की थी। निःसंदेह पिकोरनेल, गौल और एस्पाना के षड्‌यंत्र में उनके अध्यापक सिमोन रोदरीगेज़ भी सम्मिलित थे। यद्यपि उनका नाम दस्तावेज़ों में नहीं मिलता लेकिन उनके सम्मिलित होने की पुष्टि प्रसिद्ध इतिहासविद् एलफोन्सो रूमासो गोनसालेस ने बोलीवार के जीवन पर एक पुस्तक में की है। रोदरीगेज़ कुछ समय कारावास में रहे, और बोलीवार प्रायः उनसे मिलने कारावास जाते। नवयुवक के मस्तिष्क पर इसने गहरा प्रभाव छोड़ा होगा, जिसके लिए अपने अध्यापक की अनुपस्थिति सर से साया उठ जाने के तुल्य थी।

इन सब कारणों से यह समझा जा सकता है कि जब बोलीवार यूरोप की अपनी प्रथम यात्रा पर मैक्सिको में रुके और वायसराय असान्सा ने उनसे काराकास की घटनाओं के सम्बन्ध में पूछा तो वह क्यों नहीं डरे बल्कि षड्‌यंत्र-कारियों का समर्थन और उनको शहीद करने वाले प्रशासन की कड़ी आलोचना करते हुए तीखा उत्तर दिया। इतिहासविद् फेलिये लारासाबाल का कहना है कि बोलीवार ने उस अवसर का स्मरण इन शब्दों में किया : "मैंने निर्भय हो स्वतंत्रता के लिए लातीनी अमेरिका के अधिकारों का समर्थन किया।"[7] जब वह जून 1807 में काराकास लौटे तो स्पेनिश कानून के अनुसार अभी वह अव्यस्क थे, लेकिन वह पहले से ही एक प्रख्यात नेता थे। उनका घर राज-नीतिक मसलों पर खुली चर्चा का केन्द्र बन गया। यहां 1808 में एक षड्‌यंत्र रचा गया जिसमें 'करीयोलों' सर्वोच्च सत्ता अथवा कांग्रेस और एक "युवा दल" की संभावना व्यक्त की जिसमें बोलीवार-भाई सम्मिलित थे। इन विरोधी गतिविधियों का भांडा फूट गया और सरकार ने कुछ लोगों को राजधानी से निष्कासित कर दिया। स्पेन की घटनाओं को देखते हुए बोलीवार को काराकास छोड़ना पड़ा, जहां राजनीतिक परिस्थितियां जारी थीं, और जो 19 अप्रैल 1810 की सफल क्रांति के रूप में उभरीं।

काराकास की अग्रणी भूमिका

1808-09 के दौरान "करीयोलोस" ने सेविले से प्रेरित हो एक सत्ता

की रचना के विचार को स्वीकार कर लिया जिससे राजा को बदला जा सके। लेकिन समाज के निम्न वर्गों तथा "पारदो" सैनिक टुकड़ियों के अधिकारियों ने कुलीन-तंत्र के इस हमले के विरुद्ध स्पेनिश अधिकारियों का समर्थन किया, और एक मुख्य नेता बन्दी बना कर स्पेन भेज दिए गए। "मानतुआनोस" जनता का समर्थन पाने में असफल रहा क्योंकि यह समुदाय जनसंख्या के मेस्तिसो बहुमत के प्रति भेदभाव के लिए उत्तरदायी था। कुछ समय पूर्व उन्होंने "केदूला दे गरासियास अल साकार" का विरोध किया था जिसमें अनेक विशेषाधिकारों की व्यवस्था थी, उदाहरणतः इसने मेस्तिसोस को धन की अदायगी करके समाज में ऊपर उठने की आज्ञा दे दी। उन्होंने "पारदोस" के लिए विश्वविद्यालय और धार्मिक स्थल खोले जाने का भी विरोध किया था। पूरे काराकास क्षेत्र में 'पारदोस' वर्ग को अपने बच्चों के लिए एक विद्यालय खोलने हेतु स्थान न मिला। वस्तुतः 1805 में काबिल्दो ने उन्हें ऐसा करने की अनुमति नहीं दी थी। कोनसुलादो और गिरजाघरों में "मानतुआनोस" का प्रभाव था—उनका आर्कबिशप भी था, फ्रांसिस्को दे इबारा। उन्हें सिर्फ राजनीतिक शक्ति की आवश्यकता थी क्योंकि वे पहले से ही आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक क्षेत्रों में सर्वोच्च थे। जनता की ज्यादा सहानुभूति सम्राट फरदिनान्द को मिली क्योंकि सामाजिक संघर्ष की पूर्व-घटनाओं में उसने तथा बोरबोन वंश के अन्य सदस्यों ने निर्धन वर्ग का समर्थन किया था। यदि "पारदोस" सैनिक-वर्ग सम्राट का प्रबल समर्थक था तो यह आश्चर्यजनक नहीं क्योंकि वह उस सामाजिक समर्थन का अनुमोदन कैसे कर सकते थे जो उनके हित में नहीं था। सम्राट के उदारवादी निर्णयों की उपनिवेश में चर्चा होती, पर "मानतुआनोस" की शिकायतों पर कोई ध्यान न देता। वस्तुतः इसी रुख ने सम्राट को उपनिवेश के शक्तिशाली और प्रभावशाली समुदायों के सहयोग से वंचित कर दिया। जहां तक "पारदोस" का प्रश्न था उन्हें एक ऐसा तानाशाह पसंद था जो समझदार हो बजाय एक अभिमानी और उद्धत कुलीन-तंत्र के जो सामाजिक विषमताओं को बरकरार रखने के लिए दृढ़संकल्प था। मई 1809 में एक नए गवर्नर और कैप्टेन-जनरल, वीसेन्ते दे एम्परान ने शासन संभाला। अनियंत्रित "करीयोलोस" पर विजय पाने की कोशिश में उसने 24 जुलाई को येरे नगर के "तेनीएन्ते ख़ुस्तीसिया मायोर" का पद बोलीवार को सौंप दिया। बोलीवार अपनी अनुपस्थिति में पद स्वीकार करना चाहते थे लेकिन आयुंतामिएन्तो ने उनकी उपस्थिति की मांग की, जिसका बोलीवार ने विरोध किया। 19 अप्रैल 1810 को गत वर्ष की समस्याओं से चतुरता से हट कर वह अरागवा घाटियों में थे जब "मानतुआनोस" ने षड्यंत्र रचकर स्पेनिश अधिकारियों को हटा दिया। इस बार उन्होंने सम्राट से सम्बन्ध-विच्छेद की

बात नहीं की। इसके विपरीत उन्होंने अपने को राजा के प्रतिनिधियों से भी ज्यादा शाह-भक्त की तरह प्रस्तुत करते हुए यह घोषणा की कि उनका लक्ष्य सम्राट के अधिकारों की सुरक्षा था। इस तरह उन्होंने प्रकट किया कि वे राजा के कैप्टेन-जनरल और "इनतेन्देन्त" से भी बढ़कर समर्थक थे। पवित्र बृहस्पतिवार वाले उस दिन काबिल्दों की एक अव्यवस्थित विशेष बैठक हुई। सात सज्जन पुरुष कक्ष में प्रविष्ट हुए और उन्होंने अपने को जनता, धर्म और पारदोस के संगठनों का प्रतिनिधि बताया। वे और समस्त काबिल्दो विद्रोह के प्रति अग्रसर हो गए। इन षड्यंत्रों के पीछे रोसकीओ और कोरतेस मादारियागा के मस्तिष्क थे। उस दिन सर्वोच्च सत्ता का गठन किया गया। 24 मई को बोलीवार को अरागवा घाटियों की श्वेत सैनिक टुकड़ियों की 5वीं कम्पनी के लैफ्टीनेंट से पदोन्नति कर चौथी कम्पनी का कैप्टन बना दिया गया।

जिस समय वेनेजुएला में यह सब हो रहा था उसी समय यूरोप और शेष लातीनी अमेरिका में भी महत्वपूर्ण घटनाएं घट रही थीं। पुराने विश्व, विशेषकर स्पेन और पुर्तगाल को जर्जर कर नेपोलियन नए विश्व की सहायता कर रहा था। सम्राज्ञी मारिया लुईसा के चहेते गोदोई ने फ्रांसीसी सेना को स्पेन होते हुए पुर्तगाल ले जाने की अनुमति ले ली। किन्तु यात्रा में उनका विचार बदल गया और उसने स्पेन को अधिकृत करने का निर्णय ले लिया, पर उसने स्पेनिश प्रतिरोध का अनुमान नहीं किया था। सम्राट कारलोस चतुर्थ को जनता ने युवा तथा विख्यात फरडिनान्द को सत्ता सौंपने पर बाध्य कर दिया लेकिन नेपोलियन ने जो वैधानिक तथ्यों पर अत्यंत बल देता था, जनता के निर्णय को परिवर्तित कर पुत्र द्वारा अपने पराजित पिता को सत्ता लौटाने के लिए विवश कर दिया। सम्राट चार्ल्स चतुर्थ ने ही स्पेन की सत्ता नेपोलियन के भाई जोसेफ बोनापार्ते को सौंप दी।

फ्रांसीसी हमले और कब्ज़े के विरुद्ध स्पेनवासियों के संघर्ष ने नव विश्व को खूब प्रभावित किया। लातीनी अमेरिकी देशों को नई परिस्थितियों से अवगत कराने हेतु नेपोलियन ने प्रतिनिधियों को वहां भेजा तथा सुझाया कि बोरबोनों के निरंकुश शासन को हटाकर बोनापार्तेस का समृद्ध शासन बिना किसी रक्तपात के संभव है। लेकिन सुझाव पर ध्यान नहीं दिया गया। सच तो यह है कि वेनेजुएला में क्रांति का प्रारंभ फरदीनान्द के मसले से ही हुआ था। उनके अपदस्थ कर दिए जाने पर वेनेजुएला में अन्य सरकारी अधिकारी भी पदविहीन कर दिए गए। नए शासन के कुछ प्रबल समर्थकों को ऊंचे पदों पर बैठा दिया गया। एक नया सैनिक तंत्र तैयार किया गया, सरकार का शीघ्रता से गठन किया गया जिसमें कुल मिलाकर 23 सदस्य सम्मिलित थे जिनमें दो राष्ट्रपति, एक रक्षा मंत्री और एक वित्त मंत्री भी थे।

सैन्य प्रशासकों ने अन्य राज्यों को काराकास से प्रेरणा लेने के लिए प्रोत्साहित किया। नए तरीकों और तकनीकों में शिक्षित व्यक्तियों को सब जगह भेजा गया। पर अनेक राज्यों ने स्वतंत्र होने के लिए इस अवसर का लाभ उठाया। काराकास में सम्राट कारलोस तृतीय के उल्लंघन के पश्चात काराकास ने राजधानी बनने का अपना अधिकार खो दिया। क्षणिक हिचकिचाहट के पश्चात ग्वाइयाना स्पेनिश परिषद में सम्मिलित हो गया। माराकाइबो भी सैन्य प्रशासन के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। कोरो ने तो काराकास की उपेक्षा करते हुए स्वयं को राजधानी घोषित कर दिया। अन्य राज्य सैन्य प्रशासन से इस शर्त पर सम्बन्ध रखने के लिए तैयार हुए कि उनके निजी संबंधों में हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा। अनुमानतः राज्यों के मध्य स्थापित सम्बन्ध भंगुर थे और आसानी से टूट सकते थे।

सैन्य प्रशासन विदेशी संपर्क के संदर्भ में अत्यंत सतर्क था और विदेश सम्बन्धों को महत्वपूर्ण मानता था। शेष लातीनी अमेरिका पर मिरांदा, पिकोर-नेल, गौल और एस्पाना के विचार इस समय की रचनाओं में पुनः उभर रहे थे। 19 अप्रैल से एक सप्ताह के भीतर काराकास समस्त लातीनी अमेरिकी स्थानीय सरकारों को वेनेजुएला के पथ पर चलने का निमंत्रण दे चुका था। रोसियो के दिग्दर्शन में राजनयिक दूतावासों के माध्यम से नए प्रशासन हेतु समर्थन प्राप्त करने का प्रयास किया गया। संभवतः सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रयास उस यात्रा मे किया गया जिसमें बोलीवार को लुईस लोपेस मेन्देस तथा आँद्रेस बैल्लो सहित लंदन भेजा गया था जहां उन्होंने जुलाई-सितम्बर के बीच प्रशासनिक लक्ष्यों को स्पष्ट करते हुए जता दिया था कि काराकास का वास्त-विक उद्देश्य फरदिनान्द के अधिकारों की सुरक्षा नहीं, अपितु पूर्ण स्वतंत्रता हेतु मार्ग तैयार करना था।

लंदन में ही बोलीवार का सम्पर्क मिरांदा से हुआ। बोलीवार के बल देने पर मिरांदा लगभग 40 वर्ष अनुपस्थित रहने के बाद काराकास लौट आए। जब उन्होंने स्वयं को ला ग्वाइरा के सम्मुख प्रस्तुत किया तो सरकार उन्हें स्वी-कारने में हिचकिचाई क्योंकि सम्राट के प्रबल शत्रु को प्रसानश में सम्मिलित करना तर्कसंगत प्रतीत नही होता, जबकि सरकार सम्राट के नाम पर चलाई जा रही थी। अन्ततः एक सभा का आयोजन किया गया और मिरांदा को अनेक उपक्रमों के पश्चात सरकार में स्थान मिल गया।

28 मई 1811 को वेनेजुएला ने विदेश-सम्बन्धों के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया। पड़ौसी देश कुन्दिनामार्का के साथ एक संधि की गई जिससे महाकोलम्बिया का प्रारम्भ हुआ जो बोलीवार तथा मिरांदा को अत्यंत प्रिय था। 22 अक्तूबर 1811 को वेनेजुएला कांग्रेस ने बगैर अवरोध के इसे

पारित किया। संधि का एक विशेष लक्ष्य यह था कि दोनों देशों के विद्यालय, महाविद्यालय और अन्य शैक्षिक संस्थान एक-दूसरे को सुलभ होंगे।[8]

सरकारी दस्तावेज़ उच्चस्तरीय थे और घटनाचक्र के पक्ष में जो दलीलें दी गई थीं वे प्रशंसनीय तथा विश्वसनीय थीं। सभी सरकारी सदस्यों, पत्रकारों तथा जन-साधारण को समस्त तथ्यों से परिचित रखा जाता था। यदि स्पेन के साथ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के किसी न्यायालय में वाद-विवाद संभव होता तो निःसंदेह निर्णय वेनेज़ुएला के समर्थन में होता क्योंकि उनकी दलीलें शत-प्रतिशत तथ्यात्मक थीं।

लंदन की यात्रा से लौटने के बाद बोलीवार स्वतंत्रता-समर्थक और वक्ता के रूप में काफी व्यस्त रहे। 19 अप्रैल 1811 को क्रांति की वर्षगांठ के उपलक्ष्य में बोलीवार का भाषण अनतोनियो मुन्योख़ और ख़ोसे फ़ैलिक्स रिबास के भाषणों सहित अत्यंत प्रभावशाली था। प्रशासन द्वारा आयोजित प्रथम कांग्रेस में कुमाना, मारगारिता, बार्सेलोना, बारीनास, काराकास, मेरिदा और तरुख़िल्लयो राज्यों के प्रतिनिधि सम्मिलित थे। इसके दो दिन पश्चात 4 जुलाई को कांग्रेस पर पड़ रहा दबाव अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया और स्वतंत्रता वाद-विवाद का मुख्य विषय बन गई। 5 जुलाई को विधिवत् स्वतंत्रता घोषित कर दी गई। ला ग्रिता के एक प्रतिनिधि, उपायुक्त के अतिरिक्त सभा ने सर्व-सम्मति से स्व-तंत्रता की उद्घोषणा कर दी। ग्वाइयाना, माराकाइबो तथा कोरो राज्यों का इसमें कोई प्रतिनिधित्व नहीं था।

काराकास में 21 दिसम्बर 1811 को पारित, लातीनी अमेरिका के प्रथम स्वतंत्र प्रतिनिधित्वपूर्ण संविधान में वेनेज़ुएला ने घोषणा की : "चूंकि विश्व के कर्ताधर्ता प्रभु ने हमारे हृदयों में मित्रता तथा एक-दूसरे के लिए सच्चा प्रेम करने के लिए प्रेरित किया है, और उन सब लातीनी अमेरिकावासियों से प्रेम करने के लिए प्रेरित किया है जिन्होंने हमारे धर्म, प्राकृतिक प्रभुसत्ता और स्व-तंत्रता के लिए हमें सहयोग देने का निर्णय किया है···यदि अमेरिकावासियों ने यह चाहा कि एक राष्ट्रीय परिषद् का गठन किया जाए तो हम इस संविधान की प्रत्येक धारा को परिवर्तित करने का आश्वासन देते हैं जिससे यह संविधान जन-साधारण की आकांक्षाओं और आवश्यकताओं के अनुसार उनके लाभ के लिए उनकी अधिकाधिक सहायता कर सके··।" लातीनी अमेरिका की एकता का प्रतीकात्मक यह एक स्पष्ट संकेत था, जैसा कि वेनेज़ुएला की प्रबंधक इकाई का सदस्य बनने के लिए आवश्यक नियमों में निहित था कि सदस्य का जन्म अमेरिकी महाद्वीप (जो पहले स्पेनिश अमेरिका के नाम से जाना जाता था) या समीप के द्वीपों पर हुआ हो।[9]

प्रथम वेनेज़ुएला गणतंत्र में बोलीवार पर सैनिक ज़िम्मेदारी के अतिरिक्त

कोई अन्य उत्तरदायित्व नहीं था, जिसका कार्यभार उन्होंने जुलाई 1811 और जुलाई 1812 के बीच संभाला : जब सरकार के गठन का समय आया तो मिरांदा की भी उपेक्षा कर दी गई। उनके स्थान पर क्रिस्तोबाल मैंदोज़ा खुआन एस्कालोना और बालतासार पादरौन को चुना गया। कुलीन तंत्र के ये लोग ईमानदारी तथा दृढ़ता के लिए विख्यात थे। इस स्थिति में ऐसे लोग उपयुक्त थे पर परिस्थितियों के परिवर्तन के साथ इन लोगों के लिए कोई स्थान शेष नहीं बचा था। पुरानी पीढ़ी को, जिसमें मिरांदा भी सम्मिलित थे, हटा कर बोलीवार के नेतृत्व में नयी पीढ़ी सामने आ रही थी।

युद्ध

आशाओं के प्रतिकूल मित्र राष्ट्रों ने नव वेनेज़ुएला गणतंत्र के विरुद्ध षड्यंत्र रचा। 26 मार्च 1812 को कोरो में दोमिन्गो मोंतेवेरदे के नेतृत्व में स्वयं प्रकृति भी विप्लव को सहयोग देती दिखाई दी। "मानतुआनोस" वर्ग के उद्देश्यपूर्ण होने तक पेरु के सभी समुदायों ने स्वतंत्रता प्राप्त कर ली थी। लेकिन फिर "मानतुआनोस" वर्ग ने उन लोगों से छुटकारा पाना आरम्भ कर दिया जिनकी कुछ समय पहले इतनी आवश्यकता थी। दीर्घ अंतराल से अपमानित कैनेरी द्वीपवासी (जिन्हें स्पेनिश कानारियोस के नाम से जाना जाता है, आरंभ से ही वेनेज़ुएला से जुड़े हैं। आज भी उनका स्पेनिश उच्चारण वेनेज़ुएला उच्चारण से मिलता है) पराधीनता की बेड़ियों को तोड़ने के लिए मोंतेवेरदे में सम्मिलित हो गए।

इस तरह प्रथम गणतंत्र रोम समस्या की तरह एक गहन संकट से जूझ रहा था। इस बार मिरांदा को चुना गया। लेकिन वह वृद्ध सज्जन समस्याओं से जूझने में असफल रहे। उनके राजनैतिक चातुर्य तथा कौशल पर उनके अधिकारवादी व्यवहार ने अंकुश लगा दिया। यह भी सत्य है कि वह वेनेज़ुएला की वास्तविकता से अपरिचित थे। बोलीवार उनसे लंदन में मिले थे और उनके अनुभव से प्रभावित हो उनसे वेनेज़ुएला आने का अनुरोध किया था, लेकिन उन्होंने बाद में उठ खड़ी होने वाली समस्याओं को ध्यान में नहीं रखा। 40 वर्षों का अन्तराल एक लम्बा समय होता है और मिरांदा इतने अरसे के लिए अपने देश से बाहर रहे थे।

आरम्भ में मिरांदा ने युवा बोलीवार का सेना में प्रवेश करना पसंद नहीं किया लेकिन अंततः वह मान गए। 13 अगस्त 1811 को जब वालेसिया पर दुःसाध्य अधिकार संभव हो गया तो बोलीवार उनके साथ थे। इसमें बोलीवार ने विशिष्टता प्राप्त की। उन्हें विजय की रिपोर्ट के साथ काराकास भेजा गया तथा मई से वह पुनः सक्रिय हो गए। कुछ

समय पूर्व काराकास में एक भूकम्प आने से प्लाज़ा दे सान खासिन्तो में एक विचित्र भय छा गया था। यह विश्वास किया जाने लगा कि स्वतंत्रता के शुभावसर पर एक भूकम्प का प्रकोप कोई शुभ संयोग नहीं लेकिन बोलीवार के प्रयत्नों से स्थिति सामान्य हो गई। 14 मई को वह पुयेरतो काबेल्लो के सेनापति बन गए। 30 जून को सान फेलिपे में बंदी शाही कैदियों को स्वतंत्र करवा दिया गया तथा नगर पर धावा बोल दिया गया। 5 दिन के संघर्ष के पश्चात पुयेरतो काबेल्लो स्पेन के हाथ चला गया। पूर्व में मारकेस देल तोरो की असफलता, दासों द्वारा काराकास पर हमला करने का भय, ग्वाइयाना तथा माराकाइबो का व्यवहार, मिरांदा के विरुद्ध आन्दोलन—ये सब तथ्य इंगित कर रहे थे कि अंत निकट है। मिरांदा ने हमले की नीति की अपेक्षा बचाव पर अधिक बल दिया। संभवत: उन्हें अपनी सेना से काफी आशाएं थीं। अन्तत: उन्हें भी स्पेनिश पंजे ने जकड़ लिया। मिरांदा स्पेन भेज दिए गए जहां 4 वर्ष सड़ने के पश्चात उनका देहांत हो गया। उनके जीवन पर टिप्पणी करते हुए एक इतिहासविद् लिखते हैं : "मिरांदा का जीवन एक साहसिक गाथा है जो सदैव खतरों और दुखों से भरी रही। यह एक साहसिक पुरुष की एक प्रशंसनीय गाथा है। वह परिवर्तित नहीं हुआ, समय को परिवर्तित होना पड़ा और झुकना पड़ा। उनकी प्रशंसा ऐतिहासिक भूमिका में तथा लातीनी अमेरिकी संदर्भ में की जानी चाहिए। वह उन व्यक्तियों में से थे जिन्हें उनके देश की सीमाओं के बाहर भी जाना गया।"[10]

इस कठिन क्षण में जनता ने नए सरकारी आदेशों का समर्थन नहीं किया। सरकार ने जनता की आकांक्षाओं के अनुरूप कुछ नहीं किया। उन्होंने मात्र इतना किया कि वेनेजुएला के वास्तविक आदिवासियों (इंदियों या "इंडियन" के नाम से जाने जाते हैं) को कर मुक्त कर दिया तथा 4 अगस्त 1810 की एक घोषणा द्वारा "राज्य में नीग्रो-प्रवेश" निषिद्ध कर दिया। दासता अभी भी व्याप्त थी। राजनीतिक दृष्टि से 1811 में लागू संविधान मात्र "करीयोलो" समुदाय के अधिकारों की ही सुरक्षा करता था। यह फ्रांसीसी और उत्तरी अमेरिकी संविधानों का एक मिश्रण था। संघीय राज्य की व्यवस्था की गई जो राज्य की भौगोलिक और ऐतिहासिक वास्तविकताओं के अनुरूप थी। राज्य ने सम्पत्ति की सुरक्षा का आश्वासन दिया। इस तरह एक सीमा तक अन्याय मिटा दिया गया था। धार्मिक मामलों में सरकार अत्यंत सतर्क थी। दूसरे शब्दों में यह एक विदेशी सरकार थी जिसने जनता की आकांक्षाओं पर पानी फेर दिया। अत: वह नई व्यवस्था का समर्थन नहीं करती थी। यही गलती द्वितीय गणतंत्र में भी दोहराई गई। परिणाम भी वही हुआ : असफलता।

भला हो बोलीवार के स्पेनवासी मित्र फ्रांसिस्को इतुरबे का जिनके हस्तक्षेप से बोलीवार को मोंतेवेरदे से पासपोर्ट मिल गया जिससे उनका देश से

निकलना संभव हो सका। वह पहले कुरासाओ और फिर "नव ग्रानादा" में "कारताखेना" गए। वहां उन्होंने अपनी विख्यात रचना "कारताखेना मेनिफेस्तो" लिखी जो एक काराकासवासी द्वारा "नव ग्रानादा" को संबोधित थी। इसमें उन्होंने स्वयं को एक राजनीतिक विचारक की संज्ञा दी। यह एक महत्वपूर्ण रचना थी क्योंकि इसी द्वारा वह स्वयं को एक विचारक के रूप में स्थापित कर सके। गणतंत्र की असफलता के कारणों का उन्होंने जो विश्लेषण किया वह अत्युत्तम है।

"नव ग्रानादा" में बोलीवार ने सैन्य गतिविधियों में भी हिस्सा लिया और जब तक वह स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत होते, उन्होंने कभी यह नहीं सोचा कि वह कहां लड़ रहे हैं। वहां उन्होंने वेनेजुएला को फिर से मुक्त करवाने के लिए आवश्यक समर्थन प्राप्त कर लिया था जिसे "काम्पान्या आदमिराबले" (प्रशंसनीय टुकड़ा) के सम्बोधन से जाना गया। 18 मार्च 1813 को तुनखा में स्थापित "नव ग्रानादा" सरकार ने बोलीवार को "मुख्य सेना-नायक" के सम्मान से विभूषित किया और उन्हें "नव ग्रानादा" की नागरिकता प्रदान की। 2 मास पश्चात वह वेनेजुएला की सीमा पर पहुंच गए थे और 14 मई को आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। 15 मई को उन्होंने सान क्रिस्तोबाल में प्रवेश किया और 23 मई तक मेरिदा में उन्हें "मुक्तिदाता" की संज्ञा दी जाने लगी। 15 जून को तुरूखिल्यो में उन्होंने आमरण संघर्ष की घोषणा की और स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा : हमारा लक्ष्य प्रतिरोधों का सामना कर मुक्ति प्राप्त करना है; जनता सिंहासन के विरुद्ध है। उन्होंने अनुरोध किया कि वेनेजुएला के लिए एक ही दिशा संभव थी : एकता। उन्होंने क्रांति के भय को भी प्रस्तुत किया। लेकिन परिणाम : वही ढाक के तीन पात वाली स्थिति ज्यों की त्यों रही। उनका आन्दोलन लोकप्रिय न हो सका क्योंकि इसमें जनता के जीवन-स्तर में सुधार जैसा कोई प्रस्ताव नहीं था बल्कि इसके विपरीत ऐसा प्रतीत होता था मानो इसका एक मात्र लक्ष्य "क्रीयोलो" की स्थिति दृढ़ करना था।

तथापि, वर्ष 1813 स्वतंत्रता अवश्य लाया। जबकि बोलीवार पश्चिम में आन्दोलन का प्रारम्भ कर रहे थे, 45 व्यक्तियों का एक दल (जिसमें पियार. बरमुदेज, वालदेस और बिदेओ सम्मिलित थे) "सानतिआगो मारीनो" के नेतृत्व में पूर्वी राज्य "ओरिएन्ते" को स्वतंत्र करने का प्रयास कर रहा था। जिस समय बोलीवार काराकास में थे, "मारीनो" कुमाना में थे अपने भू-भागों में सर्वोच्च...दोनों सेना-नायक 5 अप्रैल 1814 को ला विक्तोरिया में मिले। लेकिन कुछ ही समय बाद द्वितीय गणतंत्र की असफलता के साथ उन्हें देश से निष्कासित कर दिया गया।

पुन: "काराकास काबिल्दो" ने पूरे देश का प्रतिनिधित्व करने का

अधिकार प्राप्त कर लिया। 14 अक्तूबर 1813 को इसने बोलीवार को सेनापति नियुक्त कर दिया और मेरिदा में मिले "मुक्तिदाता" के सम्मान को पुनः स्थापित कर दिया। सरकार का पुनर्गठन किया गया। यह पूरा वर्ष रक्तमय संघर्षों से परिपूर्ण रहा। 1814 में शहीदों की अत्यधिक आवश्यकता थी लेकिन 2 जनवरी को अभूतपर्व शांतिमय क्षणों में बोलीवार ने एक अधिवेशन का आयोजन किया जिसमें उन्होंने अपनी गतिविधियों का विस्तृत वर्णन दिया। यहां से वह अमीमित शक्तियों के साथ उभरे।

बोलीवार और मारिनो की शानदार सफलताओं के बावजूद राजसी प्रतिरोध अभी शेष था। "क्युबा", "पुयेरतो रिको" और कुछ इंगलिश द्वीपों के माध्यम से माराकाइबो और ग्वाइयाना राजसी पक्ष को सैनिक सहायता पहुंचा रहे थे। जन-समुदाय जो निरंकुश प्रशासकों के विरुद्ध हो गया था, विद्रोहियों पर दबाव डाल रहा था, जिन्हें सैनिक उपलब्ध नहीं हो रहे थे। संयुक्त राज्य अमेरिका और अंग्रेज, स्पेन को समर्थन दे रहे थे क्योंकि वे नेपोलियन के विस्तार से चिन्तित थे।

आस्ट्रियावासी खोसे तोमास बोवेस शाही टुकड़ियों का सेनापति बन गया। क्योंकि शाही सेना क्रान्तिकारियों की तुलना में अधिक सशस्त्र थी इसलिए हमलों में वह अक्सर सफल रहती। सफलता ने बोवेस को निर्धन वर्ग के मध्य अपार प्रशंसा का पात्र बना दिया। निरक्षर "इल्यानेरोस वर्ग" जो बोवेस का समर्थक था और जिसमें "इंडियन रक्त" सम्मिलित था, अपनी वीरता और साहस के लिए प्रसिद्ध था। बोवेस ने इल्यानेरोस वर्ग को शत्रु पराजित करने के बाद उसे लूटने का अधिकार सौंप दिया। मृत्यु और तबाही का वातावरण चारों तरफ बना हुआ था। इस तरह बोवेस ने द्वितीय गणतंत्र को समाप्त कर दिया। उसके अर्धनग्न "इल्यानेरोस" मात्र घरेलू औज़ारों के साथ आगे बढ़ते रहे। सत्य तो यह है कि तोपों और बारूद का प्रयोग लगभग शून्य था क्योंकि अस्त्र-शस्त्र प्राप्त करना काफी मुश्किल था।

बोलीवार और उनके सहयोगियों को एक बार फिर निष्कासन हेतु बाध्य किया गया, चाहे यह थोड़े समय के लिए था। इतिहासविद् आगुस्तो मिखारेस लिखते हैं : "बोलीवार के जीवन की विशेषता उनका दुर्भाग्य से उठकर ख्याति की ऊंचाइयों तक पहुंचना था, जिसका कारण उनका दृढ़ चरित्र था जिस पर असफलता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता था।"[11] स्वतंत्रता आन्दोलनों के लिए परिस्थितियां अनुकूल न थीं। नेपोलियन की हार के बाद पुनः सिंहासन पर बैठे सम्राट फरदिनान्द सप्तम ने फरवरी 1815 को पावलो मोरिल्लो के नेतृत्व में 10,000 व्यक्तियों का एक बेड़ा अमेरिका भेजा। उसे इस महाद्वीप को पुनः स्पेन के अधीन लाने का कार्य सौंपा गया था। मोरिल्लो ने मारगारिता द्वीप

पर अधिकार कर लिया और कुछ समय के लिए वेनेजुएला और "नया ग्रानादा" भी उसके अधिकार में आ गए।

सितम्बर 1814 को बोलीवार कारूपानो के रास्ते बच निकले और कारताखेना पहुंच गए। तुनखा में उन्होंने कांग्रेस को अपनी पराजय का विवरण दिया। कांग्रेस ने पुन: उनमें निष्ठा व्यक्त करते हुए उन्हें कई अन्य सैन्यकार्य भी सौंप दिए जिनका निबाह बोलीवार ने सफलतापूर्वक किया। क्योंकि उसी समय वेनेजुएला लौटना असंभव था, वह सहायता और समर्थन प्राप्त करने के लिए वेस्ट इंडीज़ चले गए और जमैका में 7 मास तक रहे। इस अवधि में उन्होंने पढ़ा और विचारा तथा अपना प्रसिद्ध "जमैका पत्र" भी उन्होंने यहीं लिखा। इतिहास-विद् "गुएरो" लिखते हैं : "उस पत्र में बोलीवार भविष्य के इतिहासकार बन गए ··और उन्होंने आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और अन्य सभी पक्षों का विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाला कि अन्ततः अमेरिका 15 या इससे अधिक गणतंत्रों में विभाजित हो जाएगा, मैक्सिको एक गणतंत्र बन जाएगा जिसका राष्ट्रपति आजीवन कार्यभार संभालेगा अगर उसने अपना कर्तव्य ठीक तरह निभाया, अन्यथा एक तानाशाह सेना के समर्थन से प्रशासन संभालेगा। इतूरबिदे, मैक्सीमिलिन और पोरफिरो दीआज़ के साथ राज्य पर तीन हमले और फिर क्रांति के बाद एक दलीय शासन इन भविष्यवाणियों को सही सिद्ध करते हैं। बोलीवार ने इन सब घटना-क्रमों की भविष्यवाणी की थी जो सत्य सिद्ध हुई : "पानामा नहर और निकारागवा के लिए सहयोग : रोसार निरंकुश प्रशासकों और भूमि-स्वामियों द्वारा शासन संभालना : चिले की राजनीतिक स्थिरता : लीमा की सुविधाजनक यात्रा : महा कोलम्बिया का विकास : अमेरिकी राज्यों के संगठन और लातीनी अमेरिका द्वारा अपने पड़ौसी देश के अनाधिकृत विस्तार का विरोध।"[12]

दिसम्बर 1815 को बोलीवार हैती में आ गए। पोर्त-उ-प्रिंस जाने का उनका उद्देश्य भाग्यशाली सिद्ध हुआ। राष्ट्रपति पेतिओन ने कुरासाओ से और राबर्ट सूदरलैंड ने लोस कायोस अभियान के लिए उन्हें मदद दी। द्वीप पर वेनेजुएला से निष्कासित अनेक व्यक्ति थे जो राजनीतिक मसलों पर विवाद में व्यस्त रहते। भला हो बरीओन के सहयोग का जो बोलीवार इस समुदाय के नेता बन गए। कुछ चुने हुए व्यक्ति उनके साथ हो लिए जिनमें सेनाध्यक्ष (मारिन्यो) और नौसेनाध्यक्ष (बरीओन) सम्मिलित थे। वेनेजुएला के अनेक छापामार समुदाय राजकीय सेना के लिए समस्या खड़ी कर रहे थे लेकिन बोलीवार का विश्वास था कि बाह्य सहायता अति आवश्यक है। उन्होंने महासागरों को जोड़ने वाली नहर के निर्माण के लिए ब्रिटेन को प्रलोभन दिया। उन्हें बीस से तीस हजार बन्दूकें, एक करोड़ स्टर्लिंग पौंड और 15 या 20 समुद्री जहाजों की

आवश्यकता थी। उन्होंने इनके लिए उत्तरी अमेरिकी देशों से भी अनुरोध किया क्योंकि इसके बिना स्वतंत्रता संभव नही थी। लेकिन उन्हें सफलता प्राप्त नही हुई क्योंकि कोई भी उत्तरी अमेरिकी देश ब्रिटेन से सम्बन्ध-विच्छेद नहीं चाहता था।[13]

मई 1816 को लास कायोस अभियान के मारगारिता पहुंचने पर तृतीय गणतंत्र का जन्म हुआ, यद्यपि ओकूमारे में असफलता ही हाथ लगी और इसे विवशत: हैती लौटना पड़ा। यही वह क्षण था जब पेतीओन को "वेनेजुएला के परहितकारी" का सम्मान प्राप्त हुआ क्योंकि उन्होंने अपने अभागे दोस्त का साथ नहीं छोड़ा और जब बोलीवार ने उनसे उत्तरी अमेरिका, इंग्लैंड, मैक्सिको या अर्जेंटीना से बच निकलने के लिए सहायता मांगी तो पेतीओन ने कहा, जैसा कि इतिहासकार पाल वेर्ना लिखते हैं : "अगर भाग्य ने आपको दो बार निराश किया है तो तीसरी बार वह आपका साथ देगा। कम से कम मैं तो यही समझता हूं और अगर आपके दुख को कम करने के लिए मैं कुछ कर सकने में सक्षम हूं तो मुझ पर विश्वास कीजिए। शीघ्र आइए और हम इस विषय पर बात करेंगे।"[14] यह बात सितम्बर 1816 की है और आगामी 3 मास तक तैयारियां चलती रहीं। पेतीओन और सुदेरलैंड के सहयोग के साथ बोलीवार अपने अन्तिम हमले के लिए तैयार थे। यह वह हमला सिद्ध होना था जिसने काराबोबो और काल्लाओ का भाग्य बदलना था।

स्वतंत्रता-सेनानियों के लिए सफलता का क्षण आ पहुंचा था। आन्दोलन ने एक नवीन भाषा प्रयुक्त की जो राजनीतिक कम, सामाजिक ज्यादा थी। बोलीवार ने अपनी पिछली असफलताओं से अच्छा सबक सीखा था। उन्हें वे सब कारण भी याद थे जो शाही जीत की सफलता के लिए उत्तरदायी थे। जमैका में उन्होंने स्वीकारा :····"मुक्ति आन्दोलन ने स्पेनिश छापामारों की तरह पूर्ण स्वतंत्रता का आश्वासन नहीं दिया था।"[15] इस तरह पेतीओन और स्वयं के विचारों के साथ तालमेल रखते हुए बोलीवार ने सभी दास मुक्त कर दिए। कुछ समय पश्चात उन्होंने स्वतंत्रता-आन्दोलन में सम्मिलित सभी के लिए भूमि का पुन: वितरण किया। समानता और सामाजिक न्याय उनके विचारों और सिद्धांतों के मुख्य अंग बन गए। असंख्य लोगों को मुक्ति-सेना में सम्मिलित किया गया। मोरिल्लो ने लिखा कि सभी स्वतंत्र "कौदिल्लयोस" यह जानते ही कि शाही सेना निकट नहीं है, दासों को मुक्त कर देते और कुछ ही दिनों में नवीन सेना का गठन आरम्भ कर देते।"[16] जो व्यक्ति अभी दास थे, वे कुशल अधिकारी सिद्ध हुए, और मुक्ति-आन्दोलन ने निर्धन वर्ग में असीम समर्थन पाया। बोवेस 1814 में स्वर्ग सिधार गए। खोसे अन्तोनियो पैस नए नेता थे जिन्होंने

मैदानी क्षेत्रों के आदिवासियों का समर्थन इस आश्वासन द्वारा प्राप्त किया कि भूमि का पुन: वितरण किया जाएगा और सैनिकों के लिए भूमि वितरित की जाएगी।

अन्तत: नेपोलियन की अन्तिम हार के साथ लातीनी अमेरिका का भाग्य चमका। ब्रिटिश निर्माता और व्यापारी वर्ग दबाव डालने लगे कि लातीनी अमेरिका के साथ सम्बन्धों का नवीनीकरण किया जाए। स्पेन के साथ मित्रता जारी रखने में कोई तुक न थी और बर्तानवी लोग व्यवसायिक संभावनाओं में रुचि दिखा रहे थे। वैसे भी इंग्लैंड के पास उस समय पुराने शस्त्रों के भंडार थे जिन्हें वह आसानी से लातीनी अमेरिका को बेच सकता था और लातीनी अमेरिका के उत्पादनों, जैसे कोको, काफी, फल, चमड़े आदि की इंग्लैंड में अच्छी खपत की संभावना थी। वास्तविक व्यवसाय वेस्ट इंडीज़ के माध्यम से संभव हो सकता था। इस तरह लातीनी अमेरिका के लिए अस्त्र-शस्त्रों की स्थिति सुधरी। मुक्ति सेनाएं अब ऊंची कीमतों पर हथियार खरीदने या जहां से भी हथियार मिलें, उन्हें प्राप्त करने के लिए बाध्य नहीं रहीं।

इस अभियान और पिछले आन्दोलनों में बहुत अन्तर था। इस बार लक्ष्य काराकास न था। जब आन्दोलन हैती से आया तो "पियार" ने सर्वप्रथम ग्वाइयाना की विजय के महत्व को समझा। समस्त साधन ग्वाइयाना पर अधिकार करने के लिए जुटा लिए गये। पियार ने सान फेलिक्स के युद्ध की संरचना की जिसने आन्दोलन को यह महत्वपूर्ण राज्य जिता दिया। अंगोस्तुरा भौगोलिक और राजनीतिक केन्द्र बन गया, जो एक नवीन घटना थी। इसकी महत्वपूर्ण स्थिति, बाह्य विश्व से सम्पर्क की संभावना, रक्षा के लिए सर्वोत्तम परिस्थितियां और प्रचुर मात्रा में उपलब्ध सुविधाओं ने इसकी विजय का महत्व बढ़ा दिया। भला हो फ्रांसिस्को मिशन का जिसके प्रयत्नों से ग्वाइयाना उस समय एक सम्पन्न राज्य था जबकि शेष राष्ट्र युद्ध में उलझा था। स्पेनिश सेनापति मोरिल्लो ने बाद में पियार की इस विजय की महत्ता की स्वयं पुष्टि की और ग्वाइयाना को शत्रु का "भाग्य खुलने" की संज्ञा दी।[17] उनके लिए इस राज्य की हार का अर्थ काराकास और बोगोता का हाथ से निकल जाना था। यह भी सत्य है कि ग्वाइयाना की विजय के पश्चात स्वतंत्रता-सेनाओं को फिर किसी बड़ी हार का सामना नहीं करना पड़ा। गणतंत्र के लिए पथ तैयार था।

संघर्ष का विस्तार

अंगोस्तुरा से बोलीवार पूरे लातीनी अमेरिका की मुक्ति में जुट गए। सर्वप्रथम उन्होंने राज्य के संस्थानों का सुधार किया और राज्य कांग्रेस (जिसने बोलीवार के सेनापति होने की पुष्टि की) का गठन किया। एक अन्य

महत्वपूर्ण कदम था एक समाचार पत्र "ओरिनोको की डाक" (कोरियो देल ओरिनोको) का प्रारम्भ जिससे संदेश को हर तरफ फैलाया जा सके। यूरोप के देशों में यह समझा जाने लगा कि एक गंभीर, विकासशील, प्रजातांत्रिक और संवैधानिक राज्य स्वतंत्र विश्व में प्रवेश कर रहा था।

अन्ततः 1818 में मुक्ति-सेना को सभी आवश्यक अस्त्र-शस्त्र उपलब्ध हो गए। आन्देस पर्वत-मालाओं (एन्डीज़) को पार करने के निडर अभियान ने और नव ग्रानादा की मुक्ति ने वेनेजुएला की स्थिति परिपक्व कर दी। "इल्यानेरो" सिपाहियों के साथ द्वीपसमूहों को पार कर बोयाका को जीतना (7 अगस्त 1819) उस शृंखला की कड़ियों में सम्मिलित थे जिसने इस समय की महत्ता बढ़ा दी। नेपोलियन के विरुद्ध संघर्षरत स्पेनिश आन्दोलन के प्रमुख मोरिल्लो ने भी बोलीवार की सेना की निडरता की प्रशंसा की, जिसके पास हथियार भी पूरे न थे लेकिन मुक्त राष्ट्र के लिए लड़ने का दृढ़ संकल्प अवश्य था।

वर्ष 1820 अत्यंत महत्वपूर्ण था। रिगो ई किरोगा के नेतृत्व तले स्पेनिश आन्दोलन ने सम्राट फरदीनान्द को 1812 के संविधान के प्रति श्रद्धा रखने के लिए विवश कर दिया। स्पेन के रुख में इस परिवर्तन ने न सिर्फ लातीनी अमेरिका भेजी जाने वाली सेनाओं को रोका बल्कि स्पेन की नीतियों में भी कई परिवर्तन हुए। वेनेजुएला में शाही वंश, जिसे पहले जन-समर्थन प्राप्त था, अब अकेला रह गया क्योंकि इसने जनता की सहानुभूति खो दी। मोरिल्लो के नेतृत्व में स्पेनिश सेनाओं की अनैतिक हमलावर कार्यवाहियां अन्ततः उन्हीं के लिए आत्मघाती सिद्ध हुईं। "इल्यानेरो" समुदाय के युद्ध में सम्मिलित होने से स्थिति परिवर्तित हो गई। मोरिल्लो को छह मास हेतु युद्ध-विराम घोषित करने का आदेश दिया गया। इस दौरान अन्तिम शान्ति-वार्ता पर विचार-विमर्श किया जाना था। 27 नवम्बर की वार्ता में, जो एक वर्ष पूर्व असंभवप्रायः थी, बोलीवार ने सुझाया कि "ग्रान कोलम्बिया" स्पेन के समतुल्य, स्वयं को एक सम्पूर्ण राष्ट्र समझता है।

अप्रैल 1821 के युद्ध-विराम के पश्चात स्पेनिश सेनाएं क्षीण होने लगी। जून में काराबोबो की विजय ने स्वतंत्रता की पुष्टि कर दी, लेकिन दो हज़ार जीवन बलिदान करने पड़े। स्वतंत्रता-सेना में सम्मिलित थे: "पैख़", "इल्यानेरो", "मारिन्यो" "सैदेन्यो" और "प्लाजा" जो युद्ध में काम आए, और पूरे वेनेजुएला के सेनानी: कुल मिलाकर 6,400 व्यक्ति। स्पेनिश सेना में 5,200 व्यक्ति थे जिनमें आधे स्पेनवासी तथा आधे वेनेजुएलावासी थे जिनका नेतृत्व मिगेल दे ला तोर्रे ने किया। वह पुयेरतो काबेल्लो तक पुनः पहुंचने में सफल हो गए और दिसम्बर में कोरो अपने अधिकार में ले लिया, जिसे मई 1823 में पुनः मुक्त करवा लिया गया। स्पेनिश सेनाओं का अन्तिम

महत्वपूर्ण प्रहार माराकाइबो का नौसैनिक युद्ध था। 3 अगस्त को स्पेनिश सेनाओं ने आत्मसमर्पण कर दिया और पैस ने 10 नवम्बर को पुन: पुयेरतो काबेल्लो जीत लिया। उन्होंने कालसादा और कारेरा के सेनापतियों को आत्मसमर्पण के लिए बाध्य कर दिया। स्पेनिश सेना के शेष 56 अधिकारियों और 539 सैनिकों को पूरे सम्मान सहित लौटने की आज्ञा दे दी गई। वेनेजुएला में युद्ध समाप्त हो गया था।

आगामी 9 वर्षों (1821-30) के मध्य बोलीवार के जीवन का अध्ययन शेष अध्यायों में किया जाएगा क्योंकि यही वह समय था जब बोलीवार के विचारों ने अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। काराबोबो से वह "नव ग्रानादा" लौट गए, जिसे 7 अप्रैल 1822 को बोमबोना के युद्ध के पश्चात अन्तत: पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त हो गई थी। अब उन्होंने दक्षिणी अभियान प्रारम्भ किया लेकिन यह ठीक सिद्ध नहीं हुआ क्योंकि इससे उत्तरी क्षेत्र में किया उनका श्रम बेकार हो गया। फिर भी अंतत: शक्ति उनके हाथों में रही, जो नाममात्र थी। "1826 तक गणराज्य इस स्थिति तक आ पहुंचा जहां सर्वत्र विनाश की ज्वाला धधक रही थी।"[18]

दक्षिणी अभियान में वेनेजुएला और नव ग्रानादा के अधिकारी और सेनाएं बोलीवार के साथ थे जिसमें अन्तोनियो खोसे दे सुकरे भी सम्मिलित थे। 6 अगस्त 1824 को खुनीन और 9 दिसम्बर 1824 को आयाकुचो के युद्धों के फलस्वरूप एक्वादोर और पेरू मुक्त हो गए। ग्वायाकिल में बोलीवार ने खोसे दे सान मार्तिन के साथ एक समझौता किया जिसके अनुसार अर्जेंटीनी नेता को अपने देश में रह कर ही युद्ध जारी रखना था जबकि बोलीवार को पेरू में लड़ना था। सुकरे बढ़ते रहे और "जैसे को तैसा रहने दो" के सिद्धांत के अनुरूप नव-स्वतंत्र राष्ट्र बोलीविया का राष्ट्रपति पद संभाल लिया। लेकिन फिर वह अति महत्वपूर्ण कार्य को स्वीकारने के लिए सहमत हो गए जब उन्होंने अनुभव किया कि इससे "महा कोलम्बिया" को दक्षिण में एक सहयोगी मित्र राष्ट्र मिल जाएगा।

इन वर्षों में बोलीवार ने अनेक महत्वपूर्ण संवैधानिक और राजनयिक कदम उठाए। स्वयं उन्होंने मोसकेरा और सान्ता मारिया आन्दोलनों का नेतृत्व किया, बोलीविया के संविधान की रचना की और इस संबंध में उन्होंने अनेक सुझाव दिए, पनामा कांग्रेस का गठन किया, "रियो दे ला प्लाता" के प्रतिनिधियों के साथ विचार-विमर्श किया, जिन्होंने बोलीवार को सम्पूर्ण लातीनी अमेरिका का संरक्षक बनने का निमंत्रण दिया। साथ ही बोलीवार ने सामाजिक न्याय और शिक्षा पर भी लिखा।

यह समय बोलीवार और इस तरह "ग्रान कोलम्बिया" के लिए

सर्वश्रेष्ठ था। फिर भी असफलता के संकेत दृष्टिगोचर हो रहे थे, संदेह और अनिश्चितता के चिन्ह दिखाई दे रहे थे। कोदिलीसमो आदि ने उन्हें काराकास लौटने के लिए विवश कर दिया। बोलीवार के प्रारब्ध में सदैव नये सिरे से आरम्भ करना ही लिखा था। उन्होंने स्वयं ही लीमा छोड़ने के लिए अपने को बाध्य कर लिया, जैसा कि एक इतिहासकार ने लिखा है : "स्वतंत्रता-आन्दोलन की पुकार सुनते ही अपने को सम्मान और प्रतिष्ठा भरे जीवन से खींच लेना सिद्ध करता है कि उनका जीवन···उनके दृढ़ विचारों के प्रति पूरी तरह समर्पित था।"[19]

पैख और सान्तान्देर के संबंध-विच्छेद ने स्पष्ट कर दिया कि ग्रान कोलम्बिया विभाजित होने को है। बोलीवार दोनों की विषमता समाप्त न कर सके। ग्रान कोलम्बिया राजनीतिज्ञों, धनिकों और शक्तिशालियों की लालसाओं तले दब गया। इंग्लैंड से समझौते के परिणामस्वरूप मिले ऋण से भ्रष्टाचार की बू आने लगी; इससे संबंधित व्यक्ति धनिक बनते गए। कुछ समय के लिए ऐसा प्रतीत हुआ कि बोलीवार पैख को शान्त करने में सफल हो गए, लेकिन ज़ख्म बहुत गहरे थे। ओकान्या में एक विशेष अधिवेशन का आयोजन किया गया जिस में स्थिति पर शान्तिपूर्वक विचार-विमर्श किया गया, लेकिन यह सफल न हुआ। बोलीवार निरंकुश शक्तिओं के सम्मुख कटिबद्ध हो गए। क्रान्ति को सुरक्षित रखने का यही अन्तिम रास्ता बचा था जो बोलीवार के आर्थिक और धर्म के संदर्भ में दासों और इंडियनों (आदिवासियों) की स्थिति सुधारने के कार्यों से स्पष्ट था। अपने आश्वासनानुसार 1830 में उन्होंने प्रशासन दूसरों के हाथ सौंप दिया और अपने अन्तिम निष्कासन हेतु सुकरे का अनुसरण कर बोगोता छोड़ दिया। फिर भी उन्होंने इन लोगों को अपने अन्तिम क्षणों में क्षमा कर दिया। जिस बेवकूफी से बोलीवार को उनके अन्तिम मासों में पीड़ित किया गया था, उन पर लाछंन लगा उन्हें उस देश से निष्कासित कर दिया गया था जिसे बोलीवार ने मुक्त किया था, इस सब के बावजूद उन्होंने उसे नजरअन्दाज कर दिया और लिखा: "मेरी मृत्यु के पश्चात मेरे अवशेष मेरे निवास-स्थल काराकास की अमानत कर दिए जाएं।"[20] रामोन दियाज़ सानचेज़ ने बोलीवार के अन्तिम दिनों के संबंध में लिखा है : "बोलीवार का जीवन एक उदाहरण था · बचपन से ही भौतिक परिस्थितियों में पले (बोलीवार) मृत्यु के समय कंगाल थे, लेकिन वे जो उन्हें दफनाए जाते देखने के लिए जीवित रहे···क्या वे कुछ प्रसन्न थे ? मृत्यु और जीवन परस्पर सम्बद्ध हैं, एक व्यक्ति मरता या जीता है·· अपने कर्म से, न कि उस धन से जो वह एकत्रित कर पाता है। बोलीवार का अपना जीवन उन लोगों से श्रेष्ठतर था जो उनके अन्त के लिए उत्तरदायी थे। मृत्यु की निकटता ने उनमें प्रचुर स्पष्टता भर दी थी। अब वह प्रत्येक तथ्य ज्यादा अच्छी तरह समझ सकते

थे। उनका हृदय घृणा और बदले की भावनाओं से परे था क्योंकि उनका मस्तिष्क दिव्य प्रकाश से भर गया था।"[21] वेनेजुएला के विख्यात इतिहासकारों में प्रमुख, करीस्तोबाल मेन्दोजा ने जिनसे मैंने इस रचना के लिए प्रेरणा ली है, कहा था : "बोलीवार के सम्पूर्ण जीवन में उनके कर्म और विचारों का प्रधान केन्द्र एक ही था : 'मुक्ति' · किसी अन्य व्यक्ति से अधिक उन्होंने परिवर्तन की प्रकृति को पहचाना तथा अपने राष्ट्र और इसकी परिस्थितियों को बखूबी समझा·· आशाओं के विजयी, गौरवमयी प्रभात का प्रकाश बोलीवार पर पड़ रहा है।"[22] □

संदर्भ

1. तरान्सकरीपसिओन् देल एक्सपिदियेन्तो ओरिखिनिल दे ला रिआल ओदिएन्सिया दे काराकास, सोबरे दोमिसिलियो तुतेलार देल मेनोर्दोन् सिमोन दे बोलीबार, औरिखिआन्दो पोर ला फुगा दे एस्ते दे ला कासा दे सुतुतोर, दोन कारलोस पालासिओस ई सोखो, एन एल मेस दे खुलियो दे 1795, बोलेतिन दे ला अकादेमिया नेसिओनाल दे ला हिस्तोरिया, काराकास, 149, ऐनेरो—मारसो 1955, पृष्ठ 22

2. अ० रूमाखो गोन्सालेख, बोलीवार (काराकास-मैड्रिड, 1955), पृष्ठ 39

3. पेरू दे लेवरोइक्स, दायरियो दे बुकारामान्गा, पृष्ठ 226-230

4. वी लेकुना, कातालोगो दे एरोरेस ई कालुमानियास एन ला हिस्तोरिया दे बोलीवार (न्यूयार्क, 1956), पृष्ठ 160

5. पेरू दे लेकरोइक्स, दायरियो दे बुकारामान्गा, पृष्ठ 229

6. इतिनेरारियो दाकुमेन्ताल दे सिमोन बोलीवार (काराकास, 1970) पृष्ठ 14

7. विदा ले बोलीवार (न्यूयार्क, 1883), पृष्ठ 7

8. सी० एल० मेनदोजा, लोस परीमेरास मिसीओनेस दिपलोमातिकास दे वेनेजुएला (काराकास, 1962), 11, 127

9. कान्सतितुसियोन फेदेरेल दे वेनेजुएला, 1811, (रिपरोदकिसयोन फास्सिमीलार दे ला एदीसियोन दे 1812, काराकास, 1961), पृष्ठ 18, 38

10. खेनुसेते सारदी, एवेनतुरा ई ताराजेदिया दे दोन फ्रांसिस्को दे मिरांदा वेनेजुएला, 1964), पृष्ठ 395, 406

11. एल लिबेरतादोर (काराकास, 1964), पृष्ठ 108

12. एल०वी० गुयएरेरो, "बोलीवार, हिस्तोरियादोर देल फ्युतरो" कान्दीदेसेस (काराकास, 1967), पृष्ठ 8, 10

13. सी० पारा-पेरेख, उना मिसिओन दिपलोमातिका वेनेजुलाना एन्ते नेपोलियोन एन 1813 (काराकास, 1953), पृष्ठ 20

14. पेतीओन ई बोलीवार (काराकास, 1969), पृष्ठ 256

15. ओबरास कम्पलीतास 1, 180

16. अ० रोदरीगुएख विला, एल तेमीएन्ते जनरल दोन पाबलो मोरिलो, 11, 80

17. रोदरीगुएख विला, एल तेनेइन्ते जनरल दोन पाबलो मोरिल्लो, 11, 80

18. बोलीवार, ओबरास कम्पलीतास, 1, 1432-44

19. आर० बेरनाल मेदिना रूता दे बोलीवार (काली, 1961), पृष्ठ 182

20. ओबरास कम्पलीतास, 11, 988

21. एल काराकूएनो (काराकास, 1967), पृष्ठ 138

22. दिस्करसी एन एल सेस्कुइ सेनतानेरारियो दे ला बाताला दे काराबोबो, बोलेतीन् अकादेमिआ नासिओनाल दे ला हिस्तोरिया, काराकास, न० 214, आबरील—खुनीओ, 1971, पृष्ठ 165 □

4. बोलीवार की विचारधारा

स्रोत

बोलीवार ने बीस वर्ष के सार्वजनिक जीवन में अपने लेखों और कार्यों द्वारा क्रांति के लिए एक कार्यक्रम तैयार किया जिसे एक नए दक्षिणी अमेरिका का निर्माण करना था। उन्होंने इस कार्यक्रम के सभी सूत्रों का गठन नहीं किया; उन्होंने कुछ का गठन किया, शेष उन्होंने असफल प्रयास के वर्षों के दौरान उभरी एक दीर्घ और तीव्र परंपरा से ग्रहण किया। उनका योगदान और उनकी महत्ता उनके इस प्रयास में निहित थी कि उन्होंने इन सब को समन्वित कर एक इकाई का रूप दिया। सिमोन रोदरीगेज ने अपने सत्तर वर्षीय अनुभव के आधार पर इसका विश्लेषण किया : 'बोलीवार ने अपने और दूसरे लोगों के विचार अमेरिका को दिए, और उन विचारों का प्रचार किया जिनसे दास स्वतंत्र व्यक्तियों में बदलने थे।'[1] कुछ बहुत महत्वपूर्ण विचार संस्कृति से आए, जैसा इतिहासकार खूलियो फेबरेस कोरदेरो ने दिखाया है।[2] उन्होंने समकालीन विचारधारा से काफी ग्रहण किया जिससे प्रकट होता है कि वह विभिन्न साहित्यकारों से परिचित थे। लेकिन उनका वास्तविक योगदान पहिये की तीलियों की तरह इन सब प्रभावों को एकत्रित करने में, स्वतंत्रता के लिए अंतिम क्षणों तक प्रयत्न और संघर्ष करने में, और प्रत्येक तथ्य पर पूरा ध्यान देने में निहित था। इस तरह उन्होंने दूसरे लोगों के विचारों को एक ताजी और संक्षिप्त भाषा में प्रस्तुत किया। करील्यो कुलीन-वंश के स्वराज्य से आरंभ करते हुए अपने अंतिम 15 वर्षों के क्रांतिकारी विचारों तक उन्होंने नव अमेरिका के लिए एक संपूर्ण कार्यक्रम तैयार किया। लेकिन वह मात्र एक साधारण प्रचारक नहीं था क्योंकि सभी लातीनी अमेरिकी नेताओं में वह ही ऐसे थे जिन्होंने अपने कार्यक्रमों को संभवतः पूरा भी किया।

1800 से पूर्व वेनेजुएला की राजनीतिक स्थिति शेष लातीनी अमेरिका जैसी ही थी; लाक्षणिक विशेषता यह थी कि उपनिवेश संबंधी राजनीतिक निर्णय स्पेनिश अधिकारियों द्वारा लिए जाते थे। 1809 में मार्तिन दे गाराई ने फरदिनान्द सप्तम की ओर से अपने मातहतों को घोषणा की : 'प्रशासन और उपनिवेशों की एकता इतनी जरूरी पहले कभी नहीं रही है। अब वक्त आ गया है कि प्रगति की बाधाओं को हटा कर इसे हर संभव तरीके से

प्रोत्साहित किया जाए जिससे प्रशासन और उपनिवेशों के मध्य संबंधों का आधार न्यायोचित हो सके।'[3] यह स्वतंत्रता के समय की बात है जब स्पेन नेपोलियन के हमले से संकट का सामना कर रहा था। बायोने कांग्रेस ने उप-निवेशीय प्रशासन के तीन सौ वर्षों की वास्तविकताओं को पहचानते हुए वायदा किया कि भविष्य में अमेरिका में स्पेनिश राज्यों को वही अधिकार प्राप्त होंगे जो राजधानी को उपलब्ध हैं।'[4] फिर भी अंततः यह शाही परिषद की अस्थायी सरकार के समय ही संभव हो सका कि स्पेन ने तीन सौ वर्षों के अन्यायों को समाप्त करना स्वीकार किया। क्षमा मांगते हुए शाही परिषद ने सैविले के केन्द्रीय प्रशासन द्वारा जारी स्पेनिश संसद संबंधी घोषणा को दोहराया जिसमें अमेरिकी उपनिवेशों का प्रतिनिधित्व होगा और स्वीकार किया कि सारा दोष पुराने अधिकारियों की अकुशलता का था। फिर इसने वायदा किया : 'स्पेनिश अमेरिका के नागरिको! इस क्षण से आपको स्वतंत्र व्यक्ति का सम्मान प्राप्त है। आप पहले की तरह दासता से दबे हुए नहीं हैं, जो असह्य होती जा रही थी। जितना आप प्रशासनिक केन्द्र से दूर थे उतना ही आप के साथ बुरा व्यवहार किया जाता था; अज्ञान द्वारा आपका सर्वनाश हो रहा था। स्मरण रहे कि एक बार उसका नाम आपने बोल दिया या लिख दिया जिसे राष्ट्रीय परिषद में आपका प्रतिनिधित्व करना है तो आपका भाग्य फिर मंत्रियों या शासकों के हाथों में नहीं होगा बल्कि आपके अपने हाथों में होगा।'[5] इन शब्दों पर ध्यान दीजिए : "दासता से दबे हुए' 'बुरा व्यवहार', 'अज्ञान द्वारा सर्वनाश'। स्पेन द्वारा स्वयं स्वीकार कर लेने पर हमें और ज़्यादा सबूत ढूंढ़ने की आवश्यकता नहीं।

स्वतंत्रता आंदोलन उपनिवेशवाद और निरंकुशवाद का विरोधी था और प्रजातंत्र, स्वराज्य और मुक्ति के हक में था। ताकत पर कब्ज़ा किए बिना, यानि शक्ति की स्रोत सत्ता को हथियाए बिना कुछ भी नहीं किया जा सकता था। इस तथ्य ने दक्षिणी अमेरिका के अनेक वीरों को चेता दिया था कि स्वतंत्रता बलिदान मांगती है। मिरांदा ने इसके बारे में 1781 से सोच रखा था, जब वह संयुक्त राज्य के लिए लड़ रहे थे। तीरादेन्तेस, एस्पेखो और नारीन्यो ने भी एक स्वराज्य की कल्पना की थी जिसे लातीनी अमेरिका के निवासियों की अलग पहचान स्वीकार्य होगी और उन्हें विश्व के गणतांत्रिक मंच पर स्थान मिल सकेगा।

हम पहले ही 1781-82 के एक आलेख-पत्र का उल्लेख कर चुके हैं जिसमें पहली बार क्रांतिकारी सिद्धांतों की झलक मिलती है : आलेख जिसमें बोलीवार के पिता ने मारकिस दे मिखारेस और मार्तिन दे तोवार के साथ अपमानजनक प्रशासक के असहनीय अत्याचारों का वर्णन किया और मिरांदा

से 'घुटनों के बल झुककर और बाहें फैलाकर,···भगवान के प्रेम के नाम में' वह 'कौदिल्लो' बनने की प्रार्थना की जो इस अत्याचार को समाप्त कर·· इस दासता से (हमें) मुक्त करेगा ।'[6] कोरो का कोरीनोस आंदोलन गणतंत्र और स्वतंत्रता के फ्रांसीसी राजनीतिक विचारों से प्रेरित था लेकिन मिरांदा के पश्चात यह पिकोरनेल, गौल और एस्पाना थे जिन्होंने क्रांति की विचारधारा और इसके प्रथम प्रयास को समझा।

यह कहा जा सकता है कि बोलीवार 19 अप्रैल तथा 5 जुलाई वाले व्यक्तियों से प्रेरित हुए। उनके दो उद्देश्य थे: पुराने को समाप्त कर एक नए तंत्र का निर्माण, दबाव और अन्याय के शासन को खत्म करना, उन बेड़ियों को तोड़ना जिन्होंने उन्हें स्पेनिश ताज से जकड़ रखा था, और स्वतंत्रता प्राप्त करना। सार्वजनिक मामलों के अधिकार लातीनी अमेरिकियों को अवश्य प्राप्त होने चाहिएं जिनकी स्थिति का वर्णन करते हुए उन्होंने जमैका पत्र में लिखा था : 'काम करने वाले किसान, मात्र उपभोक्ता, यद्यपि इस पर भी असहनीय शर्तें थोपी जाती है ।' उन्होंने लिखा : 'यूरोप में हमें एक राष्ट्र नहीं, महज एक उत्पादकों और उपभोक्ताओं का देश समझा जाता है।'[7]

जनता-जनार्दन की प्रभुसत्ता

नई व्यवस्था का आधार जनता की इच्छा-शक्ति होनी थी। हैती के नेता पेतियोन को नागरिकों द्वारा बहुमत से चुने जाने पर बोलीवार ने बधाई भेजते हुए इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया। 1812 से वह लोगों का जीवन स्तर सुधारने की आशा कर रहे थे। मागदालेना आंदोलन को शुरू करते हुए उन्होंने नागरिकों, न्यायाधीशों तथा अन्य सब के लिए एक नए जीवन-स्तर का रेखांकन करते हुए उन शब्दों को प्रयोग किया जिनसे शाही घोषणा की स्मृति ताजा हो उठती है : "अब आप स्वतंत्र हैं; आपके मतों से चुने प्रतिनिधि के अतिरिक्त और किसी का आपके ऊपर अधिकार नहीं है; आप अपने विचारानुसार अपने मत का प्रयोग करेंगे; संविधान में वर्णित कानून के मुताबिक आपको संविधान पहचानना और स्वीकारना है जो प्रत्येक नागरिक को उसके जीवन तथा सम्पत्ति की सुरक्षा का आश्वासन देता है (तथा)... (नागरिकों को) अपनी बुद्धि और कौशल को प्रयुक्त करने का अधिकार देता है, उन सब लाभों सहित जो एक स्वतंत्र समाज दे सकता है; सर्वोत्तम राज्य जिसकी इस धरती पर कोई व्यक्ति कल्पना कर सकता है।"[8] प्रभुसत्ता तब लोगों की इच्छा-शक्ति पर टिकी थी और यह नहीं कहा जा सकता कि राजा को इसके द्वारा कोई अधिकार प्राप्त है, हालांकि लोगों ने पहले कभी इसका प्रयोग नहीं किया था। बोलीवार ने अंगोस्तुरा कांग्रेस में यह स्पष्ट रूप से कहा

था और 1924 में जब वह दक्षिण की ओर आने के लिए लीमा से चले तब उन्होंने इस सिद्धांत की पुनः पुष्टि की। उन्होंने सरकारी परिषद को यह निश्चित करने का आदेश दिया कि नई कांग्रेस के चुनाव के समय लोगों की इच्छा का सम्मान हो। 'मैं पूरे राष्ट्र को यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि चुनावों में सरकार का कार्य-क्षेत्र वही है जो इसे संविधान ने दिया है कि लोग अपने विवेक से, इच्छा से चुनाव करें। मैं यह सिर्फ इसलिए कर रहा हूं ताकि चुनाव जहां तक संभव हो स्वतंत्र रूप से कराये जा सकें।'[9]

बोलीवार ने अक्सर इस बाबत चर्चा की। अपने मित्र पेदरो ब्रीसेनो मेन्देस को जिनसे उन्होंने कभी कोई तथ्य नहीं छुपाया, 14 अगस्त 1822 को ग्वायाकिल से लिखा : 'मैं दक्षिण के चुनावों में वैसा ही करूंगा जैसा मैंने दूसरी जगहों पर किया है। मेरा अभिप्राय है कि मैं किसी भी तरह का हस्तक्षेप नहीं करूंगा···लोगों को अपना निर्णय स्वयं लेना चाहिए। मेरे लिए जो रुचिकर विषय है वह है मेरे देश की स्वतंत्रता और शत्रुओं से इसकी सुरक्षा, जिसके लिए मैं हमेशा तैयार हूं।'[10] 1826 में देश को नष्ट करने पर तुले शाह-भक्तों का सामना करने के लिए बोलीवार का एक ही प्रस्ताव था : "लोक समाधान" : 'लोग स्वयं निश्चित करें कि उनका हित-अहित किसमें है।' अपनी मृत्यु से तीन मास पूर्व उन्होंने उन लोगों को सीधा सा जवाब दे दिया जिन्होंने बोलीबार को सत्ता में फिर से आने के लिए कहा।

उन्होंने हमेशा इस बात पर बल दिया कि लोगों की राय थोड़े-थोड़े अंतराल के बाद ली जाती रहे। 'अक्सर चुनाव कराना गणतंत्र के लिए अति आवश्यक है, क्योंकि एक व्यक्ति के हाथ में सत्ता सौंपने से ज्यादा खतरनाक काम कोई नहीं है। लोग उसके अधीन रहने के आदी हो जाते हैं और वह उन्हें आदेश देने का : यही तानाशाही की ओर पहला कदम है। जब बोलीवार ने बोलीविया कांग्रेस में चुनावों का प्रयोग प्रारंभ करने पर बल दिया तो उनके मस्तिष्क में यही विचार था कि नागरिकों के लिए अपने प्रतिनिधियों और शासकों के चुनने से बढ़कर कोई काम इतना महत्वपूर्ण नहीं है।' चुनाव द्वारा प्रत्येक व्यक्ति कानून के गठन में भाग ले सकता है। मतदान के अधिकार से प्रत्येक व्यक्ति समान हो जाता है। इसीलिए पुराने समय से दबे हुए समाजों को समानता के स्तर तक लाने के लिए बोलीवार ने अंगोस्तुरा में सुझाव दिया कि कर्मठ तथा अपेक्षाकृत सुस्त नागरिकों में अंतर ज़रूरी है और इसका आधार धन-दौलत नहीं बल्कि शैक्षिक और व्यवसायिक स्तर हो। वे लोग नागरिक बनने के योग्य हों जिनमें आवश्यक प्रतिभा और योग्यता है, चाहे वे निर्धन हों। लेकिन वे लोग जो लिख नहीं सकते, करों की अदायगी नहीं करते, बेरोज़गार हैं, नागरिक बनने के अयोग्य हैं। उनका सूत्र भविष्य पर आधारित था और बोलीविया में

कुछ वर्षों पश्चात उन्होंने यह अंतर समाप्त कर दिया और भेदभाव के प्रति उनका विरोध अपरिवर्तित रहा : 'ईमानदारी और योग्यता ही वे गुण है जिनकी लोगों में आवश्यकता है, धन नहीं।'

बोलीवार की एक अंतिम घोषणा का अक्सर विपरीत अर्थ निकाला जाता रहा है और कई बार इस तरह प्रतीत होता है कि बोलीवार प्रजातंत्र के मूलभूत आधार के विरुद्ध थे। 'अगर मेरी मृत्यु से विभिन्न दलों का अंत और एकता का विकास होता हो तो मैं अपनी कब्र में प्रसन्न होकर जाऊंगा।'[11] स्पष्टत: बोलीवार राजनीतिक दलों के संदर्भ में आधुनिक परिवेश के वशीभूत हो कर नहीं बोल रहे थे क्योंकि राजनीतिक दलों का लोगों से परिचय 1850 के बाद ही हुआ। वह तो स्थानीय राजनीति के अंत के समर्थन में बोल रहे थे जो प्रजातंत्र में नागारिकों के प्रतिनिधित्व और भाग लेने पर ही आधारित है। बोलीवार की इच्छा थी कि स्थानीय शत्रुता को समाप्त कर तीनों गणतंत्रों का विलय कर दिया जाए जिससे ग्रान कोलम्बिया आगे बढ़ सके और आशा व्यक्त की कि निजी विषमताएं दूर हो जाएंगी और कोलम्बिया के टुकड़े नहीं होंगे।'

एक प्रजातांत्रिक सरकार को स्थापित होते देखने की बोलीवार की इच्छा पूरी न हो सकी, यद्यपि यह उनके जीवन की सबसे प्रबल इच्छा थी। वह एक सच्चे राजनीतिक थे लेकिन उन लोगों से विभिन्न जो आज़ादी के दिनों में उभरे थे और जिनकी बोलीवार ने कारताखेना आलेख में निंदा की थी और कहा था कि इनकी इतनी अधिक आदर्शवादिता ही प्रथम गणतंत्र की असफलता का मुख्य कारण थी। उन्होंने राजनीति को सार्थकता देने का प्रयास किया जिससे वह लातीनी अमेरिकी परिस्थितियों के अनुरूप हो सके। 'सरकार को अवश्य परिस्थतियों की प्रकृति और उससे प्रभावित व्यक्तियों से नेतृत्व प्राप्त करना चाहिए। अनुभवों से उन्होंने सिखा और 1815 में उन्होंने अपना निष्कर्ष ज़ाहिर किया : 'हमारी भूमि पर हुई घटनाओं ने सिद्ध कर दिया है कि प्रतिनिधिमूलक सरकार हमारी परिस्थितियों के अनुरूप नहीं है··· जब तक हमारे लोग वह सब प्रतिभा और कौशल नहीं सीख लेते जिनकी अनुपस्थिति हमें हमारे उत्तरी भाइयों से अलग करती है, तब तक प्रतिनिधिमूलक सरकार, मुझे डर है, हमारे लिए खतरनाक है।' 'क्या यह संभव होगा कि पराधीनता की बेड़ियां छूटते ही ये लोग आज़ादी से उड़ने लगें जबकि पंख अभी अविकसित हों और ये इकारूस की तरह आकाश में विचरण करने लगें। ऐसे आश्चर्य की कल्पना करना भी व्यर्थ है। इसके लिए कोई आधार या आशा की गुंजाइश नहीं है।' उनके समक्ष रोम, एथेंस, स्पार्टा, इंग्लैंड और फ्रांस के उदाहरण थे जहां संपूर्णतः प्रतिनिधिमूलक राजनीति असफल रही थी। उन्होंने निष्कर्ष निकाला

कि न सैद्धांतिक आधार और न ही सरकार का व्यावहारिक पक्ष महत्वपूर्ण हैं। मुख्य तथ्य यह था कि यह समाज के व्यवहार और प्रकृति के अनुरूप हो, जिनके लिए इसकी स्थापना हुई थी।

इस तरह उस समय बोलीवार का विश्वास था कि मतदान के अधिकार को सीमित किया जाए। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि कुछ बातों को चुनाव की अनिश्चितता पर निर्भर नहीं होना चाहिए। 'उच्चतर शिक्षित समाजों में भी गलतियां संभव हैं, इसलिए यह स्पष्ट हो कि लोगों का बहुमत अपने हित से अवगत नहीं है और गलतियां दोहरा रहा है।' चुनावों के साथ और भी कई समस्याएं थीं। विशेष क्षेत्रों तक सीमित पुराने ढंग के चुनाव हमारी एकता में कम रोड़े नहीं अटका रहे है क्योंकि गांवों के लोग अज्ञानता स्वरूप यांत्रिक ढंग से मतदान का प्रयोग करते हैं और शहरी इतने महत्वाकांक्षी हैं कि वह हर बात को मुकाबले की भावना से लेते है। क्षेत्रीय नेतृत्व की भी समस्या थी जिसे अंततः परेशानियों और उलझनों को जन्म देना था। यह विघटन की आग प्रथम संविधान के दिनों से ही उपस्थित थी। बोलीवार ने 1812 की असफलता का विश्लेषण करते हुए निःसंकोच कहा : 'आंतरिक गुटबंदी घातक ज़हर का काम कर रही थी और यह हमारे गणतंत्र की असफलता के लिए उत्तरदायी थी। 1828 में ओकान्या बैठक के विभाजन का मुख्य कारण क्षेत्रीय नेतृत्व की यही भावना थी।

परिस्थितियों की विवशताओं और सीमाओं से बंधे होने के बावजूद बोलीवार में संघर्ष के प्रति आस्था समाप्त न हुई। शिक्षा की शक्ति में उनका अटूट विश्वास था। वैसे भी उन्हें इस बात का आभास था कि सभी तरह के विचारों का सम्मान, जनता की आलोचनाओं का सदैव स्वागत और जनता के मतों का पूरा ख्याल रखा जाना चाहिए; यह सब एक प्रजातांत्रिक सरकार के लिए अत्यंत आवश्यक है, जैसा कि 1820 में उन्होंने पैस़ को एक पत्र में सादगी से लिखा था : 'वह जो पूरे कुटुम्ब का शासक है, यह आवश्यक नहीं कि उसका सामना सदैव मनोहर बातों से ही हो। मैं उन्हें रोज़ सुनता हूं लेकिन कभी नाराज़ नहीं होता क्योंकि एक नेता को सत्य अवश्य सुनना चाहिए चाहे वह कड़वा क्यों न हो, और सुनने के बाद नेता का यह कर्तव्य है कि वह उन कमियों को दूर करने का प्रयास करे। सभी नैतिकवादियों और दार्शनिकों ने राजाओं को बुद्धिमान जनों से राय लेने और उसका पालन करने की सलाह दी है। एक प्रजातांत्रिक सरकार में तो यह और भी ज़्यादा आवश्यक हो जाता है जिसे लोग अच्छे से अच्छे कार्य करने के लिए चुनते हैं।'[13] तानाशाही और एकाधिकार की भावना गणतंत्र के बाद भी समाप्त नहीं हुई और संदेह को जन्म देती रही। 'सामाजिक जीवन में, विशेषकर चुनी हुई सरकार में, सार्वजनिक व्यक्ति नागरिकों

की आलोचना के प्रति उत्तरदायी हैं। सरकार छोड़ देने के लिए अगर सिर्फ लोगों की शिकायतें काफी होतीं तो मैं बहुत पहले इसे छोड़ चुका होता, क्योंकि न सिर्फ मेरी आलोचना की गई है बल्कि बोगोता में मुझे अभिशप्त भी किया गया। कारताखेना से मुझे निर्वासित कर दिया गया और कुमाना में मुझ से शत्रु जैसा व्यवहार किया गया।'

स्वतंत्रता का अर्थ

अंगोस्तुरा प्रस्तावों में बोलीवार ने स्वतंत्रता को इस तरह से परिभाषित किया कि यह 'प्रत्येक व्यक्ति का कुछ भी करने का अधिकार है, जो कानून को मान्य है। सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष विचारने और बोलने की स्वतंत्रता थी : प्रकृति की बहुमूल्य भेंट जिसे कानून भी नहीं छीन सकता।'[13] पुस्तकों, पत्रिकाओं और अन्य प्रकाशनों पर जांच व नियंत्रण की शक्ति का प्रयोग प्रकाशन के बाद ही होना चाहिए जिससे विचारने की स्वतंत्रता का उल्लंघन न हो। हां, यह जरूर है कि उन लोगों के विरुद्ध सख्ती का व्यवहार किया गया जिन्होंने विचारने की स्वतंत्रता का दुरुपयोग कर सामाजिक शासन को भंग करने का प्रयास किया। बोलीवार ने इस विषय के व्यावहारिक पक्ष पर अधिक बल दिया : 'वास्तव में स्वतंत्रता उचित न्यायिक प्रशासन और कानून को मिला कर बनी है जिससे कि निर्बल भय-मुक्त हों और योग्यता पुरस्कृत हो।'[14] स्वतंत्रता के प्रयोग के लिए शिक्षा की आवश्यकता थी, जैसा कि उन्होंने कहा था : 'स्वतंत्रता सहज है, लेकिन सर्वाधिक सभ्य राष्ट्रों के लिए भी इसे संतुलित रखना मुश्किल है। उन्होंने अपने देश के बारे में स्पष्टता से बोलने के अपने अधिकार का दावा किया : 'हमारी जनता के कई अवगुण हैं, झंझट हैं और वास्तविक स्वतंत्रता के लिए बहुत कम प्रेम है जो सच्चरित्र द्वारा ही संभव है।'

बोलीवार का विचार था कि राष्ट्र को धर्म के विषय में निष्पक्ष होना चाहिए। बिना किसी धर्म-समर्थन के पूजा करने की स्वतंत्रता की सुरक्षा दी जानी चाहिए। 'धर्म तो सिर्फ चैतन्य की भावना है। एक राजनीतिक संविधान में किसी भी धर्म को प्राथमिकता नहीं दी जानी चाहिए·· धर्म तो प्रत्येक के लिए उसका निजी कर्म है···उसकी आंतरिक भावना है।' राष्ट्र के प्रधान होने की दृष्टि से और इस प्रकार चर्च के अधिकारों के रक्षक के नाते बोलीवार ने 1817 में यह फैसला किया कि 'सभी धार्मिक नेता 50 दिनों में स्वेच्छा से राजधानी में आएं अन्यथा उन्हें बलपूर्वक लाया जाएगा; पवित्र चर्च की आवश्यकताओं की चर्चा करें और विशेषकर अपना एक प्रतिनिधि चुनें जो इन आवश्यकताओं को पूरा कर सके।'

वह इस तथ्य से अच्छी तरह परिचित थे कि क्रांति के साथ ही राजनीतिक गतिविधियां और चर्चाएं भी होंगी, किन्तु वह इस प्रक्रिया से भयभीत नहीं थे। उनका कहना था : स्वतंत्रता को प्रयोग करना सरल नहीं है, इसके लिए अभ्यास की आवश्यकता है जो एकवादी शासन में संभव नहीं है। स्वतंत्रता का सबसे बड़ा शत्रु झूठी कृत्रिम शांति थी जो क्रूर शासन के समय उपस्थित थी। एक अवसर पर उन्होंने स्वतंत्रता के 'आनन्दमय आंदोलन' की चर्चा की और कहा कि 'अपने बनाए कानूनों के अधीन गौरवमय जीवन बिताना' ही लोगों को सर्वाधिक आत्मसंतोष प्रदान करता है। वह इस असंभव प्रतीत होते विचार से भी भयभीत न थे कि 'स्वतंत्रता के आंदोलन की आग दूर से ही युद्ध की भांति दिखाई देती है।' फिर भी उन्होंने यह अनुभव किया कि वह समस्याओं के मुहाने पर खड़े है और स्वतंत्रता तथा प्रजातंत्र शीघ्र ही गायब हो जाएंगे। अंगोस्तुरा में उन्होने कहा था : 'हमारे लोगों की विभिन्नताओं का अर्थ है कि उन्हें संभालने वाला हाथ कौशलपूर्ण लेकिन दृढ़ हो, वरन् यह विषम समुदाय एक मामूली संघर्ष से भी विभाजित हो जाएगा।

एक और मौलिक सिद्धांत यह था कि सरकार में हर तरह से कुशल लोग होने चाहिएं जो सार्वजनिक जीवन के ही भाग हों। बोलीवार ने राज्य के भीतर कार्य-विभाजन पर बहुत जोर दिया और उनका "सैन्य उत्तरदायित्व" का विश्लेषण सर्वोत्तम है। सरकारी सेवा में भरती, सेवा-शर्तों और सेवा-काल के विषय पर उन्होंने घोषणा की : 'नागरिको' ! सार्वजनिक पदों की संख्या और वेतनों के संदर्भ में अनेक सुधारों की आवश्यकता है। अगर हमने अपने देश को बचाना है तो हमारे खर्च और आय में सम्पर्क होना चाहिए ! हर स्थान पर हमें ऐसे लोग मिल सकते हैं जो प्राप्त-वेतन से संतुष्ट हो जाएंगे। यही वे लोग हैं जिन्हें मेरे मतानुसार जनता की सेवा करने का मौका दिया जाना चाहिए।' वह अधिकारियों द्वारा किए गए अपराधों के लिए उन्हें कठोर किन्तु न्यायपूर्ण सजा देने के पक्ष में थे। 1824 में खज़ाने के कर्मचारियों को बर्खास्त करने के नियमों पर बोलते हुए उन्होंने कहा था कि ऐसे लोगों के दुराचरण का सबूत अवश्य होना चाहिए। दूसरी ओर, उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा था : 'मैं इसे न्यायोचित नहीं समझता कि एक व्यक्ति जो अनुभवी और बुद्धिमान है तथा सही तरह से अपना कर्तव्य निभा रहा है, उससे उसकी नौकरी छीन ली जाए और किसी अन्य को दे दी जाए क्योंकि यह नियम प्रजातंत्र के विरुद्ध है।'

न्याय के प्रति सहज भावनाएं अपने मन में लिए बोलीवार ने भाई-भतीजावाद समाप्त करने का पूरा प्रयास किया। कभी भी उनके प्रति अपराध का दावा नहीं किया गया क्योंकि उनके कोई भी संबंधी ऊंचे पदों पर नहीं रहे ; वास्तव में कई बार उनका यह व्यवहार अन्याय बन गया, जैसा कि

उन्होंने बुकारामांगा में घोषित किया था : 'कोई नहीं कह सकता कि मैंने कभी अपने परिवार के सदस्यों को ऊंचे पदों पर बिठाया है। इसके विपरीत मुझ पर यह आरोप लगाया जा सकता है कि मैंने सेना में कार्यरत अपने कुछ संबंधियों के साथ अन्याय किया। उदाहरणत: मेरे प्रथम निजी संरक्षक दिएगो ईबारा, जो 1813 में मेरे साथ थे, इतने वर्षों के बावजूद एक कप्तान के पद पर रहे, फिर एक लेफ्टीनेंट कर्नल और तब कहीं एक कर्नल के पद पर पहुंचे। अगर वह मेरे संबंधी न होते तो संभवत: दूसरों की तरह सेनापति होते : मैंने उनकी हिम्मत, दृढ़ता, निष्ठा और कर्तव्य-परायणता और उनके प्रति अपनी श्रद्धा के पुरस्कार स्वरूप उन्हें अवश्य पुरस्कृत किया होता, लेकिन वह मेरे संबंधी थे और दोस्त भी। इन परिस्थितियों के कारण ही उन्हें सेना में कोई महत्वपूर्ण पद न मिल सका। मेरे भतीजे अनाकलेतो क्लेमेन्ते लेफ्टीनेंट कर्नल के पद से ऊपर न उठ सके।'[15]

केंद्रवाद और संघवाद

1811 में बोलीवार वेनेजुएला में स्थापित संघवाद की तुलना में केंद्रवाद के पक्ष में थे। कारताखेना आलेखन में उन्होंने घोषणा की : 'मेरे विचार में अगर हम लातीनी अमेरिका में एक शक्तिशाली केंद्रीय सरकार नहीं अपनाएंगे तो हमारे शत्रु उसका लाभ उठाएंगे। संघीय प्रशासन यद्यपि सर्वोत्तम है और इसमें समाज में एक व्यक्ति की प्रसन्नता के लिए सब कुछ है, फिर भी हमारे नवोदित राज्यों के लिए उपयुक्त नहीं।'[16] अगस्त 1813 में उन्होंने पुन: स्पष्ट किया : 'शक्तिशाली और सम्माननीय राष्ट्र वही है जहां केंद्रीय सरकार प्रभावशाली है शक्ति का विभाजन कभी भी लंबे समय तक स्थिरता वाले प्रशासन का आधार नहीं रहा, मात्र शक्ति का केन्द्रीकरण ही एक राष्ट्र के लिए सम्मान प्राप्त कर सकता है, और अगर मैंने वेनेजुएला को स्वतंत्र किया तो इसी तंत्र को लागू करने के लिए।'[17] जमैका में अपने निष्कासन के दिनों में इन विषयों पर उनके विचार और स्पष्ट हो गए और श्री कुलैन के नाम अपने प्रख्यात जमैका पत्र में उन्होंने लिखा : 'समस्त प्रजातांत्रिक और प्रतिनिधिक तंत्रों में से मैं संघीय सरकार ठुकराता हूं क्योंकि इसके लिए हममें ज्यादा राजनीतिक कौशल की आवश्यकता है···चूंकि हम एक संपूर्ण एवं आदर्श प्रजातंत्र को तो संभव नहीं कर सकते, हमें कम से कम इस तानाशाह तंत्र से तो बचना ही चाहिए। आइए, इन दोनों अतिमार्गों में से एक मध्यम मार्ग चुनें, वरन् प्रत्येक हमें असम्मान और बरबादी की तरफ ले जाएगा।'[18]

आगामी वर्षों में भौगोलिक, ऐतिहासिक और सामाजिक वास्तविकताओं के अपने अनुभवों के प्रकाश में उनका यह सिद्धांत और भी सुदृढ़ हो गया और 1829 में उन्होंने कहा : 'राज्य-क्षेत्र तथा निवासियों के व्यवहार को देखते

हुए कोलम्बिया के सम्मुख एक केंद्रीय सरकार के गठन के अतिरिक्त दूसरा विकल्प नहीं है ।···भौगोलिक विषमताओं और लोगों की अज्ञानता के कारण हमें अन्य देशों से अधिक सशक्त होना है 'हमारी समस्याओं की कल्पना करें कि हम एक विशाल सामराज्य को उस सरकार की मदद से चलाने का प्रयत्न कर रहे हैं जो एक राज्य भी नहीं संभाल सकती ।' निश्चित ही बोलीवार को सरकार के बाह्य रूप की अपेक्षा उसकी उपलब्धियों में अधिक रूचि थी । जमैका पत्र में उन्होंने लिखा : 'सर्वोत्तम सरकार वह है जो सर्वाधिक प्रसन्नता, सुरक्षा और राजनीतिक स्थिरता प्रदान करती है।' उन्होंने यह भी घोषणा की···किसी सरकार की सफलता न इसकी नीतियों में और न ही इसकी कार्य-प्रणाली में ढूंढी जा सकती है, बल्कि यह राष्ट्र के स्वभाव और चरित्र के प्रति अनुरूपता मे है ।' वह एक साधारण सरकार चाहते थे जिसके अन्तर्गत कानूनों का पालन हो, न्यायाधीश को सम्मान मिले और लोग स्वतंत्र हों : एक ऐसी सरकार जो लोगों की इच्छाओं और आशाओं का सम्मान करेगी ।

बोलीवार का एक अन्य मूल सिद्धांत शक्तियों के विभाजन और अलगाव की बजाय उनका संतुलन था । उन्होंने इस प्रश्न को अरस्तू, लौके और मौन्तेसकुए में ढूंढा था और उनका विश्वास था कि सरकार के कुछ विभागों को विशेष विषय सौंपे जाएं ; लेकिन उन्होंने यह नहीं कहा कि उन्हें पूर्णत: अलग रखा जाए । बल्कि वह चाहते थे कि उनमें एकता हो और एक दूसरे के लिए सम्मान की भावना सरकार के विभिन्न विभागो में उपस्थित और विकसित हो । उन्होंने अनुभव किया कि इस तरह की सरकार गणतांत्रिक और प्रजातांत्रिक होगी, फिर भी सादी, शक्तिशाली और क्रांति की रक्षा करने और इसे पूरा करने में सफल होगी । उन्होंने इस विषय पर शुरू में कहा था : 'राज्य का सर्वोच्च नेता···हर तरह से गुण-संपन्न होना चाहिए·· कांग्रेस में बुद्धिमान और शिक्षित लोग हों जो न्यायाधीशों और अधिकारियों के कार्यों पर लगातार निगाह रखें···सांसद लोगों के सरक्षक हैं·· न्याय प्रणाली निष्पक्ष है जो न शक्तिशाली और न चालबाज़ों का साथ देती है···कोई भी अपने वैध अधिकारों के प्रयोग से वंचित नहीं हैं ।'

बोलीवार द्वारा अंगोस्तुरा और बोलीविया में सुझाए दोनों संविधान लौके और मौन्तेसकुए पर आधारित थे । लौके का प्रभाव कुछ ज्यादा था। अंगोस्तुरा में उन्होंने दो सभाओं वाले संविधान का प्रस्ताव रखा । राज्य सभा के लिए नागरिकों के प्रति उत्तरदायी एक चुने हुए राष्ट्रपति का प्रस्ताव प्रस्तुत किया । बोलीविया के प्रस्तावों में आजीवन राष्ट्रपति का विषय सामने आया। अतः इस तथ्य पर बल दिया जाना चाहिए कि बोलीवार हमेशा एक व्यक्ति के हाथ में शक्ति के केंद्रीकरण के विरुद्ध थे । यद्यपि अनुभव ने

सामूहिक सरकारों की असफलता सिद्ध कर दी थी फिर भी उन्होंने एक तानाशाह सरकार के गठन का पक्ष नहीं लिया। उन्होंने राष्ट्रपति के साथ-साथ सांसद और सरकारी परिषदों के गठन की सलाह दी। जब भी उन्हें असीमित कार्यकारी शक्ति प्रदान की गई उन्होंने सदैव इसका विरोध किया। 1828 के उनके तानाशाही काल से और फिर पेरू में उनकी सरकार के समय से यह स्पष्ट हो गया कि यद्यपि वह समस्त शक्तियों से सम्पन्न थे फिर भी वह अपने देशवासियों की सलाह लेने के लिए वचनबद्ध थे और अधिकांश गंभीर राजनीतिक विषय और मूल प्रश्न जनता पर छोड़ देना चाहते थे, चाहे उनकी एक संगठित अमेरिका की आशाओं पर पानी क्यों न फिर जाए—वस्तुत: ऐसा हुआ भी।

उन्होंने अंगोस्तुरा और बोलीविया, दोनों में एक स्वतंत्र न्यायपीठ की सिफारिश की। अंगोस्तुरा में उन्होंने स्पष्ट किया कि इस शक्ति की सफलता के लिए दो बातों की आवश्यकता थी : स्थिरता और स्वतंत्रता। बोलीविया के विषय पर उन्होंने विस्तार से चर्चा की। 'जिस न्यायिक शक्ति का प्रस्ताव मैं रख रहा हूं वह किसी अन्य जगह से यहां अधिक स्वतंत्र है। लोग अपने प्रतिनिधि चुनते हैं और न्यायपीठ योग्य प्रतिनिधियों का चुनाव करती है। यही वह रास्ता है जो न्यायपीठ को प्रत्येक नागरिक के हितों की रक्षा करने का अवसर देता है। वास्तविक संविधान तो नागरिकों और अपराधियों से संबंधित कानून है : न्यायालयों द्वारा कानून के भयभीत करने वाले यंत्र का प्रयोग सबसे खतरनाक तानाशाही है। साधारणतया कार्यपालिका मात्र राज्य-संबंधी विषयों से निपटती है जबकि न्यायपीठ निजी विषयों में प्रमुख भूमिका निभाती है। न्यायपीठ गणतंत्र के निवासियों के लिए प्रसन्नता या दु:ख लाने में सक्षम है और जहां स्वतंत्रता और न्याय है, वे न्यायपीठ द्वारा ही संभव हैं। प्राय: राजनीतिक संगठन का आकार महत्त्वहीन हो जाता है अगर सामाजिक संगठन ठीक हैं और कानूनों का सही पालन होता है।

बोलीवार के अंगोस्तुरा भाषण में, जो नि:संदेह उनके विचारों का उत्कृष्ट नमूना है, शक्तियों के मध्य संबंधों पर उनका सिद्धांत स्पष्ट है : 'शक्तियों के संतुलन के लिए इनके मिश्रण से ज्यादा खतरनाक चीज कोई नहीं है; जनता के लिए इसके प्रतिनिधियों की कमजोरी से अधिक खतरनाक चीज कोई नहीं है, और अगर एक साम्राज्य में यह बात इतनी महत्वपूर्ण समझी जाती थी तो एक गणतंत्र में इसकी आवश्यकता और भी बढ़ जाती है।' बोलीवार का लक्ष्य एक शक्तिशाली प्रजातंत्र का गठन करना था जिसमें समस्त शक्तियां निहित हों और जो राजनीतिक विषयों से संपूर्ण हो, जिसे क्रांति की प्रतीक्षा कर रही जनता तक पहुंचाया जा सके। उनके प्रयासों से स्पष्ट है कि उन्हें भावी एवं वर्तमान विषयों का सम्यक् ज्ञान था।

'आइए, सरकार का पूरा तंत्र इस तरह का बना दें कि शक्तियों का संतुलन बना रहे, दोबारा न खोया जा सके और न ही कमज़ोरी का कारण बने। क्योंकि प्रजातंत्र से कमज़ोर सरकारी प्रणाली कोई नहीं है, इसलिए इसका संगठन जितना मज़बूत होना संभव हो, उतना होना चाहिए। इसके संस्थान स्थाई होने चाहिएं अन्यथा हम पाएंगे कि हम एक संतुलित स्थिर सरकार के गठन की बजाय मात्र एक प्रयोग कर रहे हैं : हम अपने समाज को प्रसन्न, न्यायिक और शांत होने की बजाय परेशान, असंतुष्ट और अधीर पाएंगे।' कानून के विशेषज्ञ न होते हुए भी बोलीवार प्रशासन के गठन और कानूनी धाराओं के निर्माण कार्य में बंध गए। अपने दोनों प्रस्तावित संविधानों में तीन शक्तियों के समूह में एक और को भी जोड़ दिया : अंगोस्तुरा में नैतिक शक्ति और बोलीविया में चुनाव अधिकार। इसके अतिरिक्त बोलीविया संविधान में उन्होंने प्रस्ताव किया कि संसद में एक तीसरी सभा 'नियंत्रण' का प्रयोजन होना चाहिए जिसे वह नैतिक शक्ति सुपुर्द करना चाहते थे। बोलीवार के विचारों में इस महत्वपूर्ण सूत्र की विवेचना डा० लुईस प्रीयेतो फिगरेरा ने अपने हाल ही में प्रकाशित एक अध्ययन में की है।[19] उन्होंने नैतिक शक्ति की तुलना शक्तिशाली कार्यपालिका से की है जिसे बोलीवार लातीनी अमेरिका की परिस्थितियों में आवश्यक समझते थे। इससे सरकार पर नियंत्रण और नागरिकों द्वारा क्रूरता का विरोध संभव होता है। यह अधिकार यद्यपि 1811 के संविधान में उपस्थित था किंतु बाद में प्रस्तावित दो संविधानों में बोलीवार ने इसे स्थान नहीं दिया। इस तरह बोलीविया नियंत्रण सभा या आरेओपागस, जैसा कि इसे अंगोस्तुरा में कहा जाता था, का उद्देश्य कार्यपालिका की शक्तियों को कमज़ोर करना था।

परिस्थितियों की शक्ति

तानाशाही के दौरान बोलीवार के अनेक राजनीतिक काय ने उन्हें एक प्रतिक्रियावादी की संज्ञा दिलवा दी।[20] यह सच है कि प्रशासन को मज़बूत करने के अति आवश्यक प्रयास में बोलीवार ने अनेक कदम उठाए लेकिन अधिकांशत: उन्होंने प्रजातंत्र को क्षति नहीं अपितु लाभ पहुंचाया। उदाहरणत: अनेक आदरणीय इतिहासज्ञों ने नगरपालिकाओं पर दबाव डालने की कठोर निन्दा की है और इसे एक निरंकुश केंद्रवाद की अभिव्यक्ति माना है। ओकान्या सम्मेलन की असफलता के बाद बोलीवार ने पूरे प्रश्न का विश्लेषण किया और इस कदम की सार्थकता प्रकट करने के लिए इन्हीं के शब्दों को दोहराना उचित होगा : 'नगरपालिका सरकारें जो परिषदों के रूप में सहायक हो सकती थीं, अपने वास्तविक कर्तव्य को पूरा करने में असमर्थ रही हैं : कुछ ने तो सर्वोच्च सत्ता प्राप्त करने का दुस्साहस किया है ; शेष राजद्रोह

में व्यस्त हैं : और लगभग सभी नई सरकारें अपने नगरों में खाद्य-वितरण, सार्वजनिक प्रतिष्ठानों और स्वास्थ्य के क्षेत्र में सहायता करने की बजाय इसके विकास में बाधाएं डाल रही है। ये निगम सौंपे गए कार्य नहीं निभा रहे है। इनके द्वारा थोपे गए करों के कारण ये घृणा के पात्र बन गए हैं। यही मुख्य समस्या है जिसकी परेशानी उन नागरिकों को झेलनी पड़ रही है जिन्हें ज़िलाधीश बनने के लिए विवश किया जाता है, जिससे उनका मूल्यवान समय, धन और उनके मन की शांति व प्रतिष्ठा प्रभावित होते हैं। अतः यह अस्वाभाविक नहीं है कि नागरिक अपने घरों को छोड़ते दिखाई देते हैं क्योंकि वे उन पदों के लिए चुने जाना नहीं चाहते। मैं सब के मन की बात ही कह रहा हूं जब मैं कहता हूं कि नगरपालिका-सरकारों के उन्मूलन से अधिक लोकप्रिय कोई कदम न होगा।'[21] यह भी कहा जाता है कि प्रेस की स्वतंत्रता का दुरुपयोग रोकने के लिए बोलीवार ने जो अधिनियम जारी किया उस का लक्ष्य बोलने की स्वतंत्रता को क्षति पहुंचाना था। लेटिन के अध्ययन में इतिहासज्ञों ने गुप्त समाजों तथा ऐसी पुस्तकों जैसे बेन्थम की 'नैतिक तथा राजनीतिक नियमों का परिचय' पर पाबंदी के आधार की ओर संकेत करते हुए इन्हें षड् यंत्र की आड़ बनाया था। उस समय के अन्य उपायों की तरह इसे भी क्रांतिकारी परिस्थितियों के प्रकाश में देखा जाना चाहिए। उदारणतः बेन्थम की रचना न सिर्फ कैथोलिक धारणाओं के विपरीत थी बल्कि यह क्रांति की आदर्श और न्यायिक प्रवृत्तियों पर भी एक आघात थी। बोगोता के धनिक जो वहां बोलीवार के विरुद्ध षड् यंत्र रच रहे थे, उन्हें 'अर्थ व्यवस्था में राज्य के प्रवेश का सीधा विरोध' जैसे विचार आदर्श लगे। तानाशाही के दिनों में चर्च के पक्ष में एक लहर उठी लेकिन यह न गंभीर और न ही अधिक प्रभावशाली थी। सरकार ने कैथोलिक ईसाई संप्रदाय को 'कोलम्बिया निवासियों का धर्म' मानते हुए सुरक्षा का वायदा किया; यह राज्य-धर्म से बहुत भिन्न था, जैसा कि आलोचकों ने इसका वर्णन किया है। यह सच है कि चर्च पर संरक्षक अधिकारों का उन्मूलन नहीं किया गया और आर्कबिशप को मंत्रीमंडल में सम्मिलित कर लिया गया। लेकिन यह कहा जा सकता है कि उन क्षणों में प्रभावशाली पादरी को अपनी तरफ कर लेने से बोलीवार को लाभ पहुंचा। उन्होंने निजी स्वतंत्रता पर आंच नहीं आने दी क्योंकि उन्होंने बल दिया कि धार्मिक मामलों में राज्य सर्वोच्च है। 24 नवम्बर 1829 की एक घोषणा में उन्होंने पुनः कहा कि गणतांत्रिक प्रणाली ही आर्कबिशपों, पादरियों और जन-साधारण तथा परिषद के मध्य संपर्क का एकमात्र उचित माध्यम था।'[22]

बोलीवार के सम्मुख वास्तविक समस्या स्थिरता की थी। वह एक अस्थिर स्थिति में जी रहे थे जहां क्रांति की गतिविधियों में बाधा पड़ रही

थी। वह स्थिरता प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास कर रहे थे। 1829 में जब स्थिति अत्यंत निराशाजनक थी, उन्होंने कहा : 'अगर अमेरिका ने अपने बढ़े कदम वापिस नहीं लिए, अगर इसने अपनी असमर्थताओं पर ध्यान नहीं दिया, अगर यह कानूनी और नियमित परिस्थितियों की ओर नहीं मोड़ा तो इन सरकारों के बने रहने की आशा बहुत कम है : अपनी अगली पीढ़ियों को हम एक नए तरह का उपनिवेशवाद सौंप रहे होंगे।' अंगोस्तुरा में वह पहले ही लातीनी अमेरिकी समाज की कमजोरियों पर चिंता व्यक्त कर चुके थे। इस राजनीतिक अस्थिरता का सामना करने के लिए आर्थिक तौर पर उन्होंने 'आजीवन राष्ट्रपति' और 'पैतृक संसद' का गठन किया; इन अंशों से ये बोलीवार विचारधारा के अंग नहीं है। इनका गठन एक समस्या के प्रत्युत्तर में किया गया था लेकिन ये बोलीवार के विचारतंत्र के अंग नहीं है।

निस्संदेह पैतृक संसद बोलीवार द्वारा गठित सभी संस्थाओं में सर्वाधिक 'कुलीन' थी। कुछ सीमा तक योग्य लोगों की अनुपस्थिति इसके गठन की सार्थकता सिद्ध करती है। उनकी आशा थी कि यह एक तटस्थ परिषद होगी जो शक्तिशाली के विरुद्ध हमेशा कमजोर का साथ देगी ''सरकार और जनता की नियंत्रक और इन दोनों के मध्य एक मध्यवर्ती शक्ति। किसी भी झगड़े में शामिल गुट शांति ला सकता है और इस तरह वेनेजुएलन राज्य विभाजन, पतन का प्रतिरोध करने में सक्षम होगा।'[23] इस बात पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि उन्होंने अपनी बाद की रचनाओं में कभी 'पैतृक संसद' का जिक्र नहीं किया।

इसी तरह आजीवन राष्ट्रपति की संकल्पना बोलीवार की विचारधारा के विपरीत थी लेकिन इसकी आवश्यकता ने उन्हें विवश कर दिया। किसी भी स्थिति में 'आजीवन राष्ट्रपति' के उनके विचार की तुलना [illegible] की कुलीन तानाशाही से नहीं की जानी चाहिए। संविधान ने स्पष्ट कहा कि 'राष्ट्रपति बोलीविया के किसी भी नागरिक को उसकी स्वतंत्रता से वंचित या उसे दंडित न करे। वह चुनाव या किसी अन्य कानूनबद्ध संगठन का उल्लंघन नहीं कर सकते।'[24] सरकार का वास्तविक प्रधान गणतंत्र का उप-राष्ट्रपति था जिसके अधीन तीन सचिव थे। बोलीवार की आशा थी कि 'आजीवन राष्ट्रपति पद 'दृढ़तापूर्वक नागरिकों के मध्य अनुशासन और कानून कायम रखने में सफल हो सकेगा।'[25]

बोलीवार की प्राथमिकता सर्वथा गणतांत्रिक संगठनों के लिए थी। उनके अनुसार सतर्कता ही नागरिक अधिकारों का आश्वासन व मजबूती थी और वाशिंगटन के उदाहरण ने उन्हें मंत्र-मुग्ध कर दिया: 'इस महान अमरीकी गणतंत्र के इस नागरिक और नायक की शिक्षाओं को भूलना नहीं चाहिए। लोग उन्हें शक्तिशाली पद के लिए पुनः चुनना चाहते थे लेकिन उन्होंने

सेनापति ने अपने नागरिकों को एक ही व्यक्ति के हाथ में शक्ति के केंद्रित होने के खतरों से अवगत कराया। उनकी बात सुनी गयी और लोगों ने उनका पालन किया: आज अमेरिकी गणतंत्र गौरव, स्वतंत्रता और प्रसन्नता का उदाहरण है। बोलीवार ने इस विचार को अपने जीवन में निरंतर प्रतिपादित किया: 'अपार शक्ति को बिना दुरुपयोग किए प्राप्त करने के लिए किस गुण की आवश्यकता है? क्या लोग एक व्यक्ति के अधीन होना स्वीकार कर सकते है?' 'आजीवन राष्ट्रपति' पद का गठन कुछ समय के लिए किया गया था और इसका प्रमाण इस तथ्य से मिलता है कि एक व्यक्ति विशेष को ध्यान में रखकर इसका गठन किया गया था। सुकरे के गुणों, विशेषकर उनकी निष्ठा के संदर्भ में बोलीवार ने इसका सुझाव दिया। उन्होंने घोषणा की: 'दो सप्ताह से भी कम समय में चार विभिन्न नेताओं से बोलीविया अप्रसन्न है।' उन्होंने अनुभव किया कि सुकरे प्रजातंत्र को कोई खतरा पहुंचाए बिना नए गणतंत्र का दिग्दर्शन कर सकते हैं, जैसा कि उन्होंने चुकीसाका से उन्नाओ को लिखा: 'अब यहां मेरी आवश्यकता नही है। संसद के प्रस्ताव अनुसार मैंने संविधान का गठन कर दिया है और इसलिए मेरा विश्वास है कि सेनापति सुकरे शेष कार्य स्वयं मुझ से बेहतर ढंग से करने में सक्षम हैं।' उन्होंने सान्तान्देर को घोषित किया: 'इस संविधान के लिए सेनापति सुकरे आवश्यक है, उनके बिना यह निरर्थक है। अत: आप जोर देकर कहें कि उन्हें अनेक वर्षों तक यह पद स्वीकार करने का अवसर दिया जाए।' 'अनेक वर्षों तक' ये शब्द ध्यान देने योग्य है। यह स्पष्ट है कि बोलीवार का यह मत न था कि सुकरे आजीवन राष्ट्रपति पद पर रहें। संभवत: वह उन्हें लगभग एक दशक की अवधि के लिए इस पद पर चाहते थे, जो संविधान के संशोधन के लिए साधारण अवधि थी। बोलीवार संविधानों को प्रतिबंधक परिवेश की संज्ञा नही देते थे जो नवोदित गणतंत्रों के विकास में बाधा बनें। संविधान परिवर्तित होते हैं, जनता की आकांक्षाओं पर बाधाएं डालने के लिए इनका गठन नहीं होता। 'आजीवन राष्ट्रपति' पद भी शेष बोलीविया संविधान की तरह चिरंतन नही था। लातीनी अमेरिका जैसे नए समाजों में कानून और संविधान संशोधित किए जाते रहने चाहिएं जिससे ये ऐतिहासिक क्षणो की मांगों के अनुसार स्वयं को ढाल सकें।

अपने राजनीतिक जीवन के प्रारंभ से ही बोलीवार ने सैनिक और नागरिक विषयो के बीच एक सुदृढ़ विभाजक रेखा खीच रखी थी। 'मैं एक सैनिक हूं और मेरा कर्तव्य सरकार के कार्यों के विवेक को चुनौती देने की बजाय इसका नितांत आज्ञाकारी बनने को विवश करता है।' 1828 के गंभीर संकट के बीच उन्होंने सैनिक उद्घाषणा के कारणों को स्पष्ट किया और एक वायदा किया: 'सेना की एकमात्र इच्छा जनता के अधिकारो की सुरक्षा करना है।

ऐसा करने से यह नागरिकों की कृतज्ञता और सम्मान का पात्र बनती है··· सेना हमारा मूल आश्वासन है और रहेगी, जिसके लिए मैं अग्रणी सैनिक के नाते वचन देने में गर्व अनुभव करता हूं। मैं जानता हूं कि सेना कभी भी जनता की इच्छा के विरुद्ध नहीं जाएगी क्योंकि मैं इसकी भावनाओं से परिचित हूं। अब से यह राष्ट्र के कानून और इच्छा के सम्मुख बाध्य होगी।'

ये भावनाएं उनके इस विश्वास से मेल खाती थीं कि स्वतंत्रता का स्थान जनता की इच्छा में है, और उनके लिए नागरिक सरकार में सैनिक शक्ति के प्रयोग से घृणास्पद बात और कोई नहीं थी। 'शक्ति सरकार नहीं है।' वस्तुत: उनका विचार था कि सैनिक कर्तव्य और प्रशासनिक कार्य एक दूसरे के प्रतिकूल हैं: 'एक सैनिक चाहे अपने राष्ट्र को बचाए, वह बहुत कम ही एक अच्छा राष्ट्राध्यक्ष बन सकता है। युद्ध की भीषण और विषम परिस्थितियों में रहने वाले का प्रशासन मृत्यु की विभीषिका, हिंसा और कठोरता से भरा होगा।' बोलीविया कांग्रेस के सम्मुख बोलते हुए उन्होंने दृढ़ता से कहा: 'सेना का कर्तव्य सीमाओं की रक्षा करना है। ईश्वर न करे कि इसे अपने शस्त्र जनता की तरफ मोड़ने पड़ें। आंतरिक सुरक्षा का कर्तव्य राष्ट्रीय सेना का है।'

बोलीवार जिस समस्या का सामना कर रहे थे, वह थी: जनता की इच्छा और सरकार के अधिकार में संतुलन स्थापित करना। यदि सरकार को शक्ति का आधार चाहिए था जिससे आम इच्छाओं को पूरा किया जा सके तो नागरिकों को उतनी स्वतंत्रता अवश्य मिलनी चाहिए जितनी सरकार के संदर्भ में अनुकूल हो। क्रांति का लक्ष्य 'गणतंत्र की उपस्थिति, तथा नागरिकों के अधिकारों और प्रशासन की स्थिरता को संतुलित रखना जिससे जनता को अधिकतम प्रसन्नता और स्वतंत्रता तथा सरकार को अधिकतम शक्ति और बल मिल सके।'

कृषि-सुधार और विकास

औपनिवेशिक काल में कृषि और खानों की स्थापना में दासों का श्रम प्रयोग किया गया था। स्पेनवासी 'इंडियन' हस्तकला पर भी अंकुश चाहते थे। यहां तक कि इसे कानून द्वारा रोकने के प्रयास भी किए गए। 1552 में खुआन दे विल्लेगास द्वारा एनकोमिएन्दास (वह प्रणाली जिसमें इंडियन आदिवासी काम करते थे और भारी कर देते थे) के लिए नियमों का गठन इसका उदाहरण है। लेकिन लेय्येस दे इंदियास (इंडियन आदिवासियों पर थोपा गया कानून) का अधिनियम भी इंडियन श्रम के संदर्भ में असफल रहा क्योंकि इन अधिनियमों को लागू करने वाले अधिकारी ही इंडियनों को शोषित करते रहना चाहते थे। समस्त उपनिवेश काल में इंडियनों की निर्धनता और अपमान, नीग्रों के दासत्व

और 'पारदोस' वर्ग के साथ किए जाने वाले दुर्व्यवहार का अर्थ था कि जनसंख्या का बहुमत उस सामाजिक-आर्थिक कार्यक्रम के विरुद्ध हो गया जिसने हमेशा उन्हें नुकसान पहुंचाया था और उनके हितों की उपेक्षा की थी। वेनेजुएला के तीन सौ वर्षों के औपनिवेशिक काल में हुए अधिकांश विद्रोहों और विरोधों का कारण यही आर्थिक कार्यक्रम था।

वेनेजुएला मे क्रांति के प्रारंभिक चरण में जो लोग सत्ता में आए वे अपने हितों की रक्षा करने में तो माहिर थे लेकिन समाज के पिछड़े वर्गों के हितों को उन्होंने हमेशा स्थगित रखा। उदाहरण के लिए ग्रामीणों की दशा सुधारने का कोई प्रयास नहीं किया गया यद्यपि वे जनसंख्या का बहुमत थे। सान्स जैसे व्यक्तियों ने न्याय पर आधारित कृषि-सुधार की मांग की जो विकास में सहयोगी होता, लेकिन काराकास के कुलीन वंश को सम्पत्ति के गंभीर सुधार में कोई रुचि न थी। अत: प्रथम संवैधानिक सरकार या काम्पान्या आदमिराबले (सराहनीय सामूहिक आंदोलन) के संक्षिप्त तथा उत्तेजित प्रशासन के कार्यों से असंतुष्ट होना स्वाभाविक है। इस प्रश्न पर किसी निर्णय की अपेक्षा धनी 'क्रांतिकारियों' के वंशागत् हितों की रक्षा की गई। प्रारंभिक प्रयासों में से एक था करों की कमी जिससे प्राय: धनिकों को ही लाभ पहुंचा। वास्तव में भारी करों को तभी समाप्त कर दिया गया था जब स्पेनिश प्रशासन की कर-व्यवस्था को भंग कर दिया गया था: इससे अनुशासन भंग हो गया था और कोई भी करों का भुगतान नहीं कर रहा था। यही स्थिति 1810-30 के लंबे विरोध में उभरी। संभवत: सार्वजनिक आय में इस आकस्मिक कमी का परिणाम गणतांत्रिक प्रशासन के लिए गंभीर सिद्ध हुआ। 19 अप्रैल के बाद बाकी बचे कोष भी समाप्त हो गए। बोलीवार ने इस गंभीर स्थिति का जिक्र कारताखेना मेनिफेस्तो (कारताखेना आलेख) में किया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि कागजी धन की समस्या ने नए प्रशासन को अत्याधिक क्षति पहुंचाई।

उपनिवेश काल की समाप्ति के साथ समाज के सभी वर्गों का यह प्रयास था कि अपनी स्थिति में सुधार के लिए परिस्थितियों से लाभ उठाया जाए। इस तरह जनता स्वयं ही एक आर्थिक क्रांति के प्रयास में जुट गई। इल्लयानेरोस (मैदानी राज्यों के इंडियन आदिवासी जो उस समय वेनेजुएला के सर्वाधिक निर्धन वर्ग में आते थे) और शहरी पारदोस वर्ग ने बोवेस का नेतृत्व स्वीकार कर लिया, जो ग्रामीण निर्धनता के विश्लेषक थे और जिन्होंने जनता को लूटपाट के लिए भी प्रेरित किया। बोवेस ने अपने अनुयायियों को भूमि देने का वायदा किया और यह शाही सेना में जाने का सुनहरी अवसर सिद्ध हुआ। करीयोल्लोस की सम्पत्ति पर कब्ज़ा कर अपनी निर्धनता और भुखमरी से छुटकारा पाने की आशा में अनेकों इसमें सम्मिलित हुए। बोवेस और उनके

अनुयायियों के समकालीन ख़ोसे अन्तोनियो पैख़ ने इससे बहुत कुछ सीखा, जैसा कि ग्रीसनो मैन्देख़ ने जुलाई 1821 में स्पष्ट किया : 'जब सेनापति पैख़ ने 1816 में अपूरे पर अधिकार किया और उन्होंने शत्रु राष्ट्र के बीच बिना किसी समर्थन के स्वयं को अकेला पाया तो उन्हें अपनी सेनाओं को आश्वासन देना पड़ा कि अपूरे की समस्त सरकारी भूमि सैनिकों को बांट दी जाएगी। इस और अन्य उपायों से उन्होंने सैनिकों का समर्थन प्राप्त कर लिया और उनकी संख्या में भी वृद्धि हुई क्योंकि सभी लाभ उठाने के लिए सम्मिलित हुए। सेनापति पैख़ इस कदम की महत्ता से इतने प्रभावित थे कि जब सेना के सर्वोच्च राष्ट्रपति से मिलने का समय आया तो उनकी एकमात्र मांग थी कि उनके इस आश्वासन का अनुमोदन कर दिया जाए। राष्ट्रपति उनकी अवहेलना न कर सके और उन्होंने इसे सिद्धांत रूप में न्यायिक मानते हुए इसके विस्तृत एवं असीमित होने के कारण इसमें परिवर्तित करने का निर्णय लिया, किन्तु साथ ही इसे समस्त सेना तक भी बढ़ा दिया।'[26] यहां इस बात पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि इन दोनों नेताओं ने भूमि-सुधारों को इतनी सुगमता से स्वीकार कर लिया जैसे वे इसे क्रांति के कार्य का उत्कर्ष मानते हों। इसके अतिरिक्त बोलीवार ने कानून का पुट देते हुए इसे इस तरह से लागू करने का प्रयास किया कि यह वस्तुतः संभव हो सके।

3 सितम्बर 1817 को ग्वाइयाना में जारी की गई विज्ञप्ति इस विषय पर की गई क्रांतिकारी विज्ञप्तियों में प्रथम थी, जो स्पष्ट तथा साफ है। 'अपना राष्ट्र छोड़कर शत्रु की सेनाओं में भाग लेने वाले लोगों की सम्पत्ति और धन को अधिकृत किया जाता है और अब से यह राष्ट्र-सम्पत्ति है··· निर्धनता की शपथ लेने वाले कापूचिन सन्यासियों तथा मठों की भूमि तथा सम्पत्ति जब्त की जाती है— इसी तरह स्पेन सरकार और उसके कर्मचारियों की सम्पत्ति अधिकृत की जाती है चाहे वे किसी भी देश के निवासी हों।'[27] 20 दिन के बाद एक अन्य विज्ञप्ति द्वारा भूमि-निष्कासन न्यायालय की स्थापना की गयी और इसके अधिकारियों के नामों की घोषणा भी की गई। अंततः 10 अक्तूबर को वेनेजुएला की स्वतंत्रता-सेनाओं के सिपाहियों के मध्य वितरण हेतु राष्ट्रीय भूमि सम्बंधी एक कानून पारित किया गया।

कुछ इतिहासकारों का विचार है कि बोलीवार का लक्ष्य सैनिकों की वफ़ादारी को खरीदना था। लेकिन यह तथ्य अस्वीकारा नहीं जा सकता कि इस कदम से जनता को लाभ पहुंचा। जैसा कि बोलीवार ने कहा : 'कोलम्बिया में जनता ही सेना है।'[28] यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न था, जैसा कि बोलीवार ने कहा : 'लम्बे समय से हम एक कृषक के सिवाय और कुछ नहीं बन सके हैं।' 1 नवम्बर 1817 को उन्होंने अपने विचार राज्य-परिषद के नाम एक संदेश में स्पष्ट किए : 'वे व्यक्ति जिन्होंने प्रत्येक खतरे का सामना किया है, जिन्होंने अपनी सम्पत्ति का

परित्याग किया है और हर दुःख झेला है, उन्हें उनके निःस्वार्थ साहस और गुणों के कारण पुरस्कार से वंचित नहीं किया जाना चाहिए। अतः गणतंत्र के नाम में मैंने राष्ट्रीय भूमि को राष्ट्र के रक्षकों के मध्य वितरित कर दिए जाने का आदेश दिया है। इस भूमि-पुरस्कार की सीमाओं और शर्तों से सम्बंधित कानून वह आलेख है जिसे मुझे परिषद को प्रस्तुत करते हुए सर्वाधिक संतोष अनुभव हो रहा है। मानव शक्ति के अंतर्गत गुणवान को पुरस्कृत करना सबसे पवित्र कर्म है।' 15 मास बाद अंगोस्तुरा भाषण में इन विचारों को और अधिक साहित्यिक विस्तार दिया गया जहां उन्होंने एक नाटकीय अनुरोध में कहा : 'अगर लोगों पर मेरी श्रद्धा का ऋण शेष है तो मैं उनके प्रतिनिधियों को अपनी अल्प सेवाओं के पुरस्कार स्वरूप अपने इस अनुरोध को सुनने की विनती करता हूँ। कांग्रेस को वेनेज़ुएला के सैनिकों के पक्ष में मेरे द्वारा गणतंत्र के नाम जारी कानून के अनुसार राष्ट्रीय भूमि के वितरण का आदेश दे देना चाहिए।' सैन्य-भूमि पुरस्कार एवं दासता-उन्मूलन सम्बंधी घोषणाएं सर्वाधिक आवश्यक और मजबूत क्रांतिकारी कदम थे जिन्हें बोलीवार ने कांग्रेस को प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा : 'ये मेरी सरकार की अवधि में सबसे महत्वपूर्ण प्रस्ताव थे।'

यह स्पष्ट है कि बोलीवार के सिपाहियों में से अधिकांश कृषक थे, क्योंकि 5 सितंबर 1817 को उन्होंने ख़ोसे फ़ेलिक्स ब्लांको को लिखा : 'मुझे बताया गया है कि आपकी सैन्य टुकड़ी सान अन्तोनियो में है और सैनिक शिकायत कर रहे हैं कि उन्हें उनकी भूमि और कार्य से बिना किसी उचित कारण के दूर रखा जा रहा है। शिकायत अनुचित नहीं दिखती क्योंकि यह सच है कि इस क्षण उनके करने हेतु कुछ नहीं है। उन्हें अपनी भूमि जोतने दी जाए जब तक आगे बढ़ने का समय नहीं आता'। नए कानून के अनुसार भूमि-वितरण सैन्य पदों के अनुसार किया जाना था क्योंकि यह महसूस किया गया कि युद्ध में हासिल किया गया पद सेना के प्रत्येक व्यक्ति के निजी योगदान का परिचायक था। एक बारह-सूत्री कार्यक्रम तैयार किया गया जिसमे सेनापति के लिए 25,000 पेसोस के मूल्य वाली भूमि और साधारण व्यक्तियों के लिए 500 पेसोस के मूल्य वाली भूमि का प्रस्ताव था। असाधारण स्थितियों में अधिक मूल्य वाली भूमि का प्रस्ताव भी था।[29]

लातीनी अमेरिका के आर्थिक और सामाजिक इतिहास के प्रसिद्ध उत्तरी अमेरिकी विशेषज्ञ, चार्ल्स जी० ग्रीफ़िन के अनुसार 'सैनिकों के लिए पुरस्कार स्वरूप भूमि-वितरण को 'भूमि-सुधार' की संज्ञा देना ज्यादती होगी'।[30] उनका अनुमान है कि बोलीवार की उद्घोषणा से बहुत कम लोगों को लाभ पहुंचा : 15,000 से 20,000 लोग ही लाभान्वित हुए होंगे जो कुल ग्राम्य जनसंख्या का दसवां भाग होगा। फिर भी कहा जा सकता है कि ये कदम एक आमूल

परिवर्तन के आधार थे और अगर वितरण वास्तविक कार्यक्रम के अनुसार किया गया होता तो वेनेजुएला का इतिहास कुछ और ही होता। इन उपायों की तुरन्त सफलता से बोलीवार की सहज प्रेरणा के औचित्य का आभास मिलता है। अगर पैंख़ का प्रस्ताव 'इल्लयानेरोस' को प्रभावित करने में सफल हुआ, जो बड़े भूमि-स्वामियों के उन्मूलन तथा कृषि के लिए 'इल्लयानोस' के मुक्त प्रयोग की मांग कर रहा था, तो इसी तरह के कदम राष्ट्र के अन्य भागों में जहां भूमि का वास्तविक स्वामित्व महत्वपूर्ण था, और अधिक प्रभावशाली हो सकते थे। बोलीवार भूमि के छोटे टुकड़ों के वितरण के पक्ष में नही थे क्योंकि इससे उत्पादन को क्षति पहुंच सकती थी। उत्पादन के संदर्भ में उनकी आशा थी कि यह आंतरिक खपत और निर्यात दोनों के लिए पर्याप्त हो सकेगा। उन्होंने विशाल सम्पत्ति के सामूहिक स्वामित्व को प्रोत्साहन दिया, जो इस तरह सामूहिक कृषि-क्षेत्र बन गया। भूमि के छोटे-छोटे टूकड़ों में कृषि करने की इंडियन प्रणाली से प्रभावित 'कोनुको' का स्पष्ट विरोध उनकी क्रांतिकारी भावनाओं का परिचायक है। वह बड़े पैमाने पर पूंजीवादी उत्पादन के लिए पथ तैयार करने का प्रयास कर रहे थे जिसमें कृषक को वेतन दिया जाए जिसका अर्थ एनकोमिएन्दा (एक स्वामी और 1000 दासों जैसी पद्धति) जैसी जागीरदारी प्रथाओं का उन्मूलन था।

अंगोस्तुरा में संविधान के लिए एक प्रस्ताव में सम्पत्ति को इस प्रकार परिभाषित किया गया है: 'प्रत्येक व्यक्ति द्वारा धन का स्वतंत्र उपयोग और अपनी दक्षता, श्रम और गुणों का लाभ उठाने का अधिकार।' बोलीवार ने स्वीकारा कि राज्य को सम्पत्ति की सुरक्षा का आश्वासन देना चाहिए। वस्तुतः उन्होंने इसे समानता, स्वतंत्रता और सुरक्षा के साथ चौथा महान मानव अधिकार माना जिसकी रक्षा अवश्य की जानी चाहिए। इसमें वह लौके ह्यूम से प्रभावित थे जिन्होंने 'मानव अधिकारों की घोषणा' को प्रेरित किया। लेकिन किसी विशेष ऐतिहासिक परिस्थिति में सम्पत्ति के संदर्भ में बोलीवार ने कुछ परिवर्तन किए। उन्होंने इसमें समानता और न्याय के प्रश्नों की ओर इंगित किया और स्पष्ट किया कि एक क्रांतिकारी राज्य को क्रान्तिकारी न्याय के अनुसार वैध सम्पत्ति की ही रक्षा करनी चाहिए। नई प्रजातांत्रिक सरकार के लिए यह अनुचित होगा कि यह हिंसा और अनधिकार कब्जे द्वारा हथियायी गई सम्पति की सुरक्षा करे क्योंकि ऐसी सम्पत्ति सरकार की स्थापना हेतु संघर्ष करनेवाली जनता की स्थिति सुधरने न देकर अन्यायिक परिस्थितियों को अग्रसर करती है। इसीलिए उन्होंने कहा कि 'दावों का भुगतान उन स्थितियों में ही किया जाए जहां हालात इसकी इजाजत देते हों।'[31] इन परिवर्तनों के परिमाण का अनुमान उनके शब्दों का 'मानव अधिकारों की घोषणा' में प्रकाशित एबी सिएस के शब्दों के साथ तुलनात्मक अध्ययन से लगाया जा सकता है: 'सम्पत्ति के अधिकार के एक पवित्र अधिकार होने के नाते किसी

को भी इससे वंचित न किया जाए जब तक यह सार्वजनिक आवश्यकता न हो और क्षति-पूर्ति पहले से ही दे दी जाए।'[32] बोलीवार ने 'पवित्र' शब्द का प्रयोग न करते हुए शर्तों मे 'आम उपयोग' को जोड़ दिया जो 'सार्वजनिक आवश्यकता' से कम औपचारिक है; साथ ही उन्होंने राज्य को क्षति-पूर्ति के प्रतिबंध से मुक्त करते हुए 'जहां हालात इसकी इजाजत देते हो' जोड़ दिया और अग्रिम भुगतान का उन्मूलन कर दिया।

बोलीवार द्वारा उठाए गए कदमो में भूमि का पुन: वितरण सर्वाधिक ठोस था लेकिन उन्होने आर्थिक और सामाजिक विषयों के क्रांतिकारी विकास पर आधारित अन्य प्रस्ताव भी प्रस्तुत किए। उदाहरणत: उन्होंने फलों के विक्रय और यातायात पर लगाए जाने वाले आंतरिक कर को समाप्त कर दिया, कृषि को प्रोत्साहित करने हेतु ऋण का प्रबंध किया, दुधारी पशुओं और घोड़ों का निर्यात रोक दिया, एक वाणिज्यिक बैंक की स्थापना की, कौन्सुलादो का एक नए आधार पर पुनर्गठन किया और आवर्तकों के लिए भूमि-भेंट का प्रबंध किया। इसके लिए कृषि-अयोग्य भूमि के 1,000,000 फनेगादास का प्रबंध किया गया। ये कदम वेनेज़ुएला तक ही सीमित न थे। इंडियन 'भूमि' के सम्बंध में कुन्दिना-मारका में की गई ज्यादतियों को ठीक करने को प्राथमिकता देते हुए उन्होंने 20 मई 1820 को एक घोषणा जारी की : 'इंडियन वर्ग की सारी भूमि उन्हें अवश्य वापिस की जाए'''वर्तमान भूमि-स्वामी के किसी प्रतिरोध को न सुना जाए''' इस भूमि पर हर तरह का अनाधिकृत स्वामित्व समाप्त किया जाता है चाहे वह कितना ही प्राचीन क्यो न हो'''राजकीय न्यायाधीश प्रत्येक परिवार को उतनी भूमि वितरित करेंगे जितनी वह सुगमता से जोत सके; इस संदर्भ में प्रत्येक परिवार के सदस्यो की संख्या और आरक्षित भूमि के कुल क्षेत्र को विचाराधीन रखा जाएगा।' एक विचित्र तथ्य जो बोलीवार की निष्ठा को दर्शाता है, उनके इस कथन मे है : 'वर्तमान विज्ञप्ति न केवल साधारण तरीके से प्रकाशित की जाएगी बल्कि राजकीय न्यायाधीश भूमि के संदर्भ में इंडियनों का मार्गदर्शन करेंगे और उन्हें अपने अधिकारों की मांग करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे चाहे इससे राजकीय न्यायाधीशों को क्षति ही क्यों न पहुंचती हो।' शेष भूमि को ऋण पर दिया जाना था और इससे प्राप्त धन का प्रयोग इंडियनों के लिए एक शैक्षणिक कार्यक्रम की स्थापना में किया जाना था।

राज्य परिषद और अंगोस्तुरा कांग्रेस के सम्मुख अपनी बिनती करने के बाद बोलीवार ने रूचि लेते हुए सैनिकों में भूमि वितरण के अपने प्रयासों पर विचार किया क्योंकि वह इसे वस्तुत: प्रभावशाली बनाना चाहते थे। जब वह एल रोसारियो मे थे तो उन्होंने सुना कि कांग्रेस ने कुछ परिवर्तनों के साथ उनकी विज्ञप्ति का अनुमोदन कर दिया है। जैसा कि उन्होंने सान्तान्देर को लिखा :

'मुझे पता चला है कि उन्होंने विज्ञप्ति में कुछ परिवर्तन किए हैं यद्यपि मैंने उन्हें नहीं देखा है। उन्होंने सैनिकों को ऋण-पत्र देने का आदेश दिया है जिन्हें सबसे ऊंची बोली वाले को नीलाम किया जाना था'।[33] यह कहने की आवश्यकता नहीं कि बोलीवार इस चाल के खतरों को समझते थे और तुरंत उन्होंने कानून को अपने इच्छित रूप में पुनः परिवर्तित करवा लिया।

जनवरी 1821 में उन्होंने पैख़ को भूमि-वितरण की देखरेख के लिए श्वेत-पत्र दिया और उन्हें वे सब अधिकार सौंप दिए जो 'संसद ने राष्ट्रपति को प्रदान कर रखे थे' और उन्हें निर्देश दिए : 'कानूनी स्वरूप न्यूनतम् व सरलतम् हो जिसमे भूमि के स्थान पर ऋण-पत्रों के वितरण के ख़तरे को दूर किया जा सके।' वितरण के शुरू होते ही उन्हें यह सुनिश्चित करना था कि प्राप्तकर्ता स्वयं और अपने परिवार को हानि न पहुंचाते हुए कानून से आशय के विपरीत भूमि का दुरुपयोग न करें। 12 फरवरी 1821 को बोलीवार कुन्दिनामारका इंडियन वर्ग की भूमि-सम्बन्धी अपनी विज्ञप्ति दोहराने के लिए बाध्य हो गए। इस बार उन्होंने तुन्खा के राज्यपाल और प्रधान सेनापति को वितरण की देखरेख करने के लिए कहा। वह इंडियनों को आरक्षित भूमि का आनंद देना चाहते थे, जो उन्हीं की थी चाहे इसका वर्तमान स्वामी कोई भी हो। 'समस्त आरक्षित भूमि इंडियनों में वितरित कर दीजिए जिससे उन्हें उतनी भूमि मिल जाए जितनी वे जोत सकें, और इस तरह वे निर्धनता की उन परिस्थितियों से निकल सकें जिनमें वे अब हैं···वितरित की जाने वाली भूमि में सर्वाधिक धनी, उपजाऊ और आसानी से जोते जा सकने वाले हिस्सों को सम्मिलित कीजिए जिससे इंडियनों को ही अपनी भूमि का लाभ मिले, दूसरों को नहीं।'[34]

पास्तो में 13 जनवरी 1823 को उन्होंने घोषणा की कि सरकारी भूमि उन सैनिकों में वितरित की जाए जिन्होंने दक्षिण के उस भाग को स्वतंत्र कराया है। एक घोषणा द्वारा भूमि के कई हिस्सों को अधिकृत कर दिया गया और इसी दिनांक को एक और विज्ञप्ति द्वारा वितरण संभव करने के लिए एक आयोग की नियुक्ति की गई।[35] जब वह पेरू पहुंचे जहां स्थिति सैद्धांतिक रूप में समान थी, उन्होंने स्वभावतः वही कदम उठाए। 8 अप्रैल 1824 को उन्होंने तरुखिल्लयो में घोषणा की : 'साम्प्रदायिक भूमि' नियमों के अनुसार भूमिहीन इंडियनों में विभाजित की जायेगी और वे भू-स्वामी बन जाएंगे···हिस्सा व्यक्तिगत परि-स्थितियों के आधार पर होगा और विवाहित व्यक्तियों को अविवाहितों से अधिक हिस्सा मिलेगा।'[36] आगामी वर्ष की 4 जुलाई को उन्होंने कुसको में घोषणा की कि 'कानूनी नियमों के बावजूद भूमि-वितरण ठीक ढंग से नहीं किया गया है : इंडियन बहुसंख्यक वर्ग को कभी भूमि-स्वामित्व का आनंद नहीं मिला है : इंडियनों के लिए सुरक्षित भूमि किसी न किसी बहाने से ग्राम-प्रधानों और कर-अधिकारियों

द्वारा हथिया ली गई है।' उन्होंने पेरूवासियों को तरुखिल्लयो में प्रकाशित विज्ञप्ति याद दिलाई और जोर दिया कि इसका अवश्य पालन किया जाए। भूमि हथियाइ जाने को रोकने के लिए कुसको विज्ञप्ति में अनेक धाराएं सम्मिलित हैं। 'प्रत्येक इंडियन को अच्छी और सिचाई योग्य भूमि की डेढ़ लीग और कम उपजाऊ एवं शुष्क भूमि की तीन लीग दी जायेगी।' उपनिवेश काल के प्रारंभ में जिन्होंने अपनी भूमि खो दी थी उन्हे क्षतिपूर्ति देने का प्रबंध किया गया। धार्मिक और अर्ध-धार्मिक संगठनों को जो भूमि प्राप्त करने के लिए मनोवैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक प्रभाव का प्रयोग करते थे, भूमि हथियाने से रोकने के लिए यह नियम बना दिया गया कि भूमि पर इंडियनों का संपूर्ण अधिकार 'इस आधार पर स्वीकार किया गया था कि वह 1850 तक इसे बेच या छोड़ नहीं सकते।'[37] इसी तरह बोलीविया में 14 दिसम्बर 1825 को उन्होंने आदेश दिया कि भूमि 'इंडियनों को और स्वतंत्रता-संग्राम के सेनानियों या क्षतिग्रस्त लोगों को दे दी जाए'।[38] नए भूस्वामी को भूमि जोतने के लिए एक वर्ष की अवधि दी गई। अगर उसने ऐसा नहीं किया तो उसे भूमि-स्वामित्व से वंचित कर दिया जाएगा और वह भूमि उन्हें दे दी जाएगी जो उसे उचित ढंग से जोत सकें। 'वितरण-व्यवस्था में समानता, निष्पक्षता और कुशलता हेतु यह कहा गया कि इसका संचालन 'ईमानदार और बुद्धिमान व्यक्तियों द्वारा हो'।'[39]

जब बोलीवार अंतिम बार अपनी जन्म-भूमि गए तब वह यह पाकर व्याकुल हो गए कि उनकी अनुपस्थिति ने उनके आदेशों को लगभग पूर्णतः विफल कर दिया है। प्रत्येक कदम पर उन्होंने पाया कि वह वस्तुतः 'समुद्र जोतते रहे' और उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि पुरानी प्रथा को अकेले एक व्यक्ति द्वारा समाप्त किया जाना असंभव था, जबकि निवासी स्वयं ही अपने शत्रु थे। उन्होंने ब्रिओन को शिकायत की कि उनके कार्य को उत्तरी लोगों ने तबाह किया जिनके लिए यह सब किया गया था। उन्होंने स्वयं को 'साइसिफ़स' माना : निरंतर परिश्रम-साधक। काराकास में वह उन राज्यसातकरणों पर बल देने के लिए बाध्य हो गए जिनके लिए दस वर्ष पूर्व आदेश दिए गए थे। वेनेजुएला के इन्तेन्देंते विभाग को भेजे गए निर्देश एक दशक के व्यर्थ चले जाने का प्रतीक है। 'मुक्तिदाता चाहते हैं कि इंगित भूमि के तुरंत राज्यसातकरण के लिए प्रत्येक कदम उठाया जाए। चूंकि उन्होंने मुझे बताया कि देरी का कारण लेखपत्रों को प्रमाणित करने वाले अधिकारियों की उदासीनता है, जो भूमि-अधिकरण अधिकारी भी हैं, मुक्तिदाता ने निर्णय लिया है कि ये अधिकारी उन्हें प्राप्त होने वाले धन का लेखा-जोखा रखें, और आवास या कृषि-भूमि प्राप्त करने वाला व्यक्ति ही इसका मूल्य अदा करेगा।'[40]

उपरोक्त सूत्रों पर बोलीवार द्वारा बल दिया जाना उनके अधीन राष्ट्रों के

आर्थिक ढांचे में एक वास्तविक परिवर्तन लाने के उनके संकल्प को प्रकट करता है। यही बात खानों सम्बंधी उनकी नीतियों के बारे में कही जा सकती है। दक्षिणी अमेरिका जैसे महाद्वीप में जो मुख्यतः कच्चे माल का उत्पादक था, इनका विशेष महत्व था। पुकारा और ला पाज़ में अगस्त और सितंबर 1825 में यह घोषणा की गई कि 'समस्त अवहेलित या परित्यक्त खानें राज्य की सम्पति हैं और इन्हें राष्ट्रीय ऋण अदा करने में प्रयुक्त किया जाएगा।'[41] यह 24 अक्तूबर 1829 को कित्तो में जारी विज्ञाप्ति का मूल थी जिसने समस्त खान व्यवसाय का राष्ट्रीयकरण कर दिया। कित्तो विज्ञाप्ति का तात्कालिक महत्व तो था ही, भविष्य में इसे और भी महत्वपूर्ण होना था क्योंकि इसने नव स्पेन में खानों के नियमों में अनेक परिवर्तन किए, जिसे 1703 में कोलम्बिया और 1784 में वेनेजुएला में लागू किया गया था। लेयेस दे इंदियास (इंडियन कानून) के अंतर्गत अधातु खानों का स्वामित्व भूमि-स्वामियों को प्राप्त था। स्पेनी सम्राट ने इसे परिवर्तित कर दिया और बोलीवार ने इसका अनुसरण किया। उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह खदानों का महत्व भलीभांति समझते थे : खानों के राष्ट्रीयकरण का अर्थ सिर्फ यही नहीं था कि राष्ट्र इनका स्वामी था बल्कि राज्य ने इसकी गतिविधियों में भी हस्तक्षेप किया। ऐसा प्रतीत होता है जैसे उनकी कुशाग्रता ने वेनेजुएला की भूमि के भीतर की अपार सम्पदा को भांप लिया था। उन्होंने वेनेजुएला के भावी निवासियों के लिए इस सम्पदा के स्वामित्व की समस्या का हल ढूंढ़ निकाला था।

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के क्रांतिकारी कार्य के लिए श्रम को आवश्यक मानते हुए बोलीवार ने सामाजिक नज़रिए को परिवर्तित कर दिया। शारीरिक श्रम शताब्दियों से घृणास्पद समझा जाता था। अपने पुत्रवत् भतीजे फरनान्दो के भविष्य पर उनके विचार इसे प्रदर्शित करते हैं (उनका अपना कोई पुत्र न था)। बोलीवार ने कहा, 'अगर युवक ने किसी कौशलपूर्ण व्यवसाय को सीखने का निर्णय लिया तो मुझे प्रसन्नता होगी क्योंकि हमारे पास चिकित्सकों और वकीलों की तो भरमार है किन्तु अच्छे व्यवसयियों और कृषकों की कमी है; सम्पन्नता तथा खुशहाली के लिए हमारे राष्ट्र को इनकी सर्वाधिक आवश्यकता है।'[42] उन्होंने व्यवसायियों और शक्तिवानों को प्रेरित और पुरस्कृत किया। निष्क्रिय व्यक्तियों के वह सख्त आलोचक थे। 'हमें राष्ट्र के पुनर्निर्माण और इसे एक मज़बूत आधार पर स्थापित करने के लिए कठोर परिश्रम करना चाहिए : राष्ट्र निर्माण के लिए हमें संतोष, साहस और परिश्रम की अत्यन्त आवश्यकता है।'

अनेक अवसरों पर बोलीवार ने राजकोष चलाने के लिए उपयुक्त व्यक्तियों के अभाव की समस्या का ज़िक्र किया है। सामान्यतः वह कार्य इच्छुकों को नहीं

अपितु योग्य व्यक्तियों को सौंपने में विश्वास करते थे। 'लोकप्रिय होने और उचित ढंग से राज्य चलाने के लिए ईमानदार व्यक्तियों को अवसर दिया जाना चाहिए, चाहे वह सत्ता के शत्रु ही क्यों न हों। यह अवश्य याद रखा जाना चाहिए कि इस प्रकार का कार्य स्पेनवासियों में प्रतिष्ठित नहीं समझा जाता था। बोलीवार ने वित्त मंत्री उपलब्ध होने की समस्या का वर्णन किया है हालांकि इस पर 'राष्ट्र का जीवन निर्भर करता है।' रेवेन्जा पर यह उत्तरदायित्व डालते हुए उन्होंने कार्य के महत्व पर बल दिया : 'यह मुख्य आधार होगा जिस पर सभी राज्य-सुधार निर्भर होंगे।' उन्होंने आर्थिक स्वास्थ्य के महत्व के संदर्भ में कुछ प्राचीन एवं समकालीन मार्मिक लक्षणों का वर्णन किया। 'कर गणतंत्र की शिराएं हैं, राज्य का जीवन तभी विकसित हो सकता है जब इसकी शिराओं में सोना बहे।'

उन्होंने सान्तान्देर को बताया : 'याद रखिए कि फ्रांसीसी क्रांति का प्रमुख कारण 'सार्वजनिक वित्त व्यवस्था की कमजोर स्थिति' था।' अंततः उन्होने सोचा कि लातीनी अमेरिका की स्वतंत्रता के लिए आर्थिक प्रश्न का सर्वाधिक औचित्य था, जैसा कि उन्होंने जमैका पत्र में लिखा : "16,000,000 लातीनी अमेरिका-वासी अपने अधिकारों की रक्षा कर रहे हैं : स्पेनिश राष्ट्र उनका शोषण कर रहा है जिसके अधीन यद्यपि एक समय विश्व का सबसे विशाल साम्राज्य था किन्तु अब जो अभिनव विश्व को नियंत्रित करने में या फिर प्राचीन में भी अपनी स्थिति बरकरार रखने में असमर्थ है। क्या स्वतंत्रता प्रेमी सभ्य यूरोप मात्र अपने विषपूर्ण हितों के लिए एक अजगर को भूमि के सबसे अच्छे भाग को डसने की आज्ञा देगा?···क्या यूरोप अपने हित की पुकार सुनने में बधिर है? हमारे शत्रु में यह क्या पागलपन है कि बिना नौसेना, अन्य सुविधाओं और सैनिकों के अमेरिका को पुनः जीतने का प्रयास कर रहा है···क्या ऐसा राष्ट्र आधे से भी अधिक विश्व पर अपना व्यापारिक एकाधिकार कायम रख सकता है जब कि इसके पास अपना कोई उत्पादन, व्यवसाय, कृषि, विज्ञान, कला कुछ भी नहीं···?"

लातीनी अमेरिकी एकता

जब तक लातीनी अमेरिका स्पेनिश साम्राज्य का एक भाग रहा, ऐसा लगता मानो यह अंतर्राष्ट्रीय मानचित्र पर उपस्थित ही न था। उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ तक बड़ी शक्तियां अथवा पवित्र संगठनों जैसे सामयिक गठबंधन विश्व पर अपनी इच्छा थोपते। लातीनी अमेरिका के संबंध में स्पेन की दो धारणायें थीं और इसलिए उपनिवेशों के प्रति इसका व्यवहार परस्पर-विरोधी था। नियंत्रण की दृष्टि से अर्थात शोषण अथवा व्यावसायिक हस्तक्षेप के लिए लातीनी अमेरिका एक इकाई था। सरकार का एक केंद्र था और विभिन्न देशों की आर्थिक

व्यवस्था एक दूसरे पर निर्भर थी जिससे वे स्पेनिश दृष्टि में एक इकाई थे। लेकिन स्वयं लातीनी अमेरिकावासियों में स्पेनवासियों ने यह विचार थोपने का प्रयास किया कि यह महज एक द्वीप समुह है। स्पेन ने अपने आश्रितों की एकता को समाप्त करने के लिए अनेक सांस्कृतिक और कानूनी बाधाएं खड़ी कीं। उदाहरणत: उन्होंने समस्त अभिनव विश्व को विदेशियों की पहुंच से अलग रखने का प्रयास किया। यहां तक कि शाही आज्ञा लिए बिना निवासी भी एक राज्य से दूसरे राज्य तक नहीं जा सकते थे। इंडियन कानूनों के अंतर्गत विदेशियों के साथ व्यापार करने पर अंकुश लगा दिया गया। अंशत: यह एक द्वीपीय प्रवृत्ति का परिचायक थी क्योंकि स्वयं स्पेनिश एकता परस्पर संघर्षरत भावनाओं तथा विचारों पर थोपी गई थी। भौगोलिक कारणों जैसे महाद्वीप की विशालता, ऊंचे पर्वतों और विषम जंगलों की उपस्थिति और संचार-साधनों की समस्याओं ने इस प्रक्रिया को बढ़ावा दिया। इन कारणों ने लातीनी अमेरिकी राष्ट्रों को अकेला और अलग-थलग रखा। अगर औपनिवेशिक काल का कोई प्रमुख लक्षण था तो यह जनता में परस्पर अविश्वास और संदेह था जो अक्सर संघर्षों को जन्म देते रहते थे। लुटेरों के हमलों या प्राकृतिक विपत्तियों जैसे समान खतरे अक्सर एकता में सहायक तत्व थे लेकिन विपत्तियों के बीतते ही पुराना व्यक्तित्व उभर आता। लातीनी अमेरिका के अधिकतर राष्ट्रों में और वेनेजुएला के हर प्रांत में एक प्रथकतावादी प्रवृत्ति उभर कर सामने आई जिसने एकता की सभी आशाओं को समाप्त कर दिया। समुदायों के मध्य की लंबी दूरियां एकता के मार्ग में बाधक थी। आन्द्रेस वैल्लो ने 1811 मे इस तथ्य पर प्रकाश डाला यद्यपि वह परिस्थितियों से केवल निष्कर्ष ही निकाल पाए: 'काराकास को ब्युनस आयर्स के समाचार संयुक्त राज्य अमेरिका के माध्यम से मिलते हैं और ब्युनस आयर्स को काराकास के समाचार अंग्रेजी समाचार पत्रों से मिलते हैं। लेकिन जिन्होंने संचार में प्राकृतिक और राजनीतिक बाधाएं अनुभव की हैं उनके लिए यह आश्चर्य की बात होगी कि लातीनी अमेरिका की एकता की भावना फिर भी दोनों सुदूर कोनों से ऐसी समानता के साथ उभरी जो सदैव उन लोगों में भी देखने को नहीं मिलती जिनके पास अपने प्रयासों के लिए समय और अवसर हैं।'[43] बोलीवार ने 1825 में पेरू से इसकी पुष्टि करते हुए कहा : 'रूस के समाचार हमें काराकास के समाचारों से पहले प्राप्त हो जाते हैं : खुनीन के समाचार हमें काराकास की अपेक्षा इंग्लैंड से पहले प्राप्त हो जाते है: और कई बार हमें एक ही दिन के समाचार पत्र लंदन और बोगोता से एक साथ प्राप्त हो जाते हैं।'[44]

विभिन्न साक्षी इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि वेनेजुएलावासी इतिहास के प्रारम्भ से ही सहनशील रहे हैं : एक व्यापक और स्वतन्त्र प्रवृत्ति जो लातीनी अमेरिका के अन्य समुदायों के संकीर्ण विचारों के विपरीत है। वेनेजुएला के

इतिहास में ऐसे कई तत्व हैं जो इस प्रक्रिया को स्पष्ट करते हैं। उदाहरणार्थ वेनेजुएला में 'मेन्तिमाबे' उच्च श्रेणी वर्ग संभवतः एक कारण है : दूसरा कारण इस क्षेत्र की कैरिबियन तथा डच, अंग्रेजी और फ्रांसीसी बस्तियों की भौगोलिक परिस्थितियां हैं। तस्करी साधारण बात थी और वेनेजुएलावासियों का प्रगतिशील प्रोटेस्टेन्ट विचारों और उस समय के सहनशील एवं उदार राष्ट्रों के प्रतिनिधियों के साथ सम्पर्क बना रहता था। तुलनात्मक दृष्टि से धातुओं की कमी का अर्थ था कि स्पेन को वेनेजुएला में कोई रुचि न थी। इसलिए औपनिवेशिक काल कथाओं का स्रोत था, भयभीत करने वाली हिंसा का नहीं : वेनेजुएला का प्रदेश लातीनी अमेरिका महाद्वीप का एकमात्र ऐसा क्षेत्र था जिसे स्पेनवासी के अलावा किसी अन्य को ऋण पर दिया गया। इस संदर्भ में खोसे दे ओविएदो ई बानाओस ने 1723 में माद्रिद में प्रकाशित वेनेजुएला के प्रथम इतिहास में काराकास के लोगों के बारे में कहा : 'ये जीवन्त, बुद्धिमान, मित्र-स्वभाव के और कुशल व्यक्ति हैं : वे 'कास्तीलियान' भाषा का उच्चारण बिना किसी विचित्र ध्वनियों के करते हैं जो अन्य अमेरिकी बन्दरगाहों पर सुनने को मिलती हैं'''सामान्यतः राजनीति की तरफ उनका इतना रुझान है कि अमेरिका में जन्मे नीग्रों का भी तिरस्कार किया जाता है, अगर वे अशिक्षित हैं।'[45] 1800 में वेनेजुएला में काफी यात्रा करने और निवासियों का अध्ययन कर लेने के बाद हमबोल्दत् यह देखकर चकित रह गए कि काराकास में राजनीतिक सम्बन्धों का जितना ज्ञान लोगों में व्याप्त है उतना हवाना के अतिरिक्त और किसी भी अन्य लातीनी अमेरिकी राष्ट्र में नहीं।[46]

फ्रांसिस्को दे मिरांदा जब उत्तरी अमेरिकी उपनिवेशों की स्वतन्त्रता के लिए संघर्षरत थे तो लातीनी अमेरिकी एकता पर अपने विचार व्यक्त करने वाले वह प्रथम वेनेजुएलावासी थे। उन्होंने पहले से ही अपने राज्य के असन्तुष्ट लोगों के दलों से क्रांति-पूर्व सम्पर्क स्थापित कर रखा था, लेकिन उनके कथनानुसार संयुक्त राज्य अमेरिका में ही सर्वप्रथम उन्हें सम्पूर्ण लतिनी अमेरिका की एकता का विचार सूझा। दो वर्ष बाद संयुक्त राज्य अमेरिका में पुनः लौटकर उन्होंने अभिनव प्रजातंन्त्र के सबसे प्रतिष्ठित और प्रभावशाली नेताओं से सम्पर्क स्थापित किया और स्फूर्ति के साथ उनसे स्पेनिश अमेरिका के भविष्य के बारे में बात की। फिलेडेलफिया में उन्होंने फ्रांसीसी राजनयिक प्रतिनिधि को बताया : 'स्पेनिश अमेरिका के हमारे राज्य शीघ्र ही एक क्रांति का अनुभव करेंगे जैसी आपके देश में हो रही है।' न्यूयार्क में उन्होंने अलैक्सेन्दर हैमिल्टन के लिए 'सम्पूर्ण स्पेनिश अमेरिकी महाद्वीप की स्वतन्त्रता और मुक्ति' का एक कार्यक्रम तैयार किया। 1797-98 के पिकोरनेल, गौल और एस्पाना षड्यन्त्र के पीछे महाद्वीप की एकता का भी विचार था और क्रांतिकारी आलेखों में 'अमेरिका की जनता' को अनेक बार दोहराया गया। ला ग्वाइरा कारावास में इस विषय पर पिकोरनेल के भाषणों में श्रोताओं को

प्रत्येक अवसर पर बार-बार बताया गया कि लातीनी अमेरिका केवल लातीनी अमेरिकियों के लिए ही होना चाहिए। उनके 'ओरदेनान्सास' में क्रांति के प्रारंभिक चरण के लिए विस्तृत निर्देश थे: 'निवासी यथासम्भव सशस्त्र हों और विभिन्न टुकड़ियों में विभाजित किए जाएं; उनका नेता उन्हीं द्वारा चुना गया सैनिक हो; उन्हें प्रत्येक गली में जाकर नारे लगाने हैं: 'अमेरिकी लोग ज़िन्दाबाद'।' उनकी एक घोषणा में हम पढ़ते हैं: 'मेरे राष्ट्र के पिताओ, वह दिन आ गया है जब अमेरिकी जनता की स्वाधीनता की घोषणा की जा सके।' मानुएल कोरतेस दे काम्पोमानेस द्वारा तैयार गीत के शब्द थे: 'अमेरिकावासियो'' वह दिन आ गया है'''जब अत्याचार की सत्ता'''सदा के लिए समाप्त होनी है।' एक अन्य प्रचारक कविता के जिसका शीर्षक 'अमेरिका का गीत' था, शब्द थे: 'थरथराओ कुख्यात सम्राट'''थरथराओ विश्वासघाती कारलोस'''तुम्हारे सारे अपराधों का दंड'''अब तुम्हें मिलेगा'''अमेरिकावासियों की'''भयानक तलवार''' तुम्हारे गर्व का नाश कर देगी'''हत्यारे'''तानाशाह।'[47]

लातीनी अमेरिका की एकता का विचार वेनेजुएला में 19 अप्रैल के विद्रोह के केवल एक सप्ताह बाद व्यक्त किया गया जब काराकास की सर्वोच्च परिषद् ने लातीनी अमेरिका की समस्त राजधानियों के 'काबिल्दोस' को स्पेनिश-अमेरिकी संघ के निर्माण हेतु आमंत्रित किया। निमन्त्रण में लिखा गया था: 'सिर्फ एक लक्ष्य है, नारा भी एक ही होना चाहिए: अप्रसन्न सम्राट के प्रति वफ़ादारी; उसके अत्याचारी तानाशाह से युद्ध; बन्धुता और दृढ़ संकल्प।'[48] (हम पहले ही टिप्पणी कर चुके हैं कि 'अप्रसन्न' सम्राट के प्रति वफ़ादारी' कुछ समय के लिए ही थी)। प्रथम राजनयिक मिशन के नेता के रूप में अपनी इंग्लैंड यात्रा के दौरान बोलीवार ने पहली बार महाद्वीपीय एकता पर अपने विचार प्रस्तुत किए: 5 सितम्बर 1810 को उन्होंने 'मार्निंग करोनिकल' में लिखा: 'जब वेनेजुएलावासी पाएंगे कि स्पेन के साथ मैत्री की उनकी इच्छा और उनके आर्थिक बलिदानों के बावजूद उन्हें वह सम्मान नहीं मिला है जिसके वे पात्र हैं तो उस दिन, जो अब ज्यादा दूर नहीं है, वे स्वतन्त्रता का ध्वज लहराएंगे और स्पेन के साथ युद्ध की घोषणा कर देंगे। वे संघ में सम्मिलित होने के लिए लातीनी अमेरिका के समस्त लोगों को निमंत्रित करना नहीं भूलेंगे। इस कार्यक्रम के लिए पहले से ही तैयार ये लोग काराकास के उदाहरण का तुरन्त अनुसरण करेंगे।'[49]

वेनेजुएला इस प्रयास में तन्मय रहा और इसने शानदार सफलता प्राप्त की। इसके प्रयासों द्वारा दो राष्ट्रों की प्रथम संधि 28 मई 1811 को वेनेजुएला और इसके पड़ौसी राष्ट्र कुन्दिनामारका के बीच हस्ताक्षरित हो गई। काराकास के प्रतिनिधि, ख़ोसे कोरतेस दे मादारियागा ने इस तरह 'महा कोलम्बिया' की

आधारशिला रखी, जो मिरांदा और बोलीवार को हृदय मे प्रिय था। उसी वर्ष वेनेजुएला के प्रथम संविधान में सभी अमेरिकी राष्ट्रों के मध्य सद्भावना पर बल दिया गया। बोलीवार का स्वर देशभक्त समाज के कक्ष में भी गूँजा जिन्हें उन्होंने निडर होकर 'अमेरिकी स्वतन्त्रता की आधारशिला रखने के लिए निमंत्रित किया।'[50]

बोलीवार स्पेनिश अमेरिकी राष्ट्रीयता के कुशल प्रतिनिधि थे जो उनके अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से मेल खाती थी, जिसमें सभी लोगों के मध्य शांति और सद्भावना मुख्य लक्ष्य था। यथार्थता पर आधारित एकता को कानूनी रूप से स्थापित वास्तविकता में परिवर्तित करने से न सिर्फ लातीनी अमेरिका अपितु सम्पूर्ण मानवता को लाभ पहुंचेगा। हमें अवश्य याद रखना चाहिए कि लातीनी अमेरिका का गठन अनेकों जातियों की उपस्थिति से हुआ था और स्वतन्त्रता आंदोलन ने इन सब को जाति, रंग या धर्म का चिन्ह्-भेद किए बिना मुक्त कर दिया। जमैका के निष्कासन की कठिन किन्तु रचनात्मक परिस्थितियों में बोलीवार ने शांत चित्त मे संघ के गुणों और अवगुणों को ध्यान में रख महाद्वीप की वास्तविकता का विश्लेषण किया : 'सम्पूर्ण अभिनव विश्व में से एक अकेले राष्ट्र का गठन एक शानदार संकल्पना है जिसमें एक अकेला केन्द्र सभी भागों को एक दूसरे से जोड़ेगा। क्योंकि इसका एक ही मूल, एक ही भाषा, एक ही धर्म और समान सामाजिक प्रथाएं हैं, अतः इसकी एक ही सरकार होनी चाहिए जो विभिन्न राज्यों के संगठन से बने। लेकिन यह सम्भव नहीं है क्योंकि भिन्न भौगोलिक स्थिति, परस्पर विरोधी हित और चारित्रिक द्वन्द्व सभी मिलकर अमेरिका को विभाजित करते हैं।'

बोलीवार ने समान मूल का जिक्र किया। यह सच है कि विजय के समय अमेरिका में समाज के विभिन्न रूप थे लेकिन यह कहा जा सकता है कि कोलम्बस उसी क्षण उन सबको विश्व मंच पर ले आए थे। निश्चय ही विजय और औपनिवेशिक प्रक्रियाएं समस्त महाद्वीप में समसामयिक रूप से अनुभव की गयीं। यह महत्वपूर्ण है कि स्वतन्त्रता का विचार विभिन्न स्थानों पर एक साथ उभरा और स्वतन्त्रता के बाद भी इसी अराजकता ने सारे महाद्वीप को जकड़े रखा। ऐसे संकेत मिलते हैं जिनसे पता चलता है कि यही स्थिति सर्वत्र विद्यमान थी, और इस प्रकार समान कारणों के परिणाम भी समान हुए। एकता का प्रमुख कारण भाषा थी जिसे स्पेनवासियों ने प्रभुत्व के उपकरण के रूप में प्रयुक्त किया। भाषा के माध्यम से संस्कृति, यहां तक कि विचार शैली को भी थोपा जाता है। निःसन्देह जब बोलीवार ने लातीनी अमरिका की भाषाई एकता का जिक्र किया तो उन्होंने ब्राजील और फ्रांस, इंग्लैंड और हालैंड द्वारा अधिकृत क्षेत्रों को सम्मिलित नहीं किया। पनामा कांग्रेस के अधिवेशन में उन्होंने इंगित

किया कि वह 'भूतपूर्व स्पेनिश अमेरिका' को सम्बोधित कर रहे थे। इसका यह अर्थ नही कि उनमें अमेरिका के शेष भागों के लिए सद्‌भाव नही था। उन्होंने कहा, 'आइए हम यह सुनिश्चित करें कि कोलम्बस भू-भाग के सुपुत्र प्रेम के बन्धन से बंधे हैं और घृणा, बदले और युद्ध की भावनाएं अपने दिलों से बाहर निकाल कर सीमाओं की ओर वास्तविक शत्रु 'अत्याचार' के विरूद्ध मोड़ दें।'

एकता का एक और सूत्र 'धर्म' भी विजेता द्वारा थोपा गया था। मुक्ति के समय कैथोलिकवाद सारे क्षेत्र में प्रभावशाली धर्म था। स्वभावत: धर्म का नैतिकता, सामाजिक परम्पराओं और प्रथाओं, तथा कानून और अर्थव्यवस्था पर भी एकतात्मक प्रभाव पड़ा। स्पेनिश इच्छाओं के विपरीत, राजनीतिक आकांक्षाओं ने भी महाद्वीप की एकता में योगदान दिया : स्पेन से मुक्त होना तथा शांति और प्रगति की खोज में संगठित होना। संघ के लिए ठोस राजनीतिक कारण भी थे। बोलीवार द्वारा सुझाई गई परिषद अन्य लाभों के अतिरिक्त स्थिरता में भी सहयोगी थी। बोलीवार ने रोसियो से प्रेरित होकर कर-एक कानून का गठन किया जिसे हम 'राजनीतिक भौतिकी' कहते है जिससे सम्पूर्णता का भार भागों की अराजकता को संतुलित करता है। स्पेनिश अमेरिका के एक इकाई के रूप में स्थापित होने पर और आर्थिक-सामाजिक समस्यायों का समाधान हो जाने पर प्रत्येक भाग की अव्यवस्था दूर हो जाएगी, सरकार शक्तिशाली हो जाएगी और 'कौदिल्लयों' वर्ग सीख जाएगा कि शक्ति का प्रयोग करने के लिए स्थानीय स्वार्थों से ऊपर उठना पड़ता है। झगड़े और शत्रुता तब व्यर्थ हो जाएंगे क्योंकि स्थिरता का आश्वासन देने और अत्याचार रोकने के लिए राज्य के अधीन पर्याप्त शक्ति होगी : सार्वजनिक मामलों में शांति और गौरव की तरफ यह एक अच्छा कदम होगा।

बाह्य मान्यता की आवश्यकता भी एकता के पक्ष में थी। स्वतंत्रता-युद्धों के दौरान बोलीवार ने यूरोप और उत्तरी अमेरिका की अपेक्षा-प्रवृत्ति को देखा जो कुछ अंश तक सरकारों की बहुलता के कारण थी। बड़ी ताकतों की दृष्टि मे लातीनी अमेरिका पर अव्यवस्थित द्वीप समूह था। उन्होंने यह नहीं समझा कि यह वस्तुत: मुक्ति के लिए संघर्षरत एक राष्ट्र था : उन्होंने एक विशाल साम्राज्यवादी शक्ति के साथ उलझते छोटे-छोटे राष्ट्रों को देखा। लातीनी अमेरिकी महाद्वीप राजनीतिक और आर्थिक आदान-प्रदान के इसके प्रस्तावों के लिए इन बड़े राष्ट्रों का सम्मान या ध्यान आकर्षित करने में असफल रहा। अगर प्रारम्भ से ही एकता प्रभावशाली हुई होती तो मुक्ति के लिए समय, जीवन और सामाजिक एवं सांस्कृतिक सम्पदा कम व्यय होते, क्योंकि तब बाह्य सहायता का प्रबन्ध करना सुगम होता। 1819 में बोलीवार ने कहा : 'गणतंत्रों के अलगाव के कारण एकता और साधनों का अभाव ही यूरोप और अन्य पड़ोसी

राष्ट्रों द्वारा हमारे भविष्य के प्रति प्रदर्शित अपेक्षा-भावना के लिए उत्तरदायी है। विभिन्न छोटे-छोटे देश जिनके पास न जन-शक्ति है और न ही साधन, वे इन राष्ट्रों का विश्वास या ध्यान आकर्षित नहीं कर सकते।'

1813 के एक दस्तावेज में जो 'महा कोलम्बिया' के निर्माण को स्पष्ट करना है, बोलीवार ने मारिनो को न सिर्फ वेनेजुएला के विभाजित होने के खतरों, बल्कि उस राष्ट्र और नव ग्रानादा के बीच एक संघ के लाभों का भी वर्णन किया जिसे दक्षिणी अमेरिका की एकता के लिए आधारशिला सिद्ध होना था। 'अगर हम दो स्वतन्त्र शक्तियों की स्थापना करें, एक पूर्व में और दूसरी पश्चिम में, तब हम दो विभिन्न राष्ट्रों का निर्माण कर रहे हैं'''जो अजीब सा लगता है। नव ग्रानादा से जुड़ा वेनेजुएला ही दूसरे देशों में अपने प्रति आदर प्रेरित करने में सक्षम हैं। इन्हें कोई क्यों विभाजित करना चाहेगा ? एक स्वतंत्र सरकार की तरह हमारी सुरक्षा और प्रतिष्ठा हमें नव ग्रानादा के साथ एक राष्ट्र बनने के लिए बाध्य करते हैं। वेनेजुएला और नव ग्रानादा की जनता की यह इच्छा है और दोनों ही के लिए लाभप्रद इस संघ की खोज में नव ग्रानादा के वीर सपूत वेनेजुएला को स्वतन्त्र करवाने आए हैं। आंदोलन की लपटों को बुझाने के साथ-साथ हम अगर सबको एक राष्ट्र में एकत्रित कर दें तो इस तरह हम अपनी सेनाओं में वृद्धि और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में परस्पर सहयोग दे सकेंगे। विभाजित रूप में हम कमजोर होंगे और शत्रु तथा निष्पक्ष शक्तियों में हमारा सम्मान कम होगा। एक ही सरकार के अंतर्गत एकता हमें सब की दृष्टि में शक्तिशाली बनाएगी।'

हितों की वास्तविक समानता ने एकता के पक्ष में निर्णायक भूमिका अदा की। बोलीवार द्वारा प्रस्तावित संधि सभी सदस्यों के लिए ठोस लाभ पर आधारित थी। लातीनी अमेरिकी राष्ट्रों की जनसंख्या वृद्धि को देखते हुए उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि एक दिन सम्पूर्ण अमेरिकी महाद्वीप में लातीनी अमेरिका की जन-संख्या सबसे अधिक होगी और उन्होंने अनुभव किया कि इसमें उन्हें अग्र-सैन्य स्थिति प्राप्त हो जाएगी। वह लातीनी अमेरिका के किसी भी राष्ट्र द्वारा छोटी या बड़ी विदेशी शक्ति के साथ संधि के विरुद्ध थे। इस की जगह उन्होंने पूरे लातीनी अमेरिका के साथ संधि किया जाना उपयुक्त समझा। वह वाशिंगटन के उस आदेश से प्रभावित हुए थे जिसमें उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका को शक्तिशाली राष्ट्रों के साथ संधि न करने के लिए कहा था। लातीनी अमेरिकी राष्ट्रों को सदैव यह तथ्य अपने मस्तिष्क में रखना चाहिए कि किसी राष्ट्र से निःशुल्क सहायता प्राप्त करने की आशा करना मूर्खता है, क्योंकि प्राप्त की हुई सहायता का मूल्य बाद में स्वतंत्रता से चुकाना पड़ता है। इसलिए यह स्पष्ट था कि यदि शक्तिशाली राष्ट्रों के साथ न्यायिक एवं समान आधार पर संधियां की जानी हैं तो लातीनी अमेरिकी

एकता अवश्य प्राप्त की जाए, क्योंकि शक्तिशाली राष्ट्र के साथ एक बार संधि कर लेने के बाद निर्बल देश अहसान तले दब जाता है। बोलीवार ने सान्तान्देरे के भावी स्पेनिश-अमेरिकी संगठन और इंग्लैंड के मध्य संधि प्रस्ताव पर टिप्पणी करते हुए कहा : 'इस समय मेरा यह विश्वास है कि इंग्लैंड के साथ संधि से हमें सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त होगी और इसकी छत्रछाया में हम ज्ञान और कुशलता की ओर अग्रसर हो सकेंगे और अन्य राष्ट्रों के मध्य सभ्य और महान लोगों की शक्तियों से परिपूर्ण दिखाई देंगे। लेकिन ये लाभ मेरे इस भय को दूर नहीं करते कि यह शक्तिशाली राष्ट्र भविष्य में संसद के निर्णयों को प्रभावित करने लगें, इसकी आवाज़ शायद निर्णायक बन जाए और इसकी इच्छाएं और हित संघ का ध्यान केंद्रित कर लें, जो एक शक्तिशाली शत्रु के भयावंश इसका विरोध करने में हिचकिचाएगा। मेरे विचार मे यह निर्बल राष्ट्रों के एक शक्तिशाली राष्ट्र के साथ समझोते से होने वाला सबसे बड़ा खतरा है।' हमें ध्यान देना चाहिए कि बोलीवार ने ऐसे विचार इंग्लैंड के प्रति व्यक्त किए जिसके लिए उनके मन में अपार श्रद्धा थी। संघ की सामाजिक सुदृढ़ता के संदर्भ में एक और महत्वपूर्ण सूत्र यह था कि किसी भी सदस्य पर किए गए हमले का उत्तर सामूहिक रूप से दिया जाएगा, जिससे बाह्य शक्तियां किसी गणतंत्र पर हमला करने से पूर्व हिचकिचाएंगी।

लातीनी अमेरिकी एकता के लिए बोलीवार के प्रयास मार्च 1813 में शुरू हुए जब उन्होंने वेनेज़ुएला और इसके पड़ोसी राष्ट्र कुन्दिनामारका की एकता का प्रयास किया। 2 नवम्बर 1812 को उन्होंने पहली बार इस संधि के लिए 'कोलम्बिया' शब्द को प्रयुक्त किया और बाद में, जनवरी 1814 मे मुनोस तेबार के माध्यम से उन्होंने ऐसे संगठन के पक्ष में शानदार वकालत की : 'अपमानता की तीन शताब्दियों के दौरान, स्पेन से भी अधिक विषम जनसंख्या वाला और धनी यह महाद्वीप, माद्रिद के मंत्रिमंडल के कार्यक्रमों का शिकार होता रहा; अगर माद्रिद मंत्रिमंडल 6,000 मील की दूरी से बिना किसी विशेष प्रयास के, न्यू मैक्सिको से मार्गैलियान स्ट्रेट्स तक सम्पूर्ण अमेरिका को नियंत्रित कर सका तब वेनेज़ुएला और नव ग्रानादा के बीच एक ठोस संगठन क्यों संभव नहीं है? और वस्तुतः क्यों सम्पूर्ण दक्षिणी अमेरिका एक केंद्रीय सरकार के अधीन न आ जाता ?...हमारे राष्ट्र को किसी भी यूरोपीय आक्रमण को विफल करने के लिए शक्ति की आवश्यकता है : और एक विशालकाय का सामना करने के लिए हमें भी विशालकाय बन जाना चाहिए, जो समस्त अमेरिका के एक राष्ट्र के रूप में संगठित होने से ही संभव है ताकि एक केंद्रीय सरकार अपने सारे साधनों का बाह्य आक्रमणों का सामना करने और साथ ही आंतरिक रूप से पारस्परिक सहयोग बढ़ाने में प्रयोग कर सके जिससे हम शक्ति और सम्पन्नता के ऊंचे स्तरों तक पहुंच सकें।'[51]

जैसा कि बोलीवार ने सान मार्तिन को बताया : 'जब मैंने अपने राष्ट्र को मुक्त देखा तो कारोबोबो की भूमि पर मेरा प्रथम विचार आपके लिए और पेरू में स्वतंत्रता सेना के लिए था'''कोलम्बिया की खुशहाली के बाद मुझे आपकी सेनाओं की सफलता का ही ध्यान रहता है, जो सर्वत्र दासों का अपनी छत्र-छाया में आश्रय प्रदान करने में सक्षम है।'[52] उन्होंने वेनेजुएलन पौरुष का प्रतीक फूल नव ग्रानादा और वेस्ट इंडीज़ में इन क्षेत्रों की स्वतंत्रता में सहायता करने के लिए भेजा। महाद्वीप की एकता उनके मन में समा गई, जिसमें मानुएल पालासिओ फाख़ारदो और पैदरो गौल भी शामिल थे, जैसा कि 1817-1818 में अंग्रेज़ी, फ्रेंच और जर्मन मे प्रकाशित पालासिओ फाखारदो की रचना 'बासकूए खो दे ला रेवोलूसियोन एन ला अमेरिका एसपानोला' से स्पष्ट है जिसमें क्रांति का पक्ष लिया गया था।

रोमांचकारी कार्यों की इस अवधि के दौरान अनेक आदर्शवादी वेनेजुएला-वासियों ने अन्य लातीनी अमेरिकियों के साथ फ्लोरिदा गणतंत्र के गठन मे भाग लिया जिसने एकता के प्रति वेनेजुएला की भावनाओं को सुदृढ़ कर दिया। जून 1817 के अन्त तक उन्होंने उत्तरी अमेरिका द्वीप समूह के निकट अमेलेइया टापू को फरनान्दीना बंदरगाह पर अधिकार कर लिया। वहां उन्होंने फ्लोरिदा गण-तंत्र की घोषणा की जो सात मास तक चला। इसका ध्वज जो पहले वेनेजुएला और बाद मे कोलम्बिया की तरह था, 12 मार्च 1806 को जैकमेल में मिरांदा द्वारा फहरायी गई पताका से प्रेरित था। मैकग्रेगर, अउराई और कोदासी जैसे सेनानी तथा रोसियो और गौल जैसे नागरिक इस अभियान मे सम्मिलित हुए। गौल ने लिखा : 'यहां हम जो कुछ कर रहे हैं उससे संपूर्ण दक्षिणी अमेरिका को लाभ पहुंचेगा। यही लक्ष्य हमें परस्पर संगठित करता है'''फ्लोरिदा गणतंत्र की स्थापना दक्षिणी अमेरिका के सभी सच्चे मित्रों का ध्यान आकर्षित करती है।'[53] उनका अभिप्राय उत्तर मे क्रांति हेतु मैक्सिको और केंद्रीय अमेरिका में उनके सह-योगियों की सहायता के लिए मोर्चा स्थापित करना था।

बोलीवार ने अपनी समस्त शक्ति और प्रतिष्ठा कोलम्बिया की वास्त-विकता को संभव बनाने में लगा दी। जब परिस्थितियों में कुछ सुधार हुआ तो उन्होंने नव गणतंत्र के संविधान के गठन के लिए अंगोस्तुरा कांग्रेस का अधिवेशन बुलाया। बोलीवार के लिए कोलम्बिया का अर्थ था : 'सम्पूर्ण दक्षिणी अमेरिका के लिए स्वतंत्रता का आश्वासन'। वह उत्सुक थे कि गणतंत्र को इस उत्तरदायित्व के योग्य होना चाहिए। उन्होंने नैतिक तथा राजनैतिक दृष्टि से उस समय के सर्वाधिक विकसित राज्य का प्रारूप तैयार किया। प्रजातंत्र, न्याय और मुक्ति के विषयों पर वाद-विवाद किया गया जिससे इन्हें भूमि-वितरण, दासता-उन्मूलन, समानता और एक प्रगतिशील, प्रतिनिधिक और कानूनी सत्ता में क्रियान्वित

किया जा सके। नैतिकता और संस्कृति को गौरव स्थान मिला जिससे यह कहा जा सकता है कि बोलीवार ने लातीनी अमेरिका के प्रथम राष्ट्र का निर्माण किया, ऐतिहासिक दृष्टि से नहीं और न ही भौतिक अर्थों में क्योंकि इससे पूर्व पेरू अत्याधिक धनी और ब्राज़ील अत्याधिक विशाल राष्ट्र थे। वेनेज़ुएला किसी दूसरे राष्ट्र के साथ संघीय प्रयोग करने वाला प्रथम राष्ट्र था जिसका लक्ष्य भू-क्षेत्र प्राप्त करना या दूसरे राज्यों पर प्रभुत्व जमाना नहीं था बल्कि संगठनात्मक नीति का अनुसरण करना था।

बोलीवार कानून में विश्वास करते थे। अत: उन्होंने एक कानूनी नीति की आवश्यकता अनुभव की जो इस संगठन-प्रक्रिया से सम्बद्ध हो। इसकी स्थापना उन्होंने स्वयं की और कानूनी सिद्धांत जो उन्होंने विकसित किए, वे वर्तमान में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। उनकी पद्धति प्रसिद्ध यूरोपीय गठबंधन से भिन्न थी, क्योंकि यहां आक्रमणों के लिए राष्ट्रों को एक बड़ी शक्ति के नेतृत्व में हिंसा द्वारा संगठित नहीं किया जा रहा था, अपितु यह सुरक्षा का एक माध्यम था और राजनीतिक विकास को संगठित करने का एक साधन था। बोलीवार ने 'विश्व-संतुलन' के विचार को विकसित किया जो अपने लक्ष्यों में अधिक सुचारु था, जैसा कि उन्होंने स्पष्ट किया : 'अनुभव का पाठ भुलाया नहीं जाना चाहिए : यूरोप का रक्तमय दृश्य, जहां संतुलन को निरंतर खतरा है, हमें एक सही नीति की ओर प्रेरित करता है। इस महाद्वीपीय संतुलन से परे, जिसे यूरोप वहां ढूढने का प्रयास कर रहा है जहां इसके मिलने की न्यूनतम आशा है—युद्ध और अव्यवस्था के मध्य—एक और संतुलन है जो हमारे लिए रुचिकर है : विश्व-संतुलन। यूरोपीय राष्ट्रों की महत्वाकांक्षा दासता की पंजाली को शेष विश्व तक ले गई : अन्य भागों को स्वयं अपने में और यूरोप के बीच एक संतुलन स्थापित करना चाहिए ताकि यूरोप का आधिपत्य समाप्त किया जा सके। यह तथ्य लातीनी अमेरिकी नीति में सम्मिलित होना चाहिए।'[54] बोलीवार की मौलिकता असाधारण है। लातीनी अमेरिका की एकता की घोषणा करते हुए उन्होंने राष्ट्रीयता के सिद्धांत की परिकल्पना की जिसे बाद में मासिनी ने विकसित किया जिसमें प्राकृतिक सीमाओं की स्पष्ट परिभाषा है। कौदिल्लयोस वर्ग में यदा-कदा होने वाले संघर्षों के बावजूद स्वतंत्रता युद्धों ने सिद्ध कर दिया कि लातीनी अमेरिकी जनता में सामूहिकता की भावना थी।

नयी व्यवस्था के अन्तर्गत राज्यक्षेत्रीय सिद्धांत का इस तरह पालन किया जाना था : 'गणतांत्रिक सरकारें भूतपूर्व वायसरायल्टी, कैप्टेन्सी-जनरल या प्रेसीडेन्सियों की सीमाओं पर आधारित हैं।'[55] इसी सिद्धांत के अनुसार यह अनुभव किया गया कि भूतपूर्व स्पेनिश अमेरिकी साम्राज्य भी एक प्राकृतिक इकाई था। इस सिद्धांत का बार-बार दोहराया जाना बोलीवार के लिए इसके महत्व

को प्रदर्शित करता है। सर्वप्रथम, पैदरो गौल ने 1823 में 'उत्ती पोसोदितीस खुरीस' का प्रयोग किया और प्रत्येक राज्य की सीमाओं के निर्धारण का संयुक्त लक्ष्य प्राप्त किया जिससे सीमाओं को लेकर संघर्ष न हो और परस्पर सुरक्षा का आश्वासन दिया जा सके। इसने लातीनी अमेरिका में उपनिवेश काल के लौटने की संभावनाओं को सदा के लिए समाप्त कर दिया। एकता ने निर्भरता को नकार दिया।

बोलीवार के नाम के साथ जुड़ी प्रतिष्ठा ने अनेक क्षेत्रों को संलग्न कर दिया, जिस आदर्श के लिए उन्होंने संघर्ष किया था। पनामावासियों ने 28 नवंबर 1821 को स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया। अपने छोटे से राष्ट्र को भयभीत करने वाले खतरों को अनुभव करते हुए, बोलीवार की सशक्त ख्याति में विश्वास कर उन्होंने बोलीवार द्वारा प्रस्तुत समाधान अपना लिया। उन्होंने पनामा 'काबिल्दो' वर्ग पर केन्द्रित एक लोकप्रिय प्रतिनिधित्व की स्थापना की। जनसाधारण की इच्छा की व्याख्या करते हुए इसने घोषणा की कि इस्तमुस प्रदेश का क्षेत्र कोलम्बिया गण-तान्त्रिक राज्य का है जिसकी कांग्रेस में यह उचित समय पर अपने प्रतिनिधि भेजेगी।'[56] इस अवसर पर बोलीवार ने अपनी प्रसन्नता छुपाने का प्रयास नहीं किया, और सरकारी सूचना मिलने से पूर्व ही उन्होंने अपनी चिर-परिचित ईमान-दारी से टिप्पणी की : 'पनामा की स्वतन्त्रता का समाचार सुनने पर मुझे जो प्रसन्नता और सन्तोष हुआ उसे मैं व्यक्त नहीं कर सकता; पनामा, जो पृथ्वी का केन्द्र-स्थल है, अपने ही प्रयासों से सफल हुआ। किसी भी अमेरिकी प्रदेश के इतिहास में पनामा की स्वतन्त्रता-घोषणा सर्वाधिक गौरवमयी स्मारक हैं।'[57] वेस्ट इंडीज़ में भी पुरानी व्यवस्था के स्थान पर नयी व्यवस्था स्थापित करने की बोलीवार की ऐतिहासिक सफलता की प्रतिध्वनि सुनाई दी; वेस्ट इंडीज़, जहां बोलीवार ने निष्कासन का कष्ट सहा पर हताश नहीं हुए। 1दिसबंर 1821 को 'ख़ोसे नुन्येस दे काकेरेस' ने स्वयं को स्पेनिश हैती के स्वतन्त्र राज्य का राष्ट्रपति घोषित कर दिया। सरकार के संवैधानिक कानून द्वारा कोलम्बिया के साथ संघ और सन्धि निर्धारित की गई जिससे यह कोलम्बिया राज्य का एक भाग बन गया। यद्यपि बोएर ने दोनों द्वीप समूहों को संगठित कर इन आशाओं को आघात पहुंचाया, फिर भी 1824 में जब वह राष्ट्रपति बने, उन्होंने कोलम्बिया के साथ राजनयिक सम्बंध स्थापित करने का प्रयास किया।

बोलीवार अपने सार्वजनिक जीवन की अन्तिम चौथाई अवधि को दक्षिणी राष्ट्रों को अर्पित करने के लिए विवश हो गए। यह एक महान बलिदान था, लेकिन दुविधा से निकलने का कोई उपाय न था : अगर वह दक्षिण में रहते तब उत्तर में किया गया उनका परिश्रम व्यर्थ जाता। अपनी अनुपस्थिति की कीमत उन्हें अपने जीवन के सर्वोत्तम कार्य के नुकसान से चुकानी पड़ी : कोलम्बिया

धाराशायी हो गया, शक्ति उनके हाथों से निकल गई, अल्पतंन्त्री और कौदिल्ली सभी सत्तारूढ़ हो गए और प्रतिक्रिया ने क्रान्तिकारी भावनाओं को समाप्त कर दिया। बोलीवार का विचार था कि क्रान्ति को सबसे बड़ा खतरा पेरू में स्पेनिश प्रतिरोध का था और उत्तर में स्वतन्त्रता की सुरक्षा के लिए इसका कुचला जाना अति आवश्यक था। वेनेजुएला और नव ग्रानादा के अपने सर्वोत्तम अधिकारियों और सेनाओं सहित उन्होंने दक्षिणी अभियान आरम्भ किया। यह एक असम्भव सा लक्ष्य था : एन्डीज़ पर्वतमाला की ऊंची चोटियां क्रान्ति के विरुद्ध षड्यन्त्र रचती प्रतीत होती थीं। लेकिन फिर भी सेनानियों की वीरता ने सब बाधाओं को पार कर अपना लक्ष्य प्राप्त किया। मई 1822 में पिचीचा की विजय ने कित्तो की जनता को कोलम्बिया मे सम्मिलित कर दिया। सुकरे को राजनयिक विचार-विनिमय का नाजुक कार्यभार सौंपते हुए बोलीवार ने इस बात पर बल दिया कि सुकरे एक्वादोरवासियों को विश्वास दिलाए 'कि हम उन पर प्रभुत्व जमाने नही बल्कि पूर्णत: समान भागों को मिलाकर एक विशाल इकाई के गठन का प्रयास कर रहे है।' मध्यस्थ को उन्हें 'प्रस्तावित महान गणतन्त्र मे सम्मिलित होने के लाभों का वर्णन करना चाहिए जो उनके अधिकारों या राजनीतिक प्रतिनिधित्व को क्षति पहुंचाए बिना उनके अस्तित्व की सुरक्षा का आश्वासन देता है।'[58]

ग्वायाकिल की बात और थी। 1820 से स्वतंत्र राज्य ग्वायाकिल को पेरू और कोलम्बिया दोनों ने निमंत्रण दिया। ग्वायाकिल ने कोलम्बिया का पक्ष लिया और बोलीवार ने 13 जुलाई 1822 को नगर में पहुंच कर इसे अपने नियंत्रण में ले लिया। 26 तारीख को दो महान नेताओं, बोलीवार और सान मार्तिन की मुलाकात हुई। इस बातचीत के विभिन्न अर्थ निकाले जाते रहे हैं। लातीनी अमेरिका के इन दो महान व्यक्तित्वों के बीच इस महत्वपूर्ण मुलाकात का वर्णन करते हुए अर्जेंटीना के एक कुशल इतिहासविद् ने लिखा है : 'सान मार्तिन इस सुंदर पैसेफिक नगर को पेरू में शामिल करने के लिए वहां नही गये थे। दस्तावेज़ों से पता चलता है कि उनका सदैव यह मत था कि ग्वायाकिल अपने भाग्य का निर्णायक स्वयं हो। इसलिए जब उन्हें यह पता चला कि बोलीवार ने इसे कोलम्बिया में मिला लिया है और पेरू में इसके मिलने की संभावना समाप्त हो गई है तो कुछ सीमा तक उन्हें दुख हुआ; लेकिन उन्होंने इस बात को तूल नही दी। ग्वायाकिल में यह उनकी प्राथमिकताओं में सम्मिलित नहीं था। सान मार्तिन बोलीवार के साथ पेरू और कोलम्बिया की सेनाओं के संगठन की चर्चा करने के लिए ग्वायाकिल गए। उनका लक्ष्य युद्ध को जल्द से जल्द समाप्त करना था'''सान मार्तिन का परित्याग वस्तुत: परित्याग न था, और न ही इसका कारण ग्वायाकिल को लेकर उनकी हार या फिर बोलीवार की महत्त्वाकांक्षा

से भी इसको सम्बद्ध नहीं किया जा सकता। लीमा में सत्तारूढ़ होते समय सान मार्तिन ने एक वर्ष से अधिक समय तक शासन न करने का निर्णय लिया और ग्वायाकिल छोड़ने से चार मास पूर्व उन्होंने अपने विदेश मंत्री ग्रासिया देल रियो के साथ निवृत्ति की बात की थी।'[59] इन दोनों महान व्यक्तियों के बीच कोई छुटपुट प्रतिद्वन्द्वता नहीं हो सकती थी; इनके कंधों पर भाग्य ने एक सम्पूर्ण महाद्वीप को स्वतन्त्र कराने का भार सौंप रखा था। बोलीवार ने सान मार्तिन से कहा : 'मैं आपको मित्र कहकर पुकारता हूं, और हमें समस्त जीवन इसी शब्द मे एक दूसरे को सम्बोधित करना है क्योंकि हम इस संघर्ष, विचार और कर्म में परस्पर भाई हैं और हमें मित्रता के बन्धन में बंधे रहना चाहिए।'[60] सान मार्तिन ने उत्तर दिया : 'प्रिय मित्र : सफलता और प्रसन्नता कभी आपका साथ न छोड़े : यह आपके परम मित्र, ख़े दे सान मार्तिन की इच्छा है।'[61] सान मार्तिन की पुत्री द्वारा चित्रित बोलीवार का एक चित्र 1850 में फ्रांसीसी भूमि पर उनकी मृत्यु के समय उनके पास था। जैसा कि एक और महान अर्जेंटीनी नेता ने लिखा था : 'पिचींचा से भी पूर्व, उत्तर में विजयी बोलीवार शक्तिशाली थे : पिचींचा के बाद उनका स्वर निर्णायक था और वह दक्षिण पर अपनी सहायता-शर्तें थोप सकते थे।'[62] सान मार्तिन निवृत हो गए। ग्वायाकिल ने कोलम्बिया में सम्मिलित होने की घोषणा कर दी। कोलम्बियो में इस समय वेनेज़ुएला, नव ग्रानादा, पनामा, कित्तो और ग्वायाकिल सम्मिलित थे। बोलीवार अपने चुने हुए पथ पर चलते गए, जिसमें उन्हें दुःख और निराशा के साथ सन्तोष भी प्राप्त हुआ। दोनों नेताओं में से उनके कंधों पर अपेक्षाकृत अधिक भार था।

इसी समय बोलीवार के निर्देशानुसार कोलम्बिया ने चार शिष्ट-मंडलों का गठन किया। तीन शिष्ट-मंडल तो पूर्णतः सफल रहे किन्तु ब्युनस आयर्स शिष्ट-मंडल को आंशिक सफलता मिली। कोलम्बिया के अधिकृत राजदूतों, मोसकेरा और सान्ता मारिया ने पेरू, चिले और मैक्सिको के साथ संधियों पर हस्ताक्षर किए। प्रथम दो संधियों पर 1822 में हस्ताक्षर किए गए और तृतीय पर मैक्सिको की अव्यवस्थित परिस्थितियों के कारण आगामी वर्ष हस्ताक्षर किए गए। बोलीवार की राजनयिक नीति का लक्ष्य कोलम्बिया और इसके मित्र राष्ट्रों के बीच द्विपक्षीय समझौतों से भी आगे बढ़ने का था। उन्होंने पहले ही द्विपक्षीय एकता का अपना कार्यक्रम तैयार कर लिया था; ये प्रयास उस महान लक्ष्य की दिशा में पहला महत्वपूर्ण कदम था। प्रत्येक समझौते का केंद्रीय विचार उस राष्ट्र द्वारा इस बात का आश्वासन था कि वह लातीनी अमेरिका के अन्य राष्ट्रों को संघ में मिलने के लिए प्रोत्साहित करेगा। पेरू ने बोलीवार का विशेष स्वागत किया। इसने उन्हें सम्मानित किया और असीमित शक्तियां प्रदान कीं। 12 फरवरी 1825 के एक कानून के अन्तर्गत पेरू कांग्रेस ने उन्हें मुक्तिदाता का

मान्यता दी।

इस बात पर बल दिया जाना चाहिए कि बोलीवार के राजनयिक प्रयासों ने एक नई वैधिक रूपरेखा के निर्माण मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस दृष्टि से वह लातीनी अमेरिका और समस्त मानवता के लिए रचनात्मक धरोहर छोड़ गए, क्योंकि उन्होंने प्रतिपादित किया कि किस प्रकार क्षेत्रीय और महाद्वीपीय स्तर पर एक शांतिपूर्ण और न्यायिक समझौते पर पहुंचा जा सकता है। इससे राष्ट्रीय कृतज्ञता के प्रति उनके दृष्टिकोण का आभास होता है जिसमें उन्होंने सांसदों को निर्देश भी दिए : 'राष्ट्रीय कृतज्ञता वेनेजुएला की वफादारी, सम्मान और कर्तव्य का कोष है। इसका धर्म-ग्रंथ की भांति सम्मान कीजिए। क्योंकि इसमें हमारी प्रतिष्ठा अन्तर्निहित है। उस आश्वासन को तोड़ने से मर जाना बेहतर है जिससे हमारे राष्ट्र और इसकी संतान को मुक्ति मिलनी हो।'[63] उन्होंने इस पर बल दिया कि प्रतिष्ठा और अंतर्राष्ट्रीय विश्वास किसी राष्ट्र की सबसे बड़ी पूंजी हैं, और उन्होंने उन राष्ट्रों के पृथक्करण की सलाह दी जो अपने आश्वासनों को पूरा नही करते। उनका विचार था कि सामूहिक इच्छा के सम्मान से तथा संधि के संयमित पालन से ही राज्यों के परस्पर संबंध सुदृढ़ हो सकते हैं। अगर विश्वास ही आधारहीन है तो संगठन धराशायी हो जाएगा; इसलिए संधि की अवहेलना करना अपराध के तुल्य है। 'संधि की अवहेलना करने वाले राष्ट्र के साथ समस्त संबंध और संपर्क समाप्त कर दिए जाएं।'

बोलीवार के विचार में राष्ट्रीय स्वायत्तता को पारस्परिक मान्यता देना एक महत्वपूर्ण सिद्धांत था। उन्हें विश्वास था कि एकता प्राप्त करने के लिए पारस्परिक हित का प्रयोग शक्ति के प्रयोग से अच्छा है। मिरांदा ने विभिन्न राष्ट्रों की सहमती को अपने कार्यक्रमों में अधिक महत्व नहीं दिया क्योंकि उन्हें लगा कि इनका निर्णय एकीकरण की दिशा में है (क्योंकि इसके लाभ स्पष्ट थे)। सैन्य सफलता और लातीनी अमेरिका में अपनी प्रतिष्ठा के आधार पर बोलीवार सुगमता से महाद्वीप के एक विशाल भाग पर अपने इच्छित संघ की स्थापना कर सकते थे, लेकिन प्रजातंत्र में उनकी आस्था, राष्ट्रीय स्वायत्तता और क्रांति की गतिशीलता के कारण उन्होंने दूसरा मार्ग चुना जो परस्पर सहमती पर आधारित था। उन्होंने विभिन्न राज्यों के संविधानों की प्रतीक्षा की जिससे वे एक स्वतंत्र अधिवेशन में अपने प्रतिनिधि भेज सकें जहां इस विषय पर खुली चर्चा की जा सके। प्रत्येक राष्ट्र की स्वायत्तता के प्रति अपार सम्मान के साथ-साथ उन परि-स्थितियों में हस्तक्षेप की संभावना भी सम्मिलित थी जहां महाद्वीपीय एकता की सुरक्षा का प्रश्न था। बोलीवार की प्राथमिकताओं में सुरक्षित रहना सर्वोच्च था; न्याय, स्वतंत्रता और प्रजातंत्र के लक्ष्य इसके बाद थे, और इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अन्य लक्ष्यों के साथ कुछ समय के लिए समझौता किया जा

सकता था। बोलीवार ने सान्तान्देर को बताया : 'मेरा विश्वास है कि राजनीतिक सुरक्षा से संबंधित प्रत्येक विषय में हमें 'पवित्र संधि' की नकल करनी चाहिए। अंतर केवल न्यायिक सिद्धांत के प्रति हमारी निष्ठा में होना चाहिए। यूरोप में सब कुछ बल-प्रयोग से प्राप्त किया जाता है, हमारे यहां स्वतंत्र इच्छा से'''अपने को उस स्तर तक लाने के लिए जहां से हम संघर्ष जारी रख सकते हैं, हमारे पास इसके अतिरिक्त और कोई रास्ता नहीं है।'

झगड़ों का हल युद्ध द्वारा ढूंढ़ा जाना बोलीवार को नापसंद था। उनकी विचारधारा उनके महाद्वीप की आवश्यकताओं के अनुरूप शांतिप्रिय थी, जिसकी समस्याएं आंतरिक थीं : प्रकृति पर विजय, आर्थिक विकास, सामाजिक, नैतिक और बौद्धिक प्रगति। बोलीवार को मात्र युद्ध के लिए युद्ध करने से घृणा थी। उन्होंने युद्ध स्वीकारा, किया भी लेकिन मात्र साध्य को प्राप्त करने के माध्यम के रूप में। यद्यपि यह विरोधाभास जैसा प्रतीत होता है, लेकिन उन्होंने सेना को शांति का प्रमुख संरक्षक माना। 1923 में उन्होंने अपने सैन्य सहयोगियों से कहा : 'विश्व इतिहास में सेनाओं का प्रयोग सदा सम्राटों और शक्तिशालियों की रक्षा के लिए हुआ है : लेकिन आपको निर्बल और न्याय की रक्षा करनी है''' अपनी बंदूकों में संगीनों के साथ-साथ कानून और स्वतंत्रता को भी रखिए और आप विजयी होंगे।'

बोलीवार जिस एकीकरण की मांग कर रहे थे, उसने राजनीतिक और सामाजिक रूप से समजातीय गणतंत्रों के इस समूह के लिए एक प्राकृतिक विकास के रूप में समान लातीनी अमेरिकी नागरिकता को जन्म देना था। बोलीवार के सुझावों के प्रति विभिन्न राष्ट्रों के उत्तर दस्तावेजों में देखने को मिलते हैं। उदाहरण के लिए कोस्टा रिका में कोलम्बिया के उद्भव का सहानुभूति और प्रशंसा की भावनाओं के साथ स्वागत किया गया। फरवरी 1823 में निकारागुआ के एक बुद्धिजीवी और अध्यापक दोन राफेल ओसेखो ने नए मैक्सिको साम्राज्य में कोस्टा रिका के मिलन को रोकने के लिए कोस्टा रिका और कोलम्बिया के संघ का सुझाव दिया। जब बोलीवार एक्वादोर से दक्षिण के लिए यात्रा कर रहे थे तब ओसेखो ने उन्हें पत्र लिखा। हेरेदिया के अतिरिक्त लगभग सभी नगरों जैसे सान खोसे, अलेरी, तरेस रियोस, उखारास, कारतागो, कुरिदाबात एस्काजु, पाकाका और आलाखुएला में प्रदर्शनकारियों ने कोलम्बिया के साथ मिलने के विचार का स्वागत किया। संपर्क की समस्याओं और दक्षिण की परेशानियों के कारण बोलीवार इस विषय पर उपयुक्त ध्यान न दे सके। फिर भी कोलम्बिया वह आदर्श था जिसने ओसेखो के नेतृत्व में कोस्टा रिका की जनता को मुक्ति की ओर अग्रसर किया। प्रथम कोस्टा रिका कांग्रेस ने, जिसके सचिव ओसेखो थे, अंततः मैक्सिको, ग्वातेमाला और लेओन से अलग सरकार की

स्थापना की।

क्यूबा में बोलीवार के ऐतिहासिक संघर्ष ने बोलीवार के 'सूर्य तथा किरण' नामक षड्‌यंत्रकारी आंदोलन को प्रेरित किया। तत्काल वास्तविक संभावनाओं के अभाव और कैरिबियन में यूरोप तथा उत्तरी अमेरिकी नीतियों के कारण बोलीवार को स्पेनिश द्वीपसमूह को स्वतंत्र कराने का अपना कार्यक्रम स्थगित करना पड़ा। उन्होने पुयेरतो रिको और क्यूबा की जनता की ओर इंगित करते हुए कहा: 'क्या ये द्वीपसमूह निवासी अमेरिकी नहीं हैं? क्या इनके साथ दुर्व्यवहार नही हो रहा? क्या ये अच्छा जीवन बिताना नहीं चाहते?' लीमा में वह क्यूबा वासी खोसे अन्तोनियो अरानखी तथा एक पुयेरता रिको वासी अन्तोनियो वेल्तेरा से मिले। 'सूर्य और किरण' संगठन से संबंधित ये दोनों भद्र पुरुष शरणार्थी थे। बोलीवार ने पनामा में अपने सहयोगियों गौल और ब्रीसेनो मेन्देख़ को मैक्सिको और ग्वातेमाला के साथ अपने संयुक्त कार्यक्रम का स्मरण कराया। कार्यक्रम का मन्तव्य था :(I) स्पेनवासियों या अन्य शत्रुओं द्वारा हमारे तटों पर आक्रमण का सामना करना (II) हवाना और पुयेरतो रिको में एक अभियान-दल भेजना (III) पुयेरतो रिको और क्यूबा पर अधिकार करने के बाद अगर स्पेन तब भी शांति करने से इन्कार करे तो उस पर और अधिक शक्ति से आक्रमण करना।'[63अ]

सुकरे के कुशल नेतृत्व में बोलीवार की सेनाओं ने महाद्वीप के दक्षिणी भाग की जनता को स्वतंत्र करा लिया। आयाकुचो के युद्ध के पश्चात पेरू ने विश्व के स्वतंत्र राष्ट्रों में अपना स्थान पाया। राष्ट्र की सामाजिक और आर्थिक रूपरेखा पर बोलीवार का प्रभाव शीघ्र ही अनुभव किया गया (यह वर्तमान में भी दृष्टिगोचर होता है)। सुकरे ने निजी तथा राजनीतिक प्रयासो से बोलीविया को स्वतंत्र करा लिया। वहां भी भूमि-वितरण, दासता-उन्मूलन और शिक्षा-सुधारों की व्यवस्था की गई और एक गुणात्मक तथा वैधिक प्रशासन का आरंभ हुआ।

बोलीवार के राजनीतिक जीवन के इस सर्वोत्तम क्षण में रिवर प्लाते के राजदूत बोलीविया आए। उन्होंने बोलीवार को अर्जेंटीना आकर ब्राज़ील साम्राज्य के विरुद्ध संघर्ष में उनकी सहायता करने का निमंत्रण दिया।'[63ब] अर्जेंटीना के दूतों, सेनापति कारलोस दे अलवेर और डा० मिगुएल दियास वेजेज़ ने बोलीवार को 'अमेरिका के संरक्षक' की उपाधि से सम्मानित किया, अर्थात संपूर्ण महाद्वीप को स्वतंत्रता दिलाने के लिए सर्वोच्च मान। बोलीवार की प्रतिष्ठा अपार थी, और उन्हें रिवर प्लाते के अनेक प्रभावशाली नेताओं—पुयेरेदोन, नेकोचीया, मोन्तेयागुदो अलवेर, गिदो, अलवारदो, मानुएल दोरेगो और ग्रेगोरीयो फनेस—का समर्थन प्राप्त था। लेकिन रिवादाविया संघीय कार्यक्रमों से असंतुष्ट थे, और इसी कारण उन्होंने कोलम्बिया राजनयिक शिष्ट-मंडल के उद्देश्यों को कुछ हद तक आघात पहुंचाया। जब उन्होंने कोलम्बिया द्वारा प्रस्तावित संधि के स्थान पर अपनी 'मित्रता और

संगठन' संधि पर हस्ताक्षर किए।

बोलीवार ने पाराग्वे को स्वतंत्र कराने का भी स्वप्न देखा था, जहां रोदरीगेज़ फ्रांसिया ने तानाशाह सरकार थोपी हुई थी (लेकिन इसी कारणवश पाराग्वे अपने शक्तिशाली पड़ौसी राष्ट्रों के चंगुल से मुक्त था)। इस समय तक एक भी राष्ट्र ऐसा न था जो बोलीवार की प्रतिष्ठा, उपलब्धियों और भविष्य के उनके कार्यक्रम से अपरिचित हो। उन्होंने केन्द्रीय अमेरिका को प्रशंसा और प्रोत्साहन के शब्दों से संबोधित किया, इस आशा से कि वह एक ठोस संगठन बनकर उभरेगा। 'दो महासागरों के मध्य स्थित यह क्षेत्र भविष्य में विश्व का माल गोदम बन सकता है : इसकी नहरें दूरी कम करेंगी, इनसे यूरोप, अमेरिका और एशिया के मध्य व्यावसायिक संबंध सुदृढ़ होंगे और विश्व के प्रत्येक भाग से इस भाग्यशाली क्षेत्र को सम्मान प्राप्त होगा। यह संभवत: एक मात्र स्थान है जहां विश्व की राजधानी की स्थापना की जा सकती है'''।[63स] 1824 में ग्वातेमाला के प्रति सद्-भाव प्रकट करते हुए उन्होंने कहा : 'मुझे आशा है कि मैं ग्वातेमाला के प्रति पर्याप्त समय के लिए अपनी सेवाएं अर्पित कर सकूंगा, ऐसी मेरी इच्छा है।' (उस समय ग्वातेमाला से तात्पर्य वर्तमान राष्ट्र के अलावा कोस्टारिका, एल सालवादोर, होन्दुरास और निकाराग्वा से था)। रेसीफे में 1817 की क्रांति में पराजित ब्राज़ील निष्कासितों ने भी बोलीवार से सम्पर्क स्थापित किया (अबरेयु ई लीमा, जिनके पिता इस आंदोलन में शहीद हुए थे, कोलम्बिया की स्वतंत्रता के लिए वीरता से लड़े)। ब्राज़ील में सम्राट सफल रहे और सभ्य तथा उदार ख़ोसे बोनीफेसियो दे आन्दरादे ई सिलवा ने 1822 के बाद विकास की एक प्रक्रिया का प्रारंभ किया। तथापि असंतोष अभी विद्यमान था और कोलम्बिया जैसा आदर्श गणतंत्र स्थापित करने की आकांक्षा भी थी।

लातीनी अमेरिकी एकता के लिए बोलीवार के प्रयासों की पराकाष्ठा पनामा कांग्रेस में हुई। प्रसंगवश बोलीवार संघ की क्षेत्रीय सीमाओं के विषय में स्पष्ट थे, यद्यपि उनके विचार अक्सर इतिहासविदों द्वारा गलत दृष्टि से प्रकट किए जाते रहे हैं। 1824 में लीमा में जारी घोषणा में कोलम्बिया, मैक्सिको, रिवर प्लाते, चिले और ग्वातेमाला गणतंत्रों की सरकारों को संबोधित करते हुए उन्होंने इस सिद्धांत को दो बार दोहराया : 'अब समय आ गया है कि अमेरिकी गणतंत्री (पूर्व) स्पेनिश उपनिवेशों के हितों और संबंधों को एक ठोस आधार प्रदान किया जाए'' हमारे गणतंत्री द्वारा नामांकित और स्पेनिश शक्ति के विरुद्ध हमारी सेनाओं की विजय द्वारा संभव, ऐसी शक्ति राजनयिक प्रतिनिधियों की सभा ही हो सकती है'''पेरू और कोलम्बिया की सरकारों ने भूतपूर्व स्पेनिश उपनिवेशों की सरकारों को महासंघ में सम्मिलित होने और संधि करने के लिए प्रेरित करने का आश्वासन दिया है।' उन्होंने पनामा को भौगोलिक कारणों से

पृथ्वी का केंद्र मानते हुए चुना : पनामा एशिया, अफ्रीका और यूरोप तथा दोनों ध्रुवों से समान दूरी पर है; बोलीवार ने इसकी तुलना ग्रीक काल के कोरिन्थ से की है।

बोलीवार द्वारा सुझाए गए संघ में कांग्रेस को केंद्र-बिंदु होना था। इसके कार्यों में, दो अत्यंत महत्वपूर्ण थे : (I) कांग्रेस विदेशी नीति का एकीकरण और रक्षा का समन्वय करेगी; (II) प्रशांत सागरीय नियमों के उदाहरण के रूप में यह अमेरिका के विभिन्न राष्ट्रों के बीच परस्पर मैत्री एवं सद्भाव का साधन होगी। यह आशा की गई थी कि नए विश्व से संबंधित सभी विषयों पर पनामा में चर्चा की जाएगी, अंतर्राष्ट्रीय कानूनों की रूपरेखा तैयार की जाएगी और 1822 में व्यक्त आदर्श की प्राप्ति पर सभी का ध्यान केंद्रित किया जाएगा। 'अमेरिका के लिए महान दिवस अभी नहीं आया है। हमने अत्याचारियों से मुक्ति पा ली है। अपने अत्याचारी कानूनों की दीवार तोड कर वैधिक प्रशासन की स्थापना की है। लेकिन अभी भी हमें उस सामाजिक समझौते का आधार तैयार करना है जो इस महाद्वीप को अनेक गणतंत्रों द्वारा गठित एक राष्ट्र बना देगा।' बोलीवार की कल्पना, शताब्दियां आगे निकल गई : 'जब आज से शताब्दियों बाद हमारी संतान हमारे सार्वजनिक कानूनों का मूल ढूंढ़ेगी और इसका भाग्य बदल देने वाली संधियों को याद करेगी, तब स्थल डमरूमध्य के प्रस्तावों को सम्मान के साथ याद किया जाएगा। उनमें प्रथम संगठन के लिए कार्यक्रम पाए जाएंगे···शेष विश्व के साथ हमारे संबंधों का प्रथम कदम। तब पनामा के स्थल डमरूमध्य की तुलना में कोरिन्थ का क्या होगा ? वह चाहते थे कि कांग्रेस स्थायी हो और इसकी अपनी स्थल और जल-सेनाएं हों। शेष प्रशासनिक विभागों को भी स्थायी और अंतर्राष्ट्रीय स्तर का होना था।

बोलीवार द्वारा सुझाई गई इस हिस्पानी अमेरिकी परिषद को आर्थिक विकास के लिए एक शानदार आधार सिद्ध होना था। समझौतों में पहले से ही यह अनुमान था कि संघ के अन्तर्गत राष्ट्र अन्य सदस्यो के साथ व्यवसाय को प्राथमिकता देंगे। आँदरेस बेल्लो ने 1810 में इसी प्रकार के विचारों को प्रतिपादित किया था जब उन्होंने काराकास की सर्वोच्च परिषद के सम्मुख घोषित किया था : 'मेरा विचार है कि जनता को अब एक घनिष्ठ संघ का गठन कर लेना चाहिए और परस्पर समझौतों के लिए अक्सर मिलते रहना चाहिए।' 1811 में उन्होंने पुनः विभिन्न लोगों के बीच संबंधों को सुदृढ़ करने पर बल दिया : 'मेरे विचार में संगठन का प्रमुख उद्देश्य अलग-अलग समझौते तथा संधि न करने का आश्वासन तथा एक स्पष्ट, एकजुट नीति का विस्तार होना चाहिए···सदा, जहां अधिकार और हित समान है, वहां सार्वजनिक घोषणाएं और कार्य भी समान होने चाहिएं।'[64] इसी कारण चिले के 'अनुग्रह राष्ट्र' को 'बैल्लो धारा' भी कहा जाता है। उनके विचार इस दृष्टि में बोलीवार से मिलते थे कि संघ घनिष्ठ और

सम्पूर्ण होना चाहिए और कोई भी सदस्य संघ के बाहर के राष्ट्रों के साथ बिना अन्य सदस्यों की अनुमति के संधि करने के योग्य नहीं होना चाहिए। पनामा कांग्रेस दुर्भाग्यवश, आज तक के विश्व इतिहास का प्रथम तथा एक मात्र उदाहरण है जब विभिन्न स्वराज्यी प्रजातांत्रिक राष्ट्र बिना किसी दबाव के मात्र परस्पर सद्भाव की खोज में एकत्रित हुए। कांग्रेस को बढ़ावा देने वाले कोलम्बिया की अन्य सदस्यों को नियंत्रित करने की कोई इच्छा न थी।

इस तरह सिमोन बोलीवार सर्वाधिक प्रतिष्ठित लातीनी अमेरिकी गणतन्त्र के राज्याध्यक्ष और महाद्वीपीय मुक्ति युद्ध के नेता के रूप में प्रसिद्ध थे। एक आदर्शवादी होते हुये उन्होंने परम्परागत राजनीतिक भाषा के स्थान पर विदेशी शब्दों, जैसे 'बंधु' और 'बंधुत्व' का प्रयोग किया। इन शब्दों का प्रयोग इनके अन्तर्निहित अर्थ के कारण और अधिक बढ़ गया। 1812 के अन्त में, जो वेनेजुएला की स्वतन्त्रता के लिए एक निर्णायक वर्ष था, यह विचार पहली बार नव ग्रानादा की कांग्रेस को दिए गए प्रस्ताव में सुझाया गया : 'कोलम्बिया की स्वतन्त्रता का प्रतीक, काराकास एक नए जेरुसलेम की तरह देशभक्त गणतन्त्रवादी नए योद्धाओं द्वारा ही पुनर्जीवित किया जा सकता है। ये वे व्यक्ति होंगे जो वेनेजुएला मे क्रूरता के शिकार व्यक्तियों की परिस्थितियों को अनुभव कर अपने कैदी बधुओं को स्वतन्त्र कराने के लिए दृढसंकल्प होंगे।'[65] कुछ वर्ष बाद जब विपत्तिवश वह वापिस कुन्दिनामारका लौटे तो उन्होंने प्रख्यात पाम्पलोना घोषणा मे कहा : 'मैं महज एक सैनिक हूं जो इस भ्रातृवत् राष्ट्र को अपनी सेवाएं अर्पित करने आया है।' 1818 मे अंगोस्तुरा से उन्होंने नव ग्रानादा की जनता को उत्साह एवं कृतज्ञता से भर संम्बोधित किया : 'अपने प्रयासों को अपने बन्धुओं के प्रयासों से मिला दीजिए : वेनेजुएला के साथ मिलकर मैं आपको उसी तरह स्वतन्त्र कराने आ रहा हूं जैसे विगत वर्षों में आप ने वेनेजुएला को स्वतन्त्र कराने मे मेरा साथ दिया था।' गम्भीर विवादों के बाद 1826 में उन्होंने कोलम्बिया की समस्त जनता को प्रेम और एकता का संदेश दिया : 'पुन: मैं आपको अपनी सेवाएं, एक भाई की सेवाएं अर्पित करता हूं। मैंने यह ढूंढने का प्रयास नही किया है कि किसने अपना कर्तव्य नही निभाया। मैं यह कभी नहीं भूला हूं कि आप मेरे भाई और सैनिक-सहयोगी हैं। मैं आप सबका'''नव ग्रानादा और वेनेजुएला की जनता का, न्यायिक और अन्यायिक का, स्वतन्त्र सेना का और महान गणतन्त्र के सभी नागरिकों का आलिंगन करता हूं।' 2 मई 1820 को उन्होंने चिले की सरकार को कोलम्बिया में उस समय लागू संविधान की एक प्रति भेजी, जिससे चिले की जनता को उस प्रणाली का आभास हो जिसके द्वारा कोलम्बिया के उनके भाईयों पर शासन किया जाता है। उन्होंने ओ' हिगीन्स को सदा सम्मान दिया और अगस्त 1821 में उन्होंने चिले की सेनाओं का कोलम्बिया की सेनाओं

में विलय करने का प्रस्ताव करने के लिए चिले के नेता को लिखा : 'जहां कहीं ये सैन्य भाई परस्पर मिलेंगे, वहीं स्वतन्त्रता के पुष्प उभरेंगे जो अमेरिका के हर सिरे तक पहुंच जाएंगे।'

रिवर प्लाते के संयुक्त राज्यों के सर्वोच्च तानाशाह को 4 फरवरी 1821 को बोलीवार ने एक पत्र में इसी आशा का पुनः परिचय दिया : 'मेरा एकमात्र उद्देश्य आपके प्रति कोलम्बिया की स्वामिभक्ति का आश्वासन देना है। मुझे आशा है कि हमारे सम्बन्धों में एकता और मित्रता की वृद्धि होगी, दो विभिन्न राष्ट्रों के मध्य नही, अपितु परस्पर सहयोगी दो भाइयों के मध्य। उन्होंने राजदूत अलवेंर और दियाज़ वेलेस को बताया : 'अर्जेंटीनावासियों को हम आश्वासन देते हैं कि भविष्य में हमारे हृदय कभी भी उनके भाग्य के प्रति उदासीन नही होंगे और हमारे हित और सद्भावनाएं राष्ट्र को समर्पित होंगे।' उन्होंने एक्वादोरवासियों के प्रति भी ऐसी ही भावनाओं को प्रदर्शित किया। पोतोमी अभियान प्रारम्भ करने से पूर्व उन्होंने अपना अभिप्राय कांग्रेस को स्पष्ट किया : बिना किसी देरी के 'कोलम्बिया के आखिर तक पहुंचना, एक्वादोर के निवासियों को स्वतन्त्र कराना और फिर कोलम्बिया का भाग बनने के लिए उन्हें निमन्त्रण देना। आशा है कि आप मुझे उन लोगों को एकता के सूत्र में बांधने की अनुमती देंगे जिन्हें भाग्य और प्रकृति ने हमें भाई-स्वरूप सौंपा है।' यह 3 अक्तूबर 1821 की बात है, और एक सप्ताह बाद उन्होंने मैक्सिको के संदर्भ में ऐसे ही विचार व्यक्त किए : 'आयिए, कोलम्बिया और मैक्सिको को हाथ में हाथ डाले विश्व-मंच पर प्रस्तुत होने का अवसर दें, साथ ही हृदयों का भी मिलन हो।' यही भावनाएं गौल द्वारा 1821 में कोलम्बिया के दूत सान्ता मारिया और मेसकेरा को दिए गए निर्देशों में देखने को मिलती हैं : जिस संघ की प्राप्ति का प्रयास वह कर रहे हैं इसका गठन मात्र 'सुरक्षा और आक्रमण' के लिए एक साधारण संगठन की तरह नहीं किया जाना चाहिए। इसे जनता की स्वतन्त्रता का विरोध करने के लिए यूरोप में हाल ही में गठित संगठन से अधिक घनिष्ठ होना चाहिए। हमारा संगठन भाईयों का समाज होना चाहिए'''मानव इतिहास द्वारा कुछ समय के लिए पृथक'''लेकिन विदेशी शक्तियों के आक्रमण का सामना करने में सक्षम।'[66] जब बोलीवार ने पेरू के राष्ट्रपति उनानुए को संबोधित किया तो उन्होंने 1821 में अर्जेंटीना को भेजे संदेश को दोहराया : 'हमारे गणतन्त्र इस तरह से जुड़े हुए होंगे कि वे पृथक राष्ट्र नही, अपितु दो भाइयों की तरह दिखाई देंगे, उन सब बंधनों से बंधे हुए जो हमें इतिहास से जोड़ते है, इस अन्तर के साथ कि तब हमारा प्रशासन एक अत्याचारी के हाथों में था जबकि अब हम स्वतंत्र और एक हैं, यद्यपि हमारे कानून और सरकारें भिन्न हैं।'[67]

बोलीवार के बन्धुत्व के विचार संयुक्त राज्य अमेरिका के नागरिकों पर

भी लागू होते थे जिन्हें जमैका पत्र में 'उत्तर के हमारे भाई' कहा गया था। इसी तरह के विचार 1819 की एक सरकारी टिप्पणी में उभरे। अन्ततः 30 मार्च 1830 को जब वह बोगोता में ब्राजील के राजनयिक प्रतिनिधियों से मिले तो बोलीवार ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए कहा कि रियो दे जेनेइरो के एक राजदूत का आगमन हमारे पड़ौसी और बन्धुवत् राष्ट्रों के मध्य सर्वोत्तम मित्रता का आश्वासन है।

यह कहा जाना चाहिए कि लातीनी अमेरिकी राष्ट्रों की एकता का विचार विश्व-बंधुत्व के विचार के विपरीत नहीं है, न ही राष्ट्रों के मध्य सहयोग और विश्व-शांति जैसे लक्ष्यों के विरुद्ध है। इन लक्ष्यो की प्राप्ति में छोटे समूहों का संगठन एक महत्वपूर्ण प्रारंभिक कदम है। इस विषय पर बोलीवार की आप्रवासी नीति पर ध्यान देना उपयुक्त होगा। वेनेजुएला में बोलीवार का प्रथम सार्वजनिक कार्य बिना किसी भिन्न-भेद के विदेशियों को निमंत्रण देना था। 'सर्वप्रथम हमें विदेशियों को पुनः निमंत्रित करना चाहिए, चाहे उनकी राष्ट्रीयता या व्यवसाय कुछ भी हो, ताकि वे आएं और इन राज्यों में सरकार के सीधे संरक्षण में रुककर बस जाएं। हम यह संरक्षण इस तथ्य को ध्यान में रखकर दे रहे हैं कि हमारी उपजाऊ भूमि, इसके उत्पादनों की विविधता, हमारा अच्छा मौसम और व्यक्तिगत तथा सम्पत्ति की सुरक्षा का आश्वासन देने वाला प्रशासन विदेशियों को वे सब लाभ या सुविधाएं प्रदान करेगा जिनकी आशा वे अपने राष्ट्र में शायद ही कर सकते थे।' वर्षों बाद पेरू में उन्होने विदेशियो को व्यावसायिक सुविधाएं प्रदान कीं ताकि वे भी पेरूवासियों की भांति कानून का संरक्षण प्राप्त करें और समान कर दें, क्योंकि उनके पथ में बाधाएं खड़ी करना गणतंत्र के विरुद्ध तथा प्रगतिशील राष्ट्रो के आचरण के विपरीत होगा। आश्वासन में बोलीवार का अभिप्राय रिक्त क्षेत्रों की जनसंख्या में वृद्धि करना और विकास की गति तीव्र करने के लिए विकसित राष्ट्रों के उदाहरण का अनुसरण करना था। उन्होने कहा : 'वेनेजुएला ने उन सब व्यक्तियों को राष्ट्रीयता जाने बिना निमंत्रित किया है जो हमारी शरण मे रहना चाहते हैं और अपने व्यवसाय या ज्ञान द्वारा हमारी सहायता करना चाहते हैं। अंगोस्तुरा कांग्रेस ने विदेशियों और नागरिको की समानता पर बल दिया। नागरिकता प्राप्त करने का तरीका संभवतः अमेरिका के समग्र महाद्वीपीय इतिहास मे सर्वाधिक नरम था। 1813 में बोलीवार ने घोषणा की कि स्वतंत्रता सेना के अधीन लड़ने वाला प्रत्येक विदेशी, नागरिक है। 1815 में उन्होंने हिसलोप से अमेरिका के उन क्षेत्रों के विषय में बातचीत की जो यूरोप निवासियों को यहां आकर बसने का निमंत्रण देने के लिए मात्र अपनी स्वतंत्रता की प्रतीक्षा कर रहे हैं जिससे अमेरिका में कुछ ही वर्षों में एक और यूरोप गठित हो जाए।'

1818 में उन्होंने सेनापति जोह्न दे एवेरेक्स को उन गुणवान विदेशियों के प्रति अमेरिकी सहानुभूति का स्मरण कराया जो दासता के स्थान पर स्वतंत्रता को

प्राथमिकता देते थे और जो अपना राष्ट्र छोड़कर विज्ञान, कला, व्यवसाय, कौशल और गुणों को साथ लेकर हमारे महाद्वीप में आए थे।' 1824 में उन्होंने आप्रवासन और विकास के बीच संबंधो पर विस्तार से अपने विचार व्यक्त किए : 'हमें अवश्य यूरोप और उत्तरी अमेरिका से आप्रवासन को प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे ये विदेशी यहां अपनी कला और विज्ञान के साथ आकर बसेंगे। एक स्वतंत्र सरकार, निःशुल्क विद्यालय और यूरोपीयों तथा उत्तरी अमेरिकियों के साथ अंतर-जातीय विवाह सहित ये लाभ हमारे महाद्वीप की रूपरेखा बदल देंगे और इसे अधिक सम्पन्न और कुशल बना देंगे।'[68] वह उन विदेशियों को चाहते थे जो भौतिक विकास का सृजन करेंगे; उन्हें विश्वास था कि भविष्य में यूरोपीय और एशियाई आप्रवासन द्वारा हमारी सरकार सुदृढ़ होगी और व्यवस्था स्थापित होने के साथ-साथ जनसंख्या में भी अवश्य ही वृद्धि होगी।'[69] पैदरी गौल को अपने विचार समझाते हुए बोलीवार ने उन्हें आवश्यक प्रचार कार्य प्रारंभ करने का निर्देश दिया। 'हमारे बीच बसने के इच्छुक ईमानदार विदेशियों के लिए सरकारी संरक्षण जनसंख्या की कमी पूरी करेगा तथा हमें गुणी नागरिक प्राप्त होंगे। कृपया इन विचारों को प्रतिष्ठित विदेशियों में फैला दीजिए और उन्हें उनको मिलने वाले लाभों से अवगत करा दें।' स्पेनवासियों का भी उन्होंने स्वागत किया : 'अगर आप कोलम्बियावासी होना चाहते हैं तो आपको कोलम्बिया का हो जाना चाहिए क्योंकि हमें अपने परिवार की वृद्धि के लिए भाइयों की आवश्यकता है।' यह कहने की आवश्यकता नहीं कि बोलीवार के लिए कोई जाति-भेद न था। ओ' लेरी ने बोलीवार के हैती प्रवास और पेतीओन के साथ उनके संबंधों का गलत अर्थ निकाला, जैसा कि हाल ही में खोजे गए दस्तावेज़ों से स्पष्ट होता है। उदाहरण के लिए, बोलीवार ने हैती के नेता को एक पत्र में लिखा था : 'मुझे आशा है कि हमारे राष्ट्र के सुरक्षा संबंधी समान विचारों से मुझे लाभ पहुंचेगा।' उस समय के एक इतिहासविद् ने लिखा : 'हैती के नेताओं के साथ उनके संबंधों के परिणामस्वरूप संभावित व्यग्रता पर मुक्तिदाता द्वारा दिखाई जाने वाली हिचकिचाहट के संदर्भ में पत्र स्पष्ट करता है कि वह इससे भयभीत नहीं थे, अपितु उन्होंने इस संगठन का स्वागत मुक्ति आंदोलन में अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के रूप में किया था। राष्ट्रीय अधिकारों की सुरक्षा के सम्बंध में पेतीओन और उनके विचारों की समानता पर बोलीवार की घोषणा जातीय प्रश्न के प्रति उनका दृष्टिकोण स्पष्ट करती है।'[70] आमतौर पर बोलीवार शारीरिक जातीय लक्षणों को महत्वहीन मानते थे। वह त्वचा के रंग को संयोग समझते थे। उनकी आप्रवासन नीति रंग या कपाल के माप के स्थान पर नैतिक गुणों पर आधारित थी। वह लातीनी अमेरिकी जनता के विषम जातीय संगठन से भली-भांति परिचित थे, जिसे उन्होंने लाभप्रद बताया।[71] 'मैं अमेरिका को कोषावस्था में पाता हूं', उन्होंने 1822 में कहा। 'इसके निवासियों के

शारीरिक जीवन में एक परिवर्तन होगा : अंततः पुरानी जातियों में से एक नई जाति उदय होगी जो समजातीय लोगों को जन्म देगी।'[72] अंगोस्तुरा में उन्होंने प्रवृत्त किया : 'हमारे नागरिकों का रक्त भिन्न है, आयिए इसे मिलकर एक कर दें।'[73]

बोलीबार ने इस तरह जातीय एकता के माध्यम से लातीनी अमेरिका की एकता प्राप्त करने का प्रयत्न किया, लेकिन वह इससे भी आगे चले गए : 'उनका विश्वास था कि अमेरिका अपना क्रांतिकारी उत्साह अफ्रीका तथा एशिया तक पहुंचा कर शेष विश्व पर यूरोप का नियंत्रण समाप्त कर सकता है। उनका लक्ष्य एक ऐसा संगठन प्राप्त करना था जो अभिनव था, जिसका लक्ष्य एक संयुक्त विश्व था जहां वे सिद्धांत सतारूढ़ होंगे जिन्होंने अमेरिका को जन्म दिया। समय आने पर शायद एक नए राष्ट्र का उदय होगा — एक संघीय राष्ट्र का।' यह बात ध्यान देने योग्य है कि जहां तक प्रत्येक राज्य की आंतरिक नीतियों का प्रश्न था, बोलीवार एक दृढ़ केंद्र के पक्ष में थे, लेकिन अंतर-अमेरिका सम्बंधों में वह संघ के हिमायती थे। उन्होंने इन दो भिन्न समस्याओं को लिया और महाद्वीपीय संघ को राष्ट्रीय स्तर के संघ से भिन्न मानते हुए दो भिन्न समाधान प्रस्तुत किए : 'पहले से तात्पर्य था विशाल शक्तियों का संगठन, और दूसरा शक्तियों का भागों में विभाजन।'

बोलीवार द्वारा सुझाया गया अमेरिका संघ अतुलनीय था। यह आशा की गई थी कि इसकी एकबद्ध विदेश नीति और आंतरिक सुरक्षा के लिए परस्पर सहयोग होगा : 'नव विश्व स्वतंत्र राष्ट्रों में विभाजित होगा। इन्हें जोड़ने वाला समझौता इनकी विदेश नीति को एकबद्ध करेगा और एक स्थायी कांग्रेस के रूप में व्यवस्था को जन्म देगा'''सभी राष्ट्रों की सेनाएं बाह्य आक्रमण का सामना करने के लिए सदस्य राष्ट्र की सहायता करेंगी।' किन्तु एक समान अधिशासी की दृष्टि से यह एक संघ न था। वस्तुतः यह इस दृष्टि से एक संघ था कि इसके अंतर्गत विभिन्न राज्यों के मध्य तथा प्रत्येक राज्य में आंतरिक व्यवस्था कायम रखी जा सकेगी। यह महसूस करते हुए कि पुराने नाम नई वास्तविकता को व्यक्त करने में असमर्थ हैं, लेकिन इसे तुल न देते हुए, बोलीवार ने दोनों शब्दों, 'राज्य-मंडल' और 'परिसंघ' का समान प्रयोग किया और एक अवसर पर उन्होंने कहा कि राजनीतिक या वैधिक संज्ञाओं के स्थान पर वह नैतिक और सामाजिक कारणों से 'संघ' शब्द को प्राथमिकता देते थे। अगस्त 1826 में पनामा कांग्रेस की असफलता द्वारा मोह-भंग होने के बाद उन्होंने अपना ध्यान कोलम्बिया, पेरू और बोलीविया की एकता के सुलभ लक्ष्य पर केंद्रित किया। ये राष्ट्र, जिन्हें उन्होंने स्वतंत्रता दिलाई थी, मिलकर लगभग 5,000,000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते थे जो यूरोप के क्षेत्रफल के आधे के बराबर था और जनसंख्या की दृष्टि से लातीनी अमेरिका का काफी बड़ा भाग था।

इसका यह अर्थ नहीं कि उन्होंने संपूर्ण राष्ट्र की एकता का विचार त्याग

दिया था। पनामा कांग्रेस में पारित प्रस्तावों पर कोलम्बिया के अतिरिक्त अन्य राष्ट्रों द्वारा हस्ताक्षर न किए जाने के बावजूद उन्होंने अपने सिद्धांतों में विश्वास नही खोया। अगस्त 1828 में मैक्सिको के राष्ट्रपति को लिखे पत्र में इसका प्रमाण मिलता है : 'कोलम्बिया कभी भी अमेरिकी संघ का परित्याग नही करेगा। संयुक्त राज्य मैक्सिको के गणतंत्र में अपने भाइयों तथा सहयोगियों के सहयोग से आश्वस्त कोलम्बिया कभी भी उपयुक्त समय तथा परिस्थितियों में समान हितों की चर्चा करने के लिए राजदूतों का अधिवेशन बुलाने से नहीं चूकेगा।'[74] एक-बद्धता के अंतिम प्रयास में, बानाशाही के दौरान उन्होंने पैंदरो गौल और मिगुएल सान्ता मारिया को कोलम्बिया के राजदूतों के रूप में द्वितीय अमेरिकी अधिवेशन में भेजा। गणतंत्र को बचाने के इस व्यर्थ प्रयास से एकता के विचार को ठोस वास्तविकता प्रदान करने के उनके प्रयासों का अंतिम अध्याय समाप्त हो गया क्योंकि बोलीवार तब तक मृत्यु के निकट थे।

अपने समस्त सार्वजनिक जीवन में एकता के विचार ने उन्हें व्यस्त रखा। यह इंग्लैंड के एक समचार पत्र में उनके लेख से स्पष्ट होता है। 'वेनेजुएला की जनता अमेरिकावासियों को संघ में सम्मिलित होने का निमंत्रण देगी। पहले से ही ऐसे कार्यक्रम के लिए तैयार ये राष्ट्र तुरंत काराकास के उदाहरण का पालन करेंगे।' 'देशभक्त समाज' को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा था : 'एकता की आवश्यकता से सर्वाधिक परिचित लोग किस तरह विभाजन का समर्थन कर सकते हैं? हमारी इच्छा यह है कि हमारी स्वतंत्रता प्राप्ति के हमारे गौरवमयी लक्ष्य मे संघ को प्रभावशाली होना चाहिए तथा हमें प्रेरित करना चाहिए : आराम की खातिर एकता कल तक एक कमज़ोरी थी, आज एक अपराध है।'[75] कारताख़ेना आलेख में उन्होंने चेतावनी दी : 'स्पेनिश शस्त्र नही, अपितु हमारे आंतरिक विभाजन हमें पुन: दासता की तरफ ले जाएंगे।'कारूपानो आलेख में इस आशय का उल्लेख है कि इन्हीं विभाजनों के कारण प्रजातांत्रिक प्रणाली स्थापित करने के द्वितीय महान प्रयास को असफलता मिली।' इस तरह लगेगा मानो आकाश हमारी शर्म और शान पर कह रहा है कि हम पर विजयी हमारे भाई हैं, और मात्र हमारे भाई ही हम पर विजय पा सकते हैं।' जमैका पत्र में उन्होंने लिखा : 'एकता, एकता ही हमारा नारा होना चाहिए, और उन्होंने औकान्या अधिवेशन को याद दिलाया कि 'कोई भी राष्ट्र एकता कीं अनुपस्थिति में सम्मान प्राप्त नहीं कर सका।' अपने सार्व-जनिक जीवन के अंत में, उनका भाषण अत्यधिक करुणामय था : 'मेरे राजनीतिक जीवन के अंत में अंतिम समय के लिए मुझे सुने : कोलम्बिया के नाम पर मैं आपसे संगठित रहने के लिए कहता हूं 'प्रार्थना करता हूं।' महाद्वीप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक बोलीवार ने एकता का प्रतिनिधित्व किया। उदाहरण के लिए ख़ोसे ख़ेरवासियो आरतीगास ने कहा : 'प्राकृतिक और पारस्परिक हितों द्वारा

बंधे हम उन अत्याचारियों के विरुद्ध संघर्ष करेंगे जो हमारे पवित्र अधिकारों को कुचलने का प्रयास करेंगे।' ख़ोसे केसिलो देल वाल्ले ने इस विचार का समर्थन किया और अपने और आगामी पीढ़ी के भाग्य को एक परिपूर्ण संघ का संरक्षण प्रदान करने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया, जो हमारे पारस्परिक हितों को भी पूरा करेगा और हमारी हार्दिक इच्छाओं की तरह ठोस आधार की स्थापना करेगा।'[76]

दासता-विरोधी विधेयक

हम देख चुके हैं कि लातीनी अमेरिका में औपनिवेशिक समाज में असमानता व्याप्त थी और हम असमानता के विरुद्ध उस संघर्ष को खोज चुके हैं जिसका सोलहवीं शताब्दी में जन्म हुआ। पिकोरनेल, गौल और एस्पाना ने न सिर्फ विधिगत समानता का प्रस्ताव किया बल्कि उन्होंने जातीय समानता की भी बात की। पिकोरनेल ने घोषणा की : 'निःसंदेह, मानवता के विपरीत दासता का उन्मूलन कर दिया गया है।' इसी तरह इंडियन वर्ग द्वारा दिया जाने वाला कर भी समाप्त कर दिया गया और उन्हें जीविका चलाने के लिए भूमि दी जाएगी, जिससे वे भी अन्य नागरिकों की भांति प्रसन्न रह सकें।'[77] कारकास की प्रथम क्रांतिकारी सरकार ने समानता के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए। इसने अनेक सामाजिक वर्गों के विशेषाधिकारों, जैसे विशेष कानून तथा विशेष न्यायाधीश के प्रवधान को समाप्त कर दिया। अनुवांशिक उपाधियों और सम्मानों का भी उन्मूलन कर दिया गया। 'सम्राट' और अन्य सम्मान-सूचक शब्दों के स्थान पर 'नागरिक' और सामान्य स्पेनिश संबोधन 'उस्तेद' का प्रयोग किया गया।

प्रथम गणतंत्र के अधीन पारदोस वर्ग की स्थिति में कुछ सुधार हुआ लेकिन, यद्यपि वे राष्ट्र के बहुमत का प्रतिनिधित्व करते थे, फिर भी उन्हें सार्वजनिक मामलों से दूर रखा गया और लंबे अंतराल से जिन घोषणाओं की प्रतीक्षा की जा रही थी, उनके लिए कोई आश्वासन नहीं दिया गया। सर्वोच्च परिषद ने कम से कम कार्य किया : इसने इंडियन वर्ग के कर को समाप्त कर दिया, लेकिन इसने दासता या दास व्यापार का उन्मूलन नहीं किया यद्यपि कुछ समय बाद इसने इन राज्यों में 'नीग्रो वर्ग के आयात पर रोक लगा दी और यह स्पष्ट कर दिया कि यह रोक उन अभियानों पर लागू नहीं है जिन्हें पहले से आज्ञा मिली हुई थी : ये आदेश इन अभियानों पर उनके लौटने के बाद ही लागू होंगे।'[78] मिरांदा ने पारदो वर्ग, नीग्रो वर्ग और दासों को भी 'देशभक्त समाज' में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया था। उनकी इच्छा अपने राष्ट्र में जन-समर्थन के लिए एक मंच की स्थापना करने की थी, जहां वह वस्तुतः एक अजनबी थे। यद्यपि उन्होंने कर-उन्मूलन और जातीय अत्याचारों को समाप्त करने का प्रस्ताव किया, फिर भी दासता-उन्मूलन के संबंध में कोई निर्णायक प्रस्ताव नहीं किया। 'काम्पाना एदमिराबले' के समय भा

बोलीवार का विश्वास था कि सैनिक सफलता सर्वाधिक महत्वपूर्ण थी। इसके अतिरिक्त, उनके गणतांत्रिक सिद्धान्त जनता की भौतिक आकांक्षाओं से परे थे। उनके गणतंत्र के धराशायी होने का कारण यही था कि जनता ने इसकी रक्षा नहीं की। जनता के पास ऐसा करने के लिए कोई कारण भी नहीं था, क्योंकि तब तक ये ठोस कार्यक्रमों और परिणामों की अनुपस्थिति में मात्र शब्द थे। उनका वेस्ट इंडीज़ में निष्कासन यद्यपि दुःखदायी तथा कठोर था, लेकिन इससे बोलीवार अपनी विगत असफलताओं के कारणों से अवगत हो गए। पेतीओन ने उन्हें इस विचार से महत्वपूर्ण सहायता दी कि मुख्य भूमि के अश्वेत दास स्वतंत्र कर दिए जाएंगे। पोर्ते-औ-प्रिंस में इस मुलाकात का लोस केयोस और जैकमेल अभियानों के बाद वेनेज़ुएला क्रांति की दिशा पर अत्यंत प्रभाव पड़ा। क्रांति और जीवंत हो गई। शहीदी आंदोलन के बुरे परिणामों के साथ, मोन्तेवेरदे और बोवेस की सफलता एक शक्तिशाली पाठ था। जैसे ही बोलीवार 23 मई 1816 को विला देल नोरते से मारगारिता पहुंचे, उन्होंने दासता के अंत की घोषणा की : 'वेनेज़ुएला में अब दास नहीं होंगे सिवाय उनके जो दास बनकर रहनाचाहते हैं। वे सब जो स्वतंत्रता का पक्ष लेते हैं, अपने पवित्र अधिकारों की सुरक्षा के लिए शस्त्र उठाएंगे और नागरिक बनेंगे।'[79]

10 दिन बाद कारूपानो में उन्होंने एक अनौपचारिक घोषणा में कहा : 'न्याय, राजनीतिक सामंजस्य और हमारे राष्ट्र द्वारा इस प्राकृतिक अधिकार की मांग किए जाने को देखते हुए मैं तीन सौ वर्षों से पीड़ित दासों के लिए स्वतंत्रता की घोषणा करता हूं।' एक मास पश्चात अधिकतम दास जनसंख्या वाले राज्य, काराकास के निवासियों को संम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा : दासता की पीड़ा झेलता वर्ग अब से स्वतन्त्र हैं। प्राकृतिक न्याय और राजनीतिक सामंजस्य दास-मुक्ति की मांग कर रहे हैं। आज से वेनेज़ुएला में सिर्फ एक ही वर्ग होगा : 'नागरिकों का वर्ग'। राजनीतिक परिस्थितियों को देखते हुए न्यायोचित क्रांति ने दास-मुक्ति के लिए सिर्फ एक शर्त रखी : वे अपने अधिकारों की रक्षा हेतु संघर्ष करेंगे। 'क्या यह न्यायोचित है कि दासों को स्वतन्त्र कराने में मात्र स्वतन्त्र व्यक्ति ही अपना बलिदान दें ?' बोलीवार यों तो बिना किसी शर्त के मुक्ति के पक्ष में थे। अंगोस्तुरा कांग्रेस को सम्बोधित करते हुए उन्होंने इन विचारों का परिचय दिया : 'मैंने मानवता के ईश्वर से संरक्षण मांगा और तब प्रकाश ने अंधकार को समाप्त कर दिया, दासता ने अपनी बेड़ियां तोड़ डालीं और वेनेज़ुएला ने स्वयं को नए, आभारी पुत्रों के मध्य पाया, जिन्होंने दासता के साधनों को स्वतन्त्रता के साधनों में परिवर्तित कर दिया। जी हां, भूतपूर्व दास अब स्वतन्त्र व्यक्ति हैं : कठोर सौतेली मां के भूतपूर्व शत्रु अब अपने राष्ट्र के रक्षक हैं। इन प्रयासों के औचित्य, आवश्यकता और लाभों पर बल देने का कोई लाभ नहीं है'''आप जानते हैं कि कोई व्यक्ति प्राकृतिक, राजनीतिक और नागरिक कानूनों की अवहेलना किए बिना

दास भी नहीं बन सकता और स्वतन्त्र भी नहीं हो सकता।' अपने अन्य प्रयासों के परिणामों के प्रति, इस प्रयास की तुलना में जिसमें शेष सभी प्रयास निहित थे, बोलीवार उदासीन थे। 'मैं अपनी समस्त घोषणाओं तथा आदेशों के सुधार या खण्डन का कार्य आपके सर्वोच्च निर्णय पर सौंपता हूं : लेकिन मैं जिस प्रकार अपने या अपने गणतन्त्र के जीवन के लिए प्रार्थना करूंगा, उसी तरह मैं आपसे दासों की संपूर्ण मुक्ति के लिए विनती करता हूं।'

संविधान के लिए अपने प्रस्ताव मे बोलीवार ने स्वतन्त्रता को 'प्रत्येक नागरिक का सर्वोच्च परिषद के सदस्य के रूप में कानून के निर्माण में सम्मिलित होने के अधिकार' की तरह परिभाषित करते हुए संविधान में इन शब्दों के उल्लेख करने का प्रस्ताव किया : 'वास्तविक समानता कानून के निर्माण और कानून के पालन पर ही टिक सकती है, अर्थात् कानून बिना किसी भेदभाव के प्रत्येक पर समान रूप से लागू हो।'[80] निस्संदेह, जन सर्वोच्चसत्ता और वैधिक समानता के सिद्धांत व्यक्तियो के मध्य उपस्थित वास्तविक असमानता का खंडन नहीं हैं : कानून का लक्ष्य इस असमानता को ठीक कर समानता की ओर उचित दिशा मे भेजना है। जैसा कि बोलीवार ने कहा : 'जहां भी भौतिक असमानता है, वहां वैधिक समानता अत्यन्त आवश्यक है।'[81] दूसरे शब्दों में, बोलीवार के लिए समानता वैधिक निर्माण का परिणाम है, पहले से ही उपस्थित या मात्र कानून द्वारा पारित कोई प्रस्ताव नहीं। वह अपने समय से आगे थे, इस सिद्धांत से बंधे होने के कारण कि कानून एक ऐसा साधन है जिसका प्रयोग असमानता की क्षतिपूर्ति के लिए किया जाना चाहिए, यद्यपि बाद में यह सामान्यतः स्वीकार्य सिद्धांत बन गया।

कई तरह से यह विभाजक न्याय का प्रतीक था, जो सब के प्रति समान व्यवहार नहीं, अपितु नुकसान की क्षतिपूर्ति के लिए असमान व्यवहार के पक्ष में था। ये विचार बोलीवार की शेष विचारधारा में सही बैठते थे और आदर्श सिद्धांतों के स्थान पर ठोस वास्तविकताओं के लिए उनकी प्राथमिकता से मेल खाते थे। अंगोस्तुरा कांग्रेस में उन्होंने प्रसन्नता के साथ कहा कि वेनेजुएला ने समानता की घोषणा कर दी है और संविधान में सम्मिलित शब्दों का कारण समझाया : 'प्रकृति के व्याख्याकार के रूप मे संविधान के अन्तर्गत वेनेजुएला के निवासी पूर्ण राजनीतिक एकता का लाभ उठाते हैं। यद्यपि ऐसी समानता एथेंस, फ्रांस या अमेरिका का सिद्धांत नहीं रही है तो भी वर्तमान विभिन्नताओं को दूर करने के लिए हमें इसे प्रयोग में लाना है। सांसदो ! मेरा विचार है कि हमारी पद्धति का मूल सिद्धांत वेनेजुएला में स्थापित और प्रयुक्त समानता पर आधारित हैं।' अपने क्रांतिकारी विचारों द्वारा प्रोत्साहित वह यह अनुभव करने लगे थे कि दासता का उन्मूलन आवश्यक था। उन्होंने कहा : 'मेरे विचार में यह मूर्खता है कि स्वतन्त्रता के लिए क्रांति में ऐसे भी व्यक्ति हैं जो दासता को कायम रखना

चाहते हैं।' पैख़ ने उनके इस विचार को 1867 में प्रकाशित अपनी आत्मकथा में प्रतिध्वनित किया : 'यह सोचना कि किसी देश के निवासियों के एक भाग को दासता में रखकर उसे स्वतंत्र किया जा सकता है तो यह एक ऐसी मूर्खता है जिसके बोलीवार कभी शिकार न हुए होते।'[82] बोलीवार ने साबित किया कि उन्होंने अपना राजनीतिक पाठ याद कर लिया था : 'इतिहास के उदाहरणों से स्पष्ट है कि जो भी स्वतंत्र सरकार दासता जारी रखने की मुर्खता करती है उसे विद्रोह या उन्मूलन द्वारा दंडित किया जाता है।'[83]

बोलीवार ने इंडियन वर्ग को जनसंख्या का पीड़ित भाग मानते हुए इच्छा व्यक्त की कि यह वर्ग क्रांतिकारी प्रयासों से ठोस लाभ प्राप्त करे। इंडियन वर्ग के पक्ष में उन्होंने प्रथम घोषणा 1818 में की : 'मैं आपका ध्यान इस आदेश की ओर दिलाना चाहता हूं कि इंडियन वर्ग को स्वयं के कार्यों के लिए सप्ताह में तीन दिन दिए जाएं; हमें यह अनुभव करना चाहिए कि अब वे कापूचिन काल के दासों जैसे नहीं हैं, अपितु स्वतंत्र व्यक्ति हैं।'[84] 20 मई 1820 को एल रोसोंरियो में उन्होंने अनेक विकसित कानूनों का गठन किया : 'न पादरी, न राजनीतिक परिषद और न ही कोई अन्य व्यक्ति 'ख़ुएस पोलितिको' की स्वीकृति और उपस्थिति में की गई संविदा में व्यक्त अनुबद्ध वेतन दिए बिना किसी भी परिस्थिति में इंडियन श्रम प्रयोग नहीं कर सकेगा। इस कानून का उल्लंघन करने पर श्रम के वेतन की दोगुना राशि का भुगतान करना होगा : शिकायत आने पर ख़ुएस पोलितिको न्यायिक पक्ष का साथ लेते हुए इस जुर्माने के भुगतान की मांग करेगी : जहां 'ख़ुएस' स्वयं दोषी हों तब 'गोबेरनादोरेस पोलितिकोस' जुर्माने को प्राप्त करेगी।' पादरियों द्वारा धर्म का प्रयोग इंडियन वर्ग के शोषण के लिए किया जाता था। बोलीवार इस तथ्य से परिचित थे जिस कारण उन्होंने अनेक कठोर कदम उठाए : 'इस क्षण इंडियन वर्ग से धार्मिक संस्कारों के लिए वृत्ति की मांग करना या उन्हें संतों के लिए भोजन हेतु भुगतान करने के लिए बाध्य करना, इत्यादि प्रथाएं समाप्त कर दी जाएं क्योंकि पुजारियों को राज्य द्वारा वेतन दिया जाता है : यह चर्च के सिद्धांतों तथा धर्म के विपरीत है। उन पुजारियों के साथ कठोरता का व्यवहार किया जाएगा जो वैधिक उल्लंघन करेंगे। 'ख़ुएसेस पोलितिकोस' को पादरियों के व्यवहार पर कड़ी नजर रखनी है और इस क्षेत्र में गलत गतिविधियों की सूचना सरकार को देनी है जिससे उपयुक्त कदम उठाए जा सकें।' इसने इंडियन वर्ग के लिए अधिकार-पत्र की व्यवस्था की : धारा 15 उन अधिकारों की घोषणा थी जो बोलीवार के राजनीतिक प्रयासों को प्रकट करते : 'गणतंत्र के अन्य स्वतंत्र व्यक्तियों की तरह इंडियन वर्ग अपने पारपत्रों की सहायता से इधर-उधर आ जा सकते हैं, अपने फलों तथा अन्य उत्पादनों का व्यवसाय कर सकते हैं, और अपने उद्योग तथा कौशल का उपयोग बिना किसी रोक के कर सकते हैं।'[85]

सामाजिक समानता के लक्ष्य वाले प्रयासों की श्रृंखला में अगला कदम बोलीवार द्वारा कूकुता कांग्रेस को संबोधित करना था : 'आज से कोलम्बिया में दासों की संतान स्वतंत्र है क्योंकि उनके स्वामी केवल ईश्वर और उनके माता-पिता हैं; न ईश्वर और न ही उनके माता-पिता उन्हें अप्रसन्न देखना चाहते हैं।' अपने निजी कानूनों द्वारा और इससे भी बढ़कर प्रकृति के नियमों द्वारा कांग्रेस उन समस्त कोलम्बियावासियों की संपूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा कर सकती है जिनका जन्म कोलम्बिया में हुआ है। इस तरह सम्पत्ति के अधिकारों, राजनीतिक अधिकारों और प्राकृतिक अधिकारों का समाधान हो सकता है। बोलीवार ने कोलम्बिया कांग्रेस पर उस क्षण अपने प्रभाव का लाभ उठाते हुए दासता-उन्मूलन का प्रस्ताव किया : 'विजय के इस क्षण में मुक्ति-सेना द्वारा स्वतंत्रता के लिए खून बहाकर काराबोबो संग्राम की विजय के पुरस्कार रूप में उन्होंने सिर्फ इसकी मांग की।'[86] सामान्यतः कहा जा सकता है कि उन्होंने उन्मूलन सम्बन्धी मामलों में अपने विचार व्यक्त करने का कोई अवसर नहीं खोया। यह उन्हीं का प्रभाव था कि पनामा कांग्रेस के कोलम्बियाई राजदूतों को निर्देश दिए गए कि उनके ऊंचे लक्ष्यों में दासता-उन्मूलन को भी सम्मिलित किया जाए। 'अफ्रीका के साथ दास-व्यवसाय और दासता-उन्मूलन के पक्ष में सभ्य विश्व द्वारा प्रदर्शित रुचि की मांग करती है कि यह परिषद भी इस विषय पर विचार करे। यह प्रश्न हमारे गणतंत्रों को अपने सिद्धान्तों और उदारता का उदाहरण प्रस्तुत करने का शानदार अवसर दे रहा है।' इस तरह पनामा में इसके शिष्टमंडल पर 'अफ्रीका के साथ दास-व्यवसाय के उन्मूलन और इसमें पाए गए दोषियों के साथ अपराधियों जैसा व्यवहार किए जाने का भार सौंपा गया।'[87]

बोलीवार के प्रयास पेरू में विशेषकर लाभकारी सिद्ध हुए क्योंकि उस देश में सोना और दास विद्यमान थे जो किसी भी न्यायप्रिय और उदार सत्ता के प्रतिकूल थे। 24 मार्च 1824 को तरुखिल्लयो नगर में बोलीवार ने एक विचित्र किन्तु महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया। उन्होंने घोषणा की कि 'जब भी दास अपने स्वामियों में परिवर्तन चाहें, उन्हें संरक्षण दिया जाए चाहे यह मात्र उनके मन में उठी कोई लहर ही क्यों न हो।' उनके सचिव ने यह निर्णय विभाग प्रमुख को दिया : 'मुक्तिदाता आपको निर्धन दासों को हर संभव सरकारी संरक्षण देने का आदेश देते हैं, क्योंकि स्वामियों के परिवर्तन से इनको वंचित करना घोर अत्याचार होगा। इस आदेश द्वारा मुक्तिदाता दासों द्वारा अपने स्वामी चुने जाने के विरोधी सभी कानूनों को अवैधानिक घोषित करते हैं।'[88] यह विचित्र तथ्य है कि उस समय तक दासता के लिए मानसिक रूप से तैयार बोलीवार ने दासता-उन्मूलन के स्थान पर स्वामी-परिवर्तन के मामूली अधिकार का उल्लेख किया। उन्होंने बाल-अवस्था में इस अधिकार का जिक्र किया था, और उनके संरक्षक, कारलोस

पालामियोस ने उनके विचार पर टिप्पणी की थी : 'इस आयु के लिए अनुचित, गलत और घातक'''क्योंकि एक अनभिज्ञ जनोत्तेजक के अतिरिक्त कोई अन्य यह नहीं कह सकता कि दास अपने स्वामी को चुनने के लिए मुक्त हैं और अपनी पसंद चुनने में सक्षम हैं । यह धारणा अगर स्थापित और प्रचलित हो गई तो यह हमारे गणतंत्र को पूर्णतः अस्तव्यस्त कर दुखदायी क्षति पहुंचाएगी । इसी कारण मैं इस विचार को हमारी सुघड़ सरकार और संसदीय प्रणाली के विरुद्ध मानता हूं ।'[89]

पुनः तरुखिल्लयो में 8 अप्रैल 1824 को बोलीवार ने सम्पत्तिहीन इंडियनों के मध्य समान भूमि के पुनर्विभाजन की व्यवस्था की । उनका लक्ष्य नए नगरों की स्थापना करना था; इस सार्वजनिक लक्ष्य के अतिरिक्त उन्होंने कहा कि कोई भी इंडियन अपने भूमि के भाग से वंचित न हो । 4 जुलाई को वह इन्कास के वंशजों को उनके अधिकार पुनः दिलवाने के कार्य में और भी अग्रसर हुए । वह कुसको नगर में 9 दिन के लिए रहे और इसने उनको अत्यन्त प्रभावित किया : 'प्रत्येक वस्तु मेरा मस्तिष्क ऊंचे आदर्शों और विचारों की तरफ मोड़ती प्रतीत होती है : बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप या अपराधों के इतिहास के संक्रमण के, अपनी स्वयं की आंतरिक लहरों से प्रेरित, सहज प्रकृति की उपस्थिति ने मेरी आत्मा को मोह लिया है । यहां सब कुछ मौलिक और शुद्ध है ।'[90] संभवतः इसी प्रेरणावश उन्होंने यह घोषणा की थी : 'कोई भी राज्य-कर्मचारी पेरू के इंडियनों से वेतन की संविदा के बिना श्रम की मांग नहीं कर सकता । विभागों के प्रमुख, इन्तेनदेन्ते, राज्याध्यक्षों, न्यायाधीशों, पुजारियों, धनिको और उनके सहयोगियों, भूमि-स्वामियों, खदान-स्वामियों और कपड़ा मिल के स्वामियों को घरेलू या बंधुआ-श्रम के लिए इंडियनों के उनकी इच्छा के विरुद्ध प्रयोग की चेतावनी दी जाती है'''खदानों और कपड़ा मिलों के श्रमिकों का दैनिक वेतन का संविदानुसार भुगतान किया जाना चाहिए जिससे उन्हें धन के स्थान पर अन्य पदार्थ स्वीकारने और सामान्य स्तर से कम वेतन लेने के लिए बाध्य न किया जाए ।'[91] इन कानूनों के साथ सामान्य सावधानियों को जोड़ा गया था ताकि इनका पालन किया जाए; उल्लंघन की स्थिति में सरकारी जांच हो सकती थी ।

बोलीवार ने यह भी घोषणा की कि तरुखिल्लयों में भूमि वितरण की व्यवस्था की जाए । साथ ही उन्होंने 'कासिकेस' (इंडियन 'मुखिया') का पद भी समाप्त कर दिया जिन्हें स्पेनिश अधिकारी उनके अपने लोगों पर अधिकार करने के लिए प्रयोग में लाते थे : बेईमानी की सीमाओं को पार कर ये स्पेनिश अधिकारियों के हाथ में पड़ गए । बोलीवार इन विषम सम्बन्धों को अच्छी तरह समझते थे । अतः उनकी घोषणानुसार भूतपूर्व इंडियन मुखियों के साथ सम्मानित नागरिकों जैसा व्यवहार किया जाना चाहिए, जब तक इससे अन्य नागरिकों के अधिकारों को

क्षति नहीं पहुंचती। सिमोन रोदरीगेज़ की प्रेरणादायक उपस्थिति से प्रेरित बोलीवार ने कुसको और उरुबाम्बा से अन्य महत्त्वपूर्ण सामाजिक कदम उठाए। शिक्षा के संदर्भ में परिवर्तन किए गए : कुछ नए अध्यापन विभागों की स्थापना की गई और अन्यों का सुधार किया गया। स्पेनिश और इंडियन पुजारियों के बीच के अन्तर को समाप्त कर दिया गया। उन्होंने अनाथों और भिक्षुकों के लिए दो आश्रमों की स्थापना की और उरुबाम्बा में कासा दे सान ब्युएनवेन्तुरा को आदेश दिया कि इसका प्रयोग अनाथ तथा अवैध बच्चों के लिए किया जाए। सामाजिक और व्यावसायिक सम्बन्धों में सुधार के लिए उन्होंने सड़कों में भी रुचि दिखाई। इसी तरह के कदम चूक्सिका (बोलीविया) में उठाए गए। वहां बोलीवार ने घोषणा की कि 'विशेषाधिकारों वाले वर्ग अब समाप्त हो चुके हैं, और 'नागरिकों के गौरव को क्षति पहुंचाने वाले प्रत्येक कर को समाप्त कर दिया जाए।' इसी कारण से उन्होंने 'राज-कर' के नाम से विख्यात केवल इंडियनों पर लगाया जाने वाला कर समाप्त कर दिया'''जो समाज के निर्धन वर्ग पर पड़ता है।' उन्होंने बोलीविया संविधान में इन शब्दों को सम्मिलित किए जाने का प्रस्ताव किया : 'अब तक जो दास थे वे अब वेनेज़ुएला के नागरिक हैं : इस तरह उन्हें इस संविधान के प्रकाशन के साथ मुक्त किया जाता है : उनके भूतपूर्व स्वामियों को दी जाने वाली क्षतिपूर्ति का निर्णय एक विशेष कानून द्वारा किया जाएगा।'[92]

दासता के अतिरिक्त कोई अन्य ऐसा विषय ढूंढ़ना कठिन है जिस पर बोलीविया ने इससे अधिक सहानुभूति और ईमानदारी से स्वयं को व्यक्त किया हो। अंगोस्तुरा में उन्होंने घोषणा की : 'दासता अंधकार की संतान है : अनभिज्ञ लोग अपने उन्मूलन के साधन स्वयं आप हैं।'[93] बोलीविथ कांग्रेस में उन्होंने कहा : दासता सभी कानूनों के विपरीत है। इसे जारी रखने वाला कानून अपवित्र होगा। इसे कायम रखने के लिए कोई क्या कारण दे सकता है ? इस अपराध को कोई जिस भी दृष्टि से देखे यह कल्पना करना भी असंभव है कि कोई ऐसा बोलीविया निवासी भी होगा, चाहे वह कितना ही भ्रष्ट हो, जो मानवीय गौरव के इस उल्लंघन को उचित ठहराएगा'''यह तभी संभव है यदि कर्तव्य के मौलिक विचारों का ही खंडन कर दिया जाए।' बेन्थम को 1827 में उन्होंने लिखा : 'दुर्भाग्य-वश दासता का बोझ उत्साह को निष्प्राण कर स्वतंत्रता के लिए इसे अयोग्य कर रहा है। इसी कारण जिन विषयों (विज्ञान) के अध्ययन का आपने जिक्र किया है वे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। क्योंकि व्यक्ति को दासता के दौरान भी कम से कम यह तो आभास हो कि उसके कुछ अधिकार हैं जिनकी वह मांग कर सकता है।'

अन्य अनेक कदम विषमताओं के उन्मूलन और समानता के विकास के प्रति बोलीवार के दृढ़ विश्वास को प्रदर्शित करते हैं। उदाहरणार्थ 1824 में काराकास विश्वविद्यालय के नियमों के सुधार के अंतर्गत विश्वविद्यालय का प्रवेश बिना किसी

भेद-भाव के सभी वेनेज़ुएला वासियों के लिए संभव कर दिया गया और उन्होंने सलाह दी कि ऐसे ही कदम अन्य स्थानों पर उठाए जाने चाहिएं। इस तरह पारदोस (मिश्रित जाति) वर्ग ने बोलीवार से मान्यता और उचित व्यवहार प्राप्त किया जिसके वह नए क्रांतिकारी परिस्थितियों में अधिकारी थे। उन्होंने अपने प्रयासों द्वारा परिवर्तित परिस्थितियों पर संतोष छुपाने का प्रयास नहीं किया : 'क्रांति से पूर्व' सम्राट् के अधीन श्वेतों को सभी पद प्राप्त थे और वे सम्राट् के मंत्री पद तक भी पहुंच सकते थे। कुशलता और भाग्य द्वारा वे सबकुछ प्राप्त कर सकते थे। पारदोस (मिश्रित जाति) वर्ग हमेशा हर चीज़ से वंचित कर अपमानित किया गया। पवित्र पुजारी पद भी उनके लिए वर्जित था : कहा जा सकता है कि स्पेनवासियों ने स्वर्ग के द्वार भी पारदोस वर्ग के लिए बंद कर दिए थे। क्रांति ने उन्हें उनका प्रत्येक अधिकार, प्रत्येक लाभ उपलब्ध कराया। प्रत्येक असभ्य, घृणित और दुष्ट कार्य का उन्मूलन कर दिया गया है और इसका स्थान आज पूर्ण समानता ने ले लिया है।' बोलीवार ने संपूर्ण नैतिक अधिकार के साथ पियार की चर्चा करते हुए, जो जातीय संघर्ष द्वारा निरंकुशता को बढ़ावा दे रहे थे, अपने सैनिकों को संबोधित करते हुए कहा : 'जैसा कि आपको मालूम है, समानता, स्वतंत्रता और मुक्ति हमारे नारे हैं। क्या हमारे कानूनों के कारण मानवता ने अपने अधिकार पुनः प्राप्त नहीं कर लिए हैं ? क्या हमारे शस्त्रों ने दासता की बेड़ियां तोड़ नहीं डाली हैं ? क्या रंग और जाति के घृणित अंतर को सदा के लिए समाप्त नहीं कर दिया गया है ? क्या आपके लिए राष्ट्रीय भूमि का वितरण नहीं किया गया है ? क्या भाग्य, ज्ञान और गौरव आपकी प्रतीक्षा नहीं कर रहे हैं ? क्या आपकी कुशलता को पुरस्कृत नहीं किया गया ? तब फिर सेनापति पियार आपके लिए क्या चाहते थे ? क्या आप समान, स्वतंत्र, मुक्त, प्रसन्न और सम्माननीय नहीं हैं ? क्या पियार आपके लिए इससे अधिक प्राप्त कर सकते थे ? नहीं, कदापि नहीं।' सेना में कोई शोषण न था : यह वह स्वतंत्रता थी जिसे जनता के अनुरोध द्वारा हासिल किया गया था। बोलीवार ने इसकी चर्चा करते हुए 1828 में बुकारामांगा में कहा : 'स्वतंत्रता के प्रारम्भिक वर्षों में हमें साहसी व्यक्तियों की आवश्यकता थी जो स्पेनवासियों का वध कर सकें और जिनसे अन्य भयभीत हों : नीग्रो (अश्वेत) वर्ग, साम्बोस (इंडियन और नीग्रो जाति का मिश्रण) वर्ग, नीग्रो तथा श्वेत जाति की संतति से उत्पन्न वर्ग और श्वेत—सभी का स्वागत था, जब तक वे वीरता से संघर्ष करने के लिए तैयार थे : किसी को भी धन द्वारा पुरस्कृत नहीं किया जा सका, क्योंकि धन था ही नहीं; उत्साह कायम रखने का एक ही रास्ता पदोन्नति था, जिससे आज प्रत्येक वर्ग और रंग के व्यक्ति हमारी सेनाओं में सेनापति, नेता और अधिकारी हैं, यद्यपि इनमें से अधिकांश का गुण मात्र इनका साहस था जो गणतंत्र के लिए लाभप्रद था लेकिन

अब शांति के दिनों में शांति के पथ में बाधा बन रहा है। लेकिन यह एक आवश्यक बुराई थी।'[94]

बोलीवार के लेखों में कहीं भी उनके स्थानीय नगर या क्षेत्र या परिवार के लिए कोई भी भ्रान्त धारणा देखने को नहीं मिलती। उन्होंने अपने किसी भी सम्बन्धी को ऊंचा पद नहीं दिया; जब न्याय ने इनकी मांग की तो उन्होंने उनके व्यवहार पर कड़ी नजर रखने का आदेश दिया। अप्रैल 1827 से उन्होंने पैख़ को लिखा : 'पिछले सप्ताह काराकास की एक कानूनी कार्यवाही ने सार्वजनिक नैतिकता में योगदान करते हुए यह सिद्ध कर दिया कि कानून सभी के लिए समान है, क्योंकि इसकी मार एक ऐसे व्यक्ति पर पड़ी जिसकी रक्षा के लिए मेरे सम्बन्धी भी उठ खड़े हुए, लेकिन मैं···अपरिवर्तित रहा।'[95] उन्होंने अपने भतीजे, अनाक्लेतो क्लेमेन्ते को झिड़कते हुए कहा : 'क्या तुम्हें शर्म महसूस नहीं होती कि कुछ निर्धन 'इल्लयानेरोस' (वेनेजुएला के हरित क्षेत्र के चरवाहे) बिना किसी शिक्षा या इसे प्राप्त करने के किसी साधन के, जिनका विद्यालय 'छापामार संघर्ष' के अतिरिक्त और कुछ नहीं रहा, वे अब भद्र बन गए हैं; उन्होंने स्वयं को सम्माननीय नागरिकों के रूप में परिवर्तित कर लिया है : उन्होंने मेरा सम्मान कर स्वयं को सम्मानित करना सीख लिया है। क्या तुम्हें ग्लानि अनुभव नहीं हो रही कि मेरे भतीजे और एक उच्च घराने की मां के पुत्र होते हुए तुम उस निर्धन सैनिक से भी गिरे हुए हो जिसका परिवार मात्र उसका अपना स्थानीय राज्य है?' कुछ वित्तीय प्रश्नों के संदर्भ में उन्होंने अपनी बहन मारिया अन्तोनिया को लिखा : 'मैं अपने अधिकारों का दुरुपयोग नहीं करना चाहता, क्योंकि मेरा पद जितना ऊंचा है, मेरे अधिकार उतने ही कम होने चाहिए। भाग्य ने मुझे शक्ति के शिखर पर बिठा दिया है : लेकिन मैं एक सामान्य नागरिक के अतिरिक्त कोई अन्य अधिकार नहीं चाहता। न्याय होना ही चाहिए, और अगर न्याय मेरे पक्ष में है तो मुझे मेरा भाग मिलना चाहिए। अगर यह मेरे पक्ष में नहीं है तो भी मैं न्यायालय का निर्णय स्वीकारने के लिए तैयार हूं।' पेरू में अध्ययन हेतु यूरोप भेजे जाने वाले दस विद्यार्थियों को चुनते हुए उन्होंने बल दिया कि निर्णय समानता पर आधारित होना चाहिए। चार विद्यार्थी लीमा के विभाग से, दो तरुखिल्लयो से, दो कुसको से और दो अरेकिपा से चुने जाएं। इसी तरह की समान विचारधारा ने उन्हें पुरानी सीमाओं के उन्मूलन के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर उन्होंने पैख़ को बताया : 'मैं यह जिक्र करना भूल गया कि हम बोयाका, सुलिया और बारीनास के विभागों को एकबद्ध करने का विचार कर रहे हैं जिससे वेनेजुएला और न्यु ग्रानादा के बीच कोई सीमा नहीं रहेगी : क्योंकि इसी सीमा-विभाजन द्वारा हमें क्षति पहुंच रही है, इसलिए अवश्य ही इसे समाप्त कर दिया जाना चाहिए।'

बोलीवार का महत्व कभी भी उनके अपने जीवन में उपयुक्त रूप से नहीं आंका गया। उनकी क्रान्तिकारी दृष्टि नवयुगीन थी; वह अमेरिका को उस स्तर पर पहुंचाना चाहते थे जहां यूरोप को अनेक वर्षों बाद पहुंचना था। जबकि पुरातन विश्व अभी भी उदारवादी व्यक्तिवाद के लिए प्रयास कर रहा था, बोलीवार उस समय शोषित वर्ग के लिए वास्तविक समानता और न्याय और अधिकारों के लिए प्रयास में व्यस्त थे। इंग्लैण्ड जब कमज़ोर अर्थव्यवस्था की सुरक्षा के लिए 'संविदा की स्वतन्त्रता' को लागू करने में असफल हो रहा था, बोलीवार उस समय 'सामाजिक सुरक्षा' और 'सामाजिक अधिकारों' जैसे शब्दों का प्रयोग करते हुए दक्षिणी अमेरिकी क्रान्ति को एक वास्तविक सामूहिक रूप देने के लिए संघर्ष कर रहे थे। 1791 के बाद यूरोप में संगठनों के दमन और उन्हें पुन: जीवित करने का प्रयास करने पर दण्ड की व्यवस्था का अर्थ था कि 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में वहां कार्य करने की शर्तों पर कोई नियन्त्रण नही था। वहां नवोदित सर्वहारा वर्ग की स्थिति रोमन दासों या मध्ययुगीन बन्धुआ-श्रमिकों से भी बुरी थी। यह स्थिति 1825-35 में असहनीय हो गई। ठीक उसी क्षण बोलीवार इंडियन श्रम के सन्दर्भ में संविधान की संकल्पना कर रहे थे जो अपने लक्ष्यों में हस्तक्षेपी एवं संरक्षक था। यह मानवतावाद का एक अकेला उदाहरण नहीं अपितु राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रगति के लिए एक संगठित कार्यक्रम का भाग था। यूरोप में स्वीकार्य लक्ष्य व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का भ्रम था, और यह अनुभव किया जा रहा था कि समाज या किसी भी प्रकार का संगठन व्यक्ति और नागरिक के अधिकारों को सीमित और वर्जित करता है। राज्य को एक लुप्त तानाशाही सत्ता की तरह मुरझा जाना चाहिए (इस तरह के मुरझाने का अर्थ आदिम युग की वापसी और बलवान द्वारा निर्बल पर प्रभुत्व जमाना था।) बोलीवार ने इससे विपरीत सिद्धान्त प्रस्तुत किया कि जनता का सबसे बड़ा शत्रु कमज़ोर प्रशासन है। उन्होंने एक ऐसे शक्तिशाली तन्त्र को रेखांकित किया जो अपनी शक्ति से पूरे समाज को परिवर्तित कर देगा। इन दोनों स्थितियों में से व्यक्तिगत स्थिति को परम्परावादियों का तथा बोलीवार की (इसके विपरीत) स्थिति को कोलम्बिया में समर्थन मिला। वास्तव में व्यक्तिगत स्थिति के समर्थक राज्य को विशेषाधिकारों से सम्पन्न वर्ग का एक साधन बनाना चाहते थे जबकि अन्य इसे न्याय और प्रगाढ़ सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के विषय में जीवन्त एक सर्वोच्च रचना का रूप देना चाहते थे जो शोषित वर्ग के पक्ष में थी। बोलीवार अन्त तक अपनी नीतियों पर अटल रहे। जब वह अन्तिम समय के लिए काराकास गए तो उन्होंने मानुमिसन अधिनियम के प्रयोग में सरकारी जांच का आदेश दिया जिसने 1821 के दासों को स्वतन्त्र किया था। उन्होंने पाया कि 1821 और 1826 के बीच लाखों दासों में से केवल तीन सौ दासों को पूरे गणतन्त्र में मुक्त किया गया

था। उनका प्रत्युत्तर 28 जून 1827 को काराकास में प्रकाशित एक घोषणा में पाया जा सकता है : 'मुक्ति-कोष के धन को एक वर्ष के भीतर अवश्य लौटा दिया जाए।' अधिक कुशलता और तीव्रता से उनके कोष के लिए करों की प्राप्ति हेतु सरकारी कर अधिकारियों को कर एकत्रित करने का कार्य सौंप दिया गया। मृत व्यक्तियों की बिना वसीयत की हुई सम्पत्ति को कोष में मिला दिया जाना था। उल्लघंन करने वाले कर्मचारियों के लिए कठोर दण्ड की व्यवस्था थी। दासों के अधिकारों में भोजन, दवा, वस्त्र और आश्रय सम्मिलित थे। तानाशाही के तीसरे दिन ही उन्होंने 'दासों को मुक्त करने के लिए नियुक्त परिषद को तीव्रता से निर्देश दिए : 'उन्हें इस घोषणा के प्रकाशन के तीन दिनों के भीतर' अपना पुनर्गठन करना था और 'लघु प्रशासनिक विभागों में प्रत्येक सप्ताह कम से कम एक गोष्ठी का आयोजन करना था।' लघु प्रशासनिक विभाग का खेफ़े पोलितिको या उनकी अनुपस्थिति में प्रथम नगर महापौर 'अलकालदे' इसको लागू करने के लिए उत्तर-दायी थे।

अगर हम तानाशाही के दौरान इंडियन वर्ग के प्रश्न को विशेष रूप से देखें तो हम पाते हैं कि 15 अक्तूबर 1828 को बोलीवार ने एक महत्वपूर्ण घोषणा का प्रकाशन किया जिसका संयोगवश इतिहासविदों द्वारा सदा गलत अर्थ निकाला जाता रहा है। यह कहा गया कि बोलीवार ने इंडियनों द्वारा दिए जाने वाले व्यक्तिगत राज-कर को पुन: आरम्भ कर दिया : वास्तव में उन्होंने इंडियनों की तुलना अन्य नागरिकों से की थी जिनके कन्धों पर राज्य को चलाने का भार था। उन्होंने घोषणा में स्पष्टत: कहा था कि इंडियनों की स्थिति सुधरने के स्थान पर बिगड़ गई है। घोषणा में कोलम्बिया के नागरिकों के इस अंश के व्यवहार में सुधार के लिए अनेक कदम सम्मिलित थे। उनको निर्धनता से मुक्त करने के लिए अनेक प्रयास किए गए, उन्हें सेना में सेवा की छूट थी जब तक वे स्वयं इसके लिए तैयार न हों, और उनपर लगाए जाने वाले प्रत्येक राष्ट्रीय कर को समाप्त कर दिया गया, न्यायालयों को 'इंडियन वर्ग' की रक्षा करनी थी और अन्य कार्यों के अतिरिक्त उन्हें 'हर सम्भव साधनों द्वारा इंडियन बच्चों की शिक्षा के लिए विद्यालयों की स्थापना करने और माता-पिता को अपने बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजने की प्रार्थना करने के कार्य सौंपे गए···पुजारी तथा संरक्षक इंडियनों को आरक्षित भूमि से बचे काफी क्षेत्र में कार्य करने के लिए और लाभांशों को उपयोगी व्यवसायों में लगाने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।'[96]

सांस्कृतिक प्रयास

इस रचना के मुख्य भाग में हमने अब तक बोलीवार के आदर्शों की उप-लब्धियों का अध्ययन किया है : अपनी जनता के लिए स्वतंत्रता, प्रजातंत्र, न्याय,

समानता और एकता। एकता के विषय में यह विचारणीय है कि एक राष्ट्र में उठाया गया कोई भी कदम वेनेज़ुएला, कोलम्बिया, एक्वादोर, पनामा, पेरू और बोलीविया राष्ट्रों के पूरे समूह के लिए था। इस कदम का लक्ष्य इन राष्ट्रों के महान नगरों से लेकर विशाल क्षेत्र में फैले छोटे-छोटे गांवों तक पहुंचना था। बोलीवार को विश्वास था कि 'रचनात्मक निर्माण' से ही प्रगति का उद्‌गम हो सकता है। 'रचनात्मक निर्माण' का तात्पर्य 'विकास' से है। वह दास प्रथा को वैतनिक श्रम में परिवर्तित करना चाहते थे जो कि एक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के लिए उपयुक्त है। लेकिन उन्होंने उन लोगों के लिए भूमि-वितरण भी किया जिन्होंने भूमि का प्रयोग कृषि उत्पादन में प्रगति के एक साधन के रूप में किया। वह राज्य के हस्तक्षेप से भयभीत नहीं थे और उन्होंने खदानों के राष्ट्रीयकरण को प्रारंभ किया। बोलीवार सार्वजनिक शिक्षा के पक्ष में थे क्योंकि यह समाज के नैतिक आधार को मज़बूत करती है। शिक्षा द्वारा एक नए व्यक्ति का जन्म होता है जो हमारी सभ्यता के महान नैतिक मूल्यों को समझने में सक्षम है। इस धारणा का महत्व उनके आगमन के समय के लातीनी अमेरिका की स्थिति के अध्ययन द्वारा अच्छी तरह समझा जा सकता है।

अनिवार्यत: पिछड़ापन स्पेनिश उपनिवेशों का मुख्य मानदंड था। स्पेन को अपनी कट्टर धर्मांधता के कारण पुनर्जागरण के वातावरण में जन्मी औद्योगिक क्रांति के तकनीकी विकासों से कोई लाभ नहीं पहुंचा। स्पेन सुधार-विरोधी और 'इनकिस्तीओन' रहा। विज्ञान के संदर्भ में इसकी संस्कृति विशेषकर पिछड़ी हुई थी; कला के क्षेत्र में भी कैथोलिक धर्म के एक संकुचित रूप ने शिक्षा, दर्शन, भवन-निर्माण, रंग-मंच, साहित्य, संगीत और चित्रकला पर बुरा प्रभाव डाला। (तरेन्त परिषद के मानदंडों से 'नग्न-शिल्प' की अनुपस्थिति के कारण का बोध होता है।) स्पेन द्वारा उपनिवेशों में असमान सांस्कृतिक वितरण ने स्थिति को और भी विषम कर दिया। धनी उपनिवेशों को प्राथमिकता दी गई, इसलिए वेनज़ुएला का नाम सूची में सबसे नीचे था। काराकास को 1725 में एक विश्व-विद्यालय और 1808 में एक मुद्रणालय खोलने की आज्ञा दी गई जबकि 200 वर्ष पूर्व ही अमेरिका में विश्वविद्यालय और मुद्रणालय पहुंच चुके थे।

स्पेनिश सांस्कृतिक नीति की एक सामान्य विशेषता कठोर प्रकाशन-नियंत्रण थी। पवित्र कार्यालय समस्त पुस्तकों के प्रवेश, वितरण और प्रयोग को नियंत्रित करता था। कैथोलिक सिद्धांतों का विरोध करने वाली, सार्वजनिक नैतिकता का उल्लंघन करने वाली तथा सम्राट या कानून का निरादर करने वाली रचनाओं पर निषेध था। अठारहवीं शताब्दी के अंत में निषिद्ध पुस्तकों की सूची में 'इनकिस्तीओन' ने असंख्य अज्ञात रचनाओं के अतिरिक्त 5,420 लेखकों के नाम सम्मिलित किए हैं। निरंकुश सत्ता द्वारा अपने शोषणकारी प्रशासन को तीव्र

करने के साथ ही इस नियंत्रण के प्रयोग की कठोरता और भी बढ़ गई। सम्राट अमेरिका से सम्बंधित पुस्तकों से विशेष रूप से ईर्ष्या करता था। इन पुस्तकों के प्रवेश के लिए 'इन्दीस परिषद' की आज्ञा लेना आवश्यक था और इसकी आज्ञा के बिना कोई भी ऐसी पुस्तकें छाप, रख या बेच नहीं सकता था। इन बंधनों के बावजूद अनेक महत्त्वपूर्ण पुस्तकालयों का गठन हुआ; बोलीवार के पिता ने बहुत पुस्तकें एकत्रित की थीं।

सामान्य सांस्कृतिक पिछड़ेपन की स्थिति से अवगत होकर बोलीवार ने प्रारंभ से ही शिक्षा के महत्व पर बल दिया। अंग्रेज़ शिक्षाविद् जोसेफ लेनकेस्टर ने स्मरण करते हुए कहा—'मुझे काराकास के प्रतिनिधियों (जिनमें आप भी सम्मिलित थे) को ग्राफ्टन स्ट्रीट, पिकाडिल्ली (इंग्लैंड) में स्थित सेनापति मिरांदा के घर में 26 या 27 सितम्बर के आसपास सचित्र भाषण देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मेरे तथ्य में आपने अत्यंत रुचि दिखाई थी।'[97] तब अपने राज-नीतिक जीवन के मध्य में, संघर्ष के दौरान वह नीतिशास्त्र और ज्ञान के महत्व को दर्शाने के लिए 'नैतिक शक्ति' के मूल सिद्धांतों की स्थापना हेतु रुक गए। 1828 में उन्होंने बोगोता विश्वविद्यालयाध्यक्ष को आश्वासन दिया कि 'इन नवयुवक नागरिकों को जिन्होंने हमारे अधिकारों और स्वतंत्रता का भार सहना है, शिक्षित करने के कार्य से अधिक कोई और वस्तु उन्हें अधिक प्रिय नहीं होगी जिससे ये गुणों, कौशल, विज्ञान और ज्ञान द्वारा लाभप्रद हों।'[98] उन्हें मालूम था कि किसी समुदाय का जीवन शिक्षा पर निर्भर करता है और इसके बिना इतिहास या राष्ट्रीयता की कोई भावना नहीं हो सकती। उनके विचार में विद्यालय वह पारसमणि था जिससे एक समाज को आंका जा सकता है और जिसमें भविष्य को देखा जा सकता है। संविधानों के लिए उनके प्रस्तावों में शिक्षा के प्रति समर्थन और उत्साह का अक्सर ज़िक्र किया गया है।

उन्होंने अंगोस्तुरा कांग्रेस को घोषणा की : 'कांग्रेस को सार्वजनिक शिक्षा को इसके पैतृक प्रेम स्वरूप प्राथमिकता देनी चाहिए।' प्राथमिक शिक्षा के लिए बोलीवार ने लेनकेस्टर के पारस्परिक निर्देशों के तरीके का प्रयोग किया। इस पद्धति द्वारा अध्यापक अधिक प्रबुद्ध विद्यार्थियों की सहायता से 1000 तक छात्रों को पढ़ाने में सक्षम था। इसलिए यह अमेरिकी परिस्थितियों के अनुकूल थी जहां अध्यापकों और वित्तीय साधनों की कमी थी। काराकास परिषद को प्रताड़ित करते हुए एक पत्र में याद दिलाया कि उन्होंने जोसेफ लेनकेस्टर को 20,000 पेसोस सौंपे हैं और उन्हें अनेक आश्वासन दिए हैं जिससे वह वेनेज़ुएला में रहें और पारस्परिक शिक्षण की संस्थाओं को स्थापित करें। लेकिन इस भद्रपुरुष से सुनकर मैं आश्चर्यचकित हो गया कि विगत वर्ष की सम्माननीय नगर परिषद ने युवाओं के लिए इतनी लाभप्रद इस पद्धति को प्रोत्साहित करने के स्थान पर

प्रारम्भ से ही इसका विरोध किया है। उन्होंने परिषद मे विनती की कि वह लेनकेस्टर के विद्यालयों का विरोध करने के स्थान पर उन्हें वह संरक्षण प्रदान करें जो ज्ञान उपलब्धि हेतु स्थापित संस्थाओं को उपलब्ध होता है। 31 जनवरी 1825 को उन्होंने पेरू में लेनकेस्टर पद्धति पर आधारित शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए प्रत्येक विभागीय राजधानी में एक विद्यालय की स्थापना किए जाने की घोषणा की। उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक इंग्लैण्ड के हाज़ेडवुड विद्यालय मे प्रशिक्षण के लिए भेजे जाने वाले छात्रों का चुनाव करना स्वीकार किया जिसके विषय मे जेरमी बेन्थम ने उन्हें बताया था। भविष्य में राष्ट्र की स्वतन्त्रता और सांस्कृतिक विकास के लिए अनेक मेधावी छात्रों को विदेशी विश्वविद्यालयों मे शिक्षित करने के महत्व पर उन्होंने अत्यन्त बल दिया, जैसा कि लीमा में सरकारी परिषद को दिए गए उनके विस्तृत निर्देशों से स्पष्ट है जिनके अनुसार सार्वजनिक प्रशासन, राज-नयिक प्रक्रिया और कानून में प्रशिक्षण के लिए अनेक छात्रों को लन्दन भेजा जाना था। अंगोस्तुरा प्रस्तावों मे उन्होंने वंशागत परिषद के भावी सदस्यों की शिक्षा के कार्यक्रमों की व्यवस्था पर बल देते हुए इसकी चर्चा की : 'इस विद्यालय का गठन राष्ट्र के भावी सांसदों की शिक्षा के लिए किया जाएगा। वे सार्वजनिक प्रशासन के लिए आवश्यक कला, विज्ञान और साहित्यिक विषयों का अध्ययन करेंगे : बचपन में ही वे अपने कार्य से अवगत हो जाएंगे और छोटी आयु से ही अपनी आत्माओं को गौरवान्वित करेंगे।' एक अन्य अवसर पर उन्होंने ज़ोर देकर कहा : 'शिक्षा व्यक्ति का नैतिक निर्माण करती है, और एक सांसद के निर्माण हेतु उसे नैतिकता, न्याय और कानून के विद्यालय में शिक्षित करना आवश्यक है।'

10 वर्षों की अवधि में विभिन्न स्थानों पर बोलीवार ने शिक्षा पर चालीस से भी अधिक घोषणाएं कीं। 17 सितम्बर 1819 को उन्होंने बोगोता में अनाथ, अवैध तथा निर्धन सन्तानों के लिए एक विद्यालय की व्यवस्था की जिसका प्रबन्ध राज्य द्वारा किया जाना था। 5 दिसम्बर 1829 को उन्होंने पोपायान् में एक नए पाठ्यक्रम का प्रकाशन किया। इस विषय पर उनकी प्रथम घोषणा उनके शैक्षिक दर्शन का सारांश है : 'सार्वजनिक शिक्षा और निर्देश सार्वजनिक प्रसन्नता का आश्वासन देते हैं और जनता के लिए सर्वाधिक ठोस आधार हैं।'[99] अपनी अंतिम घोषणा में उन्होंने कोलम्बिया से सम्बंधित प्रश्न का संपूर्ण विश्लेषण किया। प्राथ-मिक शिक्षा के लिए वह कैथोलिक चर्च पर ही निर्भर रहे लेकिन अन्य क्षेत्रो में, विशेषकर विश्वविद्यालयों के सम्बंध में उन्होंने अनेक परिवर्तन किए। उन्होंने इंडियनों के लिए विद्यालय-भवनों तथा अध्यापकों की व्यवस्था पर बल दिया। वह चाहते थे कि इंडियनों को अन्य बातों के अतिरिक्त कानूनों के अनुसार कोलम्बिया में नागरिक और व्यक्तिगत अधिकारों तथा कर्तव्यों के विषय में शिक्षित किया जाए। पेरू में शिक्षा अनिवार्य कर दी गई। अनेक अवसरों पर

उन्होंने अपना ध्यान स्त्री-शिक्षा पर दिया : कुसको में 1825 में 'कन्या-शिक्षा को परिवारिक नैतिकता का आधार मानते हुए उन्होंने एक विद्यालय स्थापित करने की घोषणा की जिसमें राजधानी या प्रदेश की किसी भी सामाजिक स्तर वाली कन्याओं को शिक्षित किया जाएगा।'[100] कारकास में 1827 में यह अनुभव करते हुए कि यदि कन्या-शिक्षा पर ध्यान न दिया गया तो सार्वजनिक शिक्षा का महत्वपूर्ण लक्ष्य पूरा नहीं होगा, उन्होंने इन भावी माताओं की शिक्षा को प्रोत्साहन दिया।[101] बोलीविया में उन्होंने कर के एक अंश को जो पहले ला पाज़ के धार्मिक कोष में जाता था, कला और विज्ञान के महाविद्यालय को देने की व्यवस्था की। उरुबाम्बा में उन्होंने घोषणा की कि 'रेकोलेतोस के निजी विद्यालय की आय को एक सार्वजनिक शिक्षा संस्था की स्थापना के लिए प्रयोग किया जाए जहां इस राज्य के नवयुवक प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर सकें।'[102] अनेक अवसरों पर उन्होंने निजी महाविद्यालयों और विद्यालयों को सार्वजनिक संस्थाओं में परिवर्तित कर दिया : इसी तरह उन्होंने शिक्षा की वित्तीय समस्या का हल ढूंढने के लिए राज्य की सार्वजनिक सम्पत्ति को ब्याज पर ऋण के रूप में दे दिया। कोलम्बिया, पेरू और बोलीविया में लेनकेस्टर पद्धति पर आधारित विद्यालयों तथा ग्वायाकिल में एक नौसैनिक विद्यालय की स्थापना की गई। 1825 में जब वह सिमोन रोदरीगेज़ के साथ पेरू से गुज़र रहे थे तो उन्होंने उनसे अनेक शैक्षिक प्रश्नों की चर्चा की। चूकिस्का में अनेक महत्वपूर्ण घोषणाएं की गईं : समस्त धार्मिक संस्थाओं को शैक्षिक लक्ष्य में जुट जाना चाहिए ; प्रत्येक विभागीय राजधानी में छात्रों और छात्राओं के लिए प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना की जानी थी ; अन्देन की राजधानी में कला और विज्ञान के लिए एक अकादमी, एक सैनिक महाविद्यालय और एक विद्यालय की स्थापना का लक्ष्य था।

बोलीवार को एक अध्यापक की तरह शिक्षा-पद्धतियों में बहुत रुचि थी। उनके विचारों के स्रोतों पर हाल ही में एक मौलिक शोध किया गया जो इस विषय पर परम्परावादी धारणाओं के विपरीत है। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में ख़ोसे गिल फोरतुल से लेकर रोसियो के प्रशंसक मानकिनी तक सभी लेखकों का विचार है कि बोलीवार के शैक्षिक विचारों पर सर्वाधिक प्रभाव रोसियो का था। लेकिन 1968 में शिक्षाविद् लुईस बी० प्रीयेतो फिगुएरोआ ने अपनी रचना 'माख्रिसतेरियो अमेरिकानी दे बोलीवार' प्रकाशित की जिसके अनुसार इन कल्पनाओं में कुछ वास्तविकता नहीं है। उपयुक्त दस्तावेज़ों के अनुसार बोलीवार की विचारधारा पर वास्तविक प्रभाव दीदेरतो, कोन्दोरसेत, हेलवेत्तीस, वीवेस, चालोताईस और अन्य ने डाला। उनके समकालीन व्यक्तित्वों तथा मित्रों ने भी उन पर प्रभाव डाला जिनमें प्रमुख हैं : सिमोन रोदरीगेज़, ख़ोसे राफैल रावेन्ज़ा और डा० ख़ोसे मारिया वारगास। जब बोलीवार ने एक समाचार पत्र में

'सार्वजनिक शिक्षा' का प्रथम भाग लिखा तो रोदरीगेज उनके साथ थे। उसी वर्ष उन्होंने उस समय संयुक्त राज्य मे पढ़ रहे फरनान्दो बोलीवार की शिक्षा का भी एक कार्यक्रम तैयार किया। विद्यालय और अध्यापक के प्रति उनका दृष्टिकोण बड़ा मानवीय था। अध्यापक को पंडित ही नहीं, सुसंस्कृत भी होना चाहिए। विद्यालय बच्चे के लिए उत्तेजना, सन्तोष और मनोरंजन का स्थान होना चाहिए : अब उन दिनों का भूलने का समय आ गया था जब एक बच्चे को यह कहना कि 'हम विद्यालय जा रहे हैं या अध्यापक से मिलने जा रहे हैं' का अर्थ होता था : 'हम कारावास में या एक शत्रु से मिलने जा रहे हैं।' विद्यालय के कार्य के दंड या पुरस्कार के संदर्भ में उन्होंने घोषणा की : 'नैतिक दंड का प्रयोग बुद्धिमान विद्यार्थियों के साथ और कठोरता तथा पिटाई का प्रयोग पशुओं के साथ किया जाना चाहिए। यह पद्धति सद्व्यवहार, गौरव और श्रेष्ठता को जन्म देती है। यह बच्चे में मानवीय नैतिकता का योगदान करती है जो उसे न्यायप्रिय मानवीय और एक अच्छा नागरिक बनाती है।'

वह विद्यालय के अन्य सामाजिक कर्तव्यों से भी अवगत थे। विद्यालय को समुदाय की आवश्यकताओं का प्रतिबिम्ब होना चाहिए। यह प्रत्येक विद्यार्थी हेतु समान नहीं हो सकता : 'यह सदैव उनके व्यवहार, चरित्र और रुचियों के अनुकूल होना चाहिए।' विद्यालय को सांस्कृतिक, धार्मिक और सार्वजनिक कर्तव्यों के अतिरिक्त अन्य पाठ भी सिखाने हैं : सद्व्यवहार, स्वच्छता, बातचीत का उपयुक्त ढंग, छोटी आयु से ही प्रजातंत्र का प्रयोग। उदाहरणार्थ बालकों को अपने में से कक्षा-नायकों को चुनने के लिए प्रेरित किया जाता था। शिक्षा पद्धति पर अपने विचारों में बोलीवार समय से आगे थे। पाठ पढ़ने के संदर्भ में उनका विचार था कि प्रत्येक वर्ण का पृथक उच्चारण कठिन तथा दुष्कर था और बच्चों को छोटी आयु से ही संपूर्ण शब्दों को एक साथ पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाए। उन्होंने खेलों को भी महत्व दिया : 'खेल और मनोरंजन बच्चे के लिए उतने ही आवश्यक हैं जितना भोजन। उनका नैतिक और शारीरिक स्वास्थ्य इन दोनों की मांग करता है।' इस विषय पर उनके अन्य विचार इस प्रकार थे : मृत भाषाओं का अध्ययन जीवित भाषाओं के प्रयोग के बाद ही किया जाना चाहिए; इतिहास के अध्ययन में समकालीन घटनाओं से प्रारंभ कर अतीत की ओर अग्रसर होना चाहिए; बौद्धिक क्षमता का समरस विकास किया जाए ; तीव्र स्मृति वाले विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन पर बल दिया जाए और प्रखर बुद्धि वाले छात्रों को स्मृति प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया जाए। उनका विश्वास था कि स्मृति तथा गणित इस्तेमाल करने से पुष्ट होते हैं। वह सामाजिक सुगमता के गुण से भी परिचित थे। उन लोगों के विपरीत जो क्रांतिकारियों को कठोर और अशिक्षित समझते थे, बोलीवार ने भद्र पुरुष के आचरण और सिद्धांतों का पक्ष लिया : 'अच्छे आचरण

या सामाजिक परंपराओं का प्रशिक्षण देना बहुत महत्वपूर्ण है।' विद्यार्थियों को 'सभ्य समाज से प्रेम के लिए प्रेरित किया जाए—उन्हें समाज के अनुभवी वृद्ध व्यक्तियों का सम्मान करना सिखाया जाए जो उन्हें भविष्य की आशा से जोड़ता है।'[103]

अंगोस्तुरा में प्रस्तावित 'नैतिक शक्ति' के अंतर्गत नैतिकता और शिक्षा से सम्बंधित दो सदनों की व्यवस्था थी। उनके कार्य थे : सार्वजनिक व्यवहार पर दृष्टि रखना; गुणवानों को पुरस्कृत करना; परिवार में मां की बुद्धिमत्ता के अनुकूल नियमों की रूपरेखा खींची जाए; हमारे व्यवहार के अनुकूल रचनाओं के प्रकाशन को प्रोत्साहित करना; शिक्षित नागरिकों को इस विषय पर शोध हेतु सूचना एकत्रित करने के लिए समस्त विश्व में भेजा जाए। उन्होंने और अधिक दूरदर्शिता का परिचय दिया जब यह अनुभव करते हुए कि 'हमारे वर्तमान विद्यालय शिक्षा के एक विस्तृत कार्यक्रम को संभव करने में असमर्थ है, उन्होंने प्रस्ताव किया कि सदन को यह निर्णय करने पर विशेष ध्यान देना चाहिए कि गणतंत्र में कितने विद्यालयों की आवश्यकता है और उनका निर्माण कराया जाए।' अनेक तथ्यों पर विचार किया जाना था : 'निर्माण का प्रकार, उसकी स्थिति, बच्चों की देखभाल के लिए क्षेत्रीय सुविधाएं, इत्यादि।'[104]

इस संपूर्ण प्रक्रिया के आधार 'अध्यापक' पर उन्होंने कुछ संक्षिप्त टिप्पणियां करते हुए कहा : 'मानवीय भावना को जानने वाला एक मेधावी व्यक्ति जो इसका दिशा-निर्देश करना भी जानता है। एक सामान्य, स्पष्ट तथा सहज पद्धति वह प्रभावशाली साधन है जिसके प्रयोग से समाज कुछ ही दिनों में शानदार प्रगति कर सकता है। इनके बिना श्रम का कोई मूल्य नहीं है : सब कुछ धराशायी हो जाएगा।' बोलीवार ने घोषणा की कि 'ऐसे व्यक्तियों के प्रति राष्ट्र आभारी है जो अपने खाली समय का प्रयोग राज्य के नागरिकों के निर्माण के महान कार्य में करते हैं; ऐसे लोग जनता का सम्मान प्राप्त करते हैं। सरकार को उन्हें पुरस्कृत और सम्मानित करना चाहिए।'[105] बोलीवार अनुभव करते थे कि वैज्ञानिक, कलाकार और राजनीतिज्ञ राष्ट्र के नैतिक चरित्र के प्रतिनिधि हैं। इन्हीं कारणों से वह बुद्धिजीवियों का सम्मान करते थे। उन्होंने विज्ञान को स्वतंत्रता का सहयोगी माना क्योंकि इससे व्यक्ति अपने अधिकारों से अवगत होकर उनकी मांग कर सकता है। उन्होंने वैज्ञानिक ज्ञान को भौतिक जगत पर नियंत्रण करने में एक शक्तिशाली सहयोगी बताया। उनका विश्वास था कि वैज्ञानिको का खर्च राज्य द्वारा वहन किया जाए। राज्याध्यक्ष होने के नाते उन्होंने पंडितों और शोधकर्ताओं का स्वागत किया। प्राकृतिक इतिहास के फ्रेंच संग्रहालय में उनके प्रति आभार प्रदर्शित करते अनेक पत्र हैं जिन्हें ऐसे प्रख्यात व्यक्तियों, जैसे जर्मन वैज्ञानिक, एरिक बोलमैन (जो कोलम्बिया में प्लैटिनम की खोज कर रहे थे)

और आयरिश भूगोलविद्, जे० बारकले पेन्टलैंड (जिन्होंने पेरू और बोलीविया की यात्रा इन देशों की सहायता से पूरी की) ने लिखा था। बोलीवार के पास खनिज पदार्थों, वनस्पतियों और जन्तुओं के नमूनों के लिए प्रार्थनाएं आती थीं। विभिन्न राष्ट्रों और विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत वैज्ञानिक लेखकों और अधिकारियों ने अपने कार्य की प्रतिलिपियां उन्हें भेजीं और अपने शोध के विकास की सूचना देते हुए उनसे पत्र-व्यवहार किया। एक अवसर पर पेरिस में लाईसी लुईस ले ग्रेन्द के कुछ अध्यापकों ने कोलम्बिया में गणित और भौतिकी के एक शैक्षिक संस्थान की स्थापना का प्रस्ताव किया। प्रायः सभी चित्रकारों, प्रकाशकों, पत्रकारों और राजनीतिज्ञों ने अमेरिका में उदित हो रहे नए गणतंत्र में जीवंत रुचि का प्रदर्शन किया।

शैक्षिक मामलों में हम बोलीवार की विचारधारा और उदारवादी विचार-धारा के अंतर को स्पष्ट पाते हैं जिसकी हस्तक्षेपी नीति का लक्ष्य कानून के प्रशासन और सुरक्षा के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। लेसेज़-फेयर पद्धति में शिक्षा का संचालन निजी क्षेत्र द्वारा होता है किन्तु बोलीवार ने इस हल को ठुकरा दिया। जून 1820 में एल० रोसारियो में उन्होंने इस विषय में एक घोषणा की : 'विद्यालयों तथा महाविद्यालयों की स्थापना का आधार चाहे कुछ भी रहा हो, इनका रख-रखाव, निर्देशन एवं अधिशासन राज्य का उत्तरदायित्व है।' इस लेख में उन्होंने 'गणतंत्र के प्रत्येक विद्यालय को सम्मिलित किया जिसके प्रधानाचार्य, अध्यक्ष, शिक्षक और अन्य कर्मचारी राज्य द्वारा नामांकित होंगे और इस पर निर्भर होंगे।'[106] एक वर्ष पूर्व अंगोस्तुरा में 'नैतिक शक्ति' के अपने कार्यक्रम में उन्होंने शिक्षा संसद के छात्रों तथा छात्राओं दोनों के लिए प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना तथा प्रशासन करने का आदेश किया। वह यह स्वीकार नहीं कर सके कि भावी नागरिकों को शिक्षित करने का उत्तरदायित्व किसी और को सौंप दिया जाए।

बोलीवार ने बार-बार स्पष्ट किया कि जब भी शिक्षा प्रणाली की रचना राज्य के अनुकूल की जाती है तो यह सफल रहती है। इसके विपरीत जब यह समाज से उलझती है तो इसके परिणामों का पूर्वानुमान लगाना कठिन है। 'एक राष्ट्र गुणवान, बुद्धिमान और बलवान तभी होगा अगर शिक्षा में ये सिद्धांत निहित हैं : 'यदि विद्यालयों में त्रुटियों को पनपने दिया गया तो देश में अज्ञानता छा जाएगी। यही कारण है कि प्रगतिशील समाज सदा शिक्षा को एक महत्वपूर्ण संस्था मानते हैं।'[107] उन्होंने निःशुल्क शिक्षा पर बल दिया जो अब प्रजातांत्रिक समाजों में मान्य है। शिक्षा का खर्च वहन करना राज्य का कर्तव्य है क्योंकि इससे समस्त सदस्यों को समान अवसर मिलता है। लेकिन राष्ट्रीय दिवालिया परिस्थितियों से झूझते कुसको में बोलीवार यह घोषणा करने के लिए बाध्य हो

गए कि सार्वजनिक संस्थाओं में अध्ययन कर रही धनिक नागरिकों की पुत्रियों को इस खर्च का वहन करना चाहिए। शिक्षा के लिए उपलब्ध कोषों में वृद्धि की एक और विधि चर्च से दान लेना और चर्च के कुछ भवनों को विद्यालयों में परिवर्तित करना था। बोलीवार ने इसी लक्ष्य से प्रेरित होकर पेरू के अंदर की यात्रा आरम्भ की जहां उन्होंने देखा कि शिक्षा की आर्थिक सहायता हेतु राज्य-सम्पत्ति का कुशलतापूर्वक प्रशासन किया जा रहा था। बोलीविया में इनके प्रयासों के परिणामस्वरूप सरकार ने हर तरह की उन बचतों को शिक्षा में प्रयोग करने का आश्वासन दिया जिन्हें भविष्य में प्रशासन के अन्य विभागों से प्राप्त किया जाएगा।

बोलीवार स्वयं कभी भी विश्वविद्यालय नहीं गए। लेकिन इसके प्रति उनके मन में अपार श्रद्धा थी। अपनी मृत्यु से कुछ समय पूर्व उन्होंने अपनी वसीयत में घोषणा की : 'मेरी इच्छा है कि मुझे मेरे मित्र सेनापति विल्सन द्वारा दिए गए रोसियो के 'कोन्तरातो सोसियल' और मोन्तेकूकोली के 'आरते मिलितियार' के दो खंड जो कभी नेपोलियन की सम्पत्ति थे, काराकास विश्वविद्यालय को भेंट कर दिये जाएं।'[108] काराकास में अपने अंतिम प्रवास के दौरान वह न सिर्फ कोसियाता षड्यंत्र पर नियंत्रण पाने का प्रयास कर रहे थे अपितु वह रेवेंजा और वारगास की सहायता से विश्वविद्यालय के एक नए संविधान के गठन में भी व्यस्त थे। संस्था का आधुनिकीकरण कर दिया गया और एक नयी प्रणाली के आधार की स्थापना की गई जो अपने समय से कहीं आगे थी और जिसके कुछ सिद्धांत आज भी लागू हैं। नए अधिनियमों के अधीन विश्वविद्यालय में स्वायत्तता की घोषणा की गई। इसे इसकी अपनी सम्पत्ति और राजस्व दिए गए और इस प्रकार यह अपने संबंधों में स्वतंत्र हो गई।

नए विश्वविद्यालय कानून ने एक 'खुली शिक्षा प्रणाली' की स्थापना की जिसके अधीन किसी को भी प्राध्यापक का भाषण सुनने से वंचित नहीं किया जा सकता था। छात्र संस्था को चलाने में भी भाग लेते थे और अपने मूल्यांकन के अतिरिक्त अध्यापकों का मूल्यांकन भी करते थे। इस तरह यह प्रावधान किया गया कि अध्यक्ष द्वारा कक्षाओं में जाने के अतिरिक्त उसे प्रत्येक सत्र में दो छात्र चुनने थे जो प्राध्यापक के कार्य के सम्बन्ध में प्रत्येक कक्षा की सूचना उन्हें देंगे। विद्यार्थियों को सैनिक या ऐसी गतिविधियों से वंचित रखा गया जिनसे उनके अध्ययन को क्षति पहुंचने का खतरा था। विद्यार्थी अपनी संस्था की प्रतिष्ठा के लिए उतने ही उत्तरदायी थे जितना अध्यापक वर्ग : सांस्कृतिक वाद-विवादों में दो विद्यार्थियों और एक अध्यापक का सम्मिलित होना अनिवार्य था। सुधारों ने संपूर्ण राष्ट्र में शिक्षा को समानता के पथ पर अग्रसर कर दिया। कोलम्बिया विश्वविद्यालयों के प्रमाणपत्रों को समानता के आधार पर मान्यता दी गई।

प्राध्यापकों की नियुक्ति हेतु खुली प्रतियोगिता परीक्षा का उपयोग किया गया और निर्णायकों को निर्भय होकर न्यायोचित निर्णय देने के निर्देश दिए गए। बोलीवार विश्वविद्यालय के अध्यापकों को न सिर्फ 'ज्ञान के प्रेषक', अपितु 'युवकों के लिए आदर्श' के रूप में देखना चाहते थे : सद्‌व्यवहार, शिष्टाचार, सभ्य भाषा, ये सब गुण अध्यापक में होने चाहिएं जिससे वह स्वयं एक उदाहरण बनकर अच्छे विद्यार्थियों के निर्माण में सहायक सिद्ध हो सके।'[109] यह अनुभव किया गया कि संस्था के उत्सवों के अवसर पर शैक्षिक विभाग के सदस्य उपस्थित होने चाहिएं और उनकी आदतन ग़ैरहाज़री पर उनके विरुद्ध कठोर अनुशासनात्मक कार्यवाही की व्यवस्था की गई। 20 वर्षीय शैक्षिक जीवन वाले अध्यापकों के लिए संपूर्ण निवृत्ति की घोषणा की गई। पाठ्य पुस्तकों के उत्पादन को प्रोत्साहित करने हेतु लाभप्रद पुस्तकों के लेखकों एवं अनुवादकों को पुरस्कार स्वरूप निवृत्ति के लिए अवधि का लाभ दिया गया। बोलीवार ने पाठ्य पुस्तकों पर बल दिया क्योंकि वह अध्यापकों की कमी की समस्या से परिचित थे और उन्होंने अनुभव किया कि आंशिक रूप से इस कमी की पूर्ति अच्छी पाठ्य सामग्री द्वारा की जा सकती है। उनकी रुचि इस तथ्य से स्पष्ट है कि बेन्थम की पुस्तक 'नैतिकता और संविधान के सिद्धांतों का परिचय' को पाठ्य पुस्तक के रूप में पढ़ाए जाने पर प्रतिबंध लगाते हुए बोलीवार ने एक घोषणा में कहा : 'क्योंकि और अधिक मौलिक पाठ्यक्रमों का उत्पादन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, विशेषकर उन विषयों में जिनपर कोलम्बिया के विद्यार्थियों के लिए कोई भी उपयुक्त पाठ्य पुस्तक उपलब्ध नहीं है, शिक्षा विभाग उपविभागों तथा विश्वविद्यालयों को यह देखने की प्रार्थना करता है कि सर्वाधिक योग्य प्राध्यापकों द्वारा लिखित पाठ्य पुस्तकों को विश्वविद्यालय के खर्च पर मुद्रित किया जाए और इस खर्च को पुस्तकों के विक्रय द्वारा पूरा किया जाए।'[110] जहां तक विश्वविद्यालयाध्यक्ष का प्रश्न था, उनका विचार था कि उन्हें सीमित समयावधि के लिए रखा जाए। उन्होंने अनुभव किया कि जितने अधिक लोग प्रशासन में सम्मिलित होंगे, उतना ही संस्था को लाभ होगा और इसलिए घोषणा की गई कि विश्वविद्यालयाध्यक्ष की नियुक्ति केवल ३ वर्षों के लिए की जाए। उन्होंने शिक्षा के मानवीय आदर्श को इंगित किया। उदाहरण के लिए उन्होंने प्रस्ताव किया कि चिकित्सा के छात्रों के लिए फ्रेंच, अंग्रेज़ी, कला और विज्ञान की कक्षाएं अनिवार्य होनी चाहिएं। तभी उन्होंने यह प्रयास किया कि चिकित्सा का अध्ययन सैद्धांतिक न होकर व्यावहारिक हो।

बोलीवार के विचार से विश्वविद्यालय राष्ट्र के सांस्कृतिक जीवन की केंद्रीय शक्ति है। शिक्षा संबंधी अपनी घोषणा में पोपायान में 5 दिसंबर 1829 को उन्होंने शिक्षा के संगठन तथा प्रशासन का कार्यभार विश्वविद्यालयों को सौंपा। 'जहां भी विश्वविद्यालय है, वहां शिक्षा के उपविभागों को समाप्त किया जाता है

और उनके कर्तव्य विश्वविद्यालयों को सौंपे जाते हैं। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालयों को छात्रों की शारीरिक, नैतिक, धार्मिक और सामाजिक शिक्षा का विधान तैयार करने का अधिकार भी दिया जाता है।'[111] जैसा कि हम कह चुके हैं, बोलीवार के प्रयासों से काराकास विश्वविद्यालय को स्वायत्तता प्राप्त हो गयी क्योंकि उन्होंने इसकी वित्तीय सहायता के लिए इसे चुओ, काता और ला कोनसेपसियोन के 'हासिएन्दासों' (कृषि भूमि), निष्कासित ईसाइयों की सम्पत्ति, 'पियोस' का राजस्व, इंडियन आरक्षित भूमि से प्राप्त राज-कर और कई अन्य स्रोतों से प्राप्त धन देने की व्यवस्था कर दी। विश्वविद्यालय में प्रवेश संबंधी नौ संविधानों तथा प्रवेश के लिए जातीय भेदभाव का उन्मूलन कर दिया। 'चिकित्सा' के क्षेत्र में अध्यापकों की संख्या में वृद्धि से वास्तविक सुधार प्रारंभ हुआ। पुराने चिकित्सा मंडल को समाप्त कर एक पूर्ण चिकित्सा विभाग बना दिया गया और इसके अपने भवनों का निर्माण किया गया। ऐसा ही गणित के क्षेत्र में हुआ। 1827 में ऐसे ही सुधार कित्तो विश्वविद्यालय में हुए। यहां बोलीवार ने घोषणा की कि मुख्य यूरोपीय भाषा के अतिरिक्त इंडियन भाषा केचुआ का भी अध्ययन किया जाए। तीन साल पहले उन्होंने तरुखिल्लयो विश्वविद्यालय के निर्माण का आदेश दिया था और अगस्त 1825 में उन्होंने आरेकिया में सान अगस्तीन विश्वविद्यालय की आधारशिला रखी। दिसम्बर 1827 में उन्होंने अन्तीओकिया विश्वविद्यालय में वैधिक छात्रों के लिए नए पाठ्यक्रम का प्रकाशन किया। इस तरह उन्होंने मेदेलियन विश्वविद्यालय का आधार तैयार किया। बोलीवार की शैक्षिक विषयों में रुचि यूरोप के वैज्ञानिक वर्ग में प्रसिद्ध थी। अतः अनेक फ्रेंच प्राध्यापकों ने जिनमें गणितज्ञ ब्रूनर, भाषाविद् पेलेगरिन और रसायनज्ञ एवन सम्मिलित थे, कोलम्बिया विश्वविद्यालय के लिए अपनी सेवाएं प्रस्तुत कीं।

बोलीवार के विचार में समाचार पत्र जन शिक्षा के सर्वोत्तम साधन थे जिनके द्वारा नए विचारों का प्रसार संभव था। उनके विरोधी, ख़ीसे दोमिन्गो दियास ने कहा कि मुद्रणालय बोलीवार का 'मुख्य शस्त्र' था। उन्होंने अपनी सेना में मुद्रणालय की उपस्थिति को आवश्यक समझा। पेतीओन ने उन्हें एक मुद्रणालय दिया लेकिन यह ओकुमारे में खो गया। फिर भी, क्रांति अपने समाचार पत्र 'कोरियो देल आरिनोको' (1818-21) के प्रकाशन में सफल हुई। हैती निवासी, खुआन बालीयो 1811 की कांग्रेस, प्रथम और द्वितीय गणतंत्र और 1816 के अभियान के मुद्रक थे। बोलीवार ने अनेक अवसरों पर समाचार पत्र के लिए लिखा। समाचारपत्रों के सही शैलीगत उपयोग पर सेनापति सान्तान्देर को सलाह देते हुए कहा : 'कोरियो दे बोगोता में अनेक प्रशंसनीय बातें हैं लेकिन इसके पत्रों की एकसारता इसे शुष्क बना रही है; यह नियंत्रित प्रकाशन जैसा प्रतीत होता है। संपादक से कहिए कि वह यह घोषणा कर दें कि वह लेखों को पत्रों के रूप में

प्रकाशित नहीं करेंगे। कोरियो दे बोगाता जैसा एक भी समाचार पत्र पूरे विश्व में कहीं नहीं है। प्रत्येक वस्तु का स्वरूप उसकी प्रकृति के अनुरूप होना चाहिए; स्वरूप इतना आकर्षक हो कि उसके प्रति प्रशंसा और प्रसन्नता के भाव जागें। यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि अच्छे लेखकों का लाभ उठाते हुए इस समाचार पत्र को विषयों के प्रति नियमित और व्यावसायिक व्यवहार करना चाहिए।'[112]

बोलीवार की शैक्षिक और सांस्कृतिक उपलब्धिया संयोगवश नहीं अपितु एक वास्तविक क्रांतिकारी विचारधारा का परिणाम थीं। 1810 के बाद बोलीवार की शैक्षिक गतिविधियों के साक्षी जोसेफ लेनकेस्टर ने इसे स्पष्टतः देखा—एक पत्र में बोलीवार ने लेनकेस्टर के इस कथन को दोहराया कि मान-सम्मान और प्रतिष्ठा के लिए मस्तिष्क की मुक्ति अत्यंत आवश्यक है। एक अन्य पत्र में लेनकेस्टर ने आशा व्यक्त की कि 'कोलम्बिया की जनता ज्ञान को स्वतंत्रता के साथ जोड़कर अपनी गौरवमयी स्वतंत्रता का ज्ञानमय विचारों के ठोस आधार पर निर्माण करेगी।[113] बोलीवार ने संस्कृति को एक संबद्ध और संयुक्त दृष्टि से देखा। उन्होंने स्पष्ट किया कि अगर उनका भतीजा फरनान्दो व्यावहारिक अध्ययन के प्रति रूचि प्रदर्शित करेगा तो वह प्रसन्न होंगे क्योंकि 'हमारे पास चिकित्सकों और वकीलों की कमी नहीं है, कमी है कुशल कारागरों और भूमि-श्रमिकों की।' निस्संदेह वह उदार व्यवसायों की अधिक संख्या की अपेक्षा भूमि-श्रमिकों और कारीगरों की कमी को बढ़ा चढ़ाकर बता रहे थे, यद्यपि यह सत्य है कि वर्तमान में भी लातीनी अमेरिकी विश्वविद्यालयों ने ऐसे महत्वपूर्ण विषयों जैसे भूमि और अन्य प्राकृतिक स्रोतों का कुशल उपयोग, स्रोतों का वैज्ञानिक संरक्षण और सार्वजनिक निर्माण योजनाओं पर वास्तविक शिक्षा के स्थान पर बौद्धिक प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित किया है। वर्तमान में, और वर्तमान से भी अधिक बोलीवार के अपने समय में, इस तरह के चिकित्सक कम हैं जो यह विश्वास करते हैं कि पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करना प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है, या ऐसे वकील जो न्याय को भ्रष्टाचारी हाथों से मुक्त करना चाहते हैं। स्पष्टतः बोलीवार की सांस्कृतिक गतिविधियां शैक्षिक संस्थाओं तक सीमित न थीं। संस्कृति समुदाय के दैनिक जीवन और कार्य का प्रतिबिम्ब है। जनता ही संस्कृति को जन्म देती है। इस तरह लातीनी अमेरिका की संस्कृति महाद्वीप की निर्बलता का कारण और परिणाम दोनों है। इसका निर्माण निरंतर होता रहता है। बोलीवार ने यूरोप और नव विश्व की अपनी यात्राओं में अनुभव किया कि अमेरिका की खास विशेषताएं हैं और उनके सांस्कृतिक कार्यक्रम का लक्ष्य इन विशेषताओं को प्रखर करना और परिभाषित करना था। दक्षिण अमेरिका की अलग पहचान का आमतौर पर खंडन किया जा रहा था किन्तु बोलीवार ने इसके विपरीत इस पर बल दिया। उन्होंने अनुभव किया कि राष्ट्र के विकासोन्मुख व्यक्तित्व को परिपक्व और परिभाषित

कर उन्हें अफ्रीकी-इंडियन-अमेरिकी पैतृक ऋण को पूरा करना है। बुद्धिजीवियों को इतिहास और संस्कृति की विचार-पद्धति का निर्माण कर राष्ट्र की अलग पहचान में सहायता करनी थी। इसमें भी बोलीवार मुक्तिदाता थे। दक्षिण अमेरिका एक युवा राष्ट्र था लेकिन इसे अपने में एक गुण मानना गलत होगा। युवक भविष्य की आशा का प्रतीक है लेकिन यह वास्तविकता से अपरिचित होने का भी प्रतीक है। बोलीवार आर्थिक हितों के आवरण में आगामी सांस्कृतिक प्रभावों से परिचित थे जो साम्राज्यवादी लक्ष्यों के कारण लातीनी अमेरिका की पहचान को क्षति पहुंचा सकते थे। उन्होंने प्रेस, शिक्षा पद्धति, बुद्धिजीवियों तथा कलाकारों को इन आघातों का सामना करने के लिए सर्वोत्तम माना। इस सांस्कृतिक संघर्ष में संभवत: शिक्षा सर्वाधिक महत्वपूर्ण शस्त्र थी : 'राष्ट्र की महानता शैक्षिक प्रगति की गति पर निर्भर करती है; अगर शिक्षा धीमी है तब प्रगति भी धीमी होगी; अगर शिक्षा का स्तर गिरता है, उसमें भ्रष्टता आ जाती है तो राष्ट्र अंधकार के दलदल में फंस जाता है। प्राचीन और आधुनिक दार्शनिकों और राजनीतिक विचारकों के अनुभवों पर आधारित ये सिद्धांत इतने स्वीकार्य हैं कि ऐसा व्यक्ति ढूंढ़ना बड़ा कठिन है जिसके विचार में ये ठीक नहीं हैं।'[114] बोलीवार के गुरु, सिमोन रोदरीमेज़ ने लातीनी अमेरिकी लोगों को ऐसी सलाह देते हुए उन्हें खतरों से अवगत कराया और मार्गदर्शन किया : 'नेताओं को अवश्य यह अनुभव करना चाहिए कि जब तक वे जनता को शिक्षित नहीं करते, उन्हें लक्ष्य प्राप्त नहीं होगा। गणतंत्रीय शिक्षा को गौण विषय मानकर नेताओं ने पहले ही काफी समय खो दिया और जो थोड़ा समय शेष बचा है उसे भी खोने की संभावना है। गणतांत्रिक-पद्धति का आधार सार्वजनिक राय है जिसे शिक्षा द्वारा ही निर्मित किया जा सकता है। अगर एक व्यक्ति शिक्षित होने योग्य है—अगर उसे शिक्षा की आवश्यकता है—और फिर भी उसे शिक्षित नहीं किया जाता, तब दोष शिक्षा की व्यवस्था करने वालों का है। कोई भी व्यक्ति एक चीज़ तब तक नहीं कर सकता जब तक वह इसे सीख नहीं लेता। इसलिए एक गणतंत्र का निर्माण अनभिज्ञ लोगों द्वारा नहीं हो सकता, चाहे कैसी भी पद्धति का प्रयोग हो। अर्ध-शिक्षित करना तो बेकार है—कोई भी कार्य आधा नहीं छोड़ा जाना चाहिए; लक्ष्य सदा कार्य को पूरा करने का होना चाहिए। गणतंत्रवादियो ! ध्यान दीजिए। अगर आप गणतंत्र का निर्माण करना चाहते हैं तो बच्चों को शिक्षित कीजिए।'[115]

इस अध्याय में हमने बोलीवार के विचारों तथा प्रस्तावों का अध्ययन किया है जबकि इससे पूर्व के अध्यायों में हमने इनकी पृष्ठभूमि की चर्चा की थी। लातीनी अमेरिका की स्थिति कुछ ऐसी थी कि उन्हें इसे एक वास्तविक नव विश्व का रूप देने के लिए संपूर्ण महाद्वीप के गठन में आमूल परिवर्तन करना था। स्वतंत्रता का उनका आदर्श मात्र राजनीति तक सीमित न था बल्कि यह पूरे

समाज तक व्याप्त था। राजनीतिक स्वतंत्रता, प्रजातंत्र और गणतांत्रिक संविधानों के अतिरिक्त बोलीवार ने अश्वेतों, इंडियन वर्ग और 'पारदोस' वर्ग हेतु पूर्ण समानता के लिए संघर्ष किया। धन को उसके उत्पादकों को लौटाना और सम्पत्ति-अधिनियमों में सुधार द्वारा उन्होंने आर्थिक न्याय को संभव करने का प्रयास किया। उन्होंने लातीनी अमेरिकी एकीकरण की दिशा में अपने आपको समर्पित कर दिया। ऐसा उन्होंने किसी आक्रामक उद्देश्य से नहीं अपितु विकास और प्रगति के साधन रूप में किया। उनकी विचारधारा शिक्षा और संस्कृति के उनके आदर्शों से सम्पन्न थी। उनके क्रांतिकारी कार्यक्रम को अंशों में नहीं, अपितु संबद्ध रूप में देखा जाना चाहिए। अंगोस्तुरा कांग्रेस के संबंध में ह्वाइट को लिखे पत्र में उन्होंने इसे स्वयं समझाया है: 'मेरे संबोधन को ध्यान से पढ़िए, अंशों में नही बल्कि एकबद्ध रूप में।'[116] बोलीवार की रचनाओं में अमेरिका को एक कार्यक्रम दिया गया जो इसकी वास्तविकताओं के अनुकूल था और जिसने प्राचीन व्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र में विकल्प का प्रस्ताव किया और नव-समाज हेतु एकबद्ध कार्यक्रम प्रस्तुत किया। बोलीवार के अधिकांश प्रस्तावों को अमेरिकी या यूरोपीय विचारकों द्वारा पहले ही प्रस्तुत किया जा चुका था। उनकी विशेषता इन विचारों को संबद्ध कर उन्हें प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने में निहित है जिससे उन्होंने अपने समकालीनों को कर्मठ होने का निमंत्रण दिया और एक ऐसी शिक्षा दी जो हमारे लिए आज भी मान्य है और जिसका अविलंब सक्रिय पालन होना चाहिए। □

संदर्भ

1. एल लिबेरतादोर देल मेदीओदीया दे अमेरिका ई सुस कोम्पानेरोस दे अरमास देफनदीदोस पोर उन अमीगो दे ला कौसा सोसियाल (काराकास, 1971), पृष्ठ 5
2. 'अरकाईसमोस इन्सतीतूसियोनालेस ऐ इनफ्लूएनसियास रोमानतीकास एन एल लिबेरतादोर', बोलेतिन हिस्तोरिको दे ला फून्दासियोन जोन बोलतोन, काराकास, क्रमांक 26, मायो 1971, पृष्ठ 153
3. खे० फ० ब्लांको और आर० असपुरुआ, दोकूमेन्तोस पारा ला हिस्तोरियो दे ला विदा पूब्लिका देल लिबेरतादोर (14 खंड, काराकास, 1875-78), II, 232
4. से० पारा पेरेख़, बायोना ई ला पोलितिका दे नेपोलीयोन एन अमेरिका (काराकास, 1939), पृष्ठ 6
5. पारा पेरेख़, हिस्तोरिया दे ला परीमेरा रिपूब्लिका दे वेनेज़एला, I,379

6. मिरांदा, आरकीवो, XV, 68
7. कारतास देल लिबेरतादोर, XII, 377
8. ओबरास कोम्पलीतास, I, 214 : II, 1007
9. ओ' लेरी, नारासियोन, II, 340
10.-11. ओबरास कोम्पलीतास
12. कारतास देल लिबेरतादोर, XII, 183, 185
13. ओ' लेरी, मेमोरियास, XVI, 138
14. ओबरास कोम्पलीतास
15. पेरू दे लेकरोइक्स, पृष्ठ 157
16. ओबरास कोम्पलीतास, I, 44
17. एसकरीतोस देल लिबेरतादोर, (काराकास, 1967) खंड 24
18. ओबरास कोम्पलीतास
19. एल माखिसतेरियो अमेरिकानो दे बोलीवार (काराकास, 1968) सिमोन बोलीवार : शिक्षक (न्युयार्क, 1970)
20. हिस्तोरिया कोन्सतीतुसियोनाल दे वेनेजुएला (3 खंड, काराकास, 1942), I, अध्याय 4
21. ओबरास कोम्पलीतास, II, 1251
22. देकरेतोस देल लिबेरतादोर, III, 366
23. ओबरास कोम्पलीतास, II, 733, 1144-45
24. दाकूमेनतोस रेफरेनतेस आ ला क्रेआसियोन दे बोलीविया (2 खंड, काराकास, 1924), II, 338
25. ओबरास कोम्पलीतास
26. ओ' लेरी, मेमोरियास, XVIII, 400
27. देकरेतोस कोम्पलीतास, I, 76
28. ओबरास कोम्पलीतास
29. ब्लांको और असपुरुआ, VI, 80
30. लोस तेमास सोसियालेस ई एकोनोमिकोस एन ला एपोका दे ला इन्देपेन्देन्सिया (काराकास, 1962), पृष्ठ 49
31. ओ' लेरी, मेमोरियास, XVI, 139, 140

—(80) XVI, 140
—(87) XXIV, 273-75
—(99) XVI, 464
—(102) XVIII, 293, 294
—(109) XXV, 411-438

32. देकरेतोस देल लिबेरतादोर, I, 194, 197

—(35) I, 275
—(85) I, 196, 197
—(88), I, 290
—(96), II, 345, III, 86, 171
—(101) II, 343
—(106) I, 205
—(110) III, 54

33. ओबरास कोम्पलीतास, I, 444

—(41) I, 1176
—(42)
—(44) I, 1070,—(50)
—(52) I, 582
—(55) I, 1045
—(57) I, 626
—(60) I, 654, (63)
—(63a) I, 1421,(63b), II, 301,(63c), (64) पृष्ठ 75, 91, (65), (67), (69), (73), (75), (79), (81)
—(83) I, 425
—(86) I, 576
—(90) I, 1116-19, (93), (95), (98)
—(103) II, 1292-97
—(107) II, 1290
—(108), II, 988
—(112), I, 714
—(114), II, 1291
—(116), I, 442

34. मातीरियालेस पारा एल एसतुदीयो दे ला सुयेसतीयोन अगरारिया एन वेनेजुएला (काराकास, 1964), पृष्ठ 283-284

—(36) पृष्ठ 379
—(40) पृष्ठ 489
—(84) पृष्ठ 214

37. ब्लांको और असपुरुआ, X, 32
—(56), VIII, 221
—(91), X, 31
—(100), X, 41
38. दाकूमेन्तोस रेफरेनतेस आ ला करे आसियोन् दे बोलीवार, I, 422
—(39) I, 423
43. देरेचो इन्तरनासियोनाल, II
ओबरास कोम्पलीतास (काराकास, 1959), XI, 91
45. हिस्तोरिया दे ला कोनकिस्ता ई पोबलासियोन् दे ला प्रोविन्सिया दे वेनेजुएला (न्यूयार्क, 1940), पृष्ठ 422
46. ऐ० वोन हुमबोल्दत, वियाखे अ लास रेख़ियोनेस इकुयीनोसियालेस देल न्युवो कोन्तीनेन्ते (5 खंड, काराकास, 1941-42), 11, 330
47. लोपेख़, ख़ुआन ब्रोतिस्ता पिकोरनेल ई ला कोन्सपिरासियोन दे गॉल ई एस्पाना, पृष्ठ 348-385
48, तेक्सतोस ओफिसियालेस दे ला परीमेरा रीपूब्लिका दे ला वेनेजुएला (2 खंड, काराकास, 1959), I, 119
49. अमेरिका ई एल लिबेरतादोर (काराकास, 1953), पृष्ठ 7
51. गसेता दे काराकास, क्रमांक XXX, 6 दे ऐनेरो दे 1814
53. अ० ब्रियेरक, विदा पूब्लिका दे दोन पैदरो गौल (काराकास, 1948) पृष्ठ 143
54. गसेता दे काराकास, क्रमांक, XXX, 6 दे ऐनेरो दे 1814
58. अ० सिल्वा ओतेरो, ला दिप्लोमासिया हिस्पानोअमेरिकाबिस्ता सुदामेरीकाबा (4 खंड, ब्युनस आयर्स, 1889-90), III, 75
70. से० ल० मेनदोख़ा, भूमिका : एसकरीतोस देल लिबेरतादोर, VII, XXXVII
71. बे० एल० सालसेदो-बासतार्दो, विसीयोन् ई रिवीसियोन् दे बोलीवार (ब्युनस आयर्स, 1966) पृष्ठ 269
72. गिल फोरतुआल, हिस्तोरिया कोन्सतीतुसियोनाल दे वेनेजुएला, I, 674
74. कारतास देल लिबेरतादोर, XII, 354
61. बोलीवार ई सु एपोका, (काराकास, 1653), I, 115
—(76) I, 59, 130
—(97) I, 464
—(113) I, 146; II, 30

77. लोपेख़, ख़ुआन बैतिस्ता पिकोरनेल ई ला कोनमपिरासिओन दे गौल ई एस्पाना, पृष्ठ 354

78. तेक्सतोस ओकिसियालेम दे ला परीमेरा रिपूब्लिका दे वेनेज़ुएला, I, 214

82. खे० ए० पेख़, आतोबायोग्राफिया (2 खंड, काराकास,1946), I,380

89. 'तरान्सकरीपसियोन देल एक्सपीयेन्ते ओरिख़िनाल···' बोलेतिन दे ला एकादेमिया नासियोबाल दे हिस्तोरिया,क्रम 149, पृष्ठ 22

92. डाकूमेनतोम रेफरेन्तेस अ० ला० करेआसिओन दे बोलीविया, I, 456, 324

94. पेरू दे लेकरोइक्स, पृष्ठ 216

104. एल लिबेरतादोर ई ला कोनसतीतुमियोन दे अंगोस्तुरा दे 1819 (काराकास, 1970), पृष्ठ 197

111. रजिस्तरो ओफिसियाल, क्रमांक-54
(बोगोता, 1829), पृष्ठ 428

115. एल लिबेरतादोर देल मेदीओदीया दे अमेरिका, पृष्ठ 129-148

टिप्पणी : संदर्भ में निम्नलिखित क्रमांक लगातार क्रम में सम्मिलित नहीं हैं :

80, 87, 99, 102, 109 (इनको (31) के बाद देखें)

35, 85, 88, 96, 101, 106, 110 (32 के बाद देखें)

41, 42, 44, 50, 52, 56, 57, 60, 63, 63अ, 63ब, 63स, 64, 65, 67, 69, 73, 75, 79, 81, 83, 86, 90, 93, 95,98,103, 107, 108, 112, 114, 116 (33 के बाद देखें)

36, 40, 84 (34 के बाद देखें)

56, 91, 100, (37 के बाद देखें)

—सम्पादक

5. स्वतंत्रता-उपरांत का अमेरिका

अव्यवस्था के क्षण

क्रान्तिकारी कार्यक्रम ने एक विशेष घटना की ओर ध्यान नहीं दिया जिसे बाद में अपनी निष्क्रियता को सिद्ध करना था। स्वतंत्रता आन्दोलन की विजय के बाद कौदिल्लयो (सैनिक नेता) राजनीतिक नेता बन गए। जब क्रान्तिकारी परिवर्तन पर प्रथम वाद-विवाद हुआ, करील्लयो नेताओं ने सोचा कि इसे राजनीतिक शक्ति पर अधिकार करने से रोका जा सकेगा। एकबद्ध राजनीतिक विचारों का यह दल आन्दोलन का मुख्य समर्थक था और उन्होने अपने हितों के अनुकूल कदम उठाए। उन्होंने सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विषयों पर कोई ध्यान न दिया जिनकी खातिर जनसाधारण ने संघर्ष में सेनानियों का समर्थन किया था। जब संघर्ष शुरू हुआ, किसी को इसके परिणामों का आभास न था।

"करील्लयोस" वर्ग को पहले से ही आवश्यक सामाजिक शक्ति और प्रभाव प्राप्त थे। कमी सिर्फ राजनीतिक शक्ति की थी। इसी दृष्टिकोण से बोलीवार ने प्रारम्भ में इस प्रश्न को देखा। यह सच है कि 1813 में उन्होंने "मृत्यु तक संघर्ष" का जिक्र किया था और निष्पक्षों को भी निष्कासन की धमकी दी थी, लेकिन दूसरी तरफ पारदोस वर्ग, इंडियनों या नीग्रों को देने के लिए उनके पास कुछ विशेष न था। जनसाधारण युद्ध के प्रारम्भिक चरणों में इसे अच्छी तरह समझ गया और स्वभावत: उन्होंने अपना समर्थन अपने गौरव पर फूला न समाने वाले करील्लयोस की अपेक्षा अपनी आकांक्षाओं के अधिक निकट सम्राट के प्रतिनिधियों मोन्तेवेरदे और बोवेस को दिया। प्रथम और द्वितीय गणतंत्रों की असफलता ने जनसाधारण के सम्राट के प्रति झुकाव को प्रकट किया और बोलीवार को दिखाया कि 1815 तक जिन सिद्धांतों का अनुसरण उन्होंने किया था, वे ठीक नहीं थे। हैती और जमैका में उनका निष्कासन और पेतीओन से प्राप्त सहायता ने अन्य सुझावों को जन्म दिया जिससे लोस कयोस और जैकमेल अभियानों के बाद से यह स्पष्ट हो गया कि क्रान्ति को ठीक रास्ता मिल गया है। सिमोन रादेरीगेज के परामर्श, उनका निजी अनुभव और अपने विचारों में तर्कसंगत परिवर्तन करने की क्षमता के कारण बोलीवार क्रान्ति के इस नव-चरण के महत्वपूर्ण नेता बन गए। लोगों ने वांछित परिवर्तन स्पष्ट कर दिया था : सामाजिक समानता, आर्थिक न्याय और बेहतर शैक्षिक और सांस्कृतिक सुविधाएं।

बोलीवार ने इन आदेशों को अपनाया और उन में स्पेन से मुक्ति पाना, एक प्रजातांत्रिक गणतंत्र की स्थापना करना और दक्षिण अमेरिका की एकता के लक्ष्यों को भी सम्मिलित कर लिया।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि सभी वेनेजुएलावासियों ने स्वतंत्रता का उद्देश्य स्वीकार नहीं किया। वेनेजुएला में स्पेनियों के प्रशंसक और रक्षक थे, और स्वतंत्रता युद्ध एक गृहयुद्ध भी था। इसके अतिरिक्त यह एक ऐसा युद्ध था जिसके अपने ही मानदंड थे जिसमें भीषणता और आक्रमण का स्थान सर्वोपरि था। साहसी, बलवान व्यक्तियों की आवश्यकता थी और प्रगटतः सर्वाधिक कठोर, नेता बन गए। स्वतंत्रता आन्दोलन की सफलता के बाद (अमेरिका) शक्ति-रिक्त हो गया और इस रिक्त स्थान को कौदिल्लयो वर्ग ने भर दिया। लेकिन वे इस परिवर्तन के लिए तैयार नहीं थे और अन्य वर्गों के प्रभाव में सुगमता से आ गए। उन्होंने स्वयं को शक्ति के नियंत्रण और भौतिक सम्पत्ति के लिए बेच दिया। स्वतंत्रता संघर्ष के अन्त के साथ शोषण का एक नया युग प्रारंभ हुआ जिसमें साधन कौदिल्लयो बने।

दुर्भाग्यवश बोलीवार के आदर्शों और लक्ष्यों को बहुत कम नेताओं ने समझा या अपनाया। अधिकतर नेताओं ने स्वयं को क्रान्तिकारी आदर्शों से संबद्ध रखा जबकि वास्तव में वे व्यक्तिगत हित-पूर्ति में व्यस्त थे। इसीलिए मृत्यु के समय बोलीवार अपने प्रयासों की असफलता से अवगत थे। फिर भी अपने अंतिम संदेश में उन्होंने आशा की झलक देने का प्रयास किया: 'नागरिको! शर्म के साथ मैं घोषणा करता हूं कि हमने सबकुछ त्याग कर मात्र स्वतंत्रता ही प्राप्त की है। लेकिन इससे कम से कम हमें स्वतंत्रता और गौरव की प्रतिष्ठा में अपने अन्य लक्ष्य अनुभव करने का अवसर तो प्राप्त हुआ है।'[1] उन्हें अपनी असफलताओं का अनुभव अनेक दुखदायी घटनाओं द्वारा हुआ। जैसे 1823 में उन्होंने हैरेस को बताया: "हमारे सामने वस्तुतः एक विशाल और कठिन कार्य है, क्योंकि अनैतिकता की स्थिति हमारा सामना कर रही है जो सर्वाधिक दृढ़ संकल्प वालों को भी प्रभावित कर रही है। समस्त दक्षिण अमेरिका युद्ध-भूमि है; परिस्थितियां हमारी शत्रु हैं; हमारे सिपाही प्रत्येक जाति और राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करते हैं और प्रत्येक का अलग रंग, अपना कानून और अपनी अलग रुचि है। सिर्फ ईश्वरीय चमत्कार ही इस अव्यवस्था को नियंत्रित कर सकता है और मैं जब तक ऐसा होते देख नहीं लेता, इस चमत्कार में विश्वास नहीं कर सकता।" अपनी मृत्यु से पांच सप्ताह पूर्व उन्होंने खुआन ख़ोसे फ्लोरेस को बताया: '(i) हमारे द्वारा अमेरिका का प्रशासन किया जाना असंभव है; (ii) क्रान्ति का संचालन करना समुद्र में हल चलाने के तुल्य है; (iii) अमेरिका में सिर्फ आप्रवासन ही सुलभ है...'

बोलीवार ने हर संभव प्रयास किया लेकिन कार्य के विशाल आकार और

सहयोग के अभाव ने उन्हें पराजित कर दिया। सिर्फ राजनीतिक परिवर्तन ही सुनिश्चित हो पाया, और कुछ नहीं। बोगोता से दूर रहने के पांच वर्षों के दौरान कोलम्बिया में एक क्रांति विरोधी संगठन का जन्म हुआ जिसके समक्ष वह लाचार थे, और जिसका अन्त उनके निष्कासन से हुआ। मुक्तिदाता ने 21 दिसम्बर 1827 को ख़ोसे फरनान्देस माद्रिद को लिखा : "सच यह है कि मुझे राष्ट्र की स्थायी स्थिरता की कोई आशा नहीं···जहां तक वर्तमान पीढ़ी का प्रश्न है, कोलम्बिया और संपूर्ण अमेरिका के लक्ष्य खोए जा चुके हैं। अन्य मतों द्वारा धोखा मत खाइए और यदि आवश्यक है तो ब्रिटिश मंत्रियों से सत्य कह दीजिए, क्योंकि झूठ सदा पकड़ा जाता है।" एक वर्ष पूर्व उनका हृदय फूट पड़ा जब वह सान्तान्देर को यह लिखने के लिए बाध्य हो गए : "मुझे क्या करना चाहिए? और कोलम्बिया को क्या करना चाहिए? राष्ट्र की सेवा के लिए क्या मैं अपने द्वारा निर्मित नियमों और आदर्शों को त्याग दूं? कोलम्बिया के पास संघ को समाप्त करने और स्वयं को दिवालिया घोषित करने के और कोई चारा नहीं है। हां, स्थिति अवश्य इस सीमा तक पहुंच चुकी है और मुझे इसे पहचानना और व्यक्त करना है।"

युद्धों में सम्मिलित होने वाले अनेक व्यक्तियों के लिए अंतिम लक्ष्य स्पेन से अलग होना था। वे स्पष्टत: अन्य सामाजिक और आर्थिक विषयों के प्रति तटस्थ थे। तो भी बोलीवार को अपने विचारों का विरोध सहना पड़ा। सर्वप्रथम उनके नेता पद का विरोध किया गया। वेनेजुएला, नव ग्रानादा, और हैती में बोलीवार का खण्डन किया गया। 1817 में कारियाको में स्थापित एक कांग्रेस ने उन्हें सत्ता-विहीन करने का प्रयास किया। जब अंगोस्तुरा में उन्होंने संविधान हेतु अपनेप्र स्तावों को प्रस्तुत किया, सांसदों ने उनके सुझावों पर आंशिक ध्यान दिया। वे न तो प्रार्थना और न ही विनती द्वारा दासता उन्मूलन और भूमि-वितरण जैसे विषयों पर ध्यान देने के लिए प्रेरित हुए। जहां तक संविधान का प्रश्न था, सांसदों ने 1811 के नियमों को स्वीकारा हालांकि वास्तविकता में वे इसके विपरीत थे। अंगोस्तुरा में प्रतिनिधि परिषद ने नैतिक शक्ति के प्रस्ताव को इस आधार पर अस्वीकार कर दिया कि यह 'वास्तविकता से परे है।' उन्होंने बोलीवार की सामाजिक समानता और दासता-उन्मूलन संबंधी प्रार्थनाओं पर कोई ध्यान न दिया। उन्होंने पैतृक संसद के उनके विचार को त्याग दिया और सर्वोच्च न्यायालय में अपील करने संबंधी दूरदेशी सुझावों का भी विरोध किया। प्रख्यात न्यायाधीश तोमास पोलान्को लिखते हैं : 'मुक्तिदाता का संवैधानिक कार्यक्रम वैज्ञानिक और दार्शनिक दृष्टि से ठीक राष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुकूल और राज नीतिक दृष्टि से प्रभावशाली था। कांग्रेस ने इसके पूर्ण स्वरूप को स्वीकार नहीं किया अपितु इसमें इतने अधिक परिवर्तन कर दिए कि मौलिक विचार खो गया।'[2]

प्रथम महा कोलम्बिया संसद की कूकुता कांग्रेस में भी बोलीवार सफल नहीं रहे। प्रारंभ से ही उन्होंने देखा कि यह संस्था एक राजनीतिक पद्धति का अनुसरण कर रही थी और अन्ततः इसका परिणाम क्रांतिकारी संघर्ष की असफलता के रूप में सामने आयेगा। सान्तान्देर को उन्होंने 1821 में बताया : '...शीघ्र ही इतने अधिक बुद्धिमान लोग हो जाएंगे कि उन्हें कोलम्बिया के गणतंत्र से दूर करना पड़ेगा, जैसे प्लेतो ने अपने गणतंत्र में कवियों के साथ किया था। इन भद्रपुरुषों का विचार है कि इनकी इच्छा ही जनसाधारण की इच्छा है...बोगोता, तुन्खा और पाम्पलोना में आराम करते हुए ये सोचते हैं कि कोलम्बिया में सिर्फ कृषक वर्ग ही बसता है। उन्होंने कभी ओरिनोका में बसे कैरिब इंडियनों या अपूरे चरवाहों, माराकाइबो के समुद्री यात्रियों पातियो के डाकुओं, पास्तो के जंगली व्यक्तियों और निर्जन क्षेत्र में पशुओं की भांति रहने वाले अश्वेतों को नहीं देखा है। सान्तान्देर, क्या आप भी सहमत नहीं हैं कि ये अज्ञानी सांसद हमें अन्ततः अराजकता की दिशा में ले जा रहे हैं? अगर इल्लयानेरोस हमें समाप्त नहीं करते तो यह कार्य ये दार्शनिक कर देंगे।'[3] वेनुजुएला के इतिहासविद् कारलोस फेलीस कारदोत ने कूकुता संविधान के प्रति कारकास में की गई प्रतिक्रियाओं का अध्ययन किया है।[4] कूकुता संविधान का बड़ा विरोध किया गया क्योंकि महान कोलम्बिया के संघ का अर्थ था : महानगर के रूप में काराकास के परम्परागत अधिकारों की समाप्ति : ला कोसियाता के भ्रूण कूकुता कांग्रेस में उपस्थित थे; ये एक देर से पड़े प्रतिक्रियावादी बम की तरह थे जो बोलीवार की योजनाओं को पूर्णतः समाप्त कर देते।

यही प्रक्रिया शेष लातीनी अमेरिका में दिखाई देती थी। वेनेजुएला और पेरू में भी मुक्तिदाता की सलाह ठुकरा दी गई। वित्तीय व्यक्तियों ने सर्वत्र कुशलता-पूर्वक उनके विचारों के क्रान्तिकारी पक्ष को समाप्त कर दिया। कई बार उन्होंने क्रांति का आवरण लिया लेकिन वस्तुतः उन्हें स्पष्ट रूप से मालूम था कि उनका हित किस में है और उनकी रियायत खाली आश्वासनों से आगे कभी नहीं गई। बोगोतो, काराकास और क्वित्तो के बुद्धिजीवियों ने दक्षिण में बोलीवार की अनु-पस्थिति वाले वर्षों का लाभ उठाकर राज्य-प्रशासन पर नियंत्रण कर लिया और इसे अपने ही लाभ में परिवर्तित कर दिया। क्रांति के स्वप्न और राष्ट्रों के एकी-करण को स्वार्थी संतुष्टियों और पुरानी राष्ट्रीय सीमाओं की पुर्नस्थापना के लिए समाप्त कर दिया गया; 1826-27 और 28 इन वर्षों के दौरान कोलम्बिया में स्थिति चिंताजनक हो गई। गणतांत्रिक व्यवस्था से जनसाधारण को गहरा धक्का लगा क्योंकि उन्हीं लोगों के हाथ में सत्ता थी जो परंपरागत रूप से इसका प्रयोग करते आए हैं। आंतरिक संघर्ष इतना बढ़ गया कि बोलीवार यह अनुभव करने लगे कि राजनीतिक संगठन का पूरा आधार जनसाधारण के साथ सीधे संपर्क द्वारा

बदल दिया जाना चाहिए। उन्होंने एक कांग्रस का प्रस्ताव किया जिसमें सभी विषयों पर चर्चा की जा सकती थी और हल ढूंढे जा सकते थे, विशेषकर उन गलतियों के विषय में जो कूकुता संविधान से जन्म ले रही थी। एक महान कोलम्बियावासी इतिहासविद् इन्दालेसियो लीएवानो अगुइरे ने उनके प्रस्ताव के परिणाम का वर्णन किया : 'जनसाधारण हेतु एक विशाल प्रतिनिधि परिषद के गठन के विषय में बोलीवार द्वारा पेरू में व्यक्त साहस का विवेचन उस समय कोलम्बियावासियों में व्याप्त अंतरों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। मुक्तिदाता के शत्रुओं ने कांग्रेस का विचार तभी स्वीकार किया जब वे प्रतिनिधि परिषद में अपनी प्रधानात्मक स्थिति से आश्वस्त हो गए। जब बोलीवार वेनेजुएला से अपनी राजधानी जा रहे थे तो सरकार ने नव ग्रानादा में वकीलों और वेनेजुएला के 'मानतुआनो' वर्ग के दबाव में आकर प्रसिद्ध चुनाव अधिनियमों की घोषणा कर दी जिसने जनसंख्या के 95% भाग को मताधिकार से वंचित कर दिया। इन अधिनियमों के अनुसार उन्हीं लोगों को मताधिकार प्राप्त होना था जो भूमिस्वामी या आत्मनिर्भर होंगे। अधिनियमों के अंतर्गत अप्रत्यक्ष चुनाव पद्धति को भी स्वीकार किया गया और मांग की कि अधिवेशन के प्रतिनिधि और ज़िले के मताधिकारी सम्पत्ति और आय के संबंध में विशेष शर्तों को पूरा करें; 'विश्वविद्यालय की डिग्री' को भी अनिवार्य बताया गया। ओकान्या अधिवेशन की असफलता का कारण जनसाधारण की प्रजातांत्रिक आशा और धनी वर्गों की मांगों को अधिवेशन में न उठाया जाना था क्योंकि चुनावपद्धतियों के कारण इसके द्वार जनसाधारण के लिए बंद थे।'[5]

बोलीवार को तानाशाही की तरफ प्रवृत्त करने वाली घटना से सभी परिचित हैं। दक्षिण अमेरिका में बोलीवार के जीवन के इस कटु एवं दु:खद् काल से सम्बंधित अनेक आख्यान प्रचलित हैं। इन आख्यानों में प्राय: बोलीवार की 1828 की आपात सरकार की तुलना महाद्वीप की शेष सभी तानाशाह सरकारों की लंबी शृंखला से की जाती रही है। सभी अत्याचारियों ने अपने अपराधों को बोलीवार के समतुल्य बताकर स्वयं को निर्दोष सिद्ध करने का प्रयास किया हैं। बोलीवार की जीवन-कथा के लेखक एक्वादोरवासी अलफोन्सो रुमासो गोन्सालेस ने टिप्पणी की कि 1828 में 'जनसाधारण ने संतोष के साथ तानाशाही को स्वीकार किया। राष्ट्र के शेष अधिकारियों ने बोगोता निर्णय को स्वीकार किया। जब बोलीवार ने राजधानी में प्रवेश किया, उनका हर्षोल्लास के साथ स्वागत किया गया।'[6] बोलीवार की तानाशाही रोमन गणतंत्र और मिरांदा की तानाशाही के समान थी। यह एक वैधानिक सत्ता थी जिसने अपने अस्थाई प्रकार और अवधि की घोषणा की और 2 जनवरी 1830 को राष्ट्रीय अधिवेशन बुलाए जाने का आश्वासन दिया। इसके अतिरिक्त बोलीवार के पास कोई विशेषाधिकार नहीं थे।

राज्य परिषद अक्सर अपनी सामूहिक इच्छा उन नाजुक मामलों पर भी थोप देती थी जिनसे बोलीवार का व्यक्तिगत संबंध था।[7] इस विषय पर स्थापित राय के बावजूद मैं अपना विचार अवश्य स्पष्ट करना चाहूंगा कि वास्तव में बोलीवार के क्रांतिकारी साहस को इस परेशानियों से भरी लघु अवधि के दौरान कोई क्षति नहीं पहुंची। उन्होंने किसी भी महत्वपूर्ण विषय पर अपने सिद्धांतों का परित्याग नहीं किया। इसके विपरीत दासता-उन्मूलन की अपनी घोषणा और इंडियन प्रश्न पर वह अपने सिद्धांतों से जुड़े रहे। यही व्यवहार उन्होंने लातीनी अमेरिकी एकता और प्रशासनिक ईमानदारी के अपने लक्ष्यों के प्रति प्रदर्शित किया, जैसा कि उस समय की उनकी गतिविधियों और घोषणाओं से सिद्ध किया जा सकता है। अगर हम तानाशाही का पक्ष लेते हुए देखें तो हम पाते हैं कि यह क्रांति को ठोस आधार देने का अंतिम प्रयास था। इन सब अंतिम प्रयासों का कोई लाभ नही हुआ। लेकिन फिर भी जब वह मृत्यु के निकट थे, बोलीवार ने उरदेन्ता के माध्यम से अमेरिका के लिए एक संदेश छोड़ा जो आज भी मान्य है। बोलीवार के प्रति अपनी सहानुभूतियों से प्रेरित होकर उरदेन्ता ने उन्हें शक्ति के प्रयोग द्वारा सत्ता-नियंत्रण का परामर्श दिया। उन्होंने बोगोता में 'परोनूनसियामेन्तोस' में योगदान किया तथा बोलीवार को राजधानी का नेता पद संभालने के लिए निमंत्रित किया। इस पर बोलीवार ने उत्तर दिया : 'यद्यपि मेरे सहयोगियों, मित्रों और बोगोता से प्राप्त पत्रों ने मुझे उत्तेजित कर दिया है, फिर भी मैं अपने भीतर उस शक्ति को स्वीकार करने का नैतिक साहस नहीं पाता जिसके आधार, मात्र दो नगर परिषदों के निर्णय हैं···मैं स्वयं को एक विद्रोही की स्थिति के लिए बाध्य नहीं कर सकता। सान्ता मारिया ने घोषणा की कि अगर मैं सत्ता स्वीकार नहीं करूंगा तो एक भयंकर अराजकता के उभरने का भय है, लेकिन मैं उस बंधन का क्या करूं जो मुझे राष्ट्रपति पद से पृथक करता है ? वह बंधन है वैधता: इसलिए आइए, चुनावों की प्रतीक्षा करें। समय आने पर या तो मैं वैधानिक अधिकार प्राप्त करूंगा या फिर एक नए राष्ट्रपति सत्तारूढ़ होंगे। राजनीतिक स्वरूप स्पष्ट होगा और हम इस तथ्य से अवगत हो जाएंगे कि हमारा राष्ट्र जीवित रहेगा या नहीं। तब, और सिर्फ तब, मैं यह मानते हुए कि चुनाव वैधानिक रूप से करा लिए गए हैं, सत्ता स्वीकार कर सकता हूं'।[8]

बोलीवार की मृत्यु के साथ ही विशाल कोलम्बिया भी धराशायी हो गया। पुराने राष्ट्रीय राज्यों के नेताओं के रूप में पैख़, सान्तान्देर और फ़्लोरेस ने इसे परस्पर विभाजित कर संतोष व्यक्त किया। समानता, न्याय और स्वतंत्रता के सभी स्वप्नों का अंत हो गया। प्रत्येक नए विभाजित राष्ट्र में सामाजिक व्यवस्था स्पष्टत: सैन्य व्यवस्था की दिशा में मुड़ गई और एक 'नए युग' का प्रारम्भ हुआ। सैनिक नेताओं में 'हासिएन्दास' विभाजित कर दिए गए। दासता जारी रही।

बोलीवार के देहांत के बाद की शताब्दी में वेनेजुएला के शोक-मग्न इतिहास में इस प्रक्रिया को कार्यरत देखा जा सकता है। इस शोकगाथा की विडम्बना यह थी कि यही राष्ट्र मुक्तिदाता का जन्म-स्थल था, यद्यपि कोई भी दक्षिण अमेरिकी गणतंत्र असफलता के कटु परिणामों से बच नहीं सका। बोलीवार ने भविष्यवाणी की थी : 'अनेक तानाशाह मेरी समाधि पर उदित होंगे'''उनके गृहयुद्ध उन्हें रक्त-मय कर देंगे।' अपने जीवन के अंत में उन्होंने कहा : 'यह राष्ट्र प्रत्येक जाति और वर्ण के अव्यवस्थित तानाशाहों के हाथों में गिर जाएगा।' 1830 के बाद के वेनेजुएला की यही गाथा थी। स्वतंत्रता का जन्म-स्थल बनने की बजाय यह इसकी समाधि बन गया। कौदिल्लयो वर्ग ने स्वार्थी राजनीतिज्ञों की सहायता से अपने लक्ष्यों को पूरा कर लिया। कौदिल्लयो के आसपास सदा 'सलाहकारों' का जमघट लगा रहता जो उनके अत्याचारों को वैधानिक आवरण देने के लिए तैयार थे। लातीनी अमेरिका के कष्टों का मुख्य कारण कौदिल्लयों के पाप से बढ़कर ये 'सलाहकार' थे। इन प्रथम सौ वर्षों में वेनेजुएला की स्थिति भयभीत कर देने वाली थी। 80 वर्षों में एक के बाद एक, सात तानाशाही सरकारों ने हर तरह की तानाशाही की सूची प्रस्तुत की : इल्लयानेरो, अन्देन, केन्द्रीय, ओरिएन्ते से ; शिक्षित तानाशाह ; अशिक्षित तानाशाह ; कई बार एक व्यक्ति, कई बार उसका समस्त परिवार, कई बार उसके मित्र ; कृत्रिम प्रगतिशील सरकारें, प्रतिक्रिया-वादी सरकारें, राष्ट्रीय सरकारें, विदेशी हितों के हाथों में बिकी हुई सरकारें, कुछ कठोर, अन्य उदार। सभी समान रूप से घृणित तथा स्वतंत्रता के विरुद्ध, जिनके विषय में बोलीवार ने कहा था : 'होमर के अनुसार जब व्यक्ति अपनी स्वाधीनता खो देता है, वह अपनी आधी आत्मा खो बैठता है।'

ख़ोसे अन्तोनियो पैख़ ने वेनेजुएला में प्रति-क्रांति के इस युग का प्रारंभ किया। 1830 को कांग्रेस द्वारा प्रस्तुत संविधान में अप्रत्यक्ष चुनावों की व्यवस्था की गई। मताधिकार का चुनाव आर्थिक आधारों पर किया जाना था। दासता नियमित रखी गई और एक केंद्रीय-संघीय पद्धति का अनुसरण किया गया। पैख़ ने ख़ोसे तादेओ मोनागास की सुरक्षा कर गलती की जिसने एक पारिवारिक तानाशाही को जन्म दिया। इसमें वह स्वयं, उसके भाई, उसके पुत्र और सम्बंधी सम्मिलित थे। वह 1847 से (1859 तक) बारह वर्ष के लिए सत्ता में रहे और प्रभाव-शाली नियंत्रण की दृष्टि से 40 वर्ष, जिसके दौरान उन्होंने कठोरता से राष्ट्र की इच्छाओं को ठुकरा दिया, जैसा कि उनके प्रसिद्ध वाक्य से स्पष्ट है : 'संविधान का प्रयोग प्रत्येक कार्य को न्यायोचित सिद्ध करने के लिए किया जा सकता है।' 1859-64 के भयंकर संघीय युद्ध के बाद फालकोन सत्ता में आए। यों तो वह जनसाधारण हेतु सत्ता में आए किन्तु वास्तव में उन्होंने जनसाधारण के जीवन को सुधारने का प्रयास नहीं किया। यह एक विचित्र तानाशाही थी। उनके कार्यकाल

का अंत 1868 में हुआ जिस दौरान प्रगति का ह्रास, अस्थिरता और अराजकता थी। अन्तोनियो गुसमान ब्लांको एक विभिन्न तरह के तानाशाह थे : सभ्य, शिक्षित, यद्यपि घमंडी और आत्मविश्वासी। वह 'प्रख्यात अमेरिकी' के रूप में जाने जाते थे। उन्होंने विशाल सम्पत्ति अर्जित की और वह जनसाधारण में लोकप्रिय थे, यद्यपि एक बार फिर वेनेज़ुएला की प्रगति की आशाओं को आघात पहुंचा था। उन्होंने 14 वर्षों तक शासन किया (1870-77 : 1879-84 : 1886-88) लेकिन उनका प्रभाव 20 वर्षों तक अनुभव किया जाता रहा। जाकिन करेस्पो (1884-86 : 1892-98) अर्ध-उदार राष्ट्रपति थे जिन्होंने इगनासियो अन्दरादे के माध्यम से अपने प्रभाव को नियमित रखने का प्रयास किया। किपरियानो कास्तरो राष्ट्रवादी तानाशाह थे (1899-1908)। लेकिन उन्होंने सबसे बड़ी मूर्खता स्वयं को उत्तरी अमेरिकी विदेश मंत्री के हाथों सौंप कर की जिन्होंने उत्तर अमेरिकी राज्यमंत्री के साथ वेनेज़ुएला के राजदूत के रूप में एक संधि पर हस्ताक्षर किए। उनकी तानाशाही कटु निराशाओं और ऊंचे नारों की थी। ख़ुआन वीसेन्ते गोमेख़ भी आशाबद्ध होकर सत्तारूढ़ हुए, किन्तु वह भी असफल रहे। 38,000 कैदियों के साथ, जिनमें से कई कैदियों ने कारावास मे 20 वर्ष से भी अधिक समय व्यतीत किया, गोमेख़ 'दक्षिण अमेरिका की लज्जा बन गए। यह एक अंतहीन और रक्तमयी अत्याचारी सत्ता थी (1908-35) जिसने स्वयं को विदेशी तेल हितों के हाथों बेच दिया। यूरोप, उत्तरी अमेरिका और अन्य दक्षिण अमेरिकी राष्ट्रों से आंतरिक व्यवस्था हेतु युद्धपोतों को वेनेज़ुएला के तटों पर लाया गया।

सभी दक्षिण अमेरिकी गणतंत्रों के भयभीत संस्मरण शेष हैं। अर्जेंटीना में रोसास और पेरोन, पाराग्वे में रोदरीगेज़ फ़ांसिया, कारलोस अन्तोनिया लोपेख़ और स्त्रोएसनर, बोलीविया में मेलगारेख़ो, पेरू में कासतीलया और लेगुइया, एक्वादोर में ख़ुआन ख़ोसे फ्लोरेस, गार्सिया मोरेनो और वेइनतेमिलया, ग्वातेमाला में राफेल कारेरा, ख़ुस्तो रुफ़िनो बारीओस, एस्तरदा काबरेरा और ऊबिको, होन्डूरास में तिबुरकियो कारीयास, निकाराग्वा में सेलेया, अदोल्फ़ो दियास और सोमोस परिवार, सान्तो दोमिन्गो में तरूखिल्लयो, क्यूबा में मचादो और बतिस्ता, मैक्सिको में पोरफ़िरियो दियास, हैती के सम्राट क्रिस्तोफ़े और सौलौके तथा दुवालिएरस का अप्रसिद्ध वंश। ये सरकारें अविकसित राजनीति का प्रतीक थीं और योग्यता, ज्ञान या कुशलता पर आधारित नहीं थीं। संपूर्ण महाद्वीप मे इन सत्ताओं को सेनाओं का समर्थन प्राप्त था जिसके बोलीवार कड़े विरोधी थे। विभिन्न राष्ट्रों के अत्याचारी जनसाधारण पर नियंत्रण के लिए परस्पर एक हो जाते हैं। सैनिक अधिकारी अपने ही लोगों के शोषक रहे हैं, और उन्हें 'हासिएन्दास' के श्रमिकों की तरह श्रम करना पड़ता था। निजी सैनिकों को अवैतनिक श्रमिकों में परिवर्तित कर दिया गया और उन्हें सरकार द्वारा सीमित

खाद्य पदार्थ दिए जाते थे।

तानाशाही के अतिरिक्त प्रति-क्रांति का एक और परिणाम गृहयुद्धों की एक लंबी शृंखला थी जिसने हमारे गणतंत्रों, विशेषकर वेनेजुएला को आक्रांत किया। वेनेजुएला की प्रति-क्रांति के प्रथम सौ वर्षों के दौरान 354 हिंसात्मक घटनाएं घटीं; समय अत्याचार और हिंसा के बीच घूमता प्रतीत होता था। बोलीवार समझ गए थे कि स्वतंत्रता-सेनाओं के सदस्य बाद में अपने पुरस्कार की मांग करेंगे और इसी कारण से उन्होंने सैनिकों के लिए भूमि-वितरण की व्यवस्था की थी। 'कौदिल्लयो' वर्ग ने इन प्रयासों पर कोई ध्यान न देते हुए जनसाधारण की इच्छाओं का दमन कर दिया और वे उन सब आश्वासनों को तुरंत भूल गए जो उन्होंने उस समय किए थे जब उन्हें समर्थन की आवश्यकता थी। समाज का परिवर्तन हुआ, लेकिन यह सर्वोच्च स्तर तक ही सीमित रहा। औपनिवेशिक काल के मारकिसों तथा राजवंशियों ने परिस्थितियों के नए स्वामियों, सेनापतियों और वकीलों के साथ गठबंधन कर लिया। सेना से बिलग किए गए सैनिकों ने स्वयं को बेरोजगार पाया। सेवा की अवधि के दौरान वे हिंसा और लूटपाट के अभ्यस्त हो गए थे। उन्होंने अपने लिए सम्मान, और भौतिक लाभ प्राप्त किए थे। प्रगटतः, बढ़ती इच्छाओं और कम होते संतोष के कारण ये व्यक्ति स्वयं को हर जोखिम के लिए प्रस्तुत करने को तैयार थे। इसी कारण लोग किसी भी स्वयं-घोषित मसीहे का अनुसरण करने के लिए इच्छुक थे।

बोलीवार ने गौल से कहा था : 'मुझे युद्ध से अधिक शांति से भय लगता है।[8a] विश्वास करो, हम एक ऐसे ज्वालामुखी के कगार पर बैठे हैं जो शीघ्र ही फटने वाला है।' वह 'इल्लयानेरो' वर्ग की प्रतिक्रियाओं को अच्छी तरह समझते थे 'जिन्हें अब अपने शस्त्रों के कमाल से लाभ प्राप्त करने की कोई आशा नहीं है', और उन्होंने भविष्यवाणी की कि ये और अन्य लोग गृहयुद्धों में बारूद का काम देंगे। यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि अकेले वेनेजुएला में ही 1,000,000 व्यक्ति गृहयुद्धों में काम आए। 1830 से 1935 के मध्य शांति के पांच लगातार वर्ष भी नहीं थे और यही बात अन्य राष्ट्रों के लिए भी यथार्थ है। 1828 से 1855 तक केंद्रीय अमेरिका, अर्जेंटीना और कोलम्बिया की भांति मैक्सिको भी निरन्तर गृहयुद्धों से जीर्ण हो गया। विभिन्न कारणों से केवल दो राष्ट्र इन गृहयुद्धों से बच सके : पाराग्वे और ब्राज़ील। वेनेजुएला में इन युद्धों के प्रति बोलीवार-विरोधी विचारधारा व्याप्त थी, जो संघवाद के प्रश्न से सम्बद्ध थी। 1830 के बाद की सामाजिक व्यवस्था ने जनसाधारण, विशेषकर ग्रामीण जनता के शोषण को प्रोत्साहन दिया; यह एक झीने आवरण वाली सैनिक सत्ता थी जिसके कानून सूदखोरी के पक्ष में थे और परिणाम स्पष्ट थे : भूख और निराशा। यह व्यवस्था 1859 में चिंताजनक हो गई, जिसे वेलेन्सिया अधिवेशन

के योग्य और ईमानदार व्यक्ति भी दूर नहीं कर सके। गहन एवं कटु घृणा से उत्पन्न हिंसात्मक विरोधों को दबाया न जा सका। 1859 से 1864 तक, जबकि पुराने घाव अभी भरे भी न थे, वेनेजुएला पुनः युद्ध में उलझ गया। तत्काल प्रति-क्रिया महत्वपूर्ण नहीं थी, जैसा कि अन्तोनियो लेयोकादियो गुसमान ने स्वीकार किया : 'अगर दूसरी ओर से संघवाद की मांग उठती तब हमने केंद्रवाद का शोर मचाना था।' लेकिन फिर भी वेनेजुएला के समाज में व्याप्त विषमताओं के हल ढूंढ़ने में इसने सहायता की। इस समय संघवाद की वापसी का अर्थ था उपनिवेश काल के विभाजनों की ओर लौटना जो एक प्रतिक्रियावादी लक्ष्य था। बोलीवार के केंद्रवाद का वस्तुतः प्रगतिशील लक्ष्य था। केंद्रवाद योजनाबद्ध विकास के और संघवाद लेसेज़े-फेरे तंत्र के पक्ष में थे। लेकिन स्वतंत्रता आंदोलन की सफलता के बाद स्थापित व्यवस्था इतनी अनुचित थी कि इसके विरोधियों ने गलती से यह मान लिया कि त्रुटि केंद्रीय तंत्र की थी। वास्तव में संघीय आंदोलन के अंतर्गत सरकार के विकेंद्रीकरण और राज्यों की संख्या में वृद्धि के कारण षड्यंत्र और असंतोष के केन्द्रों को बढ़ावा मिला। एक नई सामाजिक अनुभूति सामने आई : 'स्थानीय विद्रोहों' का लक्ष्य प्रादेशिक सरकारों को सत्ता-विहीन करना था। संघ के भीतर अस्थिरता सिद्धांत बन गई। संघ के प्रथम पांच वर्षों में साठ स्थानीय उपद्रव हुए।

इसके अतिरिक्त समस्त अमेरिका में संघवाद के और भी अधिक दुखांत परिणाम हुए। संघवाद और केन्द्रवाद के झगड़े में वास्तविक लक्ष्यों को नज़र-अंदाज़ कर दिया गया और एक गौण विषय को प्राथमिकता दी गई। जनसाधारण की निर्धनता और समाज के अनेक वर्गों के विरूद्ध अत्याचारों के ज्वलंत प्रश्नों को नजरअंदाज कर कृत्रिम राजनीतिक विषयों पर बल दिया गया। 1838 में संघ-वाद ने केन्द्रीय अमेरिका को विभाजित कर दिया। अर्जेंटीना में ब्युनस आयर्स और राज्यों के बीच एक लंबा संघर्ष हुआ। चिले में 1828 में संघवाद धराशायी हो गया। ब्राज़ील और मैक्सिको में संघीय प्रणाली को अपनाया गया किंतु वहां भी अव्यवस्था रही। मैक्सिको में 1858-60 के बीच एक संघीय-युद्ध में उदार-वादी सदस्यों ने परंपरावादियों का विरोध किया और यह युद्ध फ्रेंच हस्तक्षेप और अप्रसन्न सम्राट मैक्सीमिलन के विरूद्ध संघर्ष के रूप में फैल गया। ब्राज़ील का संघीय तंत्र 1891 में सामने आया जब साम्राज्य एक गणतंत्र बन गया।

अमेरिका में प्रति-क्रांति के प्रारंभ से ही अस्थिरता का एक लक्षण 'संविधानों' का विस्तार करना था। प्रत्येक एक गहरे राजनीतिक संकट और एक नए प्रारंभ का परिणाम थे जो अक्सर थोड़ी समयावधि में ही धराशायी हो जाते थे। जैसा कि जीसस दे गालिन्देस ने लिखा : 'स्वतंत्रता के 150 वर्षों में हम देखते हैं कि दोमिनिको गणतंत्र के 25 संविधान, वेनेजुएला के 23, हैती और एक्वादोर के 18,

बोलीविया के 16, होन्डूरास के 14, एल सालवादोर, पेरू और निकारागवा के 12 संविधान थे। कुछ राष्ट्रों में हर वर्ष एक नया संविधान घोषित कर दिया जाता था और कुछ में तो एक ही वर्ष में दो संविधान देखे गए। संविधानों को समाप्त कर पुनर्जीवित किया गया। कुछ संविधान तो लागू किए जाने से पूर्व ही समाप्त कर दिए गए।'[9]

दक्षिण अमेरिका ने इन राजनीतिक गलतियों का भुगतान रक्त से किया, जैसा कि बोलीवार ने चेतावनी देते हुए कहा था : 'अमेरिकी परिस्थितियां इतनी विचित्र और भयानक हैं कि कोई भी व्यक्ति इतना कहने का भी साहस नहीं कर सकता कि वह एक नगर में भी व्यवस्था कायम रखने में सक्षम है।'[10] 'संपूर्ण अमेरिका रक्तमय अव्यवस्था का प्रतीक है। समस्त वैधानिक सिद्धांतों का परित्याग कर हम एक ज्वालामुखी के मुख पर बैठे हुए हैं···उपयुक्त समय और स्थान पर बुद्धिमत्तापूर्वक प्रयुक्त की जाने वाली शक्ति का आश्रय ले रहे हैं···।' ये और अन्य चेतावनियां दक्षिण अमेरिका में आज भी मान्य हैं और न जाने कब तक रहेंगी, जैसा कि बोलीवार ने कहा : 'अगर अमेरिका अपनी असफलता को स्वीकार कर उपयुक्त कदम नहीं उठाता तो इसकी सरकारों की स्थिरता की बहुत कम आशा है, और एक नया उपनिवेशवाद हम अपने वंशजों के लिए छोड़ जायेंगे।'

बोलीवार के देहांत के उपरांत राजनीतिक क्षेत्र में ही गलत कदम नहीं उठाए गए अपितु समस्त क्षेत्रों में, जिन के लिए उन्होंने विकसित प्रयासों की चर्चा की थी, यही स्थिति देखी जा सकती है। उनकी मृत्यु के बाद स्थिति उतनी ही खराब हो गई जितनी यह क्रांति से पहले थी। उदाहरणार्थ बोलावार के भूमि-वितरण के प्रयासों के साथ यही हुआ। अंगोस्तुरा कांग्रेस के सम्मुख भूमि-वितरण को तीव्रता से स्वीकार करने की उनकी प्रार्थनाओं के बावजूद कांग्रेस ने इसमें इतने अधिक परिवर्तन किए कि इसका रूप ही बदल गया। सम्पत्ति के अधिकारों के संदर्भ में उन्होंने बोलीवार के महत्वपूर्ण शब्दों को हटा दिया जिनके अनुसार उन्होंने राज्य को अनिवार्य क्षति के भुगतान से मुक्त कर दिया था, अनधिकृत भूमि पर अधिकार के सीमा-क्षेत्र को बढ़ा दिया था तथा परंपरागत सम्पत्ति को वैसे ही रहने दिया था। जहां तक भूमि के वास्तविक वितरण का प्रश्न है, उन्होंने 'न सिर्फ सैनिकों बल्कि सेना की प्रशासनिक शाखाओं के कर्मचारियों और राष्ट्र की सेवा करने वाले सभी वर्गों के लिए भूमि-वितरण की घोषणा की।'[11] इसके अतिरिक्त बोलीवार तीव्र और प्रभावशाली वितरण चाहते थे और इसके लिए उन्होंने एक अस्थायी परिषद का गठन भी किया था। 31 जुलाई 1820 के एक अधिनियम द्वारा कांग्रेस ने इसमें परिवर्तन कर भूमि के वास्तविक वितरण की जगह धन-पत्रों के वितरण की आज्ञा दी। इस परिवर्तन ने भूमि-वितरण कार्यक्रम को चौपट कर दिया। बोलीवार बोगोता में थे जब अंगोस्तुरा में यह अधिनियम

प्रकाशित किया गया। उन्होंने इन परिवर्तनों को हटाए जाने की मांग की जिन्होंने कानून के वास्तविक सुधारवादी लक्ष्य को अस्वीकार कर राज्य पर अपार ऋण का भार डाल दिया है'[12]···मंत्री ब्रीसेनो मेन्देथ़ के माध्यम से उन्होंने गौल को कहा कि वह कांग्रेस को ये परिवर्तन न करने की आज्ञा दें क्योंकि इनके द्वारा हमारे निर्धन सैनिकों को कोई लाभ न पहुंचेगा, और हमारे राष्ट्र की आर्थिक परिस्थितियां इसकी आज्ञा नहीं देतीं। गंभीर संकट में अवगत हो बोलीवार ने गौल से न सिर्फ वैधानिक सुधार करने की मांग की बल्कि उन्हें रुपये के मूल्य को कम किए जाने का भी विरोध करने को कहा। उन्होंने पुनः दोहराया कि कांग्रेस को तुरंत ऐसे कदम उठाने चाहिएं जिनसे सैनिकों के साथ पुरस्कार हेतु किए गए आश्वासन को सम्मानित किया जा सके। सैनिकों की आशाओं पर आधारित इन आश्वासनों की विश्वसनीयता के अंत का परिणाम भयानक होगा : 'शांति के दिन निकट आ रहे हैं जब सैनिकों को सेवा-मुक्त कर दिया जाएगा; अगर ये सैनिक पुरस्कार के बिना घर लौटेंगे तो हम वैसी ही राजनीतिक अस्थिरता का सामना करेंगे जैसी स्पेनवासियों ने 1814 में वेनेजुएला के आक्रमण के बाद की थी। मेरी आशा है कि यह गृहयुद्ध का संकेत नहीं है जो सामाजिक वर्गों के बीच की विषमताओं के कारण हमें भयभीत करता है।'

गोल की प्रार्थनाओं के बावजूद कांग्रेस ने 1 सितम्बर 1821 को ही धन-पत्र संबंधी अधिनियमों को स्थगित करने का आदेश दिया। दुर्घटना घट चुकी थी क्योंकि सट्टा करने वालों ने धन-पत्रों पर अधिकार कर लिया था, जिनके हितों का रक्षक वह अधिनियम था जिसके अनुसार प्राप्तकर्ता के स्थान पर धन-पत्र स्वामियों के अधिकारों की रक्षा की जानी थी। इसके अतिरिक्त धन-पत्र अपने मूल्य का 95% भाग खो चुके थे, यद्यपि मेन्देथ़ के कथनानुसार 'उस मूल्य पर उन्हें बेच पाने वाले सैनिक प्रसन्न हैं। यह पक्की बात है कि एक भी मौलिक प्राप्तकर्ता के पास इस समय धन-पत्र नहीं हैं, सभी खरीददारों के हाथों में अत्यंत कम मूल्यों में पहुंच गए हैं। यह देखने के लिए किसी भविष्यवक्ता की आवश्यकता नहीं थी कि साधारण कागज़ी धन का वितरण सार्वजनिक विश्वास का अंत कर देगा, क्योंकि इस कागज़ी धन के पीछे कोई कोष न था···और इसे अत्यंत निर्धन लोगों के हाथों में दे दिया गया जिनके पास इन्हें बेच कर अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के सिवा और कोई चारा न था।' वितरण को नागरिकों तक बढ़ाने का विचार यों तो एक विचार ही था किन्तु यह वास्तव में इस प्रयास के लक्ष्यों को नष्ट करने में सहायक सिद्ध हुआ। भूमि उन प्रशासनिक अधिकारियों में वितरित कर दी गई जिन्हें कृषि में कोई रुचि न थी और प्राप्तकर्ताओं की संख्या एक असंभव सीमा तक पहुंच गई। बोलीवार ने पुनः इस विषय पर ब्रीसेनो मेन्देथ़ के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त किया : 'क्या कोई भी अपने स्वास्थ्य, रक्त

और जीवन के अनमोल क्षणों का बलिदान देने वाले सैनिकों की तुलना खतरों से परे, सुरक्षित नागरिकों से कर सकता है जिन्हें ऊंचे वेतन और पद प्राप्त हैं ?'

इन समस्याओं और अस्वीकृतियों के बावजूद बोलीवार भूमि-वितरण के लिए दृढ़ रहे। कानून की असंतोषप्रद नीति के बावजूद उन्होंने अपनी शक्ति का पूरा प्रयोग इसे लागू करने में किया। इस तरह जनवरी 1821 में उन्होंने वेनेजुएला में भूमि-वितरण के लिए सेनापति पैख़ को पूर्ण अधिकार सौंप दिए। लेकिन पैख़ ने अपने निजी हितों को प्राथमिकता दी। इन अधिकारों को स्वीकार करने के नौ मास बाद उन्होंने कासा लेओन के एक शानदार अधिकृत 'हासिएन्दा' ला तरीनिदाद को अपने नाम में परिवर्तित किए जाने की इच्छा व्यक्त की। सरकार ने उपराष्ट्रपति को आदेश दिए : 'सेनापति पैख़ की सेवाओं को दृष्टि में रखते हुए इन्हें हासिएन्दा ला तरीनिदाद दिया जाता है, जिसका मूल्य विशेषज्ञों द्वारा आंका जाएगा। कृपया सरकार के नाम में उनके प्रति दस्तावेज़ तैयार किए जाए। भुगतान मे निम्नलिखित स्वीकार्य होंगी : 'प्रथम, 'यागुआ' का मूल्य जिसे आंका जाना है : द्वितीय, उनके प्रति देय संपूर्ण वेतन-राशि जिसका इस तरह भुगतान हो जाएगा : तृतीय, भविष्य में उनको दिया जाने वाला वेतन : चतुर्थ, हासिएन्दा के उत्पादनों से उन्हें प्राप्त होने वाली राशि ; इस प्रकार यशस्वी नेता और सरकार की इच्छाओं का समाधान हो जाएगा जो उनकी प्रार्थना को पूरा करने में गौरव अनुभव कर रही है।'[13]

सैनिकों ने निःसंदेह असफलताओं और निराशा का सामना किया किन्तु इंडियन वर्ग के साथ तो इससे भी बुरा हुआ। इंडियन भूमि को इंडियनों को लौटाए जाने संबंधी मई 1820 की घोषणा को नज़रअंदाज़ कर दिया गया। बोलीवार के निर्देशों पर ब्रीसेनो मेन्देख़ ने 12 फरवरी 1821 को एक दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किए जो इन दुःखदायी घटनाओं का साक्षी है : बोलीवार ने प्रत्येक गांव में ये शिकायतें सुनी हैं कि न सिर्फ नए अधिनियमों का पालन नहीं किया गया है बल्कि उनकी भूमि के लूट लिए जाने से इंडियनों की स्थिति विकट हो गई है, या फिर कई स्थानों पर उन्हें कृषि-अयोग्य भूमि या भूमि के छोटे-छोटे टुकड़े दिए गए हैं···और इंडियनों के प्रति इस दुर्व्यवहार का कारण एक विद्यालय की स्थापना और इसके अध्यापक को वेतन का भुगतान किया जाना बताया गया है।' हम देख चुके हैं कि बोलीवार ने 1820 की घोषणा को नया जीवन दिया और तुन्ख़ा के प्रधान सेनापति को भूमि-वितरण कार्यक्रम का कार्य सौंपा और उन्हें कहा कि 'शोषितों की तरह इस वर्ग के विकास को भी सदा अपने मस्तिष्क में रखिए।' बोलीवार ने आशा व्यक्त की कि अब इस विषय पर उन्हें और अधिक शिकायतें सुनने को नहीं मिलेंगी, और उन्होंने जोर देकर कहा कि 'इंडियनों' को हमें 'प्राकृतिक न्याय और परिणाम' दिलवाना है। इस घोषणा के पश्चात अनेक

अन्य ऐसी घोषणाएं की गई जिन्हें 4 अक्तुबर 1821 के एक कानून में सम्मिलित किया गया, लेकिन तदोपरात इन्हें नजरअंदाज़ कर दिया गया। प्रक्रिया समान थी: प्रथमत:, इंडियनों का स्पष्टत: पक्ष लिया गया और उन्हें 'अन्य नागरिकों'''की तरह हर प्रकार से समान घोषित करना', और तब बोलीवार की घोषणा की तरह का एक और प्रस्ताव सामने आया जिसने पिछले प्रस्तावों को खत्म कर देना था। जैसे ही परिस्थितियां इजाज़त देंगी, 'इंडियनों में भूमि वितरण कर दिया जाएगा।' वस्तुत: 1826 के अंत में जब बोलीवार पेरू से लौटे, उन्होंने पाया कि इंडियन शोषण और लूटपाट के शिकार हो रहे हैं और जब उन्होंने इसे ठीक करना चाहा तो उनका सामना स्वार्थी उच्चकुलतंत्र से हुआ, जो 1821 से कोलम्बिया में सर्वोच्च थी, और इससे उनके शत्रुओं की संख्या बढ़ गई।

1830 में सर्वोच्च पदों पर परिवर्तनों के बावजूद आर्थिक अन्याय और लोगों की गरीबी की समस्या अभी भी मौजूद थी। क्रांतिकारी विचार कुछ लोगों के स्वार्थी कार्यों से धराशायी हो गए। ये वे लोग थे जो आरम्भ में बहुत सरल व ईमानदार थे लेकिन उच्च पद पाते ही वे अपनी प्रारम्भिक दशा भूल गए। राज्य ऐसे लोगों के प्रति उदार था। खरीददारियों और हस्तांतरणों द्वारा सभी वांछित 'हासिएन्दास' इन लोगों के हाथों में चले गए। गुयीरा में हासिएन्दा ला सोलेदाद् सेनापति सान्तीयागो मारिनो के हाथ चला गया: यगूरापारो सेनापति खुआन बौतिस्ता अरिस्मेंदी के पास; एल तरापिकीतो कर्नल कारनिलो मुनोख के पास; माराके में एल रिंकान कर्नल ख़ोसे लुगो के पास; गुयीरा में योको जनरल ख़ोसे फ्रांसिस्को मार्तिनेज़ के पास और कुमाना तथा काराकास में हासिऐन्दास सेनापति ख़ोसे फ्रांसिस्को बरमुदेज़ के हाथ लगा। काराकास के भूमि-स्वामियों ने, जो राज्य द्वारा प्रस्तावित वितरण हेतु भूमि पर नज़र रखे थे, तीन भाषाओं में एक घोषणा-पत्र प्रकाशित किया जिसका उन्होंने खूब प्रचार किया, और जिसमें बोलीवार की आलोचना की गई थी। यह 1819 की बात है। 1821 में उन्होंने चाटुकारिता का प्रश्रय लिया जिससे वे बोलीवार को उनकी सम्पत्ति लौटाने के लिए बाध्य कर सकें। बोलीवार ने इसका जवाब बिलकुल ठीक और शांति से दिया कि वह कानूनी प्रक्रिया के खिलाफ कुछ नहीं कर सकते। अगर उन दावेदारों ने सोचा था कि न्याय उनके पक्ष में है तो उन्हें ज़रूर कानून तक का गलत रास्ता मालूम होगा। इन धनी भूमि-स्वामियों में सांसद, राजदूत और सार्वजनिक अधिकारी भी थे और उन्होंने आखिरकार क्रांति को समाप्त कर दिया। मागदालेना विभाग के सिपाहियों ने 1828 में एक प्रस्ताव पारित किया जिसमें उन्होंने उन घटनाओं की निंदा की जिन्हें वह अरसे से देख रहे थे। 'यहां सिवाय अन्याय उपेक्षा और घृणा के कुछ नहीं है'''किसने हमारी भूमि हथिया ली है? उन धनिकों ने जिन्होंने असली कीमत का पांचवां या छठा भाग अदा कर ज़मीनों के पट्टे खरीद लिए;

सरकार ने अनुचित रूप से उनका साथ दिया। अतः जब तक एक सिपाही जमीन का अपना हिस्सा मांगने आया तो उसे ज्ञात हुआ कि वह पहले ही किसी नागरिक को दिया जा चुका था'''कागजात प्राप्य दाम पर बेचे जा चुके थे और इस तरह भ्रष्टाचार, सूदखोरी और सट्टाबाजी के आकर्षण-बिन्दु बन गए थे।'[14]

यह संपूर्ण प्रक्रिया कांग्रेस की 5 अगस्त 1830 की एक घोषणा की प्रगति में देखी जा सकती है जिसने सम्पत्ति को जब्त करने के बोलीवार के प्रस्तावों को परिवर्तित कर दिया था। पैख़ ने अब घोषणा की कि सम्पत्ति जब्त करना 'स्वतंत्र लोगों के अधिकार के खिलाफ है' (कौदिल्लयो वर्ग ने सारी ज़मीन हड़प ली थी)। गसेता दे काराकास में प्रकाशित हुई घोषणा पर एक सरकारी टिप्पणी द्वारा बोलीवार के प्रभाव का ज़िक्र करते हुए कहा गया : 'सार्वजनिक महत्व की निम्न-लिखित घोषणा द्वारा सम्पत्ति को ज़ब्त करना खत्म कर दिया गया है जो न्याय-प्रिय व्यक्तियों की आंखों में सदा खटकता रहा है और जो युद्ध की प्रक्रियाजन्य परिस्थितियों में पारित किए गए कानून हैं, और एक प्रकार की चोरी है जिसका विरोध न्यायोचित है। ये जनतांत्रिक, सभ्य और मानवीय प्रयास हैं जिनके द्वारा हमारे प्रतिनिधि वेनेजुएला के नए युग की शुरूआत करते हैं और जिनसे देश में और देश के बाहर प्रत्येक सही सोचने वाले व्यक्ति का समर्थन मिलेगा। ऐसे न्यायोचित प्रयासों से हम शांति और नैतिकता कायम रखने में सफल होंगे, जिन्हें हमारे पूर्व-वर्ती गणतंत्र के विध्वंसक खो चुकने में सफल रहे हैं। एक बार जब यह घोषणा पारित हो जाएगी तो भूमि-स्वामी अपना पैतृक या स्व-अर्जित हासिएन्दा आसानी से भोग सकता है, और यह सोच सकता है कि यह उसके बच्चों की जीविका के लिए भी पर्याप्त होगा, इस भय से मुक्त कि कोई धनपत्र-स्वामी इस सम्पत्ति को अपने बाप-दादा या पीढ़ियों की सम्पत्ति बता, इस पर कब्ज़ा नहीं कर लेगा।[15]

यह कहने की ज़रूरत नहीं कि इस कदम से सर्वाधिक प्रभावित लोग कम प्रभाव वाले लोग थे, जैसे जनरल एनसोआतेगुई की विधवा जिसे उस सम्पत्ति से एक शाही सदस्य द्वारा वंचित कर दिया गया जिस पर उसकी और उसके परिवार की जीविका निर्भर थी। पैख़ के बाद कौदिल्लयो सरकारें भूमि कार्यक्रम की इस असफलता से जन्य कृषक आंदोलन के खिलाफ कुछ न कर सकीं। सभी कौदिल्लोस में से पैख़ अपने शासन के दौरान सबसे धनी हो गए। जैसा कि उन्होंने स्वयं सान्तान्देर को लिखा : 'मेरा दिमाग मेरे शत्रुओं को खत्म करने की इच्छा से भरा हुआ है : अगर वे कल गणतंत्र से निष्कासित कर दिए जाते हैं तो मेरी एकमात्र इच्छा राज्यों द्वारा मुझे भेंट दी गई सम्पत्ति को इकट्ठा करना और बढ़ाना होगी '''इस राष्ट्र ने मुझे बेहद सम्मान दिया है और मेरे स्वतंत्रता और प्रशासन के प्रयत्नों के लिए मुझे जरूरत से ज्यादा क्षतिपूर्ति दी है।'[16] बोलीवार ने 12 मई 1828 को पेरू दे लेकरोइक्स को कहा : 'काराकास से आए खत मुझे उदास कर

देते हैं क्योंकि उन सब में देश की गरीबी की बात होती है और व्यवसाय व कृषि में कमी व गिरावट का उल्लेख होता है : सिर्फ सेनापति पैख इस बारे में कुछ नही कहते क्योंकि निःसंदेह उनके अपने प्रयत्न सफल हो रहे है और वह सार्वजनिक निर्धनता मे अनजान हैं।'[17] अपनी वसीयत में जो 24 जुलाई 1865 में न्यूयार्क में तैयार की गई, पैख ने घोषणा की कि जब उन्होंने 1809 में विवाह किया तब उनके पास कुछ नहीं था फिर भी 1811 के बाद से जब उन्होंने अपना जीवन राजनीति और युद्ध में व्यतीत करना प्रारंभ किया, उनके पास यह सब धन इकट्ठा हो गया। माराकेए में हासिएन्दा ला तरीनिदाद ; पुयनरो काबैल्लो में कस्टम हाऊस जो शहर की प्रमुख जगह थी; माराकेए में एक घर और एक छोटी जमीन का हिस्सा; सान पैबलो विशाल पशुपालन गृह जो गणतंत्र मे शायद सबसे बड़ा था, कई राज्यों में फैला हुआ और जिसमें 1848 में 20000 भेड़ें, 700 खच्चर, 300 गधे, और लगभग 500घोड़े शामिल थे। पैख ने हासिएन्दा कुओ को भी किराए पर चढ़ा दिया जो विश्वविद्यालय की सम्पत्ति था। उन्हें इसे एक मूल्यवान सम्पत्ति में बदल देने का गर्व था, और वहां उगने वाले पेड़ों, चाय के बागानों व गन्ने के खेतों का उन्होने वर्णन किया। बिना किसी सकोच के उसने यह भी लिखा : अभी भी मुझे सरकार से उन दासों की कीमत प्राप्त करनी है जो मेरे पास ला तरीनिदाद और सान पैबलो में थे।'[18] एक अंतिम वसीयत और दस्तावेज के रूप में यह बोलीवार और सान्तान्देर की वसीयत से बिलकुल भिन्न है।'[19]

अत्याचारों के दौरान भूमि और भी कम हाथों में केंद्रित हो गई। राजनीतिक शक्ति धन-सम्पत्ति की ओर जाने वाला महामार्ग था, जैसा कि इस और अन्य अभागे लातीनी अमेरिकी देशों में हो रहा था। 20वी शताब्दी की मैक्सिकन क्रांति ने लातीफून्दियोस को समाप्त करने के लिए युद्ध किया। आज भी कुछ देशो में विशाल सम्पत्तियां विद्यमान हैं। इसने संस्कृति की प्रगति को रोका, औद्योगिक विकास में बाधा डाली और इस तरह जनता की अज्ञानता और शारीरिक कमजोरी का कारण बनी। लातीफून्दियो लातीनी अमेरिका में ग्राम्य शोषण का विशिष्ट उदाहरण है। यह असहाय ग्रामीण जनता पर लंबे समयों के लिए भूखों मार देने वाले वेतनों पर अंकुश लगाती है। अत्याचारी गोमेस के पास वेनेजुएला में 1,250,000 हैक्टेयर के लगभग चरागाह भूमि और 120,000 हैक्टेयर के आसपास कृषि योग्य भूमि थी, कुछ अरागवा राज्य में और कुछ पड़ोसी काराबोबा में; कुछ ताकीरा में और शेष वेनेजुएला व कोलम्बिया के अन्य राज्यों में (इसी तरह का एक सर्वोत्तम उदाहरण होतास देल कौरा में है जो एक विशाल लाती-फून्दियो है जिसका गठन जनरल खोआकिन क्रेस्पो ने राष्ट्रपति पद के दौरान किया। खुआन वीसेन्ते ने क्रेस्पो के एक सम्बंधी से इस हासिएन्दा को 1911 में 80,000 बोलीवारेस में खरीदा। 1926 में उसने इसे राष्ट्र को 16,000,000

बोलीवारेस में बेच दिया।

बोलीवार द्वारा दक्षिण में बिताए गए वर्षों का उपयोग उनके शत्रुओं ने महा कोलम्बिया में एक ऐसा ढांचा तैयार करने के लिए किया जो बोलीवार के आदर्शों से पूर्णतः भिन्न था। कुकुत्ता कांग्रेस ने नए करों का गठन किए बिना पुराने करों को समाप्त कर दिया। धनी वर्ग किसी भी तरह के करों के भुगतान के विरुद्ध थे और उन्होंने राज्य द्वारा बड़े ऋण लिए जाने की पेशकश की। जैसा कि लीवानो अगीरे ने कहा था : 'इस नीति द्वारा स्वतंत्रता युद्ध-चर्चा का विषय बन गयी। लोगों ने अपनी मृत्यु से और अपने रक्त से अदायगी की, जिसपर कोई कर नहीं था। दूसरी तरफ व्यवसायी अपने मूलधन को ब्याज सहित वसूल करने में व्यस्त थे।'[20] तो भी बोगोता, एन्तोकीया और कारताख़ेना के धनिक जल्द ही ऋण देते-देते थक गए और उन्होंने सरकार पर विदेशों से सहायता लेने के लिए दबाव डाला। अंग्रेज़ी ऋण की दुःखद कथा हमारे सामने है। आर्थिक क्षेत्रों ने आढ़ती उपलब्ध कराये जिन्होंने कोलम्बिया की ओर से इंग्लैंड से उधार के लिए भाव-तौल किया। लीवानो अगीरे ने लिखा : 'क्योंकि देश का शासन शक्तिशाली धनिकतंत्र के हाथों में था, अतः ऋण का प्रयोग अंग्रेज़ी वस्त्रों और उत्पादनों के आयात के लिए किया गया जिससे थोड़े ही समय में यह ऋण-राशि अपने देश का हित किए बिना पुनः इंग्लैंड लौट आयी। ऋण द्वारा उपलब्ध विदेशी मुद्रा का प्रयोग औद्योगिक या कृषि-कार्यों की बजाय ऐसे उत्पादनों के आयात के लिए किया गया जो देश में तैयार हो सकते थे और जिससे एक व्यर्थ की स्पर्धा शुरू हो गई।' अंग्रेज़ी मुद्रा का एक विशेष भाग कमीशन में ही निकल गया। बोलीवार ने इस तरह की गतिविधियों को रोकने के लिए लगातार प्रयास किया जिसने उनकी ज़िंदगी पर आघात के लिए लोगों को उकसाया; ऐसा ही एक हमला 25 सितंबर 1828 को हुआ। उन्होंने वेनेज़ुएला के ख़ज़ाने का पुनर्गठन करने का प्रयास किया। काराकास से उरदेन्ता को घोषणा करते हुए 1827 में उन्होंने कहा : 'ख़ज़ाने के नियंत्रण का आदेश दिया जाना है जिससे पर्याप्त मात्रा में धन उपलब्ध होगा। अगर हम चोरी ख़त्म कर दें, ख़र्च कम कर दें और लाभ बढ़ा दें तो हम आगे बढ़ सकते हैं और भुगतान करने वाले धन के सम्बंध में आश्वस्त हो सकते हैं।' तदोपरांत उन्होंने ख़ोसे गेबरील पेरेख़ को बताया : 'उन दिनों जब मैं बोगोता में था, मैंने राज्य का ख़र्च 6,000,000 कम कर दिया और वेनेज़ुएला में कई सुधार किए। सार्वजनिक नैतिकता को कई शिक्षाप्रद उदाहरण मिले।''[21]

बोलीवार के परवर्ती समय में सारे लातीनी अमेरिका में राष्ट्रीय स्रोतों ने विदेशी कम्पनियों के हाथों में विधिवत् समर्पण किया। ख़ुआन विसेन्ते गोमेख़, वेनेज़ुएला में एन्तरेगिसमो की नीति का ज्वलंत उदाहरण हैं जिन्होंने अपने पूर्ववर्ती किपरियानों कास्त्रो द्वारा स्थापित करों की अपेक्षा खदानों के करों को और

भी कम कर दिया। 1927 में वेनेज़ुएला को तेल-छूट से 10,000,000 डालर की लागत पर 3,400,000 डालर का फायदा हुआ। लागो पैट्रोलियम कम्पनी ने, जो स्टैंडर्ड तेल की एक उप कम्पनी थी, 3,500,000 डालरों की मूल राशि से 8,000,000 डालर बना लिए। 1924 और 1927 के बीच शेयर 600% बढ़े। 1923 और 1930 के बीच 7 वर्षों में गणतंत्र ने हाइड्रोकार्बन उद्योग से 187,000,000 बोलीवारेस कमाए। इसी अवधि में इसने तेल कम्पनियों को आयात करों से 219,000,000 बोलीवारेस की छूट दिलवा दी। जैसा कि विकास मंत्री ने कहा : 'ये कम्पनियां हमारा पैट्रोलियम ले जा रही हैं और वेनेज़ुएला सरकार उन्हें ऐसा करने के लिए धन अदा कर रही है।'[22] विदेशी कम्पनियों की मदद के लिए पैट्रोल सम्बंधी कानूनों का गठन किया गया; 1920 में वेनेज़ुएला में पैट्रोलियम पर पहला कानून पारित किया गया। गोमेख़ के कुछ सहयोगियों को ही इस कानून से लाभ हुआ जो बहुत कम था। 1921 में कानून को परिवर्तित कर दिया गया लेकिन जब यह स्पष्ट हो गया कि विदेशी कम्पनियां इस प्रबंध से खुश नहीं हैं तो गोमेख़ ने सभी विदेशी कम्पनियों को इकठ्ठे बुलाया : 'आप पैट्रोलियम के बारे में जानते है', उन्होने कहा : 'आप कानून बनाइए। हम तो इस व्यवसाय में नौसिखए हैं।'[23] 1922 का कानून तेल कम्पनियों का प्रतिनिधित्व कर रहे वकीलों द्वारा तैयार किया गया और ये वही थे जिन्होंने 1925, 1928 और 1935 में संशोधनों का प्रस्ताव रखा। 'वेनेज़ुएलन पैट्रोलियम कानून तेल कम्पनियों के लिए सारे विश्व में सर्वोत्तम है', जिसकी गोमेख़ ने 1930 में घोषणा की। उनके पद को तेल कम्पनियों और उनके मित्रों ने सुरक्षित रखा जिनके विदेशी सरकारों से अच्छे संबंध थे; और यही कहानी कुछ दिनांकों के अन्तर के साथ प्रत्येक लातीनी अमेरिकी शासक के बारे में दोहराई जा सकती है; पैट्रोल के स्थान पर सोना, तांबा, चांदी, टिन, लोहा, केले, काफी, लकड़ी या रबर जैसे उपयुक्त शब्द रखे गये। यह कहानी उपन्यासों तथा विरोध गीतों में सुनाई जा चुकी है, लेकिन इसे एक और उद्देश्य पूरा करना चाहिए, और वह है भविष्य के लिए सीख।

अब अगर हम दासता के प्रश्न पर विचार करें तो हम पाते हैं कि बोलीवार की सलाह के बावजूद फिर वैसे ही प्रयास किए जा रहे हैं। दुखद तथ्य यह है कि दासता बोलीवार के काफी समय बाद तक जारी रही और इसके प्रचलित रहने का कारण उन लोगों के प्रयास थे जिन्होंने बोलीवार का स्वतंत्रता-आंदोलन में साथ दिया था, और उनकी सीख का एक हिस्सा ही जीवित था, और वह था सामाजिक समानता। भूमि सुधारों की तरह बोलीवार के शेष लक्ष्यों को भी देरी और व्यर्थ के वाद-विवाद से क्षति पहुंची। अंगोस्तुरा कांग्रेस ने 11 मास उपरांत जनवरी 1820 में दासता-उन्मूलन के प्रश्न को 'कोलम्बिया प्रतिनिधि परिषद को

सौंपने का निर्णय लिया, जिसका अधिवेशन अगले वर्ष के आरंभ में होना था।'[24] इस विषय पर कांग्रेस में हुई बहस का जिक्र दस्तावेज़ों में पाया जा सकता है। दोन फरनान्दो पेनेलवेर ने दासता के प्रश्न की महत्ता को माना और परिषद को याद दिलाया कि कृषि वेनेजुएला में दास-प्रथा पर निर्भर थी और कहा कि बोलीवार की प्रार्थना को तब तक प्रभाव में न लाया जाए 'जब तक कांग्रेस को यह सूचना नहीं मिलती कि उन लोगों को स्वतंत्रता देने से क्या लाभ होंगे जिन्होंने इसे कभी जाना नहीं है।' इस विषय को उन उपाध्यक्षों को सौंप दिया गया जिनके ऊपर संविधान को स्पष्ट करने का दायित्व था। उन्हें जितनी जल्दी संभव हो, एक बिल तैयार करने के लिए कहा गया। चार मास बाद भी उन्होंने कुछ नहीं किया था। सिर्फ उपप्रधान पुमर ने विषय को सामने लाने का प्रयत्न किया। अंततः एक मास के बाद बहस शुरू हुई। 17 अगस्त की बैठक में सचिव ने टिप्पणी की कि इससे कई परेशानियां उठ खड़ी होंगी। इसे कई बार स्थगित कर दिया गया। 8 नवम्बर की बैठक में 'दासों की स्वतंत्रता का विधेयक सामने आया और श्रीमान एस्पाना यह कहने के लिए उठ खड़े हुए कि वह इस विषय पर विचार करना ज़्यादा महत्वपूर्ण समझते थे कि नदी में पिछले कई दिनों से शव मिल रहे हैं···।'[25] परिषद को सौंपी गई उस विज्ञप्ति के पहले लेख में घोषणा की गई थी कि दासता 'कानूनी रूप से समाप्त कर दी गई है।' दूसरे में यह प्रबंध था कि 'स्थिति ऐसी ही रहेगी जैसी अब है।'[26] इसमें यह प्रवधान भी था कि उन दासों के मालिकों को क्षतिपूर्ति दी जाएगी जिनको सेना में बुलाया जाएगा। अविश्वसनीय तथ्य जो इसमें शामिल था : 'दूसरे देशों के रीति-रिवाजों और कानूनों का सम्मान करते हुए हम घोषणा करते हैं कि कोई भी दास जो किसी विदेशी राष्ट्र से बच निकलेगा, उसे कारावास में डाल दिया जाएगा या मालिक को लौटा दिया जाएगा'। जिसने उसके भागने में मदद की होगी, उसे छुपाया होगा या उसे संरक्षण दिया होगा, उसको भी दंड दिया जाएगा। स्पष्टतः इन सुंदर भावों को चतुराई से कहा गया है : 'इन लोगों की अनभिज्ञता और नैतिक पतन को देखते हुए हमें इन्हें नागरिक बनाने से पहले मनुष्य बनाना है···उन्हें जीना सिखाना है, उन्हें हमें वह सब कुछ देना है जो अंधे को दृष्टि देने के तुल्य है, जिससे वे दिन की चकाचौंध से कहीं बौरा न जाएं।'

बोलीवार कूकुत्ता कांग्रेस में पुनः कार्यरत हो गए और काराबोबो की विजय का लाभ उठाने पर ज़ोर दिया, जिसे 'स्वतंत्रता वाहिनी ने जीता था और जिसका रक्त स्वतंत्रता संघर्ष में बहा।'[27] कांग्रेस ने जो अब ज़्यादा देर तक इसे स्थगित नहीं कर सकती थी, जुलाई 1821 में कानून पारित कर दिया जिसके अनुसार 'दासता और दास व्यवसाय के उन्मूलन की घोषणा कर दी गई।'[28] पुनः उन्होंने पूर्ण मुक्ति की बात की जिससे 'सार्वजनिक शांति और दास-स्वामियों के अधिकारों को कोई

आघात न पहुंचे।' इस विधेयक में कोई भी सही कदम अगले कदम से समाप्त हो जाता था। पहले लेख ने 'इस कानून के प्रकाशन के बाद दासों से जन्मे बच्चों' को स्वतंत्र घोषित कर दिया, लेकिन दूसरे ने साथ में जोड़ दिया कि इन बच्चों को 18 साल की उम्र तक कार्य कर अपनी माताओं के स्वामियों को भोजन, कपड़े व शिक्षा के लिए भुगतान करना होगा।' पांचवें लेख में यह कहा गया कि 'कोई भी दास उस राज्य से बाहर नहीं बेचा जा सकता जहां वह रहता है, ताकि परिवारों को विघटित होने से बचाया जा सके।' लेकिन उन्होंने साथ ही यह भी जोड़ा कि 'यह पाबंदी तभी तक है जब तक बच्चे विकसित नहीं हो जाते।' यहां तक कहा गया कि एक राज्य में दासों को अगर इन कानूनों के विरुद्ध लाया गया तो वे स्वतंत्र हो जाएंगे।

कानून यद्यपि कठोर था तो भी कांग्रेस ने यह ध्यान रखा कि इस कानून पर अमल कराने का कार्य उन लोगों को न सौंपा जाए जिनके दासता जारी रखने में स्थापित हित थे। न ही ये लोग हमेशा पुरानी पद्धति से अलग होते थे। कई बार ये वही लोग थे जिन्होंने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया था, सेनापति, न्यायाधीश और उपप्रधान। ये वही लोग थे जिन्होंने खज़ाने के धन-पत्रों की हेराफेरी से विशाल भूमि के हिस्से हड़प लिए थे और अब इन विशाल भूमि के हिस्सों को चलाने के लिए दासों की आवश्यकता थी। सान्तान्देर ने इस गुट का पक्ष लेते हुए नवग्रानादा में भाषण दिया, किन्तु बोलीवार ने उनकी मांगों का विरोध किया : 'इस क्रांति की दिशा निश्चित की जा चुकी है और अब इसे कोई नहीं रोक सकता।' इसे वापस लाना न सिर्फ न्याय के खिलाफ था बल्कि संभवतः एक गलती, और एक खतरनाक गलती थी। बोलीवार ने सान्तान्देर से कहा कि वह अपने स्वार्थी अनुयायियों को नया आदेश स्वीकार करने के लिए कहे : 'मेरा विश्वास है कि उन लोगों को शिक्षित करना बुद्धिमानी का काम होगा जो निजी हितों से बंधे हैं या जो गलती से इसे अपने हित में समझते हैं।'[28a] लेकिन उपराष्ट्रपति ने उन लोगों का साथ दिया जो दासता कायम रखना चाहते थे। 3 मई को गवर्नर ख़ोसे कानसिनो ने सान्तान्देर को बुगा से लिखा : 'मेरे प्यारे सेनापति...दासता से सम्बंधित प्रयासों के सम्बंध में जो मुझे उठाने चाहिएं...आपने स्पष्टतः कहा था कि दासों को स्वतंत्र करने का अर्थ कोको क्षेत्र को समाप्त करना होगा। इसी कारण से इसे आपने मेरी राय पर छोड़ दिया था...यह टिप्पणी करते हुए कि अगर मैं निर्देशों का पालन करता भी हूं तो दूसरी जगह ऐसा नहीं किया जाना चाहिए। जिस राज्य का मुझे शासन संभालना है, इसमें आने पर मुझे पता चला है कि 14,000 निवासियों में से 9,000 दास हैं। मेरी राय है कि इनमें से एक भी व्यक्ति को स्वतंत्र करना ठीक नहीं होगा...लेकिन उन कारणों से जो मैं आपको पहले ही बता चुका हूं, आपने मुझे ऐसा कुछ सीमा तक करने के लिए

बाध्य किया था, ताकि इससे कोई खतरनाक परिवर्तन की आशंका न हो'''फिर भी कोको में आने पर मुझे एक ऐसे प्रतिबंध का पता चला है जो बिना किसी अपवाद के सभी दासों को संरक्षण प्रदान करता है'''जो उस प्रदेश और कोको के पतन का कारण होगा। मैं कई खतरों को भांप सकता हूं जिन्हें मैं दूर करना चाहता हूं। इसलिए मैंने राज्यपाल कोंका से मिलकर एक कार्यक्रम तैयार करने का प्रयत्न किया है, जैसा कि आप संलग्न दस्तावेज़ में पायेंगे, और मैं तब तक आपके आदेशों की प्रतीक्षा कर रहा हूं।'[29] 18 फरवरी 1825 के एक कोलम्बियन कानून ने दास-व्यवसाय को जलदस्युता का अपराध माना और इसमें दोषी पाए गये अपराधियों के लिए मृत्युदंड की व्यवस्था थी। यह ध्यान देने योग्य है कि यह कानून भी द्वैधता से बच न सका जिसका हम जिक्र कर चुके हैं। धारा 4 ने यह स्पष्ट कर दिया है कि यह कानून कोलम्बिया की एक बंदरगाह से दूसरी बंदरगाह के बीच लागू नहीं होता, चाहे इसका अभिप्राय दास-व्यवसाय या दासों को बेचना ही क्यों न हो।

पेरू में इंडियन दासों के संदर्भ में बोलीवार के निर्णय पराजित हो गए। यही हाल बोलीवियन कांग्रेस में उनके प्रतिवेदनों के साथ हुआ। वह संविधान में एक अनुच्छेद चाहते थे जिसमें दासों की स्वतंत्रता को पहचाना जाना था और इस दस्तावेज़ के प्रकाशन के बाद दासता समाप्त कर दी जानी थी। कांग्रेस ने निम्नलिखित अनुच्छेद पारित किया: 'वे सब जो अब तक दास थे, अब बोलीविया के नागरिक हैं और इसलिए इस संविधान के प्रकाशन के बाद वे वैधानिक रूप से स्वतंत्र हैं; लेकिन वे अपने मालिक का घर न छोड़ें, सिवाय एक विशेष कानून में वर्णित एक शर्त के अनुसार।'[30] जब बोलीवार काराकास में लौटने के लिए विवश कर दिए गए, क्योंकि कोसियाता में विद्रोह हो गया था, उन्होंने इस बात को सुनिश्चित करने की कोशिश की कि कम-से-कम दासों पर 1821 का कानून लागू किया जाए और यह मांग की उन्हें अक्सर इस संबंध में निजी तौर पर सूचना दी जाती रहे। तभी असंख्य लोगों की कानून को असफल देखने की दुर्भावना का पता चला। 28 जून 1827 की शक्तिशाली घोषणा में उन्होंने सब बातें पेश कीं जिनकी चर्चा हम ऊपर कर चुके हैं। एक वर्ष बाद उन्होंने बोगोता में एक विज्ञप्ति जारी की जिसमें सत्ता को निर्देश दिया गया कि दासों को तेजी से स्वतंत्र किया जाए। उन्हें विज्ञप्ति जारी होने के एक सप्ताह के भीतर अपने को संगठित करना था और कम-से-कम सप्ताह में एक बार सभाएं आयोजित करनी थीं। खेफे पोलितिको पर या उनकी अनुपस्थिति में प्रथम अलकालदे पर इन निर्देशों के पालन का उत्तरदायित्व था।

बोलीवार को यह अच्छी तरह मालूम था कि वह अपने आदर्शों को अंशत: ही प्राप्त कर पाये थे। अपने सैन्य कार्यों को समाप्त कर और प्रशासन में बहुत ज्यादा

श्रम करने के बाद वह उन लोगों के खिलाफ संघर्ष न कर सके जिन्होंने एक नई नीति के गठन में साथ देने से इन्कार कर दिया और इसकी जगह अपनी समस्त शक्तियों को उनके खिलाफ लगा दिया। बोलीवार ने अत्याचारों को देखा कि किस तरह हर मोड़ पर उनके आदर्शों पर हमले किए जा रहे थे और महसूस किया कि क्रांति के बिना एक नई व्यवस्था का गठन प्रायः असंभव है। जुलाई 1826 में उन्होंने सान्तान्देर को आक्रोष से भर कर लिखा : 'महज़ कानूनी सुधारों से कुछ करना असंभव है...हम कानूनों से ग्रस्त हैं।'[31] आवश्यकता थी नए मुक्त हुए लोगों को स्वतंत्र करना और उन्हें शिक्षित करना, उनका नैतिक चरित्र मज़बूत करना, और उनकी अराजक शक्ति को सही दिशा देना, जो अन्यथा सारे समाज के लिए आत्मघाती और विनाशकारी हो सकती थी। बोलीवार ने फिर कहा, 'कानूनी समानता ही हमारे लोगों की आशाओं के लिए पर्याप्त नहीं है; वे सार्वजनिक और घरेलू मसलों में संपूर्ण समानता चाहते हैं, और बाद में वे एक पारदोकरासिया चाहेंगे, जो स्वाभाविक है।' उन्हें यह स्पष्ट था कि स्थिरता और शांति पारदोकरासिया से नहीं आ सकती लेकिन उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि वह अलबोकरासिया श्वेत सर्वोच्च सत्ता से भी नहीं आ सकती, जो दक्षिण में एकमात्र स्वीकार्य हल माना जाता था; यह निग्रोकरासिया से भी संभव न थी जो 1830 में ग्वायाकिल में सबको भयभीत कर रहा था। उन्होंने इस विषय पर ओकान्या कांग्रेस के समय बोलीविया के लोगों की दासता के बारे में पेरू दे लेकरोइक्स से विस्तार से बात की : 'न सिर्फ वे अलकालदेस की पंजाली के नीचे थे बल्कि उन पुजारियों और धनी व्यवसायियों के अधीन भी; शहरों में भी यही स्थिति है सिवाय इस अंतर के कि यहां मालिकों की संख्या ज्यादा है क्योंकि इसमें सभी क्लर्क, पुजारी और वकील भी शामिल हैं; स्वतंत्रता और नागरिकता का अधिकार सिर्फ इन्ही लोगों और धनिकों के लिए है, उन लोगों के लिए कभी नहीं जिनका दासता का जीवन इंडियनों से भी गया गुज़रा है; वे कूकुता कमीशन के अधीन दास थे, और चाहे हमारा संविधान उदार भी होता तो भी वे दास ही रहते। कोलम्बिया में एक उच्च धनी वर्ग है, जो प्रभाव और अत्याचारों की दृष्टि से पुराने निरंकुश अत्याचारियों के तुल्य है; यद्यपि वे नागरिक अधिकारों और स्वतंत्रता की बात करते हैं, किन्तु यह सिर्फ उनके अपने लिए हैं, लोगों के लिए नहीं जिनको वे अभी अधीन रखे रहना चाहते हैं; वे भी समानता चाहते हैं किन्तु अपने से उच्चतर लोगों के साथ, उन लोगों के समान कभी नहीं जिन्हें वे समाज में अपने से नीचा समझते हैं।'[32]

कोलम्बिया के अंतिम वर्षों में समाज का विभाजन और भी स्पष्ट हो गया : एक ओर बोलीवार और उनके समर्थक, और दूसरी तरफ सान्तान्देर, पैख़, फ्लोरेस और बोगोता, काराकास, कित्तो, लीमा, ला पाज़, कोकोबाम्बा और बाकी जगहों के

शासक। इसका प्रमाण सान्तान्देर के एक पत्र से मिलता है जो उन्होंने अपने अनुयायी असुएरो को 18 जनवरी 1828 को लिखा था जिसमें वह 'बोलीवार के अनेकों समर्थकों' का ज़िक्र करते हैं 'जिन्होंने हमारे अस्तित्व को अक्सर खतरा पहुंचाया है।' उन्हें एक मुकाबले का भय था : 'इसका नतीजा क्या होगा ? एक आन्तरिक युद्ध जो उन लोगों के लिए सफल होगा जो अभावग्रस्त तथा बहुसंख्यक हैं, और इसको वे लोग खोएंगे जो सम्पन्न किन्तु अल्पसंख्यक हैं।'[33] हमें इन शब्दों की उन शब्दों से समानता पर ध्यान देना चाहिए जिनमें सान मार्तिन की बंटवारे की नीति को दोहराया गया है। सान मार्तिन पेरू में उन अवरोधों को कायम रखना चाहते थे जो समाज के विभिन्न वर्गों को विभाजित करती थीं, ताकि शिक्षित वर्गों का स्तर और ऊपर रखा जा सके।

उच्चकुलतंत्र की नीतियां ब्युनस आयर्स, लीमा, बोगोता और मैक्सिको सिटी में सब जगह समान थीं। तोर्रे तागले ने, जो पेरू में अपने आर्थिक हितों का प्रतिनिधित्व करता था, अपने उद्देश्यों को ज़ाहिर करने में कोई हिचकिचाहट प्रदर्शित नहीं की : 'पेरू के नागरिको ! अत्याचारी बोलीवार और उसके अनुयायी इस गर्वमय देश पेरू को कोलम्बिया के अधीन करना चाहते हैं...बोलीवार ने मुझे स्पेनवासियों के साथ खुली बातचीत करने के लिए निमंत्रित किया है, जिससे उसे समय मिल जाये ताकि वह स्पेनवासियों को हराकर पेरू को अपनी ज़ंजीरों में जकड़ दे। मैंने इस अवसर का लाभ उठाया और आपके लिए स्पेनवासियों के साथ एक लाभप्रद संगठन कायम करके अपने को विनाश से बचाया।' मुक्तिदाता इस तरह स्पेनवासियों और लीमा के प्रतिक्रियावादियों के समान रूप से शत्रु थे। काराकास में भी उनके विरोधियों ने उन्हें असम्मानित किया और उन्हें 'धोखा देने वाला, एक अत्याचारी, देशद्रोही, खूनी, डरपोक बताया।'[34] लीमा में उन्होंने उन्हें 'साम्बो' 'बूढ़ा सिमोन' और 'अत्याचारी' की संज्ञा दी गई। उनकी मृत्यु के बाद उनके दासता-विरोधी अधिनियम को विपरीत दिशा देने का प्रयास किया गया। वेलेंसिया कांग्रेस ने कूकुता कांग्रेस के कानून को एक और कानून से बदल दिया, जो 30 सितम्बर 1830 को घोषित किया गया और जो दासों के खिलाफ था; इसने स्वतंत्रता से पहले 21 वर्षों की आयु तक दास सेवा को अनिवार्य कर दिया। भोजन, कपड़े और शिक्षा के एवज़ में दास संतानों को अपनी आयु के तीन बेहतरीन वर्ष अर्पित करने थे। दासों की कुल संख्या पर केवल बीस को ही एक वर्ष के दौरान पूरे राष्ट्र में अधिकृत रूप से स्वतंत्र किया जाना था। इस तरह इस सामाजिक बुराई को वेनेजुएला से खत्म करने के लिए कुछ हज़ार वर्षों की ज़रूरत थी। 1831 और 1839 के बीच सिर्फ 118 दासों को मुक्त किया गया। पैज़ के शासन के दौरान उन्होंने कानून की धारा छह को जोड़-तोड़ कर प्रस्तुत किया, जिसका लक्ष्य युवा स्वतंत्र दासों का संरक्षण करना था। 27 अप्रैल 1840 को

उन्होंने एक विज्ञप्ति में कहा : 'जब स्वतंत्र किए गए दास अपने स्वामियों को छोड़ेंगे तब उनमें अनुशासन का अभाव होगा तथा अपनी आयु, दशा और व्यवहार के कारण संभवतः उनके विरुद्ध पुलिस कार्यवाही हो।' इसलिए उन्होंने आदेश दिया कि जहां भी संभव हो इन युवा स्वतंत्र किए गए नवयुवकों को अपने पुराने स्वामियों के साथ ही कार्य सीखने के लिए उत्साहित किया जाए। न्याय व तर्क के सभी सिद्धांतों की परवाह न करते हुए, पैख़ ने मुक्ति के लिए न्यूनतम आयु 25 वर्ष तक कर दी। (यह उन लोगों के लिए था जिनकी जीवन-आयु 30 वर्ष से ज्यादा नहीं थी)। शेष प्रबंध भी वस्तुतः चालाकी से किए गए थे : 'जब एक प्रशिक्षण या ठेका समाप्त हो जाता है या कर दिया जाता है तो स्वतंत्र किए गए नवयुवकों को, यदि वे तब तक 25 वर्ष की आयु तक नहीं पहुंचे हैं, दूसरे मालिक के पास जाना होगा...कोई भी स्वतंत्र किया गया दास जो काम को बिना किसी उचित कारण के छोड़ता है, उसे स्थानीय पुलिस द्वारा उसके मालिक को पुनः सुपुर्द कर दिया जाएगा...लेकिन कोई भी व्यक्ति पच्चीस वर्ष की आयु के स्वतंत्र किए गए नवयुवकों से काम न ले, सिवाय उपरोक्त नियमों की शर्तों के. .इन नियमों का उल्लंघन करने पर उन मालिकों को भी यही दंड मिलेगा अगर उन्होंने दिन भर की मजदूरी के लिए उन मजदूरों को रखा जो अपने निर्धारित काम से भागे हुए हैं।'[35]

पैख़ ने इस कानून के बारे में अपनी आत्मकथा में ख़ूब डींगें मारी हैं, जिसमें उन्होंने गलत ढंग से बोलीवार के दासता के प्रति विरोध की स्पेनवासी रोसेते के विरोध से तुलना की है। पैख़ ने यह दावा भी किया है कि उसने अपूरे में दासों को स्वतत्र किया है, हालांकि उन्होंने अपने इस दावे और 1830 के या 1840 के अन्यायपूर्ण कानून की प्रतिकूलता पर ध्यान नहीं दिया। यद्यपि वेनेजूएला ने ग्रेट ब्रिटेन के साथ 1839 में दास-व्यवसाय के खिलाफ एक संधि पर हस्ताक्षर किए थे, फिर भी समस्त राष्ट्र के भीतर स्वतंत्रता के पहले सौ वर्षों में दासता बेरोकटोक जारी रही, हालांकि यह भिन्न रूपों में थी और लगातार उपद्रव होते रहे। 1830 और 1854 के बीच दास विद्रोह बढ़ गए : रोजाना बच निकलने की घटनाओं का पता लगता था। विद्रोह और हिंसा की घटनाएं बढ़ रही थीं। ख़ोसे ग्रेगोरियो मोनागास ने 1854 में दासता-समाप्ति का अपना आदेश जारी किया। तब तक इस समस्या की पूर्ववत महत्ता ख़त्म हो गई थी, क्योंकि जिस दौरान तानाशाह और सत्ता दासों के साथ भीषणता से जुड़े रहे, आर्थिक तंत्र में एक परिवर्तन आ गया था। दासता आर्थिक दृष्टि से उत्पादन का एक ख़र्चीला माध्यम बन गई थी। अतः इसके उन्मूलन को स्वामियों द्वारा एक अच्छे आर्थिक प्रयास की तरह प्रस्तुत किया जाने लगा। अब उन्हें अपनी धरोहर (दास) के लिए जिसका मूल्य गिर गया था, क्षतिपूर्ति पाने की आशा थी। सरकारी अनुमान के अनुसार दासता का ख़र्च इसके द्वारा उत्पादित सामग्री के मूल्य से बढ़ गया था

क्योंकि प्रति व्यक्ति उत्पादन का मूल्य दासों के खर्च से कम था। इस तरह दासता की समाप्ति शांतिपूर्वक तरीके से हुई। भूमि-स्वामी अब एक सस्ती श्रम शक्ति के बारे में आश्वस्त थे जिसमें लागत और सिरदर्द भी कम होगा। जैसा कि ऐसी परिस्थिति में अक्सर होता है, सबसे कमजोर व्यक्ति वही था जो शोषित था। भूतपूर्व दासों को अपने स्वामियों के यहां लौटने के लिए बाध्य कर दिया गया, क्योंकि राज्य ने उनके लिए कोई व्यवधान नहीं रखा था। उन गरीब दासों पर, जिनके मालिक 'समझदार' नहीं थे, दबाव और शोषण बढ़ता गया क्योंकि अब स्वामी दासों को रोटी, कपड़ा और रहन-सहन देने के लिए बाध्य नहीं था। उन्हें भूखों मरने वाला वेतन दिया जाता था जो अक्सर मुद्रा में नहीं, बल्कि ऋण-पत्रों के रूप में था जिनका भुगतान सिर्फ पूलपेरिया या हासिऐन्दा के स्टोरों में किया जा सकता था जहां वस्तुओं के दाम दूसरी जगहों की अपेक्षा दुगुने थे। परिणामत: उन दासों पर कर्ज चढ़ गया और वे भूमि से बंध गए, जहां उन्हें सूरज उगने से सूरज छुपने तक काम करना पड़ता था। कृषि-हिस्सा भी दासता का ही एक प्रकार था। कानूनन स्वतंत्र ये व्यक्ति वास्तव में आर्थिक परिस्थितियों के दास थे, राज्य इनके प्रति अनभिज्ञ था, और मालिक उनके शोषण में व्यस्त थे। उनके न तो कोई अधिकार थे और न ही स्वस्थता व संस्कृति। गोमेख़ शासन के दौरान 'पारिवारिक नौकरी' के रूप में दासता की एक और श्रेणी थी। तानाशाही के दौरान सैन्य-कर्मचारी भी इस अर्थ में अर्ध-दास थे कि उन्हें दस साल तक अपने अधिकारियों के खेतों पर काम करना होता था। गोमेख़ ने खुद इस नीति के बारे में अपने एक भाषण में ज़िक्र किया था।

जब हम बोलीवार के लातीनी अमेरिकी एकीकरण के आदर्श पर विचार करते हैं तो हम इस क्षेत्र में भी वही विनाश पाते हैं जो उनकी मृत्यु के उपरांत दूसरे क्षेत्रों में पाया गया। कौदिल्लयोस राष्ट्रीय स्तर पर या महाद्वीपीय स्तर पर एकता के विरोधी थे। 'कौदिल्लयो दे लोस इल्यानोस', पैंख़ इन लोगों का नेता था जिनकी मानसिक सीमा अपने प्रभाव क्षेत्र तक सीमित थी, अपनी निजी भूमि तक, जहां वे मनमाना शोषण कर सकते थे। पैंख़ ने वेनेजुएला से अलग होने की धमकी नहीं दी क्योंकि भौगोलिक परिस्थितियां इसकी इजाज़त नहीं देती थी। इसके अलावा उन्हें एक दिन पूरे वेनेजुएला को अपने को अधिकार में पाने की आशा थी। इस दौरान उन्हें विश्वास हो गया कि उनके अलावा अन्य कोई सत्ता में नहीं है, जैसा कि 1816 में डाक्टर फ्रांसिस्को खेवियेर येनेस और कुछ अन्य ऊंचे अधिकारियों, जैसे सान्तान्देर, सेरेने, उरदेन्ता और सेरविख़ द्वारा गठित नागरिक सरकार के खिलाफ एक षड्यंत्र के कार्यक्रम से देखा जा सकता है।

महा कोलम्बिया अपने सदस्यों की निष्ठा कभी नहीं पा सका। और तो और, बोलीवार के सहयोगी भी उनके विचारों को पूरी तरह से समझ नहीं पाए।

संयोगवश जब विशाल पनामा कांग्रेस शुरू होने वाली थी तब कोसियाता षड्यंत्र ने वेनेजुएला को चीर कर रख दिया, जिसमें बोगोता सरकार पूरी तरह से निर्दोष नहीं थी। न सान्तान्देर और न ही पैख़ ने संगठन को संरक्षण दिया, बल्कि वे अपने स्थानीय गर्व में रहे और इस कटाव को बढ़ते देख वे खुश थे। लेकिन बोलीवार ने संगठन को दांव पर लगाने से इन्कार कर दिया और इसे मामूली बात समझकर छोड़ दिया, जिससे एकता व संगठन को थोड़े समय के लिए बचाया जा सके। 1827 में बोलीवार की व्यक्तिगत उपस्थिति अभी भी निर्णायक थी। विशाल कोलम्बिया की बिगड़ती स्थिति ने उन्हें तानाशाही शक्तियों को स्वीकार करने के लिए बाध्य कर दिया। फिर भी उन्होंने कांग्रेस को आयोजित करने के अपने वायदे को पूरा किया और जनवरी 1830 में उन्होंने अपना त्यागपत्र इसे सौंप दिया। निष्कासन के पथ पर मृत्यु उन्हें अपने साथ ले गई।

पैख़ इस दौरान वेनेजुएला की पृथकता के विचार से अभिभूत होने लगे। उन्होंने 13 जनवरी को कांग्रेस का अधिवेशन बुलाया जो वेलेंसिया में 30 अप्रैल को शुरू हुआ। कोलम्बिया कांग्रेस ने पैख़ की कांग्रेस को एक मंत्रीमंडल भेजने का निश्चय किया, जिसका नेतृत्व सुकरे ने किया। लेकिन सान्तियागो मारिनो के नेतृत्व में अधिकारियों ने पैख़ के निर्देशों के अनुसार उन्हें प्रवेश की इजाजत नहीं दी। वह इसलिए पैख़ के प्रतिनिधियों से 18 व 19 अप्रैल को कूकुता में मिले। ये थे सेनापति सान्तियागो मारिनो, मोनसिन्योर इगनासियो, फरनान्देख़ पेना और मार्तिन तोवार। सभा के दस्तावेजों से स्पष्ट होता है कि सुकरे इस मामले की तह तक पहुंचे : 'वेनेजुएलन प्रशासक यह प्रदर्शित करना चाहते हैं कि जो कुछ हुआ वह सैनिक प्रयास नहीं बल्कि सार्वजनिक आंदोलन का एक भाग था, जैसा कि सोचा गया था...इसके परिणाम स्पष्टतः लोगों के पक्ष में होने चाहिएं : सत्ताधारी द्वारा किसी को भी पंजाली (दासता) के भार के नीचे नहीं रखना चाहिए।' यद्यपि वह कोलम्बिया से छह वर्ष के लिए अनुपस्थित रहे, वह समझ गए थे कि इन समस्याओं का कारण मुक्तिदाता का निरंकुश शासन नहीं है (क्योंकि यही शिकायतें पिछली सरकार और संवैधानिक काल के दौरान भी सुनी गई थीं), बल्कि इसका कारण स्वयं क्रांति की प्रक्रिया और सैनिक उच्चवर्ग की निरंकुशता है जिसने सर्वत्र शक्ति पर अधिकार कर लिया है, नागरिकों को दुख दिया है और उन्हें उनके अधिकारों से वंचित किया है। यह गाली इतनी बड़ी थी कि तानाशाही की विशाल शक्तियां भी इसे दबा न सकीं। इसी कारण से अधिकारियों को पुनः लाने के लक्ष्य से उनका यह प्रस्ताव था जो वह वेनेजुएलन अधिकारियों को इस आशा से देना चाहते थे कि अगर इसे उनका अनुमोदन प्राप्त हो गया तो वह इसे वेनेजुएला में वही समर्थन देंगे जो वह कोलम्बिया कांग्रेस में देना चाहते थे। प्रस्ताव इस तरह था : 'कई सैनिकों ने अपने प्रभावों व शक्तियों का दुरुपयोग कर

अपने सम्मान को कम किया है जबकि अन्य सैनिक सरकार के रूप को बदलने के षड्यंत्र का मुख्य अंग हैं, यह किसी के लिए भी वर्जित है...किसी भी सेनापति को जो 1820 से 1830 के बीच गणतंत्र में ऊंचे पद पर रहा है, उसका कोलम्बिया का उपराष्ट्रपति या राष्ट्रपति बनाया जाना मना है।'[36] सुकरे इस तरह क्रांति के हितों को अपने हितों की अपेक्षा प्रमुखता दे रहे थे, क्योंकि अगर यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया जाता तो उनकी अपनी स्थिति प्रभावित होती। तोवार और फरनान्देख़ पेना ने सुकरे के विचारों को न्यायोचित समझा और वे इन्हें स्वीकार करने के लिए तैयार थे। जनरल मारिनो ने जो अन्तिम वक्ता थे, स्वयं को रुष्ट घोषित कर अपने सहयोगियों से यह प्रस्ताव अस्वीकार करने को कहा।[37] उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें बोगोता के दल को वेनेजुएला भेजने की आज्ञा देने और वहां की कांग्रेस को कोलम्बिया कांग्रेस की घटनाओं से अवगत कराने का कोई अधिकार न था। सुकरे के अन्य समझौता प्रस्तावों को भी इसी तरह ठुकरा दिया गया।

नव ग्रानादा में भी महा कोलम्बिया के लिए कोई विशेष उत्साह नहीं था। वे विभाजन चाहते थे ताकि वे वेनेजुएला के 'प्रभाव' से मुक्त हो सकें। उन्होंने वेनेजुएला पर आरोप लगाया कि उसने प्रशासन में उच्च पदों पर एकाधिकार किया और अपने लाभ हेतु नव ग्रानादा के आर्थिक स्रोतों का उपयोग किया।[38] एक्वादोर में भी वेनेजुएला और नव ग्रानादा के प्रति इसी तरह असंतोष था लेकिन थोड़ा कम ; एक्वादोरवासियों ने जानबूझ कर अपने को अलग करते हुए इन्हें 'कोलम्बिया' कहा। कित्तो की श्वेत सत्ता ने स्वतंत्रता वाहिनी की चमड़ी के रंग पर इतराज़ किया और कहा कि वे उनके देश को एक 'सेनेगलीस कैम्प' में बदल रहे थे। उन्होंने व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग करते हुए 'निग्रोकरासिया' की बात की।

पैख़ ने अपनी आत्मकथा में लिखा : 'वेनेजुएला सर्वसम्मति से मुझे स्थिति पर अधिकार कर लेने के लिए कह रहा था।'[39] वास्तव में यह दावा पूरी तरह से झूठ है। पैख़ ने सर्वसम्मति को बढ़ा-चढ़ा कर बताया।'[39a] शक्ति, जो हमेशा सिद्धांतों से ज्यादा शक्तिशाली होती है, विभाजन के पक्ष के लोगों के साथ थी। विरोधियों को सज़ा दी गई और बेरहमी से दबाया गया। बोगाता के साथ पत्र-व्यवहारिक सम्बंध भी सख्ती से नियंत्रित किया गया।'[40] सेन्सर और अन्याय व अत्याचार के वातावरण ने सबको हिला दिया। सुकरे और बोलीवार की मृत्यु हो गई ; सुकरे एक कायराना घातक हमले में मरे और विघटन का मार्ग प्रशस्त हो गया।

यह सिर्फ महा कोलम्बिया ही नहीं था जो धराशायी हो गया। बोलीवार के महाद्वीप की एकता के कार्यक्रम भी समाप्त हो गए। 7 अक्तूबर 1824 को

कोलम्बिया के उपराष्ट्रपति सान्तान्देर ने राष्ट्रपति मोनरो के पवित्र संगठन के विरुद्ध व्यवहार से प्रेरित हो शीघ्र ही चांसलर गौल को वाशिंगटन स्थित कोलम्बिया के प्रतिनिधि को उत्तरी अमेरिकी सरकार को पनामा कांग्रेस में एक प्रतिनिधि भेजने के निर्देश देने के लिए तैयार किया।[41] बोलीवार को इस महत्व-पूर्ण तथ्य का 6 अप्रैल तक पता नहीं चला, जबकि आदेश को दिए छह मास बीत गए। सान्तान्देर ने उन्हें 6 फरवरी को लीमा के निमंत्रण को स्वीकार करने की सूचना के साथ इसका ब्योरा दिया। बोलीवार ने इस प्रयास के लिए पहले भी अनुमति नहीं दी थी। उन्होंने इसे परिस्थितियों एवं सैद्धांतिक कारणों से अस्वी-कार कर दिया। प्रथमतः, वह ग्रेट ब्रिटेन को रुष्ट करना नहीं चाहते थे, जिससे वह महत्वपूर्ण सहायता की आशा करते थे; साथ ही वह कांग्रेस को सिर्फ लातीनी अमेरिकी राष्ट्रों का गुट बनाना चाहते थे। इस संदर्भ मेंउन्होंने 1 अप्रैल 1825 को पहली चेतावनी दी : 'संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ संगठन का मतलब ग्रेट ब्रिटेन की मित्रता से हाथ धोना होगा। कृपया इस विषय को ध्यान से सोचिए और मुझे नतीजा सुनने में प्रसन्नता होगी, जिससे इस विषय पर हमारे पक्षागत विचारों से किसीन किसी को तो मुक्ति मिलेगी।'[42] उन्होंने इसी चेतावनी को अधिक स्पष्टता से 8 और 20 मई को दोहराया, हालांकि वह उस समय पेरू के प्रशासन को सुधारने के लिए इस की यात्रा कर रहे थे। वह संयुक्त राज्य के विरुद्ध नहीं थे लेकिन उन्हें स्पष्टतः महाद्वीप के दोनों भागों के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक अन्तर का ज्ञान था और इसीलिए उन्होंने दक्षिण के कमज़ोर, विभाजित राष्ट्रों को उत्तर के शक्तिशाली देश से जोड़ना अनुचित समझा। अंगोस्तुरा कांग्रेस में उन्होंने अपने विचारों को स्पष्ट कर दिया। उन्होंने उस समय स्वतंत्रता का माडल समझे जाने वाले देश 'संयुक्त राज्य' की प्रशंसा करने के बाद कहा : 'मैं उत्तरी अमेरिका के अंग्रेजी राज्यों और दक्षिणी अमेरिका के स्पेनिश राज्यों की तुलना की बात कभी सोच भी नहीं सकता, जो परस्पर भिन्न हैं।' 1823 में उन्होंने असमान राष्ट्रों को मिलाने से उत्पन्न खतरों को बताते हुए बरनारदो मोन्तेगुदो को समझाया, जब उन्होंने अमेरिकी गुट का नेता बनने के लिए ग्रेट ब्रिटेन से अनुरोध करने की परेशानी का ज़िक्र किया।

30 मई 1825 को उन्होंने सान्तान्देर को दस दिन पहले दिए निर्देशों को और स्पष्ट करते हुए कहा : 'उत्तरी अमेरिकी और हैतीयन, विदेशी होने के कारण हमारे दल के अंग नहीं हैं। इसलिए मैं नहीं समझता कि उनको अमेरिका के प्रबंधों के लिए निमंत्रित किया जाए।' 21 अक्तूबर को उन्होंने फिर ज़ोर देकर कहा : 'मैं नहीं समझता कि उत्तरी अमेरिकियों को इस्तुमुस कांफ्रेंस में आना चाहिए।' 8 अक्तूबर को उन्होंने इस विषय पर सबसे सख्त चेतावनी देते हुए पोतोसी में अर्जेंटीना के दूतों को बताया कि 'वह कभी भी संयुक्त राज्य को बुलाने के पक्ष में

नहीं रहे हैं ; यहां तक कि अपने निजी खतों में भी उन्होंने अपने मित्रों से इस विषय पर अप्रसन्नता जाहिर की। वह संयुक्त राज्य को निमंत्रित किए जाने पर चकित थे और उन्होंने सान्तान्देर को लिखा कि अगर संयुक्त राज्य भाग लेने के लिए आ रहा था तो यह आवश्यक होगा कि कांग्रेस को स्थगित कर दिया जाए, हालांकि उन्हें विश्वास था कि ऐसा करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी क्योंकि संयुक्त राज्य इसमें भाग नहीं लेगा।'[42a]

सान्तान्देर ने बोलीवार के पत्रों का उत्तर प्राय: नहीं दिया और उसने वाशिंगटन में कोलम्बिया के राजदूत, सालाज़ार को दिए अपने निर्देश वापिस नहीं लिए। मैक्सिको और उत्तरी अमेरिका के प्रतिनिधियों के साथ वाशिंगटन में सालाज़ार ने पनामा कांग्रेस की तरफ से 2 नवम्बर 1825 को संयुक्त राज्य को औपचारिक निमंत्रण दिया। वैसे संयुक्त राज्य सरकार ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया, लेकिन वस्तुतः इसके राजदूतों ने अधिवेशन में भाग नहीं लिया। दूतों में से सिर्फ एक मैक्सिको में तकूबाया पहुंचा जहां पर कांग्रेस पनामा में प्रारंभ होने के बाद वैध अधिवेशन कर रही थी। लीवानो अगुइरे ने इस विषय पर गौल की भूमिका को समझाया है : 'यह सच है कि गौल ने उपराष्ट्रपति के इस विषय में निर्देशों का पालन किया लेकिन उन्होंने यह महसूस किया कि बोलीवार की नीति के इस कदर परिवर्तन को तभी न्यायोचित ठहराया जा सकता है अगर यह मोनरो के एकतरफा प्रस्ताव को महाद्वीपीय समझौते में परिवर्तित करने में सफल होता है, जिसके काम करने के तरीकों का निर्णय संयुक्त राज्य द्वारा नहीं बल्कि शेष राष्ट्रों द्वारा लिया जाएगा।'[43]

बोलीवार की ग्रेट ब्रिटेन के प्रति सहानुभूति के बावजूद वह इस शक्ति को पनामा कांग्रेस का निमंत्रण देने के पक्ष में नहीं थे। यह सान्तान्देर का ही प्रयास था। बोलीवार उस समय लीमा में थे और उनसे सलाह तब ली गई जब इस संदर्भ में पहले ही ठोस कदम उठाए जा चुके थे। उन्होंने सान्तान्देर और रेवेंजा को 17 फरवरी 1826 को उत्तर भेजा जिसमें उन्होंने इस विचार को क्षणिक अनुबंधित अनुमति दे दी।[44] ऐसा उन्होंने तुरंत लाभों को देखते हुए किया जो ग्रेट ब्रिटेन से उस विशिष्ट क्षण में मिल सकते थे जब उन्हें समुद्री आक्रमण का भय था। फिर भी वह परेशान थे। उन्होंने मोन्तेगुदो को पहले ही बताया था : 'शुरू में कुछ समय के लिए इसके लाभ प्रकट होते हैं : लेकिन उसके बाद...खोखले नज़र आते हैं। मैं समझता हूं : वर्तमान में यह शांति और स्वतंत्रता लाएगा...इसकी कीमत कुछ हद तक राष्ट्रीय स्वतंत्रता, आर्थिक बलिदान और राष्ट्रीय अपमान द्वारा चुकानी होगी। अगर इंग्लैंड को इस गुट के प्रधान का पद सौंप दिया गया तो हम उसके दास बन जाएंगे।' उन्होंने 17 फरवरी के अपने उत्तर में इस क्षण की महत्ता पर जोर दिया और आज के फायदों और कल के नुकसानों की पुनः तुलना

की। फिर भी उन्होंने इस दशा को आशावादी होकर स्वीकार कर लिया : 'बचपन में हमें मदद की आवश्यकता होती है, लेकिन प्रौढ़ होने पर हम अपनी रक्षा करना जान जाएंगे। इस क्षण यह हमारे लिए लाभप्रद है।'

सान्तान्देर ने 28 मई 1829 को फ्रांस को पनामा कांग्रेस में निरीक्षक भेजने के लिए निमंत्रण भी खुद ही दिया। चार्ल्स दशम ने स्पेन का मित्र देश होने के कारण इस निमंत्रण को ठुकरा दिया। दूसरी ओर हालैंड ने दक्षिणी अमेरिका में अपने उपनिवेशों में दिलचस्पी लेते हुए इसका स्वागत किया और कांग्रेस में भाग लिया। बोलीवार ने ब्राज़ील को कांग्रेस से अलग कर दिया था क्योंकि वह पवित्र संगठन के साथ था, लेकिन यहां फिर सान्तान्देर ने एक निमंत्रण जारी किया जो स्वीकार कर लिया गया। बोलीवार ने हैती को भी इस आधार पर निकाल दिया था कि यह एक स्पेनिश अमेरिकी राष्ट्र नहीं था। सान्तान्देर ने इसको मान लिया लेकिन फिर अपनी राय प्रगट की कि अलगाव का आधार जाति होना चाहिए। उसने अपनी सरकार के संदर्भ में कहा कि वह हैती के साथ एक सभ्य राष्ट्र की तरह पेश आएगा। उसने राष्ट्रपति बोयेर के कोलम्बिया स्थित राजदूत के पुनर्मेल के प्रयासों को रोक दिया। उन्होंने कोलम्बियन प्रतिनिधि मंडल को निर्देश दिए कि वह 'हैती की स्वतंत्रता को मान्यता देने, सार्वजनिक संधियां करने तथा राजनयिक आदान-प्रदान पर कोई बहस न करें।'[45] सान्तान्देर का व्यवहार और भी गलत था क्योंकि यह दस्तावेज़ रेवेंजा ने तैयार किया था, जो खुद औपनिवेशिक जातिवाद के हाथों अपमानित हुए थे। विश्वविद्यालय से उनकी डिग्री तीन वर्ष के लिए रोक दी गई क्योंकि उनके लीमपिसा दे सांगरे या पवित्र रक्त के सदर्भ में जांच की गई। यह सच है कि बोलीवार ने सिर्फ छह राष्ट्रों को निमंत्रण दिया था जो पहले स्पेनिश अमेरिका का अंग थे। लेकिन यह हैती के लिए प्रेम की कमी का कोई संकेत नहीं था। उन्होंने सान्तान्देर, गौल और रेवेंजा के पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण को पूरी तरह से ठुकरा दिया और 1829 में घोषणा की : 'जब मैं पेरू में था तो हैती के सहयोगी और बोगोता के राज्यमंत्री के बीच एक मुलाकात हुई। मुझे इस मुलाकात को तब पता चला जब यह समाप्त हो गई : उस समय कोलम्बिया में मुझे कोई अधिकार नहीं थे, जो संविधान और कांग्रेस ने मुझसे ले लिए थे... मैं अपनी ओर से हैती की सरकार के साथ बातचीत करने से इन्कार नहीं कर सकता क्योंकि इसका मुझ पर उपकार है।'[46]

इस तरह वे व्यक्ति जिन्होंने पनामा कांग्रेस में सम्मिलित होने के लिए संयुक्त राज्य और यूरोपियन शक्तियों को निमंत्रित किया, उन्हें नि संदेह यह विश्वास था कि वे बोलीवार से ज्यादा सहृदय व स्पष्ट थे। वस्तुत: वे कांग्रेस को विनाश की ओर ले जा रहे थे क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय समझौते सिर्फ आपसी हितों पर ही आधारित हो सकते हैं। यही कारण है कि बोलीवार ने गौल और ब्रिसेनो मेन्देस

को टिप्पणी करते हुए कहा था कि 'पूरे विश्व के साथ संधि वास्तव में कोई मतलब नहीं रखती।' यहां भी वही युक्ति अपनाई जा रही थी जो भूमि-वितरण व दासता के संदर्भ में प्रयुक्त की गई। भूमि-वितरण को बजाय सिपाहियों तक सीमित रखने के, इन नियमों को सभी सार्वजनिक कर्मचारियों तक बढ़ा दिया गया; परिणामत: किसी को भी भूमि नहीं मिली। दासों के विषय में, उन्हें मुक्त नहीं किया गया क्योंकि यह कहा गया कि पहले मुक्त किए जाने वाले दासों की शिक्षा व उनके व्यवसाय की समस्याओं को हल किया जाना चाहिए : दूसरे शब्दों में, लक्ष्य इतना उच्च और जटिल था कि इसके कभी पूरा होने की संभावना नहीं थी।

इस ओर ध्यान दिया जाना चाहिए कि यही तथ्य बोलीवार और सान्तान्देर के बीच असमानता के कारण नहीं थे। सान्तान्देर ने स्थानीय हितों से मार्गदर्शन लेने का निश्चय किया। यह बात अर्जेंटीना और ब्राज़ील के बीच 1825 के संघर्ष के संदर्भ में बोलीवार से उनके मतभेद में देखी जा सकती है। यह एक जटिल समस्या थी जिसमें उरूग्व, पाराग्वे, पेरू और बोलीविया भी शामिल थे। बोलीवार ने सान्तान्देर को रिवर प्लाते के दूतों की यात्रा के बारे में बताया : 'अलवीयार और दियाख़ वेलेख़ यह मुख्य प्रस्ताव लेकर आगे आए कि मुझे पाराग्वे को फ्रांसीसी कब्ज़े से छुड़ाने के लिए एक अभियान का नेतृत्व करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हम इस अभियान को सम्पन्न करने की बहुत अच्छी स्थिति में हैं जो ब्राज़ील के प्रति युद्ध में ब्युनस आयर्स के लिए बहुत लाभप्रद होगी। मेरी विडम्बना तो देखिए कि दो राष्ट्रों का सर्वोच्च होने के बावजूद मैं उनकी आकांक्षाओं या हितों पर निर्णय नहीं ले सकता। इस तरह मैं स्वयं को एक दुखदायी दुविधा में पाता हूं कि मेरा इन मंडलों से अलग रहना उचित है या कि मुझे इनकी प्रार्थनाओं पर अंतिम निर्णय देना चाहिए। मैंने उन्हें स्पष्ट बता दिया है कि मैं रिवर प्लाते के लिए वह सब कुछ करूंगा जिसकी मेरी वर्तमान स्थिति इजाज़त देती है। उनके देश की रक्षा के लिए कोलम्बिया और पेरू से जिस सहायता या बलिदान की आवश्यकता होगी, उसके लिए मैं जी-जान से प्रयास करूंगा। मेरे प्रिय सेनापति, मुझे आशा है कि तुम इस पत्र की मुख्य बातों पर ध्यान दोगे और कांग्रेस को इस विषय पर सूचित करोगे जो इस क्षण महत्वपूर्ण, कठिन और नाज़ुक है।' सान्तान्देर ने बोली-वार के रिवर प्लाते के लिए उदार सहायता प्रस्तावों का उत्तर देते हुए कहा : 'आप मुझ से सहमत होंगे कि हमारे कानूनों के मुताबिक न आप और न मैं ही कोलम्बियन सेनाओं को ब्युनस आयर्स की मदद के लिए कह सकते हैं...मेरी राय है कि इस बात पर बिना ध्यान दिए कि इंग्लैंड की प्रतिक्रिया क्या होगी, हमें उनकी मदद नहीं करनी चाहिए...जहां तक पाराग्वे का प्रश्न है, मेरा विचार है कि हमें उनकी भी मदद नहीं करनी चाहिए...पाराग्वे हमारे नियंत्रण-क्षेत्र से बाहर है और न ही वह राज्य स्पेनिश सरकार पर निर्भर है,...तो फिर किस

आधार या संधि के अंतर्गत हम ब्युनस आयर्स के आंतरिक संघर्ष में मदद कर सकते हैं ?'[47] अर्जेंटीना से मिलने के लिए यह इन्कार की पराकाष्ठा थी। 'हमारी रिवर प्लाते के साथ कोई संधि नहीं है', सान्तान्देर ने घोषणा की। 'उस समझौते में केवल उन ठिकानों की ओर संकेत था जिन्हें अभी स्थापित व परिभाषित किया जाना था, और फिर इस प्रस्ताव पर अभी अर्जेंटीना सरकार ने अपनी स्वीकृति भी नहीं दी थी। ये भद्रपुरुष हमारे पास तब आते हैं जब इन्हें हमारी जरूरत होती है : जब इन्होंने स्वयं को हमसे उच्चतर समझा तब इन्होंने हमारे साथ अभद्र व्यवहार किया'। दो मास बाद उन्होंने फिर दोहराया : मैंने ब्युनस आयर्स द्वारा प्रार्थित सहायता के संदर्भ में अपनी राय अब भी नहीं बदली है। हम इसकी अनुमति नहीं दे सकते क्योंकि एक तो ऐसी मदद के लिए कोई समझौता नहीं है और दूसरा यह कि कांग्रेस की अनुमति के बिना न मैं और न आप ही किसी सिपाही को तैनात कर सकते हैं। हर हाल में हमें सोच समझकर निर्णय करना है ताकि हम बिना वजह झगड़े में न उलझें।'

प्रसिद्ध इतिहासविद् और बोलीवार विशेषज्ञ रूफिनो ब्लांको फोम्बोना ने सान्तान्देर की पृथकता की नीति की तुलना रिवादाविया की नीति से की है और इन दृष्टिकोणों और बोलीवार की पूरे अमेरिका के बारे में धारणाओं के अंतर पर ज़ोर दिया है। उन्होंने स्मरण कराया कि 1824 में जब बोलीवार ने काफी प्रयत्न करने पर कोलम्बियावासियों से पेरू जाने की आज्ञा ली तब उपराष्ट्रपति ने कांग्रेस को एक ऐसा कानून पारित करने के लिए बाध्य किया जिसने बोलीवार की किसी दूसरे दक्षिणी अमेरिकी राष्ट्र की यात्रा पर प्रतिबंध लगा दिया गया। '1826 में अर्जेंटीना और ब्राज़ील में मध्यस्थता के प्रयासों में बोलीवार के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा सरकार और जनमत के रुख की थी।'[48] बोलीवार के एकता संबंधी इन विचारों का विरोध व्याप्त हो गया था। इन्देलेसियो लीवानो अगुइरे ने इस प्रश्न का विस्तृत अध्ययन किया है वस्तुतः ये बातें ज्यादातर उनकी खोज़ों पर निर्भर हैं। वह लिखते हैं : 'न्यू ग्रानादा का धनिक वर्ग, बेनेजुएला के भूमि-स्वामी, ब्युनस आयर्स के व्यापारी और रोकड़ पर धन देने वाले, चिले के बड़े लोग, पेरू की शाही सत्ता, ब्राज़ील के दास-स्वामी आदि इन सब गुटों का समान हित यही था कि पुराने कालोनी प्रशासन को प्रभुसत्ता सम्पन्न राज्यों में बदल दिया जाए, जिससे अपने-अपने भागों की बागडोर अपने हाथ में ली जा सके और सामाजिक विवादों को स्वेच्छा से चुनी गई कार्यपालिका, न्यायपीठ और विधान सभा द्वारा निपटाया जाये।'[49] अगर मास्केरा का पेरू अभियान सफल था तो यह सिर्फ इसलिए था कि पेरू सरकार को कोलम्बिया की सहायता की ज़रूरत थी। फिर भी 'उती पोसिदेतीस ख़ुरीस' के सिद्धांत के बारे में कुछ हिचकिचाहट थी और संधि में आपसी सैनिक सहायता के कर्तव्य को मान्यता दी गई, जिसने बोलीवार की

सान्तियागो दे चिले और ब्युनस आयर्स के साथ बाद की मुलाकातों के लिए परेशानियां खड़ी कर दीं।

सामान्यतः बोलीवार के कार्यक्रमों का चिले में स्वागत नहीं हुआ। ओ' हिगिन्स की सरकार ने कोलम्बिया प्रस्ताव में कई संशोधन प्रस्तुत किए जिन्हें स्वीकार किया ही जाना था चाहे इससे संधि की प्रभावशालिता तथा महत्ता पर बुरा असर क्यों न पड़े। जैसा कि हम रिवादाविया के विषय में पढ़ चुके हैं, यह स्वीकृत संधि इतनी कमज़ोर थी कि इसका महत्व ही समाप्त हो गया। सान्ता मारिया का मैक्सिको मिशन पहले असफल रहा लेकिन इतुरबिदे के अपदस्त होने पर विदेश मंत्री लुकास अलमान के साथ एक संधि पर हस्ताक्षर किए गए। लीवानो अगुइरे लिखते हैं : 'यह संधि जिसपर 19 फरवरी 1824 को सान्ता मारिया ने हस्ताक्षर किए, कोलम्बियन कांग्रेस द्वारा परिवर्तित कर दी गई क्योंकि उप-राष्ट्रपति सान्तान्देर ने संयुक्त राज्य और ग्रेट ब्रिटेन के साथ व्यावसायिक संधियों पर पहले ही हस्ताक्षर कर दिए थे, जिनमें उसने उन्हें लाभप्रद राष्ट्र का दर्जा प्रदान किया था। इन परिस्थितियों में कोलम्बिया अलमान के साथ की गई संधि को स्वीकार नहीं कर सका, जिसमें पक्षपातपूर्ण व्यवहार का जिक्र था, अन्यथा उसे संयुक्त राज्य और ग्रेट ब्रिटेन को ऐसे ही लाभ देने पड़ते।' वह आगे लिखते हैं : 'इसलिए इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं अगर ऐंग्लो-सैक्सन राष्ट्र, विशेषकर संयुक्त राज्य, बोलीवार की हिस्पानो-अमेरिकन नीति को देखते हुए विस्मय और चिंता के भाव प्रकट करते हैं। नए शासकों के लिए ऐसा राजनीतिक संगठन सर्वोत्तम था जो स्पेनिश अमेरिका के विशाल समाज को परस्पर विरोधी इकाईयों में विभाजित कर देता, जिनकी इच्छा स्पेन को महानगर परिषद का स्थान देना था। इन शासकों ने इसी कारण से उन स्थानीय शाही तबकों की मदद की जो पनामा कांग्रेस के विरोधी थे।'

उत्तरी अमेरिकी दूत जोह्न कुइनसे आदम्स ने राष्ट्रपति मोनरो को सुझाव दिया कि उन्हें इंग्लैंड के पवित्र संगठन के खिलाफ संयुक्त मोर्चे का प्रस्ताव अस्वीकार कर देना चाहिए। अंग्रेज़ इस घोषणा द्वारा भूतपूर्व स्पेनिश उपनिवेशों को किसी ऐंग्लो-सैक्सन शक्ति के हमले से सुरक्षित रखना चाहते थे। आदमस् ने ज़ोर दिया कि मोनरो को अपनी स्वयं की घोषणा करनी चाहिए जिससे इंग्लैंड के प्रस्ताव पर कोई प्रभाव न हो क्योंकि अपने प्रस्ताव द्वारा अंग्रेज़ दक्षिणी अमेरिका को बचाने से ज्यादा उत्तरी अमेरिका की शक्तियों को सीमित करना चाहते थे। इस प्रकार मोनरो नीति दिसम्बर 1823 में कांग्रेस के नाम एक संदेश में रूसियों को उत्तरी पैसेफिक से दूर रखने के बहाने सामने आई। 'संगठित शक्तियों की राजनीतिक नीतियां बिल्कुल अलग हैं...अमेरिका की तुलना में...और हमारी सुरक्षा के लिए, जिसे न जाने कितना रक्त और धन बहा कर प्राप्त किया गया

और बुद्धिमान नागरिकों द्वारा विकसित किया गया, जिनके लिए सारा राष्ट्र समर्पित है। इसलिए हम संयुक्त राज्य और इन शक्तियों के संबंधों से यह आशा करते हैं कि वे यह घोषणा करें कि उनकी तरफ से हमारी भूमि पर किसी भी तरह अपनी नीति थोपने का प्रयास हमारी शांति और सुरक्षा के लिए खतरा होगा।' इस घोषणा का वास्तविक लक्ष्य उत्तरी अमेरिका के हितों की सुरक्षा और यूरोपियन इरादों को सीमित करना था। यह कहने की ज़रूरत नहीं कि इस घोषणा का जन्म दक्षिणी अमेरिकी राष्ट्रों के प्रेम से नही हुआ था। लीवानो अगुइरे ने इस विषय पर लिखते हुए कहा है : 'उत्तरी अमेरिकी राजनीतिज्ञों के लिए मोनरो नीति का उद्देश्य उत्तरी अमेरिकी हितों को ध्यान में रखकर संयुक्त राज्य के संभावित हस्तक्षेप की सूचना देना था। राज्य सेक्रेटरी क्ले ने मैक्सिको स्थित उत्तरी अमेरिका के प्रतिनिधि ख़ोएल पोयेनसेत्त को इसे स्पष्ट किया : "संयुक्त राज्य ने कोई संधि या समझौता नही किया है, न ही इसने मैक्सिको या दक्षिण अमेरिकी सरकारों के साथ कोई वायदे किए हैं...जो इस बात का आश्वासन दे कि इन राष्ट्रों पर किसी विदेशी शक्ति के आक्रमण की स्थिति में उत्तरी अमेरिकी सरकार हस्तक्षेप करेगी···" (29 मार्च 1826)'

दक्षिणी अमेरिका को संगठित करने के प्रयासों में बोलीवार इस तरह विश्व शक्तियों के विरुद्ध थे। लीवानो अगुइरे आगे कहते हैं : 'बोलीवार के विचार में यह संगठन पुराने विश्व के रूढ़िवादी गठन का प्रजातांत्रिक पर्याय था; इसका प्रेस द्वारा विरोध किया गया और पेरिस, सेंट पीटर्सबर्ग और वियना के मंत्रि-मंडलों में इसकी आलोचना की गई; अंग्रेज मंत्री कैनिंग ने इसी संदर्भ में लन्दन में कोलम्बिया के प्रतिनिधि, सर. हुरतादो को अपने कार्यालय बुलाकर चेतावनी दी कि उनकी सरकार हिस्पानो-अमेरिकन गणतंत्रों द्वारा उन सिद्धांतों के आधार पर एक संगठन बनाने के प्रयास को अनुचित समझती है, जो यूरोप के न्यायालयों के लिए एक खतरा थे।' 1826 के बाद उत्तरी अमेरिकावासी बोलीवार के क्यूबा व पुयेरता रिको की स्वतंत्रता तथा इन टापुओं के असंख्य दासों को मुक्त कराने के प्रयासों से चिंतित थे। इसमें कोई संदेह नहीं कि उस समय के उत्तरी अमेरिकी राजनीतिज्ञों में ऐसे भी थे जो अपने प्रसारवादी हितों के बारे में स्पष्ट थे और उन्होंने महसूस किया कि बोलीवार के प्रयास उनके हितो में बाधा थे। मैक्सिको मे ख़ोएल पोयेनसेत्त, बोगोता में एन्डरसन और लीमा में विलियम तुदोर ने अनभ्यस्त राजदूत होने के बावजूद ब्रिटिश विरोधी भावना से प्रेरित होकर इन राष्ट्रों की आंतरिक राजनीति में हस्तक्षेप किया। उन्होंने गुप्त षड्यंत्रों का एक कार्यक्रम बनाया जिसको वाशिंगटन से नियंत्रित किया जाता था, इन षड्यंत्रों का उद्देश्य स्थानीय भावनाओं में फूट डालकर संघर्ष को भड़काना था जिससे बोलीवार द्वारा नियोजित संघों के पथ में बाधाएं अटकायी जा सकें।

दुर्भाग्यवश हमारे कई राजनीतिज्ञ उत्तरी अमेरिका की ओर झुक गए और सही राह को छोड़ 'मरीचिका' के पीछे हो गए। इन तथ्यों से पता चलता है कि बोलीवार द्वारा पनामा कांग्रेस में उत्तरी अमेरिका की उपस्थिति का विरोध करना ठीक कदम था। कांग्रेस का लक्ष्य, जिसे 1822 में प्रकट किया गया था और 1824 के अधिवेशन में पारित किया गया था, 'प्रत्येक राज्य के दूतों की एक सभा का आयोजन करना था संघर्ष व हमले की स्थिति में संपर्क के रूप में हमारी सहायता करेगी और मतभेद होने पर मेल-मिलाप करायेगी।'[50] उत्तरी अमेरिकी सरकार द्वारा अपने दूतों को दिए निर्देश एक बिल्कुल अलग लक्ष्य को स्पष्ट करते हैं, 'हम इस तरह के किसी भी संगठन का विरोध करते हैं जो विभिन्न राज्यों के बीच के झगड़ों को सुलझाए या उनके काम करने के तरीके का निश्चय करे।'[51] दासता के प्रश्न पर भी समझौते में पूरी तरह कमी थी। पनामा कांग्रेस में इस प्रश्न के उठाए जाने के भय के कारण दक्षिणी राज्यों के सांसदों ने कांग्रेस में संयुक्त राज्य के भाग लेने का विरोध किया। संयुक्त राज्य ने पहले भी राष्ट्रपति गौल और कोलम्बिया में उत्तरी अमेरिकी प्रतिनिधि, रिचर्ड सी० एन्डरसन द्वारा प्रस्तुत दासता व्यवसाय के विरुद्ध 1824 के बोगोता कार्यक्रम को रद्द कर दिया था। ऐसा लगता है कि एन्डरसन ने इस समझौते का प्रस्ताव बगैर अपने अधिकारियों की इजाज़त के रखा था।

पनामा कांग्रेस के अधिवेशन के प्रति अधिक उत्साह नहीं पाया गया, हालांकि बोलीवार ने इसके लिए कोलम्बिया के एक दूर-दराज हिस्से में स्थान चुना जबकि वह स्वयं बहुत दूर दक्षिण में थे। अर्जेंटीना ने पहले तो इसमें भाग न लेने का भ्रान्त दृष्टिकोण अपनाया और फिर अपने निर्णय के अद्भुत कारण दिए : 'हम यह स्पष्ट कर चुके हैं कि नव विश्व के विभिन्न राज्यों के मध्य समस्याएं सुलझाने हेतु एक सर्वोच्च सत्ता की स्थापना का विचार बहुत खतरनाक है; इसमें हैरानी न होगी अगर यह लोगों के लिए विनाशकारी युद्धों का बीज सिद्ध हो, जिन्हें शांति की इतनी जरूरत है...। इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि समान हित के ऐसे विषय हैं जिन्हें विभिन्न राज्यों के राजदूतों द्वारा संधि के माध्यम से नियंत्रित किया जा सकता है...। लेकिन यह भी, जो शायद अन्य हालात में उचित व अनुरूप लगता है, आज की परिस्थितियों में खतरनाक है...वर्तमान परिस्थितियों में कोलम्बिया गणतंत्र द्वारा बहस में अपने प्रभाव के प्रयोग से ईर्ष्या और भ्रम को बढ़ावा मिलेगा।'[52] ओ' हिग्गस को चिले में सत्ता से उतार दिया गया। उसके बाद की सरकार ने अर्जेंटीना का साथ दिया और कांग्रेस में प्रतिनिधि भेजने से इन्कार कर दिया। पेरू के विषय में बोलीवार चाहते थे कि पेरूवासी अपनी बाह्य नीति का प्रतिपादन स्वयं करें; यह उनकी इस भावना के अनुरूप था कि कांग्रेस में राष्ट्रों को स्वेच्छा से ही आना चाहिए। जैसे ही बोलीवार वापिस गए, पेरूवासियों ने अपने

सहयोगी विदूरे द्वारा प्रस्तुत सहयोग का प्रस्ताव बदल दिया और अन्य राज्यो के शक्की स्वभाव को अपना लिया। इंग्लैंड ने घोषणा की कि वह बहसों में कोई भाग नहीं लेगा और उसने दक्षिणी अमेरिका व स्पेन के मध्य संघर्ष मे स्वयं को निष्पक्ष घोषित कर दिया। ब्राज़ील के शासक ने भी इस प्रश्न पर अपनी निष्पक्षता ज़ाहिर की।

इन्हीं कारणों से कांग्रेस का कार्यक्षेत्र सीमित था। पनामा में 15 जुलाई 1826 को कोलम्बिया गणतंत्र, मध्य अमेरिका, पेरू और मैक्सिको संयुक्त राज्य द्वारा हस्ताक्षरित संघ, लीग और संगठन की संधि बोलीवार की आकांक्षाओं का धूमिल प्रतिबिम्ब थी। उदाहरणतः राजनीतिक अपराधियों को छोड़ देने की उनकी प्रार्थना को ठुकरा दिया गया। कांग्रेस के प्रति उनकी निराशा को पुष्ट करने वाला समाचार सुनने से पहले ही बोलीवार ने कटु यथार्थ द्वारा उल्लेख किया : 'पनामा कांग्रेस, जो अधिक प्रभाशाली होने पर ज्यादा प्रशंसनीय होगी, उस ग्रीक पागल की तरह है जिसने चट्टान पर बैठकर समुद्री जहाज़ों को निर्देश देने की कोशिश की थी। इसकी शक्तियां महज़ परछाईं हैं और इसकी घोषणाएं अब प्रभावशाली नहीं है।'[53] पैख़ और सान्तान्देर के अलगाववादी आंदोलन का सामना करने के लिए जब बोलीवार शीघ्रता से वेनेज़ुएला वापिस आ रहे थे तो वह ग्वायाकिल में पेरू के राजदूत विदूरे से मिले जो पनामा से लीमा को लौट रहे थे। बोलीवार हस्ताक्षरित दस्तावेज़ों को पढ़ते हुए अत्यंत निराश हुए। उन्होंने विदूरे को ग्वायाकिल में रोकने की कोशिश की, जिससे लीमा में दस्तावेज़ों के आगमन में देरी की जा सके और उसी क्षण ब्रिसेनो मेन्देख़ को लिखा : 'मैंने यहां पनामा में हस्ताक्षरित संधियों को देखा है और आपको अपनी सही राय दूंगा। सैन्य टुकड़ियों संबंधी समझौता, विशेषकर उनके प्रयोग के तरीके, अवसर और उनकी संख्या के संदर्भ में यह प्रभावहीन और अनुपयोगी है...यह कहना कि उसे ही एक गंभीर आक्रमण माना जाए जिसमें 5,000 से ज्यादा व्यक्ति शामिल हैं, और सहायता हेतु इसे एक शर्त मानना कई राज्यों को दूसरों द्वारा पराधिकार या कब्जे का शिकार बनाना है...मैक्सिको में अधिवेशन कराने से यह उस राष्ट्र के प्रभाव में आ जाएगा जो पहले ही संयुक्त राज्य के अंतर्गत प्रभुत्वशाली है। इन तथा अन्य कारणों से जिन्हें मैं आपको व्यक्तिगत रूप से स्पष्ट करूंगा, मुझे आपसे प्रार्थना करनी है कि जब तक मैं बोगोता पहुंच नहीं जाता और आपसे तथा दूसरों से इनपर निकटता से मूल्यांकन नहीं कर लेता, तब तक इन संधियों को सत्यांकित न किया जाये। संघ की संधि में ऐसे नियम हैं जिनपर आचरण न करने का मतलब उन कई कार्यक्रमों का गला घोटना होगा जो मैंने बनाए हैं और जिन्हें मैं महत्वपूर्ण समझता हूं। इसलिए मैं आग्रह करता हूं कि संधियों पर मेरे आने

तक कोई कदम न उठाया जाए। मैंने जनरल सान्तान्देर को भी यही कहा है। कृपया इसे उन्हें दोहरा दीजिए।'

इतनी असफलताओं ने किसी दूसरे व्यक्ति को अब तक हताश कर दिया होता। बोलीवार तुरंत एक ऐसे विचार की ओर प्रवृत्त हुए जिसकी संभवना अधिक थी—एन्देस का संगठन, जिसमें कोलम्बिया, पेरू और बोलीविया शामिल थे। यह भी असफल रहा, लेकिन बोलीवार ने आशा नहीं छोड़ी। दक्षिण अमेरिका का परवर्ती इतिहास विभाजन की कहानी है। जब कोलम्बिया कई टुकड़ों में विभक्त हो रहा था, मध्य अमेरिका उस समय पांच अलग गणतंत्रों में विभाजित हो रहा था। वेनेजुएला और नव ग्रानादा में 19वीं शताब्दी का इतिहास, संघवाद के नारे के आंतरिक विभाजन की कहानी है। 1860 में बोलीबार और सान्तान्देर ने कोका राज्यों को नव ग्रानादा संगठन से अलग घोषित कर दिया, और नव ग्रानादा के राज्यों का गठन किया। यह उसी समय हुआ जब भूतपूर्व राष्ट्रपति मोसकेरा गुसमान से मित्रता का लाभ उठाते हुए नव ग्रानादा ने कांग्रेस का प्रस्ताव रखा। 1863 के कोलम्बिया संविधान में एक लेख द्वारा कार्यपाल को वेनेजुएला और एक्वादोर की सरकारों से तीनों क्षेत्रों के संघ के लिए बातचीत शुरू करने का अधिकार सौंपा गया। लेकिन यह विचार यहीं तक सीमित रहा।

एकता के आदर्शों पर राष्ट्रीयता की भावना की प्रधानता होने के कारण राष्ट्रों के बीच युद्ध भी हुए। 1285-28 में ब्राजील और रिवर प्लाते के मध्य युद्ध हुआ जिसमें से उरूग्वे का एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में जन्म हुआ। इसके दस वर्ष से भी पूर्व, रोसास ने इस नव जन्मे राष्ट्र पर अधिकार करने के उद्देश्य से इस के साथ एक लंबा संघर्ष छेड़ दिया। इस संघर्ष के दो भाग थे : 1836-38 और 1844-52। जनरल सान्ताक्रुस ने 1835 में शस्त्रों की शक्ति से पेरू-बोलीविया संगठन का गठन किया। 1836 में चिले ने युद्ध छेड़ दिया जिसका 1839 में संगठन की समाप्ति के साथ अंत हुआ। हैती और दोमिनिकन गणतंत्रों ने 1844 और 1850 के बीच सीमांतिक युद्ध लड़े। संयुक्त राज्य और मैक्सिको के बीच टैक्सास के अधिकार को लेकर 1846-48 में युद्ध हुआ। 1864-70 में अमेरिका के आपसी युद्धों में से सर्वाधिक खतरनाक युद्ध ब्राजील, उरूग्वे और अर्जेंटीना द्वारा पाराग्वे के खिलाफ लड़ा गया जिसमें 800,000 लोगों की जानें गईं। चिले, पेरू और बोलीविया के बीच 1878-83 में फिर युद्ध शुरू हो गया। चाको युद्ध (1928-38) ने पाराग्वे और बोलीविया का रक्त सुखा दिया।

कई यूरोपियन राष्ट्रों ने लेटिन अमेरिका की इस फूट का फायदा वहां लूट-मार और हमला करके उठाया। फ्रांस ने मैक्सिको में हस्तक्षेप किया और वहां 1861-67 में मैक्सिमिलन को सत्ता पर बिठा दिया। उन्होंने दो बार पहले भी हस्तक्षेप किया था; 1838-41 में रिवर प्लाते में और 1845-47 में मैक्सिको

तट के नगर वेराक्रुस पर अधिकार पा लिया। स्पेन ने सान्तो दोमिन्गो को 1861-65 में स्वयं में मिला लिया और 1863-65 में पेरू में भी हस्तक्षेप किया। कई शक्तियों ने ब्राज़ील के काफी बड़े हिस्सों को हड़प जाने की कोशिश की थी। इंग्लैंड ने 1833 में फाकलैंड द्वीप समूहों पर अधिकार पा लिया और उत्तरी अमेरिका के बालिस और ग्वाइयाना के हिस्सों पर कब्ज़ा किया। इस देश के समुद्र तटों पर 10वीं शताब्दी के शुरू में डच, फ्रांसीसी, अंग्रेज और इटालियन जलपोतों द्वारा हमले किए गए। मैक्सिको के मूल्य पर संयुक्त राज्य फैला, क्यूबा पर अधिकार पाया, स्वयं को पुयेरता रिको में स्थापित किया और निकाराग्वा, हैती, डोमिनिकन गणतंत्र व पनामा में हस्तक्षेप किया। रूसवेल्ट को उत्तरी अमेरिका के लोगों द्वारा सम्मान से याद नहीं किया जाता है। इन शक्तियों और लेटिन अमेरिकी राज्यों के असंतुलन से यह स्पष्ट है कि बोलीवार सही थे, और सिर्फ एक संघ की मदद से ही यह संभव था कि दक्षिणी अमेरिकी राज्य किसी शक्तिशाली शक्तियों के हमलों का मुकाबला कर सकते। जब इंग्लैंड ने वेनेजुएला का एक छठा भाग हड़प लिया, वह देश अभी आंतरिक संघर्ष से उभर रहा था। उस समय ब्रिटिश राज्य विश्व के धरातल के एक पाँचवें भाग और जनसंख्या के एकतिहाई भाग का मालिक था। इन हमलों, चोरियों और हस्तक्षेपों ने ही घृणा और शक के बीज बोये थे। विदेशी शक्तियां अपनी नवीन तकनीक के साथ हमारे राष्ट्र का शोषण करने आयी थीं, बेईमान व्यक्तियों की सेवाओं का भ्रष्टाचार द्वारा लाभ उठाया और व्यवस्थित लोगों को नियंत्रित करने के लिए संदिग्ध क्षेत्रों में पूंजी लगाई।

अगर हम शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र की ओर मुड़ें तो हम पाते हैं कि बोलीवार के प्रयासों का उनकी मृत्यु के बाद वही हाल हुआ था जो उनके राजनीतिक आदर्शों का हुआ। क्रांति की पीढ़ी में ऐसे लोग थे जिन्होंने वस्तुत: नई नैतिकता का आधार बनाने का प्रयत्न किया। ख़ोसे रेफेल रेवेंजा जब लन्दन में नए गणतंत्र का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, उन्हें अनुचित रूप से गिरफ्तार किया गया और बाद में मानहानि के लिए उन्हें धन दिया। इस धन का प्रयोग उन्होंने कोलम्बिया के विद्यालयों के लिए पुस्तकें और दूसरी शैक्षिक वस्तुओं को खरीदने में किया। मानूएल पालासिओ फाख़ारदो ने अपने जेब-खर्च में से कोलम्बिया के प्रतिनिधि के रूप में घूमने और यात्राओं पर आए खर्चों को अदा किया। वह इस तंगी में रहते थे कि फ्रांसीसी अधिकारियों को उनकी राजनयिक स्थिति पर संदेह होने लगा, 'उनके देश द्वारा उनको दिया जाने वाला धन देखकर।'[54] इस पीढ़ी के राजनीतिज्ञों और दूतों की विचारशीलता को सामने लाने वाली और भी ऐसी घटनाएं हैं। जनरल पैदरो ब्रिसेनो मेन्देख़ और डा० पैदरो गौल ने कांग्रेस से प्रार्थना की कि बर्तानिया के व्यावसायिक प्रतिनिधियों द्वारा उन्हें दिए कीमती

नक्शों को सरकार स्वीकार कर ले।[55] इस वक्त के एक शानदार व्यक्ति आँदरेस बैल्लो थे जिन्होंने अपनी कलम से किसी भी सेनाध्यक्ष से ज्यादा, अमेरिका की स्वतंत्रता के लिए काम किया। कानून के क्षेत्र में उनकी देन महान है; उन्होंने 'देरेको दे जेन्तेस' और 'कोदिगो सिविल' की रचना की। प्रथम रचना 20 वर्षों की मेहनत का परिणाम था और लातीनी अमेरिका में शांति बरकरार रखने के लिए सर्वोत्तम राजनयिक दस्तावेज़ था। उनका 'कोदिगो सिविल' 30 वर्षों के अध्ययन का नतीजा था, और अब चिले में प्रयोग होता है तथा कोलम्बिया, एक्वा-दोर, उरूग्वे और निकाराग्वा में प्रेरणा का स्रोत था, और ब्राज़ील, अर्जेन्टीना और वेनेज़ुएला में भी इसमें आपना प्रभाव छोड़ा। उनके 'ग्रामातीका' में इस महाद्वीप को संगठित करने वाले सबसे महत्वपूर्ण सूत्र 'भाषा' का ज़िक्र था। यह विशेषकर लेटिन अमेरिकी प्रयोग के लिए था, और जब कि इसने भाषा को एक जीवित और महत्वपूर्ण सूत्र की संज्ञा दी, इसने भाषा के विभाजन को रोकने की मांग पर भी ज़ोर दिया। बैल्लो, चिले की विदेश नीति के अधिकारी 1832 से थे, और महाद्वीपीय समानता पर उन्होंने एक कानूनी नीति का उल्लेख किया, जो कानून पर आधारित था। उन्होंने युद्ध के मानवीय पक्ष की ओर भी योगदान दिया और इस तरह 1856 की पैरिस कांग्रेस के सिद्धांतों का प्रतिपादन किया। बोलीवार के एक और साथी थे सुकरे, जो अपने पीछे ईमानदारी और एकता की प्रतिष्ठा छोड़ गए थे। दुर्भाग्यवश बोलीवार की मृत्यु के बाद ये गुण सार्वजनिक जीवन से लुप्त हो गए।

कौदिल्लयोस शिक्षा व संस्कृति के विरोधी थे, जिसे उन्होंने माचो के मूल्यों का विरोधी माना। पैख़ ने 1825 में अपने मस्तिष्क को उजागर करते हुए कहा : 'इस देश को एक अलग चीज़ की जरूरत है, जो उनके लिए हो जो इसके हकदार हैं, और जो ठगों को भी चुप करा दें।'[55a] 'ठगों' शब्द का प्रयोग किया गया था, बोलने की स्वतंत्रता पर अकुश लगाने के लिए, ताकि बुराई करना समाप्त हो। गिल फोरतोल के अनुसार पैख़ का 'चिकित्सकों' और 'वकीलों' के प्रति प्यार तभी जागा जब उन्होंने उसकी इच्छाओं के प्रति स्वयं को आत्मसमर्पित कर दिया। दूसरे तानाशाहों ने इस नीति का अनुसरण जारी रखा और बुद्धिमत्ता से घृणा करनी छोड़ी। सभी संविधानों में विचारों और बोलने की स्वतन्त्रता की बात थी, लेकिन इन्हें तानाशाह सत्ताओं के बहुमत ने समाप्त कर दिया था। कारावास में हमेशा पत्रकार और छात्र होते थे, और सत्ता के विरोधियों को निष्कासित कर दिया जाता था। प्रेस पर नियंत्रण लगा दिया गया और हर तरह का दबाव डाला गया, और साथ ही अत्याचारियों ने अशिक्षितों को शिक्षित करने के लिए कुछ भी करने से इन्कार कर दिया। विश्वविद्यालयों तथा ऊंची शिक्षा की दूसरी संस्थाओं को भी क्षति पहुंची। बोलीवार की मृत्यु के बाद काराकास विश्वविद्यालय को

इस बात के लिए संघर्ष करना पड़ा कि विश्वविद्यालयों के बारे में उनके प्रस्तावों का थोड़ा बहुत तो पैख़ द्वारा सम्मान हो। बोलीवार द्वारा संस्था के भविष्य के लिए निर्धारित सम्पत्ति को चुरा लिया गया। उदाहरणतः ह्रासिऐन्दा कुओ, जो विश्वविद्यालय के लिया था, वह इसकी बजाय पैख़ को किराए पर दे दिया गया और अंततः गुसमान ब्लांको की सम्पत्ति बन गया। सम्मान पर लगातार हमले किए गए। ख़ुआकिन क्रेस्पो, कास्त्रो, मोनागास और फालकान के शासन में तो इसकी उपस्थित को भी ख़तरा हो गया था। ख़ुआन वीसेन्ते गोमेख़ ने तो सबको पीछे किया; उसने विश्वविद्यालय को 1912-22 दस वर्षों के लिए बंद कर दिया।

सार्वजनिक जीवन में रिश्वत आम बात हो गई। सरकारों के सदस्य, देश को बेचने योग्य थे। विदेशी-हितों को राष्ट्र को नुकसान पहुंचाने वाले संबंध स्थापित करने के लिए सहयोगियों की कभी कमी महसूस नहीं हुई। राजनीतिक जीवन कठोर और रक्तमय हो गया, जब कि बदले की आग में पूरे के पूरे परिवार को ख़त्म कर दिया जाता था। उदाहरणतः गोमेख़ के अत्याचारी शासन से भागने के लिए हज़ारों ताकीरावासी विवश हो गए। 1912 में परेगोनेरो और कुइलीकुइया शहर पूरी तरह नष्ट हो गए। राज्य गवर्नर एस्ताकुईओ गोमेख़ ने अपने साथियों को अपनी सत्ता स्थापित करने के लिए जलाने, मारने और लूटने के निर्देश दिए, जिससे सभी बंधन तोड़े जा सकें।[56] केसिला पिमेन्तेल के लेख गोमेख़ के अत्याचारी शासन और जेलों की भयंकर स्थिति का वर्णन करते हैं।[57] लातीनी अमेरिकी उपन्यासों की काफी संख्या ने इन शासनों की भयंकरता को सिद्ध किया है। गलत ढंग से इन अत्याचारियों ने ख़ूब सम्पत्ति इकठ्ठी कर ली। उदाहरणतः पैख़ ने, जिसके पास 1809 में कुछ नहीं था, एक विशाल सम्पत्ति अपने पीछे छोड़ी, जिसका ज़िक्र 1865 की उसकी वसीयत में मिलता है। गुसमान ने गर्व से अपनी सम्पत्ति का विवरण दिया: 1879 में लंदन के बैंक में ही, उसके पास 10,000,000 पेसोस जमा थे और करावास में उसके पास अनगिनत मकान थे। ख़ुआन वीसेन्ते गोमेख़ हज़ारों सम्पत्तियों का स्वामि था: उसकी वसीयत में उसकी वास्तविक सम्पत्ति का मूल्य 200,000,000 बोलीवारेस से ज़्यादा था। यह रिश्वतख़ोरी वास्तव में बोलीवार के जीवन काल में ही शुरू हो चुकी थी, जैसे कि रेवेंजा ने कहा: 'कई कार्यालय व्यवसायी बन गए हैं, नोटों का शर्मनाक यात्रा दौर चल रहा था, और ऋण आदि के लिए उससे कमीशन की मांग की जाती है।'[58] यही रिश्वतख़ोरी सेना के वेतन, पेंशन के बारे में भी थी, या उनके साथ जिन्होंने अपनी सम्पत्ति की रक्षा के लिए तलवार खींच ली थी। सरकारी नियंत्रण प्रायः प्रभाव-हीन थे। अधिकारी रिश्वतपरस्त थे और उन्होंने अपने गोरखधंधों को कानून की आड़ में छुपाने के प्रयास किए। रेवेंजा ने अपनी रपट में, नामों का उल्लेख किए बिना विस्तृत वर्णन किया है: 'यह विचित्र नहीं है कि आप अधिकारियों के हाथों

में सोने के 30 से 40 औंस पाएं। कुछ अधिकारी तो नौकरी के कुछ ही माह में खूब धनी हो गए; और ऐसे भी अधिकारी हैं जो नौकरी शुरू करने के वक्त खाली हाथ थे, और एक साल के भीतर ही 50,000 पेसोस से ज्यादा के मालिक बन गए।'

बोलीवार की मृत्यु के बाद मतदान भी निरर्थक हो गया। विद्रोह अक्सर होते थे और लोगों का कार्य, मात्र हां भर कहना था। अत्याचारी तानाशाह स्वयं को इच्छा मुताबिक जिता या पुन: जिता सकने में सक्षम थे। चुनावों में संख्याओं को बढ़ाया जाता था, मतकेन्द्रों पर मतदाताओं पर प्रभाव डाला जाता था। प्रगटत: ऐसी परिस्थितियों में बुद्धिजीवी जीवन समाप्त हो रहा था। लातीनी अमेरिका ने अपना सांस्कृतिक जीवन यूरोप से ग्रहण किया, जो विभिन्न समाजों से पैदा हुआ था। विज्ञान और तकनीक प्राय: अनुपस्थित थे। इन स्थितियों ने राष्ट्रों को विदेशी घुसपैठ के लिए खुला छोड़ दिया, जो बाहरी लोगों के ही हितों में रहा, हमारे नहीं।

इन सब में बोलीवार के प्रति सम्मान का कोई संकेत नहीं था, न ही लातीनी अमेरिका के उत्कर्ष के लिए उनके योगदान की मान्यता। फरवरी 1831 में पारा-कैबो के गवर्नर ने पैख़ के अधीन आंतरिक मंत्री को लिखा : 'पिछली रात अंग्रेज कैप्टन रितोन कोरवेते रोसा में जमैका द्वीप समूहों से आए, जो उन्होंने इस मास की 16 तारीख को छोड़ा था। वह अपने साथ जनरल बोलीवार के कारताख़ेना राज्य के सोलेदाद शहर में मृत्यु का समाचार लाए हैं, जो बेशक अब घटित हो चुकी है। स्वतंत्रता और लोगों की बेहतरी की इस महत्वपूर्ण घटना की मैं सरकार को आपके माध्यम से सूचना दे रहा हूँ। इसी काम के लिए मैं एक दूत भेज रहाहूँ। बोलीवार, वह शैतान मस्तिष्क, बुराइयों की मशाल...अपने लोगों का शोषक, अपने देशवासियों के कंधों पर पड़ने वाली विपत्तियों को बढ़ावा देने वाला अब जीवित नहीं है। उनकी मृत्यु ने विपरीत परिस्थितियों में कोलम्बिया के लोगों को दुख और तकलीफ पहुंचाई होती; लेकिन आज नि:संदेह प्रसन्नता का महान अवसर है, और जो सबके लिए शांति व प्रेम का प्रतीक है। उनके अनु-यायियों के लिए कितना भाग्यशाली अवसर है, जो लगता है हमें ईश्वर की तरफ से संरक्षण के रूप में प्राप्त हुआ है। मैं इस घोषणा द्वारा आपकी प्रसन्नता में शामिल हूँ, आपका वफादार सेवक, ख़ुआन अन्तोनियो गोमेख़।' ख़ुआकिन गबालदोन मारकेस ने यह टिप्पणी की : 'हम आशा कर सकते थे...इस पत्र में मृत्यु के बारे में पुनीत भावना की एक पंक्ति की, लेकिन नहीं। जब हम उनकी मृत्यु इन शब्दों...से पत्र पढ़ना आरंभ करते हैं तो हम मुक्तिदाता की अंतिम मान्यता की अपेक्षा करते हैं लेकिन ऐसा नहीं था। कोलम्बियावासियों के शोक या अफसोस की संभावना सिर्फ 'गलतियों के समय' में ही थी।'[59]

बोलीवार के सम्मान को और भी ज्यादा क्षति अविवेकी इतिहासविदों से पहुंची है जिन्होंने उन्हें तानाशाह व अत्याचारी की संज्ञा दी है। उनके मेधावी गुणों की उनके विचारों की व्यापकता के संदर्भ में बुराई की गई है, इस सुझाव के साथ कि वह हर विषय पर वाद-विवाद तो कर सकते थे किन्तु किसी भी विषय के विशेषज्ञ नहीं थे; बिना संदर्भ के ऐसे उद्धरण दिए गए जिससे कि बोलीवार को सर्वाधिक गलत दार्शनिकों से जोड़ा जा सके। जहां उनकी प्रतिष्ठा अच्छी तरह ध्वस्त नहीं हुई, वहां उन्हें संग्रहालयों में सुशोभित किया गया और उनका खोखले और उल्टे-सीधे भाषणों में वर्णन किया गया। लेकिन फिर भी अमेरिका बोलीवार का संदेश अविकृत रूप में सुनने के लिए तैयार है। अमेरिका के सर्वोत्तम बुद्धिजीवियों ने हमेशा उनकी महत्ता को जाना है; रोदो, मारती और सरमिएन्तो ने उनकी शक्तियों को श्रद्धांजलि अर्पित की; ऐसा ही महान स्पेनवासी मिगुएल दे उनामुनो ने किया। लातीनी अमेरिका के दो महान लेखकों, पाबलो नरुदा और मिगुएल एंजेल अस्तुरियास ने बोलीवार की स्मृति को अविस्मरणीय कर दिया है :

> हमारे पास जो कुछ है, वह तुम्हारी बुझी ज़िन्दगी से
> आया है,
> तुमने नदियों, भूमि, घंटाघरों को पाया,
> पिता तुमने हमें हमारी रोटी दी है,...
> सेनापति, युद्धक, जब भी एक मुंह
> स्वतंत्रता का नाम लेता है, जहां कहीं एक कान सुनता है,
> जहां कहीं एक लाल सिपाही एक भूरे सिर को ज़ख्मी
> करता है,
> जहां कहीं चमकती पत्तियों वाला वह पौधा खिलता है,
> जहां कहीं एक नया—
> झंडा फहराया जाता है, हमारे पवित्र प्रभात के रक्त के साथ,
> सेनापति, बोलीवार, तुम्हारा चेहरा उसमें दिखाई देता है...
> मुक्तिदाता, तुम्हारी बांहों में एक शांतिमय विश्व का
> जन्म हुआ।
> शांति, रोटी, गेहूं तुम्हारे खून से उत्पन्न हुए।
> अपने युवारक्त द्वारा जो तुम्हारे रक्त से आया;
> शांति, रोटी और गेहूं उगेगा उस विश्व के लिए जो
> हम बनाएंगे।'[60]

मैं स्वतंत्रता में विश्वास करता हूं, अमेरिका की माता,
भूमि के प्रसन्नदायक समूहों की निर्माता,
और बोलीवार में, उसका बेटा, हमारा शासक,
जो वेनेजुएला में जन्मा, जिसने दुख भोगे,
स्पेनिश शक्तियों की अधीनता का विरोध किया,
किमबोरासो पर मरा,
और विश्व के प्रकाश के साथ स्वर्ग चला गया,
वह फिर कोलम्बिया की आवाज को सुनकर उठा,
उसने 'उसे' अपने हाथों से छुआ
और प्रभु के दांये हाथ पर वह खड़ा है।
हम पर निर्णय मत लो, बोलीवार, अंतिम दिन तक,
क्योंकि हम मानवता के अंतिम अन्न ग्रहण
वाले दिन में विश्वास करते हैं
जो लोगों के साथ अंतिम अन्न ग्रहण लेता है, कि सिर्फ वही
मानवता स्वतंत्र कर सकता है, हम घोषणा करते हैं
मृत्यु तक युद्ध और अत्याचारियों पर दया किए बिना
हम नायकों के पुनर्जीवन में विश्वास करते हैं
और उनका जीवन जो तुम्हारी तरह है,
मुक्तिदाता, मृत्यु को न स्वीकार करें, अपितु अपने नेत्र बंद कर
देखना जारी रखें।'[61] □

संदर्भ

1. ओबरास कोम्पलीतास : II, 1275; I, 845; II, 959, 233; I, 1440

—(3) I, 566

—(7) II, 506, 825-829

—(8) II, 915; I, 1324; II, 959, 1141

—(8a) I, 560

—(10) II, 933, 684, 733

—(19) II, 987

—(21), 11, 64, 116

—(27) I, 576

—(28a) I, 444, (31) I, 1291, 1076; II, 957

—(42) I, 1075-76; II, 1138; I, 1108; 1211
—(44) I, 1265-68, 791
—(46) II, 742; I, 1421, 1190
—(50) I, 1012
—(53) I, 1407, 1431
—(55a) I, 1287
—(60) पृष्ठ 262 (ब्युनस आयर्स, 1956)
—(61) (माद्रिद, 1968)

2. एल लिबेरतादोर ई ला कोनसतीतूसियोन दे अंगोस्तुरा दे 1819, पृष्ठ 27
4. मेरिदा ई ला रेवोलुसियोन दे 1826 ओ 'ला कोसियाता' (मेरिदा, .963)
5. रासोनेस सोसियोएकोनोमिकास दे ला कोन्सपिरासिओन दे सेतीएमबरे कोन्तरा एल लिबेरतादोर (काराकास, 1968) पृष्ठ 33-36
6. बोलीवार, पृष्ठ 347
9. लेबेरोअमेरिका। सू एवोलूसियोन पोलितिका, सोसियोएकोनोमिका, कूलतरल ई एनतरनासियोनाल (न्यूयार्क, 1954) पृष्ठ 197
11. मातेरियाल पारा एल एस्तुदियो दे ला कुएसतीयोन अगरारिया, पृष्ठ 264
12. ओ' लेरी, मेमोरियास, XVIII, 393-395

    —(41) XXII, 514
    —(45) XXIV, 283
    —(47) III, 239, 210, 230

13. मातेरियालेस पारा एल एस्तुदियो दे ला कुएसतीयोन् अगरारिया : पृष्ठ 316, 283, 284, 309

    —(15) पृष्ठ 536

14. ब्लांको और असपुरुआ, XII, 135-137

    —(34) VI, 648
    —(36) XIV, 174-179
    —(38) XIV, 173
    —(58) XI, 285
    —(39a), XIII, 707

16. से० फेलिसे कारदोत, वेनेजोलानोस दे अऐर ई दे होई (काराकास, 1971), पृष्ठ 132

17. पेरू दे लेकरोइक्स, पृष्ठ 241
—(32) पृष्ठ 310
18. एल यूनीवरसाल, काराकास, सुपलेमैन्ती 'एस्तामपास', क्रमांक 731, 8 दे ओकतूबरे दे 1967
20. रासोनेस सोसियोइकोनोमिकास दे ला कोन्सपिरासिओन दे सेतीएमबरे कोन्तरा एल लिबेरतादोर, पृष्ठ 9
22. रे० वेतानकोर्त, वेनेजुएला पोलितिका ई पैत्तोलिओ (मैक्सिको-ब्युनस आयर्स, 1956), पृष्ठ 54
23. 'फारच्युन', न्यूयार्क, मार्च 1939
24. कोरियो देल ओरिनोको, अंगोस्तुरा, क्रमांक 51, 5 दे फेबेरेरो दे 1820 (पेरिस, 1939)
25. रे० कोरतासार और ल० अ० कूएरबो, कांग्रेसो दे अंगोस्तुरा लिब्रो दे अकतास (बोगोता, 1921) पृष्ठ 21, 102, 163, 220
26. कोरियो देल ओरिनोको, क्रम 51
28. कूयेरपो दे लेऐस दे ला रेपूब्लिका दे कोलम्बिया, 1821-27 (काराकास, 1961), पृष्ठ 31
29. सान्तान्देर, आर्कीवो, IV, 245
30. दोकूमेनतोस रेफेरेनतेस अ ला करे आसियोन दे बोलीविया, II, 346
33. आई० लीवानो अगुइरे, बोलीवार (बोगोता, 1950), पृष्ठ 298-325
35. गासेता दे वेनेजुएला, काराकास, आन्यो X, क्रमांक 485, 3 दे मायो दे 1840
37. पैख़, आतोबायोग्राफिया, II, 56
—(39), II, 16
39a. अ० मिख़ारेस, 'ला एवोलुसियोन पोलित्तिका दे वेनेजुएला, 'वेनेजुएला इन्देपेनदिएन्ते (काराकास, 1962), पृष्ठ 81
40. 'आरकीवो ख़ेनेराल दे ला नासियोन्, काराकास, गोबियेरनो दे ला रेपूब्लिका, सेक्रेतारिया देल एनतेरियोर ई ख़ुसतीसिया, सेसियोन ख़ेनेराल खंड V, फोलियो 269
42a. रेसतीली, एरनेस्तो, ला गेसतीयोन दिपलोमातिका देल ख़ेनेराल दे अलवेयेर एन एल आल्तो पेरू (ब्युनस आयर्स, 1927), पृष्ठ 126
43. बोलीवारिसमो ई मोनरोइस्मो, पृष्ठ 84
48. बोलीवार, पिनतादो पोर सा मिस्मो (काराकास, 1959), पृष्ठ 217-220

49. बोलीवारिसमो ई मोनरोइस्मो, पृष्ठ 11, 25, 32, 40, 53, 56
51. देल कांग्रेसो दे पनामा अला कोन्फ़ेंसिया दे कागकास, ख़े० मे० येपेस (काराकास, 1955), I, 62
52. पे० ए० सुवियेता, कोन्ग्रेसोस दे पनामा ई ताकुबाया (बोगोता, 1972), पृष्ठ 31
54. पारा पेरेख़, उना मिसिओन दिप्लोमातिका वेनेसोलाना एन्ते नापोलिओन एन 1813, पृष्ठ 73
55. कोफिकासियोन नासियोनाल दे तोदास लास लेऐस दे कोलम्बिया (बोगोता, 1925), III, 330
56. बोलेतिन देल आरकीवो हिस्तोरिको दे मिराफ़्लोरेस, काराकास, क्रम 14, पृष्ठ 209
57. बाख़ोला तीरानिया, 1919-35 (काराकास, 1970)
59. एल बोलीवार दे मादारियागा ई ओतरोस बोलीवारेस (काराकास, 1960), पृष्ठ 171

□

6. प्रजातंत्र और प्रगतिशील विचारधारा : वर्तमान और भविष्य

सत्य के झूठे अथवा विकृत रूप का प्रतिरोध करने के लिए सिमोन बोलीवार की ऐतिहासिक महत्ता और व्यक्तित्व का पूर्ण मूल्यांकन आवश्यक है, चाहे वह बीते काल की महत्ता पर बल देते हुए बोलीवार को संग्रहालय में रखना हो, या फिर निरंकुश अत्याचारी प्रशासकों द्वारा बोलीवार का उदाहरण दिया जाना हो। हाल ही के क्रांतिकारी उद्देश्य जो लातीनी अमेरिकी अनुभवों से अधिक विदेशी आयात पर आधारित हैं, वे भी बोलीवार के जीवन में औचित्य अनुभव करते हैं, उनके विचारों या कार्यों के उन पक्षों पर बल देते हैं जो उनके लिए सहायक हैं, यद्यपि आशा और मुक्ति के निरादर से लेकर भौतिक विकास पर ध्यान देना बोलीवार के आदर्शों से दूर नहीं हैं। रूढ़िवादी विचारकों में वर्षों घिरे रहने के पश्चात बोलीवार अब वामपक्ष के अभिनेता बन गए हैं। कोई भी संगठन, वास्तविक बोलीवार की आदर्शवादिता की प्रगति में सहायक सिद्ध नहीं हुआ है। बोलीवार की महत्ता को उल्लेखित करने वाला एक अन्य शक्तिशाली आंदोलन जिसके पीछे अपार आर्थिक साधन थे, अंतर अमेरिकी आंदोलन है, जो पुन: उन्हीं उद्देश्यों पर आधारित है जो बोलीवार से कोसों दूर थे। समय और स्थिति में एक दूसरे से विभिन्न परिस्थितियों की तुलना करना लाभप्रद है, लेकिन आवश्यक विभिन्नताओं को स्पष्ट न करने पर खड़ी होने वाली जटिल समस्या से अवगत होना जरूरी है। जबकि वाशिंगटन से नियंत्रित अंतर-अमेरिकी आंदोलन को मफलताएं मिलीं, बाकी जगह असफलता ही हाथ लगी। इस आंदोलन में सच और लालच के बीच के संतुलन का या इसकी सफलताओं और गलतियों का जैसा भी विश्लेषण हो, इतिहासकार को अवश्य स्पष्ट करना चाहिए कि इसके लक्ष्य वे नहीं थे जो बोलीवार के थे।

भला हो राज्य मंत्री जेम्स जी० ब्लेने का, जिनके रुचि लेने से प्रथम अंतर-अमेरिकी गोष्ठी वाशिंगटन में 1889-90 में आयोजित की जा सकी। यह अकल्पनीय था कि यह गोष्ठी बोलीवार के आदर्शों का अनुसरण करे, चूंकि उनके हित संयुक्त राज्य के हितों से मेल नहीं खाते थे, जिसकी इच्छा स्पेन द्वारा रिक्त किया गया स्थान भरने की थी। संयुक्त राज्य की नीति उन्नीसवीं शताब्दी के

प्रारंभ से ही परिभाषित कर दी गई थी : 'विभाजित करो और जीतो' का पुराना तरीका उनके राजनयिक लक्ष्यों का केंद्र था। जैसा कि हम देख चुके हैं, कार्य मुश्किल न था। क्योंकि प्रत्येक देश की प्रबल राष्ट्रीयता ने बोलीवार के एकता प्रयासों का विरोध किया, उनमें भाग लेने से इन्कार कर दिया और अपने उत्तर के पड़ोसी के लक्ष्यों के साथ सहयोग करना बेहतर समझा। प्रगटत:, संयुक्त राज्य के प्रतिनिधियों और बोलीवार के आदर्शों के बीच की दूरी उस भाषण में अनुपस्थित थी जिसके साथ ब्लेने ने गोष्ठी की समाप्ति की घोषणा की। चूंकि इसका सम्बंध शान्ति एवं सुख के साथ था, जिससे कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति असहमत नहीं हो सकता। लेकिन मजेदार तथ्य यह है कि ब्लेने ने दक्षिण अमेरिकी गणतंत्रों और संयुक्त राज्य के मध्य के अंतरों को पहचाना, क्योंकि उन्होंने दोनों महाद्वीपों की शांति और प्रेम के संदर्भ में बात की, जो सिर्फ शांति पर आधारित हो सकते हैं। प्रगटत:, गोष्ठी की उपलब्धियां बहुत कम थीं, चूंकि व्यवसाय और संचार के समझौतों के सिवाय सारा बल एक निषेधात्मक विषय पर पड़ा—'सशस्त्र संघर्षों पर रोक' : 'हम यह मानते हैं कि 'नव मागना कारता, जिसने युद्ध समाप्त कर इसे अमेरिकी गणतंत्रों के मध्य आपसी निर्णयों से बदल दिया है, अमेरिकी गोष्ठी का प्रथम तथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण फल है। गोष्ठी के परिणामस्वरूप अमेरिकी गणतंत्रों का एक व्यावसायिक कार्यालय गठित किया गया जिसने 1910 में अपना नाम अंतर-अमेरिकी संगठन रख लिया। इस के प्रचार-पत्रों में प्रकाशित इसके आदर्श हर एक को पूर्णत: स्पष्ट हैं, जो इसे खुली आंखों से पढ़ता है। इसकी और बोलीवार की गतिविधियों में सम्बंध ढूंढने का एक प्रयास किया गया है : 'यद्यपि पनामा कांग्रेस बोलीवार के उद्देश्य प्राप्त करने में असफल रही, इसने महाद्वीपीय एकता और अंतर-अमेरिकी कांग्रेस के गठन हेतु प्रथम कदम उठाया है।'[1] वस्तुत: इसके लक्ष्य अमेरिकी राज्यों को समानता और न्याय पर आधारित एकता के लिए प्रेरित करने के स्थान पर गलत और स्वार्थी थे। कई संगठन, जैसे अंतर-अमेरिकी रेलवे और अंतर-अमेरिकी महामार्ग यद्यपि सबके लिए थे परन्तु इनका सर्वाधिक लाभ बड़ी शक्ति को पहुंचा, सिवाय एक अंतर अमेरिकी विभाग के जिसकी स्थापना 1902 में पोलियो और मलेरिया ज्वरों के प्रति संघर्ष हेतु की गई थी, और जिसकी गतिविधियां पूर्णत: मानवीय थीं। यह विश्व की सबसे पुरानी अंतर्राष्ट्रीय संस्था है और अपनी सफलताओं के लिए यह प्रशंसनीय है।

1890 और 1954 के बीच अमेरिकी सरकारों के कम-से-कम दस अधिवेशन हुए जिनमें बोलीवार का नाम सबसे अधिक लिया जाता था। लेकिन इन दस अधिवेशनों में वे एक संयुक्त स्वर में बोलने में असफल रहे, जिसके लिए उत्तरदायी स्वयं दक्षिणी अमेरिका के विभाजित राष्ट्र हैं। पान-अमेरिकावाद के इतिहास में संयुक्त राज्य अमेरिका सदा प्रभावशाली रहा, और कई बार उन्होंने

अपने पड़ोसियों को अपमान से बचाने के लिए अपने ऐंग्लो-सैक्सन माध्यमों को भी प्रयोग नहीं किया। संयुक्त अमेरिका से दक्षिणी अमेरिकी राष्ट्रों के लिए लाई हुए सहायता ने अपना मूल्य इनके समर्पण और समर्थन द्वारा प्राप्त किया। फ्रैंकलीन दे रोज़वेल्ट और कैनेडी की अच्छे पड़ोसी की नीति और प्रगति के लिए संगठन की नीति, दोनों पक्षपाती थीं और नुकसान का वहन करने के प्रयासों में ज्यादा देर टिकी नहीं। फिर भी शोषण की प्रक्रिया समाप्त नहीं हुई। बल्कि, वह और ज्यादा बढ़ गई थी। उत्तरी अमेरिका की पूंजी दक्षिणी अमेरिका में लगातार जाती रही। इस क्षण ने एक विचित्र स्थिति खड़ी कर दी। ज़रूरत है सहयोग की एक वास्तविक नीनि की, जो 'सहायता' के अमानविक पक्ष से स्वतंत्र हो। 'अमेरिकी राज्यों का सगठन' जो पुनर्गठित हुआ और 1948 में यह नया नाम इसे दिया गया; यह उत्तरी अमेरिका के राज्यों और केंद्र व दक्षिण के राज्यों के बीच संपर्क का सूत्र हो सकता है। कोई यह मना करना नहीं चाहेगा कि हमारी परस्पर भौगोलिक स्थिति सहयोग को निमंत्रण देती है, लेकिन इसका आधार न्याय और आपसी हित ही होना चाहिए।

साथ ही, लातीनी अमेरिका को इस धरती के दूसरे राष्ट्रों तक ज़रूर पहुंचना चाहिए—एक सबक जो हमने बोलीवार से सीखा। 1814 में उन्होंने बहस करते हुए कहा : 'यूरोपीय राष्ट्रों की इच्छा विश्व के प्रत्येक हिस्से में बल-प्रयोग के शासन को पहुंचाना है : विश्व के इन भागों को यूरोप और स्वयं के बीच संतुलन पैदा करना चाहिए, जिससे यूरोप के प्रभाव को समाप्त किया जा सके। मैं इसे विश्व संतुलन कहता हूं, और इसे अमेरिकी नीति के मूल्यांकन का हिस्सा होना चाहिए।[2] प्रथम वाक्य में 'यूरोपीय राष्ट्रों' के शब्द को किसी भी तरह की 'प्रसारवादी शक्तियों' से बदला गया है, और यह सबक आज भी तीसरे विश्व के देशों के लिए उपयुक्त है।

अमेरिकी राज्यों के आज अनेक संगठन हैं, जो कुछ आवश्यक परिवर्तनों के साथ बोलीवार के लक्ष्यों की पूर्ति में सहयोगी सिद्ध हो सकते हैं। आम सभा और अमेरिकी राज्यों के सगठन की स्थायी परिषद, विदेश मंत्रियों की परिषद् के साथ दोनों महाद्वीपों के बीच संपर्क स्थापित कर सकती हैं, अगर दोनों आंतरिक रूप से संगठित हैं। ये हैं : अंतर-अमेरिकी आर्थिक व सामाजिक परिषद और अंतर-अमेरिकी शिक्षा, विज्ञान व सांस्कृतिक परिषद। और ज़्यादा स्तर के कार्यों के लिए और भी संगठन हैं : मानव अधिकारों पर अंतर-अमेरिकी शिष्ट-मंडल, पान-अमेरिकी स्वास्थ्य संगठन, महिलाओं का अंतर-अमेरिकी शिष्ट-मंडल, अंतर-अमेरिकी बाल-संस्था, सुरक्षा के लिए विशेष सलाहकार कमेटी, इतिहास और भूगोल की अंतर-अमेरिकी संस्था, कृषि विज्ञानों की अंतर-अमेरिकी संस्था,

आर्थिक आंकड़ों की अंतर-अमेरिकी संस्था, अंतर-अमेरिकी परमाणु शक्ति कमीशन और अंतर-अमेरिकी रक्षा बोर्ड।

कई लाभप्रद कदम उठाए गए हैं। 1911 में बोलीवारीय राष्ट्रों के मध्य संधि पर हस्ताक्षर किए गए, जो शैक्षिक उपाधियों और प्रतिलिपि अधिकारों से संबंधित थी, और 1970 का 'आँदरेस बैल्लो' सांस्कृतिक समझौता, और साथ ही शिक्षा, विनिमय, वैज्ञानिक सूचना, कलाकारों, अध्यापकों के संगठन आदि ऐसे कदम हैं पुस्तक जिनको बढाया जा सकता है। श्रमिकों, छात्रों, अध्यापकों और दूसरे व्यवसायियों के संगठन, और इस तरह की संस्थाएं जैसे लातीनी अमेरिकी विश्वविद्यालयों का संगठन, लातीनी अमेरिकी सामाजिक विज्ञान फैकल्टी और लातीनी अमेरिकी सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद—ये सब एकता के सूत्र हैं, जो हमारी शक्ति होंगे। लातीनी-अमेरिकी मुक्त व्यवसाय संगठन, एन्देन वर्ग, मध्य अमेरिकी कामन मार्किट, कैरिबियन क्षेत्रों के लिए कार्यक्रम और लैटिन अमेरिका का आर्थिक कमीशन; ये छोटे देशों के लिए विकास के संघर्ष में एक अच्छे कदम होंगे।

स्वतंत्रता और समानता का बलिदान किए बिना प्रगति प्राप्त करना इस शताब्दी का हमारे राष्ट्रों के लिए सबसे बड़ा प्रश्न है। यह एक असंभव कार्य नहीं है, क्योंकि हमारे महाद्वीप के पास अपार प्राकृतिक स्रोत उपलब्ध हैं। कौदिल्लयो या तानाशाह का हल अब बेमतलब है, और पूर्णतः व्यक्तिवादी धारणा को सहयोग द्वारा संगठन के लिए मार्ग प्रशस्त करना चाहिए। सैन्यवाद निम्न विकास का दूसरा पक्ष है, जिस पर हमें कोनसियेनतीसासीओन (सामाजिक परिवर्तनों में परिवर्तन हेतु सहनशीलता को जगाना) से काबू पाना है। सेना तो प्रजातांत्रिक व प्रतिनिधिक और संवैधानिक शासन की स्थिरता और शांति के लिए है। अपने शासकों के चुनाव के लिए हमें स्वीकार्य प्रक्रिया अपनानी चाहिए, और उन्हें शांति से बदलने का तरीका ढूंढना चाहिए। अपने व्यावसायिक संगठनों के माध्यम से श्रमिक वर्ग को अपनी जिम्मेदारियां संभालनी चाहिएं। राजनीतिक दलों को भी प्रजातांत्रिक प्रक्रिया में अपनी भूमिका निभानी चाहिए, जिससे बहुमत और न्यूनमत व सरकार और विरोधी दलों की जरूरतें पूरी हो सकती हैं। पूंजी का दायरा समानता के क्षेत्र तक होना चाहिए, और इसकी इच्छाएं विकास व स्वतंत्रता के वातावरण तक सीमित होनी चाहिएं। जैसा कि बोलीवार ने अपने प्रति-दासता प्रयासों के विरोधियों के संदर्भ में सान्तान्देर को कहा था: 'मेरा ख्याल है कि अपने हितों से अंधे हुए इन लोगों को शिक्षित करना उपयोगी होगा, जिससे उनके सच्चे हित उनको रास्ता दिखाएंगे...मेरा विचार है उन्हें बता दिया जाना चाहिए...जो जानना उनके लिए जरूरी है।'[3]

उन सब संगठनों को जिन्होंने पिछले 100 वर्षों में दक्षिणी अमेरिका के उपनिवेशवाद को पनपने की आज्ञा दी थी, बदल दिया जाना चाहिए। एकता के लक्ष्य

का प्रचार होना चाहिए और प्रेस व विद्यालयों में इसपर बहस की जानी चाहिए। इतिहास की शिक्षा में राष्ट्रीयता पर कम ज़ोर दिया जाना चाहिए। आज के दबाव की प्रक्रिया को तोड़ने का कोई फायदा नहीं अगर इसका स्थान उपनिवेशवाद के नए स्वरूप को लेना है। हमारे पत्रकार, उपन्यासकार, कवि, नाटककार, संगीतज्ञ और चित्रकार पुरानी मानसिकता को समाप्त करने और नव-निर्माण में सहायता कर सकते हैं। 150 वर्षों से हम दक्षिणी अमेरिका में क्रांति की प्रतीक्षा कर रहे हैं, और अब ज्यादा देर प्रतीक्षा नहीं कर सकते। एक प्रजातांत्रिक प्रक्रिया में हम बोलीवार के आदर्शों की ओर बढ़ सकते हैं : न्याय, स्वतंत्रता, समानता, एकता और विकास। यह सच है कि प्रजातांत्रिक सरकारें लेटिन अमेरिका की भूमि पर कमज़ोर हैं। लेकिन जो हैं, उन्हें मज़बूत किया जाना चाहिए। आज कई ऐसे लोग हैं जो अपने कारणों से प्रजातंत्र की मृत्यु की घोषणा करते हैं, फिर भी जैसा मानव अधिकारों की विश्व घोषणा से स्पष्ट होता है, मानवता का बड़ा हिस्सा अब भी प्रजातांत्रिक मूल्यों में विश्वास करता है। यह केवल मत के अधिकार के पालन तक सीमित नहीं है। प्रजातंत्र एक प्रक्रिया का भाग है, बाह्य रूप में नहीं, और इसमें न सिर्फ लोगों के अधिकार और नागरिक स्वतंत्रता का आश्वासन सम्मिलित है, बल्कि न्याय और समानता की प्राप्ति भी है। यही वह अकेली प्रक्रिया है जिसमें अपने को सुधारने के लिए कार्यक्षेत्र है, और यही इसका मुख्य लाभ है।

आज की स्थिति में जहां दूसरे महाद्वीप भी अन्य लोगों को स्वतंत्र व्यक्ति का दर्जा दिलवाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, लातीनी अमेरिका पर एक महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है। इस कार्य में यही उत्तम होगा कि वह बोलीवार के जीवन से मार्गदर्शन प्राप्त करे। उन्होंने कभी घृणा या मृत्यु का प्रचार नहीं किया; उन्होंने हिंसा का इस्तेमाल सिर्फ तभी किया जब यह बहुत ज्यादा ज़रूरी था। वह लातीनी अमेरिकी चेतना के सच्चे प्रतिनिधि हैं। □

संदर्भ

1. एल सिस्तेमा इन्तेरामेरीकान सू एवोलूसियोन् ई फ्लसियोन आक्तुआल (वाशिंगटन, 1963), पृष्ठ 2-4
2. गसेता दे काराकास, न॰ XXX, 6 दे एनेरो दे 1814
3. ओबरास कोम्पलीतास, 1, 444 □

चुनी हुई पुस्तकों की सूची

सम्पूर्ण ग्रंथ सूची के लिए देखें स्पेनिश मूल: बोलीवार: उन कोन्तिनेन्ते ई उन देस्तिनो (काराकास, 1972)

América y el Libertador (Publicaciones de la Secretaría General de la X Conferencia Interamericana, Caracas, 1953).

Archivo General de la Nación, Caracas, Gobierno de la Rèpública, Secretaría del Interior y Justicia, Sección General, Folio 269.

Asturias, Miguel Angel, 'Credo,' *Obras completas*, (Madrid, 1968).

Bello, Andrès, 'Derecho Internacional II; *Obras completas*, XI (Caracas, 1959).

Bernal Medina, Rafael, *Ruta de Bolívar* (Calí, 1961).

Betancourt, Rómulo, *Venezuela, política y petróleo* (Mexico-Buenos Aires, 1956).

Bierck, Harold A., *Vida pública de don Pedro Gual* (Caracas, 1948).

Biggs, James, *Historia del intento de don Francisco de Miranda para efectuar una revolución en Sur América* (Caracas, 1950).

Blanco, Josè Félix & Ramón Azpurúa, *Documentos para la historia de la vida pública del Libertador* (14 vols. Caracas, 1875-78).

Blanco Fombona, Rufino, *Bolívar, pintado por sí mismo* (Caracas, 1959).

Boletín del Archivo Histórico de Miraflores Caracas, No. 14.

Bolívar y su época (Publicaciones de la Secretaría General de la X Conferencia Interamericana, 2 vols. Caracas, 1953).

Bolívar, Simón, *Cartas del Libertador*, XII (Caracas, 1959).

—*Decretos del Libertador* (3 vols. Caracas, 1959).

—*Documentos referentes a la creación de Bolivia* (2 vols. Caracas, 1924).

—*Escritos del Libertador* (In process of publication since 1967 by the Sociedad Bolivariana de Venezuela, Caracas).

—*Itinerario documental de Simón Bolívar* (Caracas, 1970).

—*Obras completas* (Compiled with notes by V. Lecuna, with collaboration of E. Barret de Nazaris, 2 vols. Havana, 1947).
Briceño Iragorry, Mario, *Introducción y defensa de nuestra historia* (Caracas, 1952).
Codificación Nacional de todas las leyes de Colombia, III, 1827-28 (Bogotá, 1925).
Constitución Federal de Venezuela, 1811 (Reproducción facsimilar de la edición de 1812, CORPA, Caracas, 1961).
Correo del Orinoco, Angostura, 1818-21 (Academia Nacional de la Historia, Paris, 1939).
Cortázar, Roberto & Luis Augusto Cuervo, *Congreso de Angostura. Libro de actas* (Bogotá, 1921)
Cuerpo de Leyes de la República de Colombia (Consejo de Desarrollo Científico y Humanístico, Universidad Central de Venezuela, Caracas, 1961).
Diaz Sánchez, Ramón, *El caraqueño* (Caracas, 1970).
Documentos relativos a la insurresción de Juan Francisco de León (Instituto Panamericano de Geografía e Historia, No. 1, Caracas, 1949).
El libertidor y la Consttiución de Angostura (Publicaciones del Banco Hipotecario de Crèdito Urbano, Caracas, 1970).
El sistema interamericano. Su evolución y función actual (Secretaría de la OEA, Washington, 1963).
Encina, Francisco A., *Bolívar y la Independencia de la América Española. La Primera República de Venezuela. Bosquejo psicológico de Bolívar* (Santiago de Chile, 1958).
Febres Cordero, Julio, 'Arcaísmos institucionales e influencias románticas en el Libertador,' *Boletín Histórico*, Fundación John Boulton, Caracas, No. 26, 1971.
Felice Cardot, C. *Mérida y la Revolución de 1826 o 'La Coslata'* (Mérida, 1963).
—'Rebeliones, motines y movimientos de masas en el siglo xviii venezolano, 1750-81,' *El movimiento emancipador de Hispanoamérica*, II (Academia Nacional de la Historia, Caracas, 1961).
—*Venezolanos de ayer y de hoy* (Caracas, 1971).
Fortune, New York, March 1939.
Gabaldón Márquez, Joaquín, *El Bolívar de Madariaga y otros Bolívares* (Caracas, 1960).
Galíndez, Jesùs de, *Iberoamérica. Su evolutión política,*

socioeconómica, cultural e internacional (New York, 1954).
Gandía, Enrique de, *Bolivar y la libertad* (Buenos Aires, 1957).
Gazeta de Caracas, No. XXX, 6 de enero de 1814 (Vol. IV. 1813-14 Academia Nacional de la Historia, Paris, 1939.
Gazeta de Venezuela, Caracas, Ano X, No. 485, 3 de mayo de 1840.
Gil Fortoul, J., *Historia Constitucional de Venezuela* (3 vols. Caracas, 1942).
Griffin, Charles C., *Los temas sociales y económicos en la epoca da la Independencia* (Caracas, 1962).
Guerrero, Luis Beltrán, 'Bolívar, historiador del futuro,' *Candideces*, Quinta serie, Caracas, 1967.
Humboldt, Alexander von, *Viaje a las regiones equinocciales del Nuevo Continente* (5 vols. Caracas, 1941-42).
Larrazabál, Felipe, *Vida de Bolivar* (New York, 1883).
Lecuna, Vicante (ed.) *Cartas de Santander* (3 vols.Caracas, 1942).
—*Catálogo de errores y calumnias en la historia de Bolivar* (2 vols. New York, 1956).
Liévano Aguirre, Indalecio, *Bolívar* (Bogotá, 1950).
—*Bolivarismo y Monroismo* (Bogotà, 1969).
—*Razones socioeconómicas de la conspiración de setiembre contra el Libertador* (Caracas, 1968).
López, Casto Fulgencio, *Juan Bautista Picornell y la conspiración de Gual y España* (Caracas-Madrid, 1955).
Mancini, Jules, *Bolívar y la emancipación de las colonias españolas* (Paris-Mexico, 1914).
Manning, William R., *The Independence of the Latin American Nations* (2 vols. Oxford University Press, 1925).
Materiales para el estudio de la cuestión agraria en Venezuela (Consejo de Desarrollo Científico y Humanístico, Universidad Central de Venezuela, Caracas, 1964).
Mendoza, Cristóbal L. 'Discurso en el Sesquicentenario de la Batalla de Carabobo,' *Boletin de la Academia Nacional de la Historia*, Caracas, No. 214, abril-junio 1971.
—*Las primeras misiones diplomáticas de Venezuela* (2 vols. Caracas, 1962).
—Preface to *Escritos del Libertador VIII*.
Mijares, Augusto, *El Libertador* (Caracas, 1964).
—Laevolutión política de Venezuela', *Venezuela Independiente*

(Caracas, 1962).
Miranda, Francisco de, *Archivo* (15 vols. Caracas, 1929-38).
Mitre, Bartolomé, *Historia de San Martín y la emancipación sudamericana* (4 vols. Buenos Aires, 1957).
Neruda, Pablo, 'Un canto para Bolívar,' Tercera Residencia, *Obras completas* (Buenos Aires, 1956), p. 262.
Nucete Sardi, José, *Aventura y tragedia de don Francisco de Miranda* (Venezuela, 1964).
O'Leary, Daniel Florencio, *Memorias* (33 vols. Caracas, 1879-87).
—*Narración* (3 vols. Caracas, 1952).
Oviedo y Baños, Jose de, *Historia de la conquista y población de la Provincia de Venezuela* (New York, 1940).
Páez, José Antonio, *Autobiografía* (2 vols. Caracas, 1946).
Palacio Fajardo, Manuel, *Bosqueja de la revolución en la America española* (Caracas, 1953).
Parra Pérez, C., *Bayona y la política de Napoleón en América* (Caracas, 1939).
—*Historia de la Primera República de Venezuela* 2 vols. Caracas, 1959).
—*Una misión diplomática venezolana ante Napoleón en 1813* (Caracas, 1953).
Pereyra, Carlos, *Breve historia de América* (Santiago de Chile, 1938).
Pèrez Vila, Manuel, *La formación intelectual del Libertador* (Caracas, 1971).
Perú de Lacroix, Luis, *Diario de Bucaramanga* (Caracas, 1935).
Pi Sunyer, C., *El General Juan Robertson, un prócer de la Independencia* (Caracas, 1971).
Pimentel, Cecilia, *Bajo la tiranía, 1919-35.* (Caracas, 1970).
Polanco A., Tomás, Preface to *El Libertador y la Constilucion de Angostura de 1819.*
Prieto F., Luis Beltrán, *El magisterio americano de Bolívar* (Caracas, 1968).
Registro Oficial, No. 54, Bogotá, 1829.
Restelli, Ernesto, *La gestion diplomática del General de Alvear en el Alto Perú* (Buenos Aires, 1927).
Rodriguez, Simón, *El libertador del mediodía de América y sus compañeros de armas defendidos por un amigo de la causa social* (Caraças, 1971).

Rodríguez Villa, A., *El teniente general don Pablo Morillo* (2 vols. Madrid, 1920).
Rumazo González, Alfonso, *Bolívar* (Caracas-Madrid, 1955).
Salcedo Bastardo, José Luis, *Visión y revisión de Bolívar* (Buenos Aires, 1966).
Santander, F. de P., *Archivo* (24 vols. Bogotá, 1913-32).
Silva Otero, Arístides, *La diplomacia hispanoamericanista de la Gran Colombia* (Caracas, 1967).
Suárez, Ramón Darío, *Genealogía del Libertador* (Mérida, 1970).
Textos oficiales de la Primera República de Venezuela (2 vols. Biblioteca de la Academia Nacional de la Historia, nos. 1 & 2, Caracas, 1959).
'Transcripción del expediente original de la Real Audiencia de Caracas sobre domicilio tutelar del menor Don Simón de Bolívar, originado por la fuga de éste de la casa de su tutor', *Boletín de la Academia Nacional de la Historia*, Caracas, No. 149, enero—marzo 1955.
Ugalde, Pedro, 'Presencia y magisterio de Miranda en la revolución chilena,' *Cultura Universitaria*, Universidad Central de Venezuela, Caracas, XVII-XVIII, 1950.
El Universal, Caracas, Suplemento 'Estampas', No. 731, 8 de octubre de 1967.
Verna, Paul, *Petion y Bolívar* (Caracas, 1969).
Yepes, J.M., *Del Congreso de Panamá a la Conferencia de Caracas* (2 vols. Caracas, 1955).
Zubieta, P.A., *Congresos de Panamá y Tacubaya* (Bogotá, 1912).